

दिगम्बरत्व का वैभव

प्रकाशक

दिगम्बर जैन महासमिति

प्रकाशक :
श्री सुकुमार चन्द जैन
प्रधान मन्त्री,
विशम्भर जैन महासमिति
C/O श्री पार्ष्णनाथ दि० जैन मन्दिर पञ्चायती धर्मशाला
तीर्थकर महावीर मार्ग,
मेरठ शहर ।

प्रथम संस्करण
१००० प्रतियां

मूल्य : पच्चीस रुपये

वर्ष - १९८५

मुद्रक .
प्रेसीडेन्ट प्रेस
६०, चंपल स्ट्रीट
मेरठ कैंन्ट
फोन : ७६७०८

अनुक्रमणिका

१. आन्ध्र प्रदेश	... १
२. असम	... ६
३. बिहार	... ८
४. गुजरात	... २४
५. हरियाणा	... २८
६. हिमाचल प्रदेश	... ३६
७. केरल	... ३७
८. मध्य प्रदेश	... ३८
९. महाराष्ट्र	... १२५
१०. मणिपुर	... १३६
११. मेघालय	... १३६
१२. नागालैण्ड	... १३६
१३. उड़ीसा	... १३७
१४. पंजाब	... १४०
१५. राजस्थान	... १४१
१६. उत्तर प्रदेश	... १७०
१७. पश्चिमी बंगाल	... २२०
१८. दिल्ली	... २२४
१९. तामिलनाडू	.. २३४
२०. मूडबिंद्री	... २४४
२१. श्रवणबेल गोला	... २४७

प्रस्तावना

वर्तमान युग के चौबीस तीर्थंकरों में से अन्तिम तीर्थंकर भगवान महावीर का २५०० वा निर्वाण महोत्सव मनाने के लिए देश-विदेश का समग्र जैन-समाज अत्यन्त भक्ति, श्रद्धा और अधिकाधिक तैयारियों के साथ प्रस्तुत हो रहा था। धार्मिक मान्यता के अनुसार सभी तीर्थंकर समान रूप से पूज्य हैं, किन्तु हम आज जिस काल में हैं, वह भगवान महावीर के धर्मप्रवर्तन का काल है, अतः उनके प्रति हमारी विशिष्ट विनयाजलि स्वाभाविक ही थी।

जिन्हें जैन-इतिहास और पुराणों का ज्ञान नहीं है, ऐसे अनेक जन भगवान महावीर को ही जैन धर्म का आदि प्रवर्तक मानते हैं, किन्तु वास्तविकता यह है कि भगवान महावीर वर्तमान परम्परा के अन्तिम तीर्थंकर हैं, आदि तीर्थंकर तो भगवान ऋषभदेव हैं, जिनके पुत्र भरत चक्रवर्ती के कारण यह देश 'भारत देश' के नाम से विख्यात हुआ। जैनतर पुराणों में भी उनका उल्लेख आदरपूर्वक किया गया है। विष्णु पुराण में भगवान ऋषभदेव को आठवा अवतार माना गया है। इसी सन्दर्भ में श्रीमद् भागवत का यह उद्धरण दृष्टव्य है—

निःशानुभूतनिजलाम निवृत्त तृष्णः श्रेयस्यतत्रचनया चिरमुप्तबुद्धे ।

लोकस्थ यः करुणयान्नयमात्मलोक माह्वयान्नमो भगवते ऋषभाय तस्मै ॥

—श्रीमद् भागवत ५/६/१६

(निरन्तर विषय-भोगों की अभिलाषा करने के कारण अपने वास्तविक श्रेय से चिरकाल तक बेसुध हुए लोगों को जिन्होंने करुणावश निर्भय आत्मलोक का उपदेश दिया और जो स्वयं निरन्तर अनुभव होने वाले आत्मस्वरूप की प्राप्ति से सब प्रकार की तृष्णाओं से मुक्त थे, उन भगवान ऋषभदेव को नमस्कार है।)

भारतीय सस्कृति के इतिहास की जानकारी के लिये जैन, बौद्ध और हिन्दू शास्त्रों-पुराणों-ऐतिहासिक सन्दर्भों का तुलनात्मक अध्ययन अनिवार्य है। इसे एक सुखद सयोग ही कहना होगा कि जैन मान्यता की वर्तमान पीढ़ी के आदि तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव और हिन्दू पुराणों के सर्वाधिक पूज्य भगवान शंकर के वर्णन क्रम में अद्भुत साम्य है। भगवान शंकर कैलाशवासी हैं, उनकी लम्बी जटाये हैं, वे शीर्ष पर गंगा धारण किये हुये हैं, नन्दी उनका वाहन है और त्रिशूल उनका प्रतीक चिह्न है। दूसरी ओर भगवान ऋषभदेव का निर्वाण स्थान कैलाश है, उनकी प्राचीन मूर्तियाँ प्रायः जटाजूट युक्त हैं, उनका चिन्ह बैल है और उन्होंने सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चारित्र्यरूपी त्रयो को ही मोक्षमार्ग माना है। यहाँ यह कह देना अप्रासंगिक नहीं होगा कि जैन मान्यता के अनुसार भगवान ऋषभदेव भी वस्तुतः आदि तीर्थंकर नहीं हैं। वे मात्र वर्तमान पीढ़ी के चौबीस तीर्थंकरों में से प्रथम तीर्थंकर हैं। चौबीस-चौबीस तीर्थंकरों की ऐसी ही तीन शृंखलाये हैं, जो भूत-भविष्य और वर्तमान चौबीसी कही

जाती हैं। आज हम जिस मृलला को भविष्यत कालीन चौबीसी कहते हैं, उसका प्रारम्भ होते ही वह वर्तमान चौबीसी कहलाने लगेगी और तब आज की चौबीसी भूतकालीन चौबीसी हो जायेगी।

भगवान महावीर का जन्म कुण्ड ग्राम वैशाली (बिहार-प्रान्त) में चैत्र शुक्ल १३, उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र, सोमवार २७ मार्च (५६८ ई० पू०) को हुआ था। वे महाराज सिद्धार्थ और महारानी त्रिशला प्रिय-कारिणी के पुत्र थे। वरुमान, अतिवीर और सन्मति इनके नामान्तर हैं, इन्हें निगण्ठनातपुत्र भी कहा गया है। इनका कुमारकाल २६ वर्ष ७ माह १२ दिन, तपकाल, १२ वर्ष ५ माह १५ दिन, देशनाकाल-२६ वर्ष ५ माह २० दिन रहा और अन्तिम २ दिनों के योगनिरोध के पश्चात् कार्तिक कृष्ण, अमावस्या, मंगलवार १५ अक्टूबर (५२७ ई० पू०) को स्वातिनक्षत्र में इनका निर्वाण हो गया था। इसी उपलक्ष में जनसामान्य एवं देवताओं ने विविध मध्य आयोजनों के साथ उनका निर्वाण महोत्सव मनाया था। तभी से वह परम्परा के रूप में प्रचलित हो गया और आज तक दीपावली अथवा दीपमालिका महोत्सव के रूप में धूमधाम के साथ प्रतिवर्ष मनाया जाता है। भारतीय परम्परा में “घी के दिये जलाना” सर्वाधिक मागलिक कार्य के रूप में प्रतिष्ठित कार्य-क्रम माना जाने लगा है।

वर्ष १९७४ ई० में भगवान महावीर के निर्वाण के २५०० वर्ष सम्पन्न हो रहे थे। यही २५०० वा निर्वाण महोत्सव अत्यधिक उत्साह और तैयारियों के साथ सम्पूर्ण भारत देश में आयोजित किया जाना था।

इसी सन्दर्भ में ११-१२ अप्रैल १९७० को अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन समाज के प्रतिनिधियों की एक बैठक देहली में हुई थी जिसमें भगवान महावीर के २५०० वें निर्वाण महोत्सव को व्यापक रूप से मनाने का निर्णय लिया गया था और अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर भगवान महावीर २५०० वा निर्वाण महोत्सव सोसायटी का गठन हुआ था। सोसायटी के विधान और नियमों का दिल्ली राज्य पंजीकरण अधिनियम के अनुसार रजिस्ट्रेशन कराया गया था और एतदर्थ दान की राशि पर दातारों के लिए आयकर में छूट का अधिकार-पत्र प्राप्त किया गया था। देश में दिगम्बर जैन समाज की जनसंख्या और संगठन की स्थिति का ध्यान रखते हुए विभिन्न ४४ क्षेत्रीय समितियाँ गठित की गयी थी।

इसके पूर्व पिछले दो-ढाई वर्षों से एतदर्थ आयोजित की जाने वाली योजनाओं के लिए विचार-विमर्श हो रहा था और निर्धारित योजनाओं के लिये धन एकत्रित करने तथा केन्द्रीय और क्षेत्रीय समितियों के कार्य-विभाजन के विषय में चर्चा हो रही थी। अन्ततः केन्द्रीय समिति ने सर्वसम्मति से कार्य के दायित्व का नीचे लिखे अनुसार विभाजन किया था।—

- वर्ग-१ वे योजनाएँ जिनके लिये दिगम्बर केन्द्रीय समिति उत्तरदायी होगी।
- वर्ग-२ वे योजनाएँ जो विभिन्न संस्थाएँ स्वयं कर रही हैं और जिनके लिये केन्द्रीय समिति का प्रोत्साहन उन्हें प्राप्त है और जिनके लिये केन्द्रीय समिति ने मान्यता दे दी है।
- वर्ग-३ वे योजनाएँ जिनकी जिम्मेदारी क्षेत्रीय समितियों ने ली है।
- वर्ग-४ वे योजनाएँ और कार्यक्रम जो भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय समिति के माध्यम से स्वीकार किये गये हैं।

धन संग्रह—के लिये समिति ने निश्चय किया था कि प्रत्येक जैन स्त्री-पुरुष, बालक-बालिका प्रतिदिन

महोत्सव की योजनाओं के निमित्त कम-से-कम एक पैसा नियमित रूप से दान दे। धन संग्रह के इस कार्य में विभिन्न क्षेत्रों से विभिन्न प्रकार की सहायता प्राप्त हुई थी और केन्द्रीय समिति ने क्षेत्रीय समितियों को उनके द्वारा एकत्रित धनराशि को उनके द्वारा आयोजित कार्यक्रमों के लिये व्यय करने हेतु अधिकृत कर दिया था।

केन्द्रीय समिति की योजनाओं के लिये आवश्यक धनराशि के सम्बन्ध में यह निर्णय लिया गया था कि वह क्षेत्रीय समितियों से उनकी आर्थिक सुविधा के आधार पर दान रूप में प्राप्त किया जायेगा, जो महानु-भाष ५०००/- रुपये अथवा इससे अधिक राशि केन्द्रीय समिति को देंगे, उनकी इच्छानुसार, उनका नाम उचित स्थान पर स्मारक शिला पट्ट पर अंकित करा दिया जावेगा।

यह निश्चय भी किया गया था कि केन्द्रीय समिति निर्वाण महोत्सव की स्मृति में कलात्मक पदक वितरित करेगी तथा धर्मचक्र प्रवर्तन योजना के माध्यम से धर्म प्रचार और द्रव्य संचय करेगी। धर्मचक्र प्रवर्तन की निर्धारित योजना के आधार पर पूरे देश में विभिन्न पांच धर्मचक्र प्रवर्तित किये गये थे—

(१) प्रथम धर्मचक्र का प्रवर्तन देहली से हुआ था। तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरागांधी ने इस प्रवर्तन का शुभारम्भ रामलीला मैदान में आयोजित समारोह में किया था। १०८ आचार्य श्री धर्मसागर जी महाराज और मुनि श्री विद्यानन्द जी महाराज के आशीर्वाद से पुनीत यह धर्मचक्र देहली से हरियाणा-पंजाब-हिमाचल प्रदेश-राजस्थान होता हुआ उत्तर प्रदेश में आया था और इसी प्रान्त के प्रसिद्ध हस्तिनापुर क्षेत्र में इसकी यात्रा सम्पन्न हुई थी।

(२) दूसरे धर्मचक्र का प्रवर्तन भगवान महावीर के निर्वाण क्षेत्र पावापुर (बिहार) से प्रारम्भ हुआ था और इसके माध्यम से बिहार प्रान्त के अतिरिक्त बंगाल और उड़ीसा प्रान्त में भी पर्याप्त धर्म प्रभावना हुई थी।

(३) तीसरे धर्मचक्र का प्रवर्तन इन्दौर से प्रारम्भ हुआ था और इसके माध्यम से मध्यप्रदेश के गावो-गावों में तथा निकटवर्ती अन्य स्थानों में धर्म प्रभावना हुई थी।

(४) चौथे धर्मचक्र का प्रवर्तन दक्षिण भारत के विख्यात तीर्थस्थल श्रवणबेलगोला से हुआ था। इस धर्मचक्र के माध्यम से कर्नाटक प्रान्त के अतिरिक्त महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश और केरल राज्यों में भी जन जागृति और प्रचार का महान कार्य सम्पादित हुआ था।

(५) पाचवें धर्मचक्र का नेतृत्व किया था स्व० पं० बाबूभाई चुन्नीलालजी मेहता ने। इस धर्मचक्र की यात्रा बहुत विस्तृत और सफल रही थी। पंडित बाबूभाई मेहता का अपना व्यक्तित्व था। लगभग ८०० अनुशासनबद्ध सम्पन्न लोगों का सघ अपने आप में एक आदर्श था। इस धर्मचक्र का प्रवर्तन सम्पूर्ण गुजरात प्रान्त में हुआ और इसके अतिरिक्त देश के विविध तीर्थ क्षेत्रों पर भी इसका प्रवर्तन सफलतापूर्वक हुआ था। स्व० मेहताजी ने इस संघ यात्रा के अवसर पर अनेक अभावग्रस्त तीर्थ क्षेत्रों की आवश्यकताओं की यथासम्भव पूर्ति की थी।

योजनाएँ—केन्द्रीय समिति द्वारा किये गये विभाजन के आधार पर धर्म—१ ने कुल ३४ लाख रुपये की योजनाएँ निर्धारित की थी, जिनमें—(१) राष्ट्रीय समिति की योजनाओं तथा चारों समाजों की सम्मिलित योजनाओं के लिए अनुदान (२) भगवान महावीर के जन्म-स्थान बैशाली में जन्म स्मारक के निर्माण (३) पावापुरी में भगवान महावीर के निर्वाण स्मारक के निर्माण (४) विपुलाचल पर्वत पर भगवान महावीर की प्रथम देशना का स्मारक, भगवान महावीर के बिहार-स्थलों का मानचित्र और रानी चेलना तथा उनके प्रभाव द्वारा

राजा श्रेणिक की धर्मदीक्षा के स्मारक का निर्माण (५) दिगम्बर केन्द्रीय समिति के कार्यालय खर्च और विभिन्न योजनाओं की तैयारी के लिए धनराशि तथा (६) कंकाली (मधुरा), देवगढ़, सजुराहो और उज्जैन के पुरातत्व संग्रहालयों के निर्माण-विकास कार्य के लिये व्यवस्था भी सम्मिलित थी।

आर्थिक सहायता हेतु आश्वासन—इस हेतु बम्बई, कलकत्ता, आसाम, मेरठ, उत्तराखण्ड, मध्यप्रदेश, बिहार और देहली की जैन समाज से कुल १७.७५ लाख रुपये की दानराशि के आश्वासन मिले थे। वीर शासन जयन्ती महोत्सव कलकत्ता के अवसर पर एकत्रित धनराशि में से ०.५० लाख रुपये बचे थे। शेष राशि १५.७५ लाख रुपये एकत्रित करने की योजना विचाराधीन थी।

वर्ग-२ के अन्तर्गत जैन साहित्य प्रकाशन, धर्मचक्र प्रवर्तन, कलात्मक पदक वितरण, बालक-बालिकाओं की धार्मिक दशा के लिए पाठ्य-पुस्तकों का प्रकाशन और पाठशालाओं की स्थापना, भगवान महावीर के सिद्धान्तों, शास्त्र प्रवचनों, स्रोतों, भजनो आदि की टेप रिकार्डिंग, जिनेन्द्र कला भारती मीलवाड़ा द्वारा सामूहिक स्तुति, भजन-गान प्रशिक्षण, जैन भजन स्तुतियों के ग्रामोफोन रिकार्ड, जैन कला और स्थापत्य की सामग्री के चित्रों के संग्रह, जैन स्थापत्य कला आदि की चित्र प्रदर्शनी, जैन साहित्य प्रदर्शनी, भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव स्मारक कलैण्डर, डायरिया और अन्य उपहार सामग्री का वितरण, संग्रहालयों का निर्माण और विकास तथा सराक जाति के इतिहास और स्थिति के सर्वेक्षण आदि की योजना निर्धारित की गयी थी।

वर्ग-३ के अन्तर्गत देश की विभिन्न क्षेत्रीय समितियों ने सामान्यतः :—तीर्थंकर महावीर के स्मारकों के निर्माण, जैन धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु विभिन्न कार्य और सम्बन्धित साहित्य का प्रकाशन, अप्रकाशित मौलिक रचनाओं का संरक्षण और प्रकाशन, विद्यालयों, पाठशालाओं, पुस्तकालयों, स्वाध्याय भवनो तथा वाचनालयों की स्थापना और संचालन, जैन तीर्थों, प्राचीन-नवीन जिन मन्दिरों की सुरक्षा और व्यवस्था, ऐतिहासिक और पुरातत्व की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थानों आदि की व्यवस्था और संरक्षण, सामाजिक तथा सार्वजनिक सभा, सम्मेलन, वाद-विवाद, विचार गोष्ठी, निबन्ध, प्रवचन आदि का आयोजन, आकाशवाणी तथा पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से जैन सिद्धान्तों का प्रचार, निधि एकत्रित करने के लिये गोलकों की स्थापना, अतिथि गृहों तथा चिकित्सालयों की स्थापना, जैन आबादी वाले एवं अन्य विशिष्ट स्थानों पर जैन मन्दिरों के निर्माण, संग्रहालयों का निर्माण, छात्र-छात्राओं के लिए छात्रवृत्ति योजना तथा छात्रावासों की स्थापना, स्मारिका एवं विवरण पत्रिका का प्रकाशन, भगवान महावीर के कीर्ति स्तम्भ एवं उपदेशों के शिलापट्ट स्थापित कराना, पक्षी-चिकित्सालयों की स्थापना तथा जैन जन-गणना कराने आदि की योजनायें बनायी थी।

वर्ग-४ के अन्तर्गत भारत सरकार ने भगवान महावीर के २५०० वें निर्वाण महोत्सव को सार्वजनिक रूप से राष्ट्रीय स्तर पर मनाने के लिए राष्ट्रीय समिति का गठन किया था। तत्कालीन राष्ट्रपति श्री बी० बी० गिरि इसके संरक्षक थे, तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरागांधी इसकी अध्यक्ष थी और केन्द्रीय शिक्षामन्त्री महोदय इसके कार्याध्यक्ष घोषित किये गये थे। इनके अतिरिक्त ८ विशिष्ट अतिथि, ६७ सदस्य तथा संचालक समिति के २० सदस्य मनोनीत किये गये थे। राष्ट्रीय समिति के सभी पदाधिकारी और सदस्य देश के चुने हुये विशिष्ट व्यक्ति थे। राष्ट्रीय समिति द्वारा निम्नांकित कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये थे—

(१) दक्षिण देहली में भगवान महावीर बनस्थली नामक राष्ट्रीय उद्यान का निर्माण किया जाय, जिसके लिए भारत सरकार २५ एकड़ भूमि की व्यवस्था करेगी। और कृषि मन्त्रालय के माध्यम से इस योजना को कार्यान्वित किया जायेगा। इस कार्य के लिए एक ८ सदस्यीय उपसमिति का संगठन भी किया गया था।

(२) प्रत्येक राज्य में एक-एक भगवान महावीर बाल केन्द्र स्थापित हो। देश में ऐसे २० केन्द्र स्थापित हों जो जिलों के नेहरू युवा केन्द्रों से सम्बद्ध हों, प्रत्येक केन्द्र पर लगभग ५० हजार रुपये व्यय किया जाय।

(३) प्रत्येक राज्य में कम-से-कम एक ग्रामीण पुस्तकालय की स्थापना भगवान महावीर के नाम पर हो, जो राज्य के सम्बद्ध नेहरू व युवा केन्द्र से सम्बद्ध हो, इस कार्य के लिये ६ लाख रुपये का प्रावधान हो।

(४) भगवान महावीर के जन्मतीर्थ वैशाली में स्मारक का निर्माण—इस कार्य के लिए २५० लाख रुपये निर्धारित किये गये।

(५) जैन विद्या तथा शोध हेतु स्वायत्त शासित नेशनल काउंसिल की स्थापना—इसके लिए भारत सरकार १० लाख रुपये का अनावर्तक अनुदान देगी।

(६) प्रकाशन कार्यक्रम—इस कार्य के लिए भारत सरकार जैन समाज को ४ लाख रुपये का अनुदान देगी, जो स्वयं भी यदि अधिक नहीं, तो कम से कम इतनी राशि नियोजित करेगी।

(७) भगवान महावीर का जीवन और उनके सिद्धान्त—इस ग्रन्थ का नियोजन श्री जगदीश चन्द माथुर, हिन्दी परामर्शदाता, भारत सरकार के निर्देशन में होगा तथा इसका प्रकाशन अंग्रेजी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा होगा। इस कार्य के लिये ६ सदस्यीय सम्पादक मण्डल का गठन किया गया था।

(८) महोत्सव सम्बन्धी अन्य कार्यक्रमों के आयोजन के लिए—२ लाख रुपये निर्धारित किये गये थे। इस प्रकार सम्पूर्ण योजनाओं के लिये ५० लाख रुपये की राशि निर्धारित की गयी थी। उपरोक्त आल इण्डिया दिगम्बर भगवान महावीर २५०० वा निर्वाण महोत्सव सोसायटी का विधान और नियमावली तैयार करायी गयी थी और उसका रजिस्टर्ड मुख्य कार्यालय देहली में निर्धारित किया गया था।

आल इण्डिया दिगम्बर भगवान महावीर २५०० वां निर्वाण महोत्सव सोसायटी के पदाधिकारीगण

अध्यक्ष	—श्रीमान साहू शान्तिप्रसाद जी जैन, नई दिल्ली।
कार्याध्यक्ष	—श्रीमान सरसेठ भागचन्द जी सोनी, अजमेर।
"	—श्रीमान राजेन्द्र कुमार जी जैन, नई दिल्ली।
"	—श्रीमान राय साहब चादमल जी पाडया, गोहाटी।
उपसभापति	—श्रीमान सेठ राजकुमारसिंह जी, इन्दौर।
"	—श्रीमान राय बहादुर हरकचन्द जी पाडया, राची।
"	—श्रीमान श्यामलाल जी पाडवीय, मुरार।

”	—श्रीमान सेठ लालचन्द हीराचन्द जी बम्बई ।
”	—श्रीमान सेठ नथमल जी सरावगी, कलकत्ता ।
”	—श्रीमान सेठ शीतल प्रसाद जी जैन, मेरठ ।
”	—श्रीमान परसादीलाल जी पाटनी, देहली ।
प्रधानमन्त्री	—श्रीमान सुकुमार चन्द जी जैन, मेरठ ।
मन्त्री	—श्रीमान कैलाशचन्द जी जैन, देहली ।
”	—श्रीमान भगतराम जी जैन, देहली ।
”	—श्रीमान रमेशचन्द जी जैन, देहली ।
कोषाध्यक्ष	—श्रीमान प्रेमचन्द जी जैन, देहली ।

प्रबन्ध समिति—आल इण्डिया दिगम्बर भगवान महावीर २५०० वा निर्वाण महोत्सव सोसायटी के पूर्वांचल क्षेत्र के अन्तर्गत—मनीपुर, आसाम, मेघालय, नागालैण्ड, बंगाल और बिहार प्रदेश के सदस्यो, उत्तरांचल क्षेत्र के अन्तर्गत—देहली, पंजाब एवं जम्मू काश्मीर, हिमाचल, हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और मध्य-प्रदेश के सदस्यो, महाराष्ट्रांचल क्षेत्र के अन्तर्गत—बम्बई, और महाराष्ट्र प्रदेश के सदस्यों, दक्षिणांचल क्षेत्र के अन्तर्गत—मैसूर, केरल तथा आंध्रप्रदेश के प्रबन्ध समिति के सदस्यो को भी मनोनीत किया गया था ।

कार्यालय समिति एवं अन्य समितियों के पदाधिकारियो तथा सदस्यों की घोषणा भी विधिवत की गयी थी ।

निर्वाण महोत्सव का सम्पूर्ण कार्यक्रम एलाचार्य १०८ श्री विद्यानन्द जी महाराज की छत्रछाया मे सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ था । स्वस्ति श्री भट्टारक चारुकीर्ति जी महाराज श्रवणवेलगोला, स्वस्ति श्री भट्टारक चारुकीर्ति जी महाराज, मूडबिंद्री, स्वस्ति श्री भट्टारक देवेन्द्र कीर्ति जी महाराज होम्मच, एव स्वस्ति श्री भट्टारक लक्ष्मीसैन जी महाराज कोल्हापुर की जागरुक दृष्टि और उनके द्वारा समय-समय पर दिये जाते रहे परामर्श सफलता के लिये वरदान सिद्ध हुए । स्वर्गीय साहू शान्तिप्रसाद जी इन कार्यक्रमों के प्राण थे, उनकी प्रेरणा, परामर्श और तात्कालिक निर्णायक लेने की क्षमता के कारण कही कोई बाधा नहीं आयी । श्रीमान साहू श्रेयास प्रसाद जी का प्रशस्त मार्ग दर्शन और सक्रिय सहयोग सदैव प्राप्त होता रहा । प्रधानमन्त्री होने के नाते मैं स्वर्गीय साहूजी के आदेशो के अनुसार प्रत्येक कार्य का संचालन और निरीक्षण करता अवश्य था किन्तु इसकी सफलता का श्रेय वस्तुतः स्वर्गीय साहूजी को ही है । इस सन्दर्भ मे मन्त्री के रूप मे दिनरात अनवरत कार्य करने वाले अपने सहयोगी समाजसेवी भाई भगतरामजी जैन का नाम भी मूलाया नहीं जा सकता । श्रीमान लाला प्रेमचन्द जी जैन (जैना वाच क०) देहली, श्रीमान लाला गुलशनराय जी जैन मुजफ्फरनगर, श्रीमान जयचन्द डी० लोहाड़े हैदराबाद, श्रीमान जम्बुकुमार जी बज कोटा, श्रीमान राजकुमार सिंह जी कासलीवाल इन्दौर, श्रीमान मिश्रीलाल जी गगवाल इन्दौर, श्रीमान हरकचन्द जी पाडया राची, श्रीमान चादमल जी पाडया तथा श्रीमान नेमीचन्द जी जैन देहली आदि महानुभावो का सक्रिय सहयोग और प्रयास ही कार्यक्रमो की सफलता का सम्बल रहा है ।

निर्धारित योजनाओं के अनुसार कार्य—निर्धारित योजनाओ के अनुसार देश मे अधिकाधिक स्थानो पर भगवान महावीर के २५००वें निर्वाण महोत्सव के उपलक्ष मे अनेकानेक कार्यक्रम आयोजित किये गये । तीर्थस्तम्भो तथा स्मारको का निर्माण हुआ, विद्यालयो, पाठशालाओं की स्थापना हुई, अनेक प्राचीन स्मारको,

मन्दिरों का जीर्णोद्धार हुआ, विविध प्रकाशन हुए, जैन भजनो गीतों-खोतों के रिकार्ड, टेप तैयार हुए और ऐसे ही अनेकानेक प्रचार सम्बन्धी कार्य सम्पन्न हुए। अनेकों धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं ने तथा विशिष्ट जनों ने अपने निजी तौर पर भी धार्मिक-सामाजिक कार्यक्रम आयोजित किये। महोत्सव की सम्पन्नता के पश्चात् अनेक धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं ने अपने कर्मचारियों को अतिरिक्त वेतन, बोनस अथवा उपहार भेंट किये। निजी तौर पर भी श्रद्धालु जनों ने संस्थाओं को दानराशि भेजी, मन्दिरों तथा अन्य धार्मिक सामाजिक संस्थाओं को विविध उपकरण और प्रचार सामग्री भेंट की। असहाय स्त्री-पुरुषों को सहायता प्रदान की, बीमारों को दवाइयों, दूध और फलों का वितरण किया। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि संस्थाओं और सम्मिलित प्रयासों के माध्यम से तथा व्यक्तिगत रूप से भी जितना अधिक धार्मिक प्रचार-प्रसार कार्य इस महोत्सव के उपलब्ध में किया गया, इसके पूर्व उतना कार्य पहले कभी नहीं हुआ था।

निर्धारित योजनाओं (वर्ग-१) के अन्तर्गत 'वैशाली की जिस पावन भूमि पर कभी खेती नहीं हुई है और जो परम्परा से भगवान महावीर की जन्मभूमि मानी जाती है, वहाँ पर जैन कला शैली में भगवान महावीर का जन्म स्मारक निर्माण कराने' का लक्ष्य निर्धारित किया गया था, यह महान कार्य अत्यधिक श्रमसाध्य था और इसके सम्पन्न होने में समय भी अधिक लगना था। प्रारम्भ में इस निर्माण के लिए ३६० लाख रुपये की राशि आँकी गयी थी। इसमें से आधी रकम जैन समाज को और शेष आधी राशि बिहार राज्य शासन को देनी थी। बाद में वह व्यय बढ़कर ६०० लाख रुपया हो गया और अब तो वह राशि बढ़कर लगभग १५०० लाख रुपये हो गयी है। समाज की ओर से इसके लिए १५० लाख रुपये दिये जा चुके हैं योजना क्रमशः अधिकाधिक लम्बी और व्यय साध्य होती जा रही है और इस सम्बन्ध में सभी आवश्यक प्रयास किये जा रहे हैं।

साहित्य प्रकाशन की निर्धारित योजना अत्यधिक सफल रही है। अनेक संस्थाओं ने अधिकाधिक साहित्य का प्रकाशन और प्रसार किया-कराया। इस सन्दर्भ में भारतीय ज्ञानपीठ की सेवाएँ सर्वाधिक महत्वपूर्ण रही। इसी प्रयास के अन्तर्गत भारतीय ज्ञानपीठ के संयोजन, सम्पादन एवं निर्वेशन के अन्तर्गत श्रीमान प० बलभद्र जी जैन द्वारा लिखित तथा भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी बम्बई द्वारा प्रकाशित 'भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ' (अब तक चार भागों में प्रकाशित) की चर्चा करना अप्रासंगिक नहीं होगा। इस प्रकाशन से एक बहुत बड़ी आवश्यकता की पूर्ति हो गयी है। इसके एक-दो भाग अभी प्रकाशित होने शेष हैं।

१०५ छुल्लक श्री जिनेन्द्र वर्णी की साधना के प्रतीक 'जैनेन्द्र सिद्धान्त कोष' का प्रकाशन भी अपने आप में महान उपलब्धि है। भारतीय ज्ञानपीठ के इस प्रकाशन का दूसरा संस्करण भी अब तैयार हो रहा है।

महोत्सव सोसायटी द्वारा देश के समस्त जैन मन्दिरों, क्षेत्रों और संस्थाओं की डायरेक्टरी प्रकाशित करने का निश्चय भी किया गया था। विभिन्न स्थानों से विवरण प्राप्त होने और उन्हें व्यवस्थित करने में समय अधिक लग गया और इस बीच और भी अनेक व्यवधान उपस्थित हो गये। अन्ततः उक्त डायरेक्टरी के रूप में यह प्रकाशन आपके हाथों में पहुँच रहा है। अनेक स्थानों के विवरण अन्त तक प्राप्त नहीं हो सके अतः उनका समावेश इसमें नहीं हो सका। इसके प्रकाशन में हुए विलम्ब के लिए हम सादर क्षमायाची हैं।

आयोजित कार्यक्रमों के समापन समारोह में 'दिगम्बर जैन महासमिति, का गठन—

देश की समग्र जैन समाज ने भगवान महावीर का २५०० वा निर्वाण महोत्सव जिस सम्मिलित सहयोग और उत्साह के साथ मनाया था, उसकी कोई सीमा नहीं रही थी। इसमें शासन और अन्य समाजसेवी

संस्थाओं का सहयोग भी प्राप्त हुआ था, किन्तु जैन-समाज का प्रत्येक वर्ग आपसी मतभेदों को भूलकर बनावट ही एकजुट होकर सक्रिय हो गया था। महोत्सव की इस विशिष्ट उपलब्धि से समाज का विचारशील वर्ग बहुत प्रभावित हुआ था। इसी दृष्टि से स्व० साहू शांतिप्रसाद जी एवं अन्य मूर्धन्य समाजसेवी जनों के मत में यह विचार आया था कि इस उपलब्धि का लाभ उठाकर समाज को जैनत्व के नाते एकसूत्र में संगठित करने के लिए अखिल भारतवर्षीय स्तर पर दिगम्बर जैन समाज का एक स्थायी संगठन स्थापित कर लिया जाय, जो 'संसद' के रूप में दिगम्बर जैन समाज के सम्पूर्ण वर्गों का प्रतिनिधित्व करें।

उपरोक्त विचारों का सभी और स्वागत और समर्थन हुआ। अल इण्डिया दिगम्बर भगवान महावीर २५०० वां निर्वाण महोत्सव सोसायटी के पास अनेक स्थानों से यह मांग भी आयी थी कि २५०० वें निर्वाण महोत्सव के कार्य के समापन के बाद इस संगठन को स्थायी रूप दिया जाना चाहिये।

समारोह समापन के अवसर पर ११-१२ अक्टूबर ७६ को जयपुर में आयोजित सम्मेलन में सर्व-सम्मति से यह प्रस्ताव पारित किया गया कि उपरोक्त आधार पर 'दिगम्बर जैन महासमिति' का गठन किया जाय। इस प्रस्ताव को कानूनी रूप देकर क्रियान्वित करने के लिए वरिष्ठ पत्रकार श्रीमान अक्षयकुमार जी जैन की अध्यक्षता में श्रीरामचन्द्र जी कासलीवाल जयपुर, श्री देवेन्द्रकुमार जी कासलीवाल इन्दौर एवं श्रीनेमीचन्द्र जी जैन देहली की एक उपसमिति गठित की गयी तथा इसे अधिकार दिया गया कि इसे अन्तिम रूप देकर इसका पंजीकरण करा दिया जाय।

इसके पूर्व देहली में २४-२५ अगस्त ७६ को आयोजित समारोह में इस सम्बन्ध में विचार करने के लिए महोत्सव सोसायटी की सभी समितियों के प्रतिनिधियों तथा दिगम्बर जैन समाज की अखिल भारतीय स्तर की संस्थाओं के प्रतिनिधियों को आमन्त्रित किया गया था। इसमें लगभग २५० प्रतिनिधियों ने भाग लिया था और इसकी कई बैठकें हुई थीं। सम्मेलन में भाग लेने वाले सभी प्रतिनिधियों ने समाज के संगठन को आवश्यक मानते हुये दिगम्बर जैन महासमिति के गठन का समर्थन किया था और उसके बाद दिगम्बर जैन महासमिति के विधान के प्राकूप पर आये सुझावों पर आवश्यक सशोधन कर नया प्राकूप तैयार करने का निर्णय लिया गया था। उसके पश्चात् विधान तैयार करने के लिये कई बैठकें हुईं, जिनमें आये सुझावों के अनुसार सशोधन कर नया प्राकूप तैयार किया गया था।

सर्वसम्मति से स्वीकृत विधान के अनुसार राष्ट्रीय नव-निर्माण में सहयोग, सामाजिक उत्थान एवं जन-कल्याण की भावना से अनुप्रेरित होकर 'दिगम्बर जैन महासमिति' की स्थापना की गयी। सोसायटीज रजिस्ट्रेशन एक्ट २१ सन् १९६० के अन्तर्गत इसके मैमोरेण्डम आफ एसोसिएशन का रजिस्ट्रेशन कराया गया। जिसमें महासमिति की प्रबन्ध समिति के निम्नांकित सदस्य घोषित किये गये :—

अध्यक्ष	—श्रीमान साहू शांतिप्रसाद जी जैन, देहली।
सदस्य	—श्रीमान सुकुमार चन्द जी जैन, मेरठ।
"	—श्रीमान अक्षयकुमार जी जैन, देहली।
"	—श्रीमान देवकुमारसिंह जी कासलीवाल इन्दौर।
"	—श्रीमान रामचन्द्र जी कासलीवाल, जयपुर।
"	—श्रीमान भगतराम जी जैन, देहली।
"	—श्रीमान पारसदास जी जैन, देहली।

इसके साथ ही आल इण्डिया दिगम्बर भगवान महावीर २५०० वां निर्वाण महोत्सव सोसायटी की प्रादेशिक, संभागीय एवं इकाई समितियों को निर्देश दिया गया कि वे अब अपना नाम बदलकर 'दिगम्बर जैन महासमिति' की शाखाओं के रूप में काम करना प्रारम्भ कर दें।

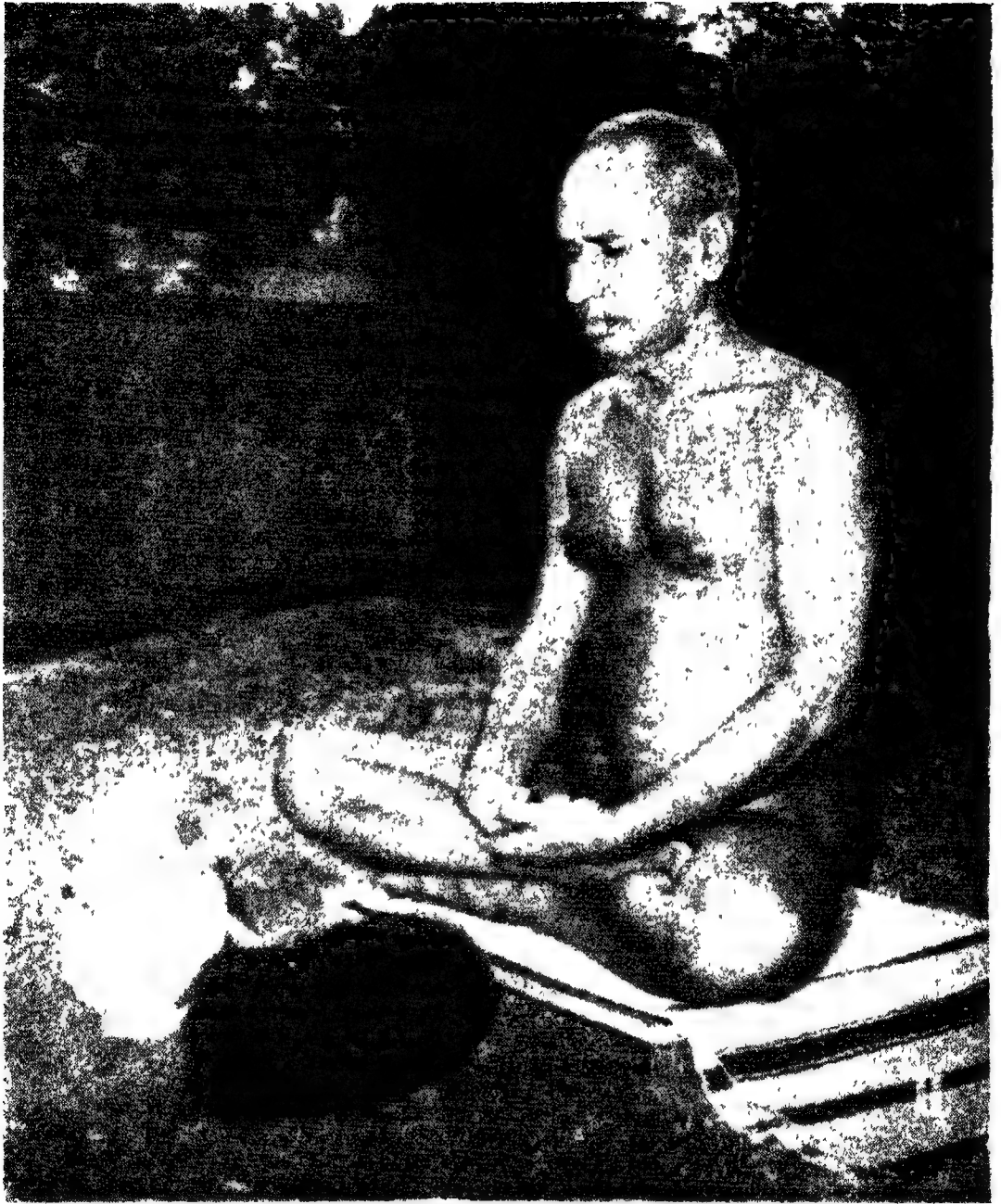
यह निर्णय भी लिया गया कि '२५०० वा निर्वाण महोत्सव बुलेटिन' भविष्य में 'दिगम्बर जैन महासमिति बुलेटिन' के नाम से प्रकाशित हुआ करे। इसी आधार पर 'दिगम्बर जैन महासमिति बुलेटिन' का प्रथम अंक जून १९७७ को प्रकाशित हुआ था। तब से आज तक दिगम्बर जैन महासमिति अपने निर्धारित लक्ष्यों पर उत्तरोत्तर अग्रसर होती जा रही है और 'दिगम्बर जैन महासमिति बुलेटिन' भी निरन्तर प्रकाशित हो रहा है।

इसी बीच दिगम्बर जैन समाज पर अनन्ध वज्रपात हो गया। समाज के सम्बल, सामाजिक गति-विधियों के प्रेरणा स्रोत, कर्मठ कार्यकर्ता और सर्वमान्य नेता श्री साहू शांतिप्रसाद जी का २७ अक्टूबर ७७ को स्वर्गवास हो गया। साहू जी की धर्मपत्नी श्रीमती सौ० रमारानी जैन इसके पहले ही दिवंगत हो चुकी थीं। श्रीमती रमा जैन ने भी निर्वाण महोत्सव के कार्यों में महत्वपूर्ण योगदान दिया था। भारतीय ज्ञानपीठ के माध्यम से कराये गये प्रकाशनों का अधिकांश श्रेय उन्हें ही है। साहूजी के निधन के समाचार से सम्पूर्ण समाज स्तब्ध रह गया और समग्र सामाजिक गतिविधियों का मार्ग अवरुद्ध हो गया था।

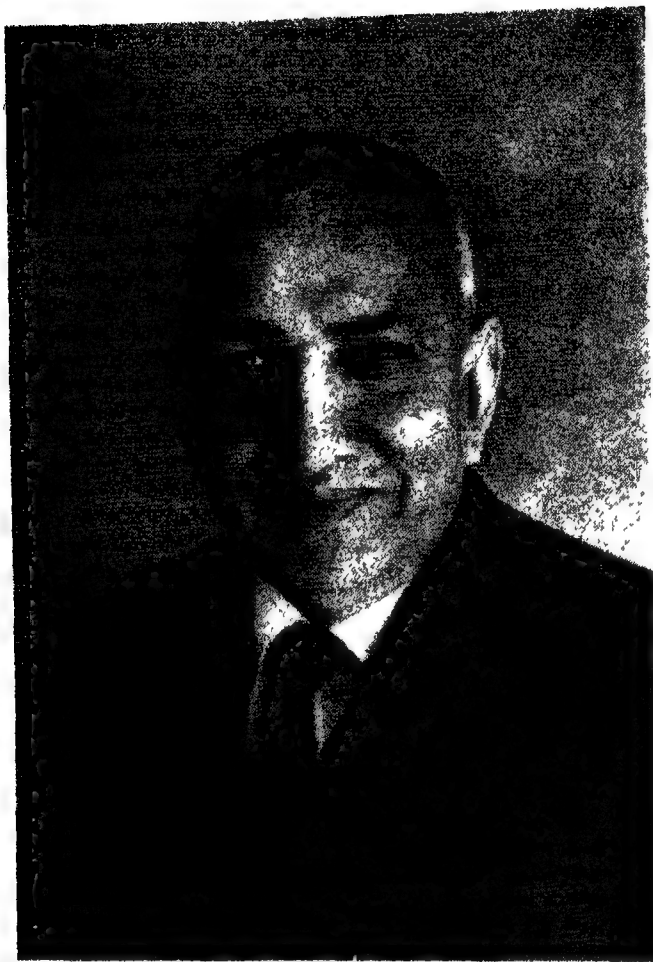
अन्ततः समाज प्रमुखों ने सम्मिलित रूप से स्व० साहू शांतिप्रसाद जी के अग्रज श्रीमान् साहू श्रेयास प्रसाद जी से सम्मिलित रूप से अनुरोध किया कि वे कृपाकर समाज की सामाजिक संस्थाओं का नेतृत्व सम्हालें और स्व० साहूजी के निधन से अवरुद्ध हुए कार्यों को गति प्रदान करें। श्रीमान् साहू श्रेयास प्रसाद जी अपने अनुज के निधन के कारण मानसिक दृष्टि से अपने-आप में टूट चुके थे, किन्तु समाज के आग्रह पर उन्हें विवश होकर सामाजिक कार्यों का नेतृत्व स्वीकार करना पड़ा।

'दिगम्बर जैन महासमिति बुलेटिन' के अंक दिसम्बर १९७७ में प्रकाशित अपने वक्तव्य में उन्होंने कहा था कि—गत १८ दिसम्बर ७७ को देहली में आयोजित बैठक में यह व्यक्त किया गया है कि स्व० शांति-प्रसाद जी के प्रति सबसे बड़ी श्रद्धाजलि यह होगी कि हम सब उनके द्वारा स्थापित 'दिगम्बर जैन महासमिति' के संगठन को अधिकाधिक प्रभावशाली बनावे तथा उनके संकल्प को मूर्तिमान करें। साहूजी ने महासमिति का उत्तरदायित्व स्वीकार करते हुये एतदर्थ समाज से सम्पूर्ण सहयोग की कामना भी की थी। तब से आज तक आदरणीय साहू जी दिगम्बर जैन महासमिति के माध्यम से जैन समाज को मार्गदर्शन देते आ रहे हैं। उनके मार्ग निर्देशन में समाज ने आशातीत सफलता प्राप्त की है। अन्य अनेकानेक संस्थाओं के अतिरिक्त श्रीमान् साहूजी भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी बम्बई के अध्यक्ष भी हैं।

—सुकुमार चन्द्र जैन



आध्यात्मिक सन्त
एलाचार्य श्री १०८ विद्यानन्द जी मुनि



दिगम्बर जैन समाज के प्राण
स्व० साहू शान्ति प्रसाद जैन



साहू श्रेयांस प्रसाद जैन
अध्यक्ष दि० जैन महासमिति



श्री सुकुमार चन्द जैन
प्रधान मन्त्री दिगम्बर जैन महा समिति

आन्ध्र प्रदेश में भीयंकाल से पहले जैन-धर्म फैला हुआ था और बौद्ध-जातकों के अशोकिय अनुवाद पहुंचाने से पूर्व वहाँ जैन-धर्म का सांस्कृतिक और मानवीय प्रभाव अपना कार्य कर रहा था। यह बात सुनिश्चित है कि अशोक ने कलिंग-विजय के पश्चात् बौद्ध-धर्म धारण कर लिया था। उसने युद्ध और आक्रमण के बदले में अहिंसा और शान्ति की नीति को अपना लिया था। इस परिवर्तन के कारण तत्कालीन धार्मिक स्थिति में परिवर्तन हुए हैं। भद्रबाहु श्रुत केवली की सध सहित दक्षिण-यात्रा भी एक प्राचीन सत्य है।

राजा खारवेल के शिलालेख से स्पष्ट है कि मगध का राजा नन्द कलिंग को जीत कर अग्रजिन की मूर्ति ले गया था। उससे स्पष्ट है कि नन्द राजा जैन था और वह मौर्यों का पूर्वज था।

पी० बी० दसाई ने लोकल कैफियतों के आधार पर आन्ध्र प्रदेश में जैन-धर्म प्रसार के अनेक मुद्दे दिये हैं, उनमें से तीन मुद्दे यहाँ दिये जाते हैं।

(१) इतिहास के आरम्भिक-काल में विजयापट्टम (विशाखापट्टनम) का प्रदेश जैन धर्म से प्रभावित था।

(२) गोदावरी जिले का जल्लूस स्थान एक उन्नतिशील जैन नगर था।

(३) गण्टूर जिले के एक गाँव की कैफियत से जान पड़ता है कि जैन राजाओं ने वहाँ बहुत समय तक राज्य किया है। उनके बाद मुक्कन्ती त्रिलोचन का शासन हुआ जो बौद्ध, जैन और आचार्यों का प्रबल शत्रु था। उसे अपने सम्प्रदाय का बड़ा मोह था। उसने जैन, बौद्ध और आचार्यों को विनष्ट किया। धरणीकोट और बरगल उसकी राजधानियाँ थी। उसने शक स० २२० (मन् २६८) तक राज्य किया है। मुक्कन्ती संस्कृत शब्द त्रिलोचन का तेलगु रूप है। इसके राज्यकाल में रंठूर गाँव के पड़ौस के कोडरा के पाई कामदा गाँव का जैन मन्दिर विवाद में हार जाने के कारण विनष्ट किया गया।

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि आन्ध्र प्राचीन समय में जैन-धर्म का महत्वपूर्ण स्थान रहा है।

आन्ध्र के कुडप्पह और दीदा जिले में अभी भी बहुत से पुरातन अवशेष मौजूद हैं। बीदर जिले के पास कुछ प्रतिमायें मग्न अवस्था में विद्यमान हैं। सन् १९०३ में भारत सरकार के पुरातत्व-विभाग की ओर से खुदाई हुई थी, उसमें महत्वपूर्ण सामग्री बहुत बड़े परिमाण में प्राप्त

आन्ध्र प्रदेश

हुई थी। इसमें स्तम्भों पर उत्कीर्ण तीर्थंकरों और शासन-देवताओं की मूर्तियाँ तथा नशियाँ आदि थी। इनमें से कुछ के ऊपर आठवीं व नवीं शताब्दी के लेख हैं। यहाँ से प्राप्त दो वस्तुयें ऐसी हैं जिनसे इस स्थान की अधिक प्राचीनता प्रमाणित होती है। यहाँ से खुदाई में ईंटों का बना एक कमरा निकला है जिसमें पार्श्वनाथ तीर्थंकर की मूर्ति स्थापित है। ये ईंटें काफी बड़े आकार की हैं और कृष्णा जिले के बौद्धस्तूप के खण्डहर से प्राप्त ईंटों से मिलती-जुलती हैं। आन्ध्र प्रदेश के कुछ सिक्के भी खुदाई में प्राप्त हुए हैं। इससे जान पड़ता है कि यह स्थान लगभग तीसरी शताब्दी से जैन धर्म का केन्द्र रहा है।

कुडप्पा जिले के डोम्मर, नन्दमाल और जम्मल मुडगु के विवरणों से जान पड़ता है कि इस प्रदेश में बसने वाले जैन गुरु थे। उन्होंने जंगल साफ किया और नये-नये निवास स्थानों की नींव रखी। प्रारम्भ में ये गाँव के रूप में थे तब उन्हें पल्ली कहा जाता था। समय पाकर वे बड़े कस्बों के रूप में परिवर्तित हो गये तब उन्हें बस्ती कहा जाने लगा। आन्ध्र प्रदेश में जैन-धर्म ने कई प्रमुख भागों में बड़ी उन्नति की। ईसा की प्रथम शताब्दियों में बौद्ध-धर्म के प्रबल विरोध के कारण और ब्राह्मणों की बढ़ती हुई शक्ति के कारण उसे पीछे हटना पड़ा और जैन धर्मानुयायियों को क्रूर उपद्रवों का पात्र भी बनना पड़ा। उनका पतन हुआ। आन्ध्र प्रदेश के

इतिहास के उत्तर-काल में जैन लोगो का धार्मिक-उत्पीड़न भारी परिमाण में किया गया, तेलगु साहित्य से भी इसकी पुष्टि होती है।

तेलगु प्रदेश में कोमटी एक प्रमुख व्यापारी जाति रही है जो अपने को घनद का उत्तराधिकारी मानते हैं। कहा जाता है कि घनद ने उन्हें जैन-धर्म का उपदेश दिया था। इस जाति के पूर्वज कर्नाटक से आकर बस गये थे, वे जैन थे और गोमटेश्वर की पूजा करते थे। अतः उनका नाम गोमटी या कोमटी प्रचलित हो गया। उत्तर-काल में पश्चिम गोदावरी जिले का पेंतुगोण्ड स्थान इस जाति का प्रमुख केन्द्र बन गया। इससे भी आन्ध्र में जैन-धर्म के प्रभाव की पुष्टि होती है। आन्ध्र में जैन-धर्म कलिंग के माध्यम से पहुंचा, यह शिलालेख से स्पष्ट है। सातवाहन राजाओं ने आन्ध्र के कुछ भागों पर ईसवी पूर्व तीसरी शताब्दी से ईसा की तीसरी शताब्दी तक राज्य किया है। यह बौद्ध-धर्म के समर्थक थे।

जिला अनन्तपुर—

इस जिले के ताडपत्रीय शिलालेख से स्पष्ट है कि इस स्थान पर जैन-मन्दिर और जैन गुरुओं की एक प्रभावशाली परम्परा थी। उन्होंने इस प्रदेश के सामन्तों से संरक्षण प्राप्त किया था। शिलालेख का समय सन् ११६८ ई० है। उसमें उदयादित्य सामन्त के द्वारा मूल-सप्त कुन्दकुन्दान्वय, देशीगण पुस्तकगच्छ और इग्लेश्वर के बिहान मेषचक्र को भूमि दान करने का उल्लेख है। मेषचक्र बाहुबली के प्रशिष्य और मानुकीर्ति के शिष्य थे। चन्द्रनाथ पार्श्वनाथ वसदि के पुरोहित थे।

गण्टूर जिला—

गण्टूर जिले के एक गाँव मन्तरावर की कैफियत में ज्ञात होता है कि जैन राजाओं ने उस प्रदेश पर बहुत समय तक शासन किया है। उसके बाद मुक्कदन्तीन्दा का शासन हुआ जिसने जैन-धर्म का विनाश किया। गण्टूर जिले के तेलानी गाँव की किवदन्ती के अनुसार इस प्रदेश पर जैन-राजाओं द्वारा शासन करने के उल्लेख प्राप्त होने हैं परन्तु जैन-मन्दिरों का उल्लेख नहीं मिला। वे प्राचीन समय में रहे हैं, पर उन्हें नष्ट भ्रष्ट कर दिया गया।

हैदराबाद दक्षिण—

यह दक्षिण प्रान्त के नवाब निजाम साहब की

रियासत की राजधानी का प्रसिद्ध शहर है। यह भूसा नदी के किनारे पर बसा हुआ है। यह बड़ा रेलवे-स्टेशन है। इसका प्राचीन नाम भगानगर था। इसे कुतुबशाही खानदान के बादशाह मुहम्मद कुल्नी ने सन् १५८६ में बसाया था। सन् १६०८ में भूसानदी की भयंकर बाढ़ में शहर को बहुत क्षति हुई। शहर में चार बड़ी-बड़ी मीनारें हैं जो देखने योग्य हैं, इन मीनारों के पास ही दिगम्बर जैन मन्दिर और धर्मशाला है। यहाँ खण्डेलवाल और अग्रवाल आदि जातियों के जैन लोग निवास करते हैं। शहर से डेढ़ मील की दूरी पर 'हुस्सेन सागर' तालाब है। मक्का मस्जिद, मीर आलम का तालाब, किला, गोलकुण्डा, राजमहल, रेजीडेन्सी आदि स्थान दर्शनीय हैं। हैदराबाद में जैन लोगो की अच्छी आबादी है। यहाँ पहले पानीपत निवासी अग्रवालों के जहाज चलते थे। वर्तमान में यहाँ सम्प्रदाय लोग रहते हैं।

कुड्डुप्पा जिला—

आन्ध्र के कुड्डुप्पा जिले में जैन-धर्म के पुरातन अवशेष पाये जाते हैं। इस जिले के दानबुल पाडु सन् १६०५ की खुदाई में जैन-धर्म की अनेक महत्वपूर्ण प्राचीन सामग्री उपलब्ध हुई है। स्तम्भों में उत्कीर्ण तीर्थंकर मूर्तियाँ, नशियाँ एवं एक कमरा निकला जिसमें पार्श्वनाथ की मूर्ति स्थापित है। अनेक लेख और आन्ध्र प्रदेश के कुछ सिक्के भी मिले हैं। गाँव का नाम 'पानबुलपाडु' है जिसका अर्थ अमुरो का मानवाम स्थान किया गया है जो तिरम्कार का मूलक है। जैन-धर्म के पतन के बाद विरोधियों ने जैन-धर्म से सम्बन्ध के स्थानों के लिये तिरम्कृत शब्दों का प्रयोग किया। पास के एक गाँव का नाम देदगुडी है जिसका अर्थ देवताओं का स्थान होता है।

पानबुलपाडु स्तम्भों पर मूर्तियों के नीचे आसन और पत्थरों पर लगभग १ दर्जन शिलालेख उत्कीर्णित हैं जो आठवीं शताब्दी और उसके बाद के हैं। दसवीं शताब्दी के एक लेख में गण्टुकूट नरेश नित्य वर्ष का उल्लेख है जिसे इन्द्र तृतीय अथवा कोट्टिण के नाम से पहचाना जा सकता है। एक अभिलेख में मेनापति श्री विजय के समाधिभरण का उल्लेख है जो बड़ा योद्धा, विद्वान और जैन धर्म का कट्टर अनुयायी था।

कोण्डकुण्डे—

वर्तमान में कोण्डकुण्डल नामक गाँव गुण्टकल रेलवे स्टेशन से लगभग चार मील दूर है। यह अनन्तपुर जिले के गोटी तालुका में स्थित है। यहाँ के जैन अवशेष गाँव से उत्तर में दो फलाँग की दूरी पर रसासिद्धुल गुट्ट नामक छोटी पहाड़ी पर मिलते हैं। 'रसासिद्धुल' का अर्थ है—रसायन बनाने वालों की पहाड़ी। इस पहाड़ी के ऊपर एक मन्दिर है, मन्दिर में दो खडगासन-मूर्तियाँ विराजमान हैं। उनके मिर पर तीन छत्र और दोनों ओर दो शासन-देवता हैं जिनका समय स्थूल रूप से १३वीं शताब्दी है। लोग तीर्थंकरों की मूर्तियों को रसासिद्धों की मूर्तियाँ मानते हैं। जब कभी वर्षा नहीं होती या देर में होती है तो लोग उनसे प्रार्थना करते हैं, उन्हें भेंट चढ़ाते हैं और वर्षा हो जाती है।

इसी पहाड़ी पर एक प्राचीन शिलालेख सातवीं शताब्दी का है और दूसरा निसदि लेख दसवीं शताब्दी का है जिसमें नागदेव की समाधि का उल्लेख है। एक १६वीं शताब्दी के लेख में वादि विद्यानन्द का उल्लेख है। एक शिलालेख गाँव में आदि चेत्र केशव मन्दिर के सामने लगे पाषाण पर अंकित है उसमें इसे पद्मनन्दि भट्टारक की जन्मभूमि बताया है। साथ ही इसमें चरणों और कुककुन्दान्वय का भी उल्लेख है। इस पर पी० बी० देमाई का अनुमान है कि कोनकुण्डल कुन्दकुन्द आचार्य की भूमि है। उन्होंने यह भी लिखा है कि इस स्थान में फैली हुई जनश्रुति के अनुसार भी इस स्थान का सम्बन्ध कुककुन्दाचार्य के साथ मिद्ध होता है किन्तु अब वहाँ जैन-धर्म का कोई अनुयायी नहीं है।

कोटशिवपुर ता० मदाक्षिरा—

इस गाँव के द्वार मण्डप के स्तम्भ पर एक लेख है जिसमें लिखा है कि राजा हरनाल की रानी अल्पद्री ने जैन दानशाला का जीर्णोद्धार कराया। यह कुन्दकुन्दाचार्य के एन्वय के काणूरगण के मुनियों की श्राविक शिष्या थी। वही दूसरा स्तम्भ लेख है। यहाँ काणूरवण के आचार्य पुष्पनन्दी के समय की निर्मित जैन वसदि (मन्दिर) है।

पटशिवपुर ता० मदाक्षिरा—

इस गाँव के दक्षिण द्वार के एक स्तम्भ पर पश्चिमीय

चालुक्य त्रिभुवन मल्ल वीर सोमेश्वर देव के (शक ११०७—सन् ११८५) का लेख है। जब यहाँ जैन-मन्दिर बनाया गया तब नियमसार की टीका के कर्त्ता पद्मप्रभ मलघारी और उनके गुरु वीर नन्दी सिद्धान्त चक्रवर्ती मौजूद थे। इस लेख की महत्ता इसलिये है कि उसमें पद्मप्रभ मलघारी देव की मृत्यु का उल्लेख है। शक ११०७ वि० फाल्गुन शु० ४ भरणी सोमवार को अर्थात् २६ फरवरी ११८५ ई० को उनकी मृत्यु हुई है जैसा कि इलोक से स्पष्ट है—

“सक वर्ष सप्त खंडु किति ११०७ परमिति

विशबावसु प्रान्त फाल्गुन्य,

कनकचुद्धा चतुर्थी तिययुत भरणी सोमवाराद्ध”

राजा।

शिव नाट्येकात्य बोल्लु निर्मल मति मल्लम नाम
पद्मप्रभ पुस्तक,

गच्छं मूल संघं यतिपति नुत देसीगण मुक्तनादे ॥’
(देखो साऊथ इण्डियन ऑफ जैनज्म)

पश्चिमी चालुक्य राजा त्रिभुवन मल्ल जिनेश्वर के समय का शक स० ११०७ सन् ११८५ में त्रिभुवन मल्ल भीमदेव होजिराज नगर पर शासन कर रहे थे।

पेनुकोण्डा—

जिनकांची में दो जैन मंदिर हैं इनमें पहला मंदिर जो छोटा है उत्तर पल्लव शैली में बना हुआ है और भगवान चन्द्रप्रभ को समर्पित है। कहा जाता है कि इसे पल्लव नरेश नरसिंह वर्मन (द्वितीय) ने बनवाया था। प्रतिमा तन से १२ फुट की ऊँचाई पर दूसरी मजिल में स्थापित है, एक मूर्ति भगवान कुन्दनाथ की पेराम्भूर से श्री बाबू जैन द्वारा प्रदान की गयी थी। दूसरा मन्दिर जो पहले मन्दिर से बड़ा है और पहले मन्दिर से लगा हुआ है वह भगवान वर्धमान (महावीर) को समर्पित है और स्थानीय बोल-चाल में इसको तिरुपसन्ति कुवरम या अलवार मन्दिर कहते हैं। कहा जाता है कि इसे महेन्द्र वर्धन ने पूरा किया था। यह मन्दिर पूर्व चोल-शैली में है तथा उसका मण्डप विजयनगर शैली में है। मण्डप की छत और बरामदे में तीर्थंकरों के जीवन चित्र अंकित हैं। वे शिव

सिक्ताकासल झेली मे हें । मन्दिर के भेर निर्माण मल्लिखेण कामनाचार्य के शिष्य परवादीमल्ल पुष्पसेन ने कराया था । इन दोनों के चरणचिन्ह मन्दिर के बाहर कुये के कक्ष के नीचे स्थापित है । सगीत मण्डप सेनापति इस्माय्य ने निर्माण कराया था । शिलालेखो से ज्ञात होता है पल्लव नरेश सिंह वर्धन ने एक गाँव और अन्य सम्पदा वर्धमान मन्दिर की पूजा के लिये वज्रमन्दी को भेंट की थी । राजा

आदित्य द्वितीय के त्रिलोकनाथ मन्दिर के सामने वाले बरामदे में लगे शिलालेख के अनुसार विजयनगर नरेश कृष्णराय ने एक गाँव भेंट किया था । राजा राज तृतीय ने वर्धमान मन्दिर में प्रतिमा खुद्वि कराई थी । वर्धमान की प्रतिमा काजीपुरम के श्री भुजगराव द्वारा सन् १७२२ में लायी गयी थी और उसी समय से मन्दिर में बराबर पूजन होता है

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं का नाम
(अ) अनन्तपुर	अमरपुरम ता० मदाक्षिरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अऊली ता० मदाक्षिरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कोण्डकुण्डे	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कोट शिवपुर ता० मदाक्षिरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पेनुकोण्डा	श्री दि० जैन मन्दिर	
(आ) गोदावरी	रत्नागिरि	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नेडूरु ता० आश्रेयपुरम	श्री दि० जैन मन्दिर (जलरु)	
		श्री दि० जैन मन्दिर (द्राक्षाराम)	
	पाचपुरम	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
(इ) हैदराबाद	पेढामुर्क	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हैदराबाद	श्री भगवान महावीर खडेलवाल दि० जैन मन्दिर चादर घाट	श्री दि० जैन धर्मशाला केशरबाग आगापुरा
		श्री चन्द्रप्रभु खण्डेलवाल दि० जैन मन्दिर जैन फुलवारी	श्री दि० जैन धर्मशाला १४-६-३५८ केमर बाग
		केशर बाग आगापुरा	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन चैत्यालय	जैन भवन-महाराज गज
		श्री दि० जैन चैत्यालय	जैन भवन (धर्मशाला) रामकोट
		श्री दि० जैन चैत्यालय	श्री पार्श्वनाथ दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन चैत्यालय	दि० जैन मन्दिर बेगम बाजार घास मण्डी
		जैन भवन महाराज गज	श्री पार्श्वनाथ दि० जैन पुस्तकालय, बेगम बाजार घास मण्डी
		श्री दि० जैन चैत्यालय चन्द्रप्रभु खण्डेलवाल दि० जैन मन्दिर	पुनमचन्द जैन धर्मशाला काचिगुडा स्टेशन के सामने

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं का नाम
		श्री पार्श्वनाथ खडेलवाल दि० जैन मन्दिर वेगम बाजार १४-६-३२६ चूड़ी बाजार	
		श्री पार्श्वनाथ खण्डेलवाल दि० जैन 'मन्दिर, साहूकारी का खान' पञ्च माई-अलावा मार्ग	
	हिंगोली	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	
(ई) खम्माग	डोरनाकल गरल खम्माग	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	
(उ) महबूब नगर	जादवरला महबूब नगर	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	
(ऊ) विशाखापत्तनम	माचपुरम मामिडिवाड पोट्टु गी	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	

राज्य में जैन-धर्म के ऐतिहासिक प्रचार सम्बन्धी प्रमाण ईसा की १२वीं सताब्दी से मिलते हैं। तत्पश्चात् जैन धर्म का प्रभाव वहाँ क्षीण हो गया जान पड़ता है। वर्तमान में राजस्थान तथा अन्य राज्यों के जैन धर्मावलम्बी यहाँ व्यापार एवं नौकरी की वजह से बस गये हैं। अधिकतर जैन लोग वहाँ व्यापार ही करते हैं। कुछ लोगों के पास कोयले की खदानें भी हैं। यहाँ लगभग १५ हजार जैन निवास करते हैं। पहले डिब्रूगढ़ में ही एक पचायती मन्दिर था किन्तु अब कई स्थानों पर जैन-मन्दिरों का निर्माण हुआ है। औपधालय-विद्यालय आदि जैन धार्मिक संस्थाएँ भी खुली हैं।

गोहाटी—

यह असम राज्य का प्रसिद्ध नगर है। यहाँ फैन्मी

बाजार स्थित जैन मन्दिर में २० मूर्तियाँ हैं और ४ चैत्यालय हैं जो क्रमशः रतन प्लेस, केदार रोड, पाण्डु और माली गाँव में हैं जिनमें कुल २५ मूर्तियाँ विराजमान हैं। श्री चादमल जी पाण्डया मुजानगढ़ की धर्म पत्नी श्रीमती भवनी देवी जी पाण्डया द्वारा संस्थापित व

असम

संचालित एक दिगम्बर जैन विद्यालय फैन्मी बाजार में है। महावीर कीर्ति मरस्वती प्रकाशन माला भी है।

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं का नाम
(अ) दरंग	खारु पेटिया घाट तेजपुर	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन स्कूल
(आ) गोहाटी	आठ गाँव फैन्मी बाजार केदार रोड माली गाँव पाण्डु रतन प्लेस पान बाजार	श्री दि० जैन चैत्यालय श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन चैत्यालय श्री दि० जैन चैत्यालय श्री दि० जैन चैत्यालय श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन विद्यालय
(इ) म्वाल पाडा	धुवडी	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन औषधालय
(ई) कचर	सिलचर	श्री दि० जैन चैत्यालय	
(उ) काम रूप	नलवाडी रगीया टीहू वरपेटा रोड विजय नगर	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	ऋषभदेव दि० जैन पाठशाला श्री दि० जैन विद्यालय श्री दि० जैन औषधालय

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं का नाम
(ऊ) लखीमपुर	ढकवा खाना दिब्रूगढ लखीमपुर तिनसुखिया	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	
(ए) नी गाँव	हैवर गाँव	श्री दि० जैन चैत्यालय	
(ऐ) शिव सागर	गोलाघाट जोरहाट शिवसागर	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	

—:○:—

अंग—

अंग मगध देश के पूर्व में था। आजकल के भागलपुर जिले और मुँगेर के समीप का प्रदेश पूर्वकाल में अंग जनपद कहलाता था। इसकी राजधानी चम्पा थी। प्राचीन भारत में चम्पा एक सुन्दर, समृद्ध एवं जनघन से सम्पन्न नगर था। भगवान महावीर और बुद्धकाल से पूर्व अंग एक शक्तिशाली जनपद था। चम्पा नगरी चम्पा नाम की नदी के पूर्व में बसी हुई थी, जो अब भी भागलपुर में चम्पानाला के नाम से प्रसिद्ध है।

कनिष्क ने भागलपुर में २४ मील दूर पत्थर घाटा पहाड़ी के पास चम्पा नगर की स्थिति मानी है। यह गंगा तट पर अवस्थित है। प्राचीन काल में यह बहुत समृद्ध नगर था और व्यापार का केन्द्र भी। महाभारत के अनुसार अंग में भागलपुर और मुँगेर सम्मिलित प्रतीत होते हैं उत्तर में यह कोसी नदी तक फैला हुआ था। एक समय अंग जनपद में मगध भी सम्मिलित था और यह सम्भवतः समुद्र तक फैला हुआ था।

महामारत से यह भी जान पड़ता है कि यहाँ के राजा अंग के नाम के आधार पर इसका नामकरण अंग किया गया था। रामायण के अनुसार यही पर ऋद्ध शिव से भयभीत होने के कारण मदन माग कर आया था। यहीं वह अपने शरीर को छोड़कर अनग हुआ था। अतः मदन के अंग त्याग करने से यह प्रदेश अंग कहलाया। सुमंगला विलासिनी में बताया गया है कि इस प्रदेश में अंग (अगा) नामक लोग रहते थे। इस कारण यह अंग जनपद नाम से विख्यात हुआ। अंग लोगों ने अपने शरीर की सुन्दरता के साथ यह नाम पाया था बाद में धीरे-धीरे यह नाम रूढ़ हो गया।

बुद्ध पूर्वकाल में राजसत्ता के लिए अंग और मगध में संघर्ष चलता था। श्रृंगिक बिम्बसार अंग और मगध दोनों का स्वामी माना जाता था। पालिनिपिटक में अंग और मगध को एक साथ 'अंग मगधा' द्वन्द्व समास में प्रकट किया है।

श्रृंगिक की मृत्यु के बाद कुणिक (अजातशत्रु) ने चम्पा को अपनी राजधानी बनाया था क्योंकि पितृशोक

के कारण राजगृह में रहना उसे रुचिकर प्रतीत नहीं हुआ अतएव उसने चम्पा को राजधानी बनाया। भगवान महावीर ने चम्पा में विहार किया था जब उनका समव-शरण चम्पा में पहुँचा तब राजा अजातशत्रु ने उनका भक्तिपूर्वक वन्दन किया और धर्मोपदेश सुना। आचार्य जिनसेन ने आदिपुराण में (१६, ५२, २६, ४७) अंग देश उल्लेख किया है।

बिहार

चम्पा की रानी गङ्गरा ने 'गङ्गरा पोखरणी' नाम का एक तालाब खुदवाया था। जैनियों के १२ वे तीर्थंकर वासुपूज्य के गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान और निर्वाण में पंच कल्याणक हुए थे। वासुपूज्य स्वामी का मन्दारगिरि निर्वाण स्थल होने के कारण यह सिद्ध क्षेत्र के नाम से जैन-साहित्य में उल्लिखित है। उस समय चम्पा नगर बहुत विस्तृत था। उसका विस्तार ४-८ कोस का बताया गया है। चम्पा के मनोहर उद्यान में वासुपूज्य ने दीक्षा ली थी। यह उद्यान मदारगिरि का है। आचार्य गुणभद्र के अनुसार वासुपूज्य का निर्वाण मनोहर उद्यान में भाद्रपद शुक्ला १४ के अपराह्न में ६४ मुनियों के साथ हुआ था जैसा कि उत्तर-पुराण के निम्न पद्यों से स्पष्ट है—

‘अग्न मन्वर शैलस्व सानुस्थान विमूषणे,

बने मनोहरो दाने यत्यङ्कासनमाश्रित.।

मासे भाद्रपदे ज्योतिषे चतुर्बन्धया पराह्न के,

विशाखाया ययौ मुक्ति चतुर्नयनि संयतः॥’

(उत्तर पुराण ५२/५२)

वर्तमान में अनुश्रुति और मान्यता है कि चम्पा नाले में वासुपूज्य भगवान के गर्भ और जनकल्याणक मनाये गये। मदारगिरि में दीक्षा और केवल ज्ञान तथा चम्पापुर भगवान का निर्वाण हुआ बताया जाता है। इस सब

विवेचन से अंग देश और चम्पा नगरी का परिचय मिल जाता है।

मंदारगिरि पर पापहारिणी सरोवर पहाड़ की तलहटी में है जिसे राजा आदित्यसेन की रानी कोनादेवी ने बनवाया था। आदित्यसेन सातवीं शताब्दी में भगवत का शासक था। पहाड़ी पर शिखरबद्ध एक दि० जैन बड़ा मन्दिर है। पो० आ० कोसी जिला भागलपुर में वासुपूज्य के प्राचीन चरण स्थापित है। इसी बड़े मन्दिर के निकट शिखरबद्ध एक छोटा मन्दिर है। इसमें तीन प्राचीन चरण युगल बने हुये हैं।

गया—

भारतीय साहित्य में 'गया' का उल्लेख अनेक स्थानों पर हुआ है। वैदिक और बौद्ध वाङ्मय में गया का उल्लेख प्रचुर मात्रा में मिलता है परन्तु जैन-साहित्य में कहीं भी 'गया' का उल्लेख उपलब्ध नहीं होता। हो सकता है कि बिहार प्रान्त रचित जैन साहित्य विनष्ट हो गया हो। गोरथगिरि और प्रवरगिरि की पर्वतमालाएँ आज बल बारबर पहाड़ियों के नाम से प्रसिद्ध हैं। गोरथगिरि का उल्लेख कलिंग सम्राट खारवेल के हाथी गुफा शिलालेख में हुआ है। इससे उसकी प्राचीनता में कोई सन्देह नहीं है। बारबर की पहाड़ियों में उपलब्ध जैनावशेष और ब्रह्मग्योति पर्वत पर प्राप्त जैन चिह्नों से उसकी महत्ता का स्पष्ट बोध होता है। यह पूरा प्रदेश उत्तुंग पर्वत-मालाओं, सघन जंगलों, गहरी घाटियों, नदियों और सरोवरों की भूमि होने के कारण प्राचीन ऋषि पुत्र श्रमणों की एकान्त साधना का आकर्षण केन्द्र रहा है। हो सकता है कि परवर्ती काल में गया प्रदेश विमुक्त हो अतः गया के सम्बन्ध में अन्वेषण होना चाहिये जिससे ऐतिहासिक तथ्यों द्वारा गया का प्रमाणिक इतिवृत्त प्रकाश में आ सके।

वर्तमान गया नगर जैन समाज का प्रमुख केन्द्र है। इसके विकास एवं उत्थान में गया जैन समाज का सक्रिय सहयोग रहा है। नगर के मध्य में जैन गर्ल्स हाई स्कूल, जैन गर्ल्स मिडिल स्कूल, जैन पाठशाला, जैन औषधालय, जैन स्वाध्याय मन्दिर, जैन ग्रन्थालय, वाचनालय, जैन छात्रवृत्ति फण्ड, जैन धर्मशाला और महावीर ब्लड बैंक जैसी उपयोगी संस्थाएँ स्थानीय जैन समाज की अमिश्चित

का प्रमाण है।

गया जिले में स्थित टिकारी, बंधुगंज, बारसलीगंज, चेर आदि स्थानों के जैन मन्दिरों का उल्लेख यथास्थान किया गया है। गया के जैन समाज ने एक विश्वास सभा-भवन का भी निर्माण किया है।

गिरीडीह—

बिहार प्रान्त में गिरीडीह एक प्रमुख नगर है। यहाँ जैन-संस्कृति का अच्छा प्रभाव है। यद्यपि जैनियों की संख्या कम है केवल ८६ घर हैं जिनकी कुल जनसंख्या ५६८ के लगभग है। यह मधुबन से १६ मील पूर्वोत्तर में है। यहाँ दो दि० जैन मन्दिर हैं उनमें पचायती दि० जैन मन्दिर ५०० वर्ष से अधिक प्राचीन बताया जाता है जिसमें मूलनाथक प्रतिमा आदिनाथ की है जो ३½ फुट ऊँची पद्मासन प्रतिमा है। मन्दिर नयनाभिराम है। दूसरा पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर है जो अत्यन्त सुन्दर है। उसमें दूसरे तीर्थंकर अजितनाथ और महावीर स्वामी की प्रतिमा प्रतिष्ठित हैं। यहाँ जैन-समाज में शिक्षा का प्रचार करने के लिये दि० जैन बालिका विद्यालय और महिला शिक्षा मन्दिर है। दि० जैन विद्यालय आदि प्रमुख शिक्षण संस्थाएँ हैं। एक दि० जैन वाचनालय भी है। इलाज के लिये सेठ सागरमल जी पाण्ड्या द्वारा स्थापित जैन होम्योपैथिक दातव्य चिकित्सालय है। यात्रियों के ठहरने के लिये दुमजिली नई धर्मशाला है जिसमें १५ सुन्दर कमरे हैं अन्य प्रबन्ध भी अच्छा है।

इस जिले में सम्मेद शिखर जैसा महान तीर्थ क्षेत्र है जिसका सक्षिप्त परिचय अलग लिखा गया है। इसके अतिरिक्त सरिया, गोमिया, साडन, पेटर बाजार, निमिया-घाट और पालगज आदि स्थानों के जैन मन्दिरादि का उल्लेख भी यथास्थान किया गया है।

ईसरी बाजार—

पूर्वीय रेलवे की ग्रेण्ड कार्ड लाइन पर विख्यात पारसनाथ स्टेशन है। गोमो जकशन एवं हजारी बाग रोड के बीच में पारसनाथ रेलवे स्टेशन के नाम से विद्यमान ग्राम का नाम ही ईसरी बाजार है। श्री सम्मेद शिखर जी यहाँ से १६ मील दूर हैं। शिखर जी जाने के लिये यात्रियों को यहाँ ठहरना होता है।

ईसरी ग्राम में स्टेशन से कुछ ही दूर सड़क पर ही

एक बड़ी सुन्दर दि० जैन धर्मशाला है। यात्रियों की सुविधा के लिये धूप, पानी, रोशनी, बर्तन, टेलीफोन आदि सभी सुविधाओं की पूर्ण व्यवस्था है। धर्मशाला में एक जैन मन्दिर भी है इसे दि० जैन तेरापंथी कोठी कहते हैं। मन्दिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान महावीर की ३ फुट ऊँची पद्मासन है। कोठी की ओर से मधुवन आने-जाने के लिये एक गाड़ी का प्रबन्ध है। इसके अतिरिक्त यहाँ पर श्री दि० जैन उदासीन आश्रम, बीसपथी कोठी, महिलाश्रम आदि हैं। उदासीन आश्रम की स्थापना पूज्य क्षुल्लक श्री गणेश प्रसाद जी वर्णी द्वारा हुई थी। पूज्य वर्णी जी ने अन्तिम समाधि तक यहाँ ही साधना की थी। आश्रम के अन्तर्गत एक सुन्दर भव्य मन्दिर, वर्णी स्मारक (स्तूप) सरस्वती मठ आदि विभाग हैं। महिलाश्रम में भी एक विशाल एवं सुन्दर दि० जैन मन्दिर है। मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की पद्मासन लगभग ४½ फुट उन्नत दर्शनीय है। यहाँ महिलायें धर्म साधना करती हैं।

बीसपथी कोठी में एक नया शिखरबन्द मन्दिर है। काले सगमरमर की ४ फुट ऊँची भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा विराजमान है। कोठी में दुमजिनी धर्मशाला है जिसमें सभी प्रकार की सुविधायें हैं। एक गाड़ी का भी प्रबन्ध है जो सम्मेलन शिखर यात्रियों को ले जाती है और लाती है। यहाँ दि० जैन शिक्षण सस्थाओं में श्री अजित प्रसाद मेमोरियल स्कूल, श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मिडिल स्कूल, पार्श्वनाथ दि० जैन बहुदृशीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय है। श्री गणेशवर्णी दि० जैन धर्मार्थ औद्योगिक है जिसमें नि शुल्क औषधियाँ वितरित की जाती हैं। सराक जैन छात्रों के लिये सराक जैन छात्रावास भी है। पारसबाणी मासिका का प्रकाशन भी होता है।

कोलुआ पहाड़—

गया से ३८ मील दूर कोलुआ पहाड़ है। यह पहाड़ हजारी बाग जिले की बतारा तहसील में है। यहाँ पहुँचने के लिये ग्राण्ड ट्रक रोड पर डोभी पाँचतरा से सड़क है। बतारा के लिये हजारी बाग से ग्राण्ड ट्रक रोड पर स्थित चौपारन से सड़कें हैं। गया से शेरघाटी हजरगज और लक्षारिया होकर भी मार्ग है किन्तु गया से हण्टरगज

घघरी होकर सीधा मार्ग है। गया से डोभी ३२ कि० मी० और हण्टरगज से घघरी ८ किमी० है। पहाड़ की चढ़ाई दो मील है। पहाड़ पर आदिनाथ भगवान की २½ फुट ऊँची सुन्दर मनोरम प्रतिमा है। भदिलपुर में भगवान शीतलनाथ की जन्मभूमि है। वहाँ इनके दो कल्याणक हुए हैं। यह आजकल का मोदल ग्राम है। जिसे भट्टलपुर कहा जाता है।

मन्दारगिरि क्षेत्र—

बिहार प्रदेश के भागलपुर जिले में भागलपुर से ४८ कि०मी० दूर मदारगिरि अवस्थित है। वहाँ रेल से, बस द्वारा भी जाया जा सकता है। बोमी के बस-स्टैंड से दि० जैन धर्मशाला २ फर्लांग दूर है। क्षेत्रीय कार्यालय से मन्दारगिरि पर्वत ३ कि०मी० दूर है।

मन्दारगिरि में चम्पापुर का मनोहर उद्यान है जहाँ भगवान वासुपूज्य के दो कल्याणक हुए हैं—दीक्षा और केवलज्ञान। अतएव प्रागैतिहासिक काल से यह पर्वत तीर्थ माना जाता है। यह सैठ निलकचन्द कस्तूरचन्द वारामती वालो का बनवाया हुआ कृष्ण और श्वेत पाषाण का एक दि० जैन मन्दिर है।

आगे चलने पर एक सरोवर मिलता है जिसे पापहारिणी कहा गया है। सम्भव है यह नाम भगवान वासुपूज्य के कारण मिला हो। मकर सक्रांतिक के दिन यहाँ वैष्णवों का मेला लगता है। यह सरोवर पहाड़ की तलहटी में है। जिसे आदित्यसेन की रानी कोना देवी ने बनवाया था। आदित्यसेन सातवीं शताब्दी में मगध का शासक बन गया था। इससे स्पष्ट है कि उस समय भी अंग मगध के अधिकार में था।

मिथिलापुरी—

विदेह में स्थित मिथिलापुरी उन्नीसवें तीर्थंकर मल्लिनाथ और द्वाकीसवें तीर्थंकर नमिनाथ की जन्मभूमि है। इन दोनों तीर्थंकरों के यहाँ गर्भ जन्म, दीक्षा और केवलज्ञान से ८-४ कल्याणक हुए हैं। इनमें तीर्थंकर मल्लिनाथ ने विवाह नहीं किया था। वे बाल ब्रह्मचारी थे, उनकी गणना पंचबालयतियों में की गई है। नमिनाथ तीर्थंकर ने विवाह भी किया, भोग भी भोगे और

प्रवृत्ति होकर तपश्चरण कर मुक्ति के पात्र बने। इस दृष्टि से मिथिला नगरी समादरणीय है। खेद है कि आज समाज इस क्षेत्र को सर्वथा भूल चुका है। इसलिये इसके उद्धार की ओर कोई योजना सम्भावित नहीं हुई। मिथिला में इस समय कोई स्मारक चिह्न नहीं रहा और न ही जैनियों का इस ओर ध्यान रहा है।

पाटलिपुत्र—

मगध की उत्तरकालीन राजधानी पाटलिपुत्र (आधुनिक पटना) थी। राजोद्यान के उभे हुए बहुसंख्यक पुष्पो के कारण इसके प्राचीन नाम कुसुमपुर पुष्पपुर और पुष्पभद्र थे। यूनानी इतिहासकार इसे पलिबोथा और चीनी यात्री पा-लिन-टू कहते थे। चीनी यात्री शुआव-च्वाङ्ग ने इस नगर की उत्पत्ति का रोचक पौराणिक कथन दिया है। कहा जाता है कि मगधराज अजातशत्रु (कूणिक) की मृत्यु हो जाने पर उदायि (४६७ ई०) को चम्पा में रहता अच्छा नहीं लगा जब वह अजातशत्रु के शयनागार आदि स्थानों को देखता था तब रोने लग जाता था। मन्त्रियों ने उसे स्थान-परिवर्तन की सलाह दी। अतएव अपने दो मन्त्रियों को किसी योग्य स्थान को खोजने के लिये भेजा। उन्होंने यहाँ एक पाटलिपुत्र को देखकर पाटलिपुत्र नगर बसाया। बौद्धों के महाविज्ञ के अनुसार अजातशत्रु के मन्त्री सुबीध और वर्षकार ने वैशाली निवासी बज्जियों के आक्रमण से बचने के लिये इस नगर को बसाया था। इससे स्पष्ट है कि मगध नरेश अजातशत्रु ने इसका प्रथम सूत्रपात किया और उदायि ने इस नगर का निर्माण किया। मगध से वैशाली जाते समय बुद्ध ने अजातशत्रु के अमात्यो को नगरयापन करते हुए देखा था।

पाटलिपुत्र मूलतः मगध में स्थित पाटलिग्राम नाम का एक गाँव था जो गंगा के दूसरी ओर कोटिग्राम के सम्मुख था। यह मागधी गाँव राजगृह से वैशाली और अन्य स्थानों को आने-जाने वाले महापथ पर स्थित एक पड़ाव था। पाटलिग्राम के दुर्गिकरण से जिसे युद्ध के जीवन-काल में सुनीध और वर्षकार नामक मगध के यात्रियों ने प्रारम्भ किया था, पाटलिपुत्र महानगर की नींव पड़ी थी।

पाटलिपुत्र का निर्माण मगध देश की गंगा, सोन

और गडक नामक महानदियों के संगम के समीप हुआ था किन्तु सोन नदी अब वहाँ से कुछ पीछे हट गयी है। यह नगर व्यापार का बड़ा केन्द्र था। यहाँ से सुवर्णभूमि (बर्मा) तक व्यापार होता था। प्रस्तुत नगर ६०० फुट चौड़ी और ३० हाथ गहरी एक विशाल परिसरा (खाई) से सुरक्षित था। मँगस्थनीज के अनुसार यह ती मील लम्बा और १½ मील चौड़ा था। अतस्थ परिसरा से २४ फुट की दूरी पर एक प्राकार था जिसमें ५७० बुज और ६४ द्वार थे। इस नगर के चार द्वार थे जिनसे अशोक की दैनिक-आय चार लाख कहापण थी। सभा में उसे नित्य एक लाख कहापण मिला करते थे।

फाह्यान ५वीं शताब्दी में पाटलिपुत्र आया था, वह उसकी गरिमा और महत्ता से प्रभावित हुआ था। वह लिखता है कि नगर के मध्य में स्थित राज-प्रासाद और महाकक्ष भद्र थे। नगर में महायान-धर्म का राधासामी नाम का एक ब्राह्मण आचार्य था। अशोक द्वारा निर्मित स्तूप के पार्श्व में एक हीयमान विहार था। वहाँ के निवासी धनी, समृद्ध और धर्मात्मा थे।

चीनी यात्री यवामच्वाङ्ग सातवीं सदी में यहाँ आया था। उसने गंगा के दक्षिण में लगभग १० ली. से अधिक परिधि वाला एक प्राचीन नगर देखा था जिसकी नीर्वें तब भी दृष्टिगोचर होती थी। यद्यपि नगर बहुत पहले ही वीरान हो चुका था जो प्राचीन पाटलिपुत्र नगर था। पाटलिपुत्र में उत्तरकालीन शिशुनागो, नन्दो, मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त और अशोक की राजधानी थी किन्तु गुप्त सम्राट समुद्रगुप्त की विजयों के पश्चात् गुप्त-सम्राटों का वहाँ आवास नहीं रहा। चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के शासनकाल में एक जनसकुल नगर था। छठी शताब्दी में हूणों के आक्रमण के समय भी वह नष्ट नहीं हुआ था। सातवीं सदी में हर्षवर्धन ने इसे पुनः स्थापित करने की चेष्टा नहीं की। पाटलिपुत्र जैन-धर्म और जैन-संस्कृति का केन्द्र रहा है। संस्कृत और प्राकृत साहित्य में इसकी स्थापना और समृद्धि आदि का सुन्दर वर्णन दिया हुआ है। राज-गृह के बाद पटना को मगध की राजधानी बनने का भी सोमाय्य प्राप्त हुआ है। १३वीं शताब्दी के विद्वान यत्तिमदन कीर्ति ने शासन चतुस्त्रिंशिक्ष में पाटलिपुत्र में गर्भग्रह से पुष्पदन्त की मूर्ति निकली थी ऐसा १२व पद्य में उल्लिखित किया है।

(१) पाटलिपुत्र की गणना सिद्ध क्षेत्रों में की गयी है क्योंकि मुलानार पटना के कमल दह से मुनिराज मुदर्शन का निर्वाण हुआ है। वहाँ एक टीकटी में उनके चरण स्थापित हैं। सामने दि० जैन मन्दिर और धर्मशाला हैं।

(२) जैन आगमों के उद्धार के लिये श्रमणों का प्रथम सम्मेलन हुआ था जिसे प्रथम वाचना का रूप दिया गया है।

(३) तत्त्वार्थाधिनम के भाष्यकार उमा स्वातिवाचक ने भाष्य की रचना पाटलिपुत्र में समाप्त की थी।

(४) चाणक्य ने नन्द राजा का विनाश कर मौर्यवंशी चन्द्रगुप्त को राजगृही पर बैठाया था। चाणक्य स्वयं प्रधानमन्त्री बना था।

(५) महावीर और सुतस्ति आदि श्रमणों ने विहार करते हुए यहाँ पदार्पण किया, ऐसा कहा जाता है।

(६) शकटाल मन्त्री के पुत्र म्थूनमद्र ने साधु दीक्षा लेने के बाद कोषा गणिका के दर्शन चतुर्मास किया था और अपने उपदेशों द्वारा उसे श्राविका बनाया था।

(७) नन्दिवर्धन कलिंग को विजित कर वहाँ की ऋषभदेव की मूर्ति विजयचिह्नन स्वरूप पाटलिपुत्र लाया था। वह प्रतिमा लगभग २०० वर्ष तक पाटलिपुत्र में रही। बाद में कलिंग सम्राट् खारवेल उस मूर्ति को पटना से लाया था और बड़े भारी महोत्सव के साथ उसे कलिंग की राजधानी में विराजमान की थी।

(८) स० १६८३ में सागवाड़ा के मट्टारक सकलचन्द्र के शिष्य मट्टारक रत्नचन्द्र ने लडेलवशी हेमराज पाटली की प्रेरणा से सुमीमचन्द्री चरित की रचना पाटलिपुत्र में गंगा के तट पर मुदर्शन के जिनालय में बैठकर की थी। उस समय के बादशाह मलीम (जहांगीर) का शासन था जैसा कि उसक निम्न वाक्यों में प्रकट है—

पत्तने पाटलिपुत्रे मगधान्तः प्रवर्तनी ।

स्वर्धुनी पाश्वर्त्तं मुदर्शनालय माश्रिते ॥२॥

सत्समसाहस द्वाज्ये सर्व ममेच्छाधिपाधिपे ।

रक्षत्यभधराचक्र निजिता खिल बिद्धिषि ।

सुमीमचकी चरित्र ।

(९) भारत सरकार के पुरातत्व-विभाग द्वारा पाटलिपुत्र का अनुसंधान किया गया। परिणामस्वरूप उत्खनन

में जो ऐतिहासिक सामग्री उपलब्ध हुई, लोहानीपुर से उपलब्ध जैन-मूर्तियों के गुप्तकालीन अवशेष जो चमकदार पालिश में सज्जित थे। अनेक सिक्के भी वहाँ प्राप्त हुये थे। इन सब उल्लेखों से पाटलिपुत्र की महत्ता का सहज मान हो जाता है।

पावापुरी—

‘पावाए णिव्वुदो महावीरो’ भगवान महावीर ने पावा से निर्वाण प्राप्त किया था। भगवान महावीर का निर्वाण कालिक कृष्ण चतुर्दशी के दिन प्रत्युष काल में स्वाति नक्षत्र में हुआ था। आचार्य पूज्यपाद ने भगवान महावीर के निर्वाण के सम्बन्ध में संस्कृति निर्वाण भक्ति में उपयोगी सूचनायें अंकित की हैं—

पदमवन दीर्घ का कुल विविध हुम लण्ड मण्डिते रम्ये ।

पावा नगरोद्याने कुत्सर्गेण स्थितः स मुनिः ॥१६॥

कालिक कृष्णास्यान्ते स्वातावले निहत्य कर्म रजः ।

अवशेषं सम्प्रापद व्यज रामरमक्षय सोहयम् ॥१७॥

परिनिर्बत जिनेन्द्र ज्ञात्वा विवुधा हयाशु चागम्य ।

देव तरु रक्त चन्दन काला गुरु मुरभिगो शीर्षः ॥१८॥

अभिन्द्रान्जित देह मुकुटानील मुरभि धूपवर माल्यैः ।

अम्पच्छं गणधरानपि गता दिव ल च वन भवने ॥१९॥

मुनिवर महावीर कमलवन में मरे हुए नाना वृक्षों में सुशोभित पावा नगर के मध्य उद्यान में कार्योत्सर्ग ध्यान में आरुह हो गये। उन्होंने कालिक-कृष्ण-पक्ष के अन्त में स्वाति नक्षत्र में अवशिष्ट सम्पूर्ण अघाति कर्म कलक का नाश कर अक्षय, अजर, अमर सौख्य प्राप्त किया। देवताओं ने जैसे ही भगवान का निर्वाण जाना वे तत्काल वहाँ पर आये और उन्होंने पारिजात, रक्त चन्दन, कालागुरु तथा अन्य सुगन्धित पदार्थ धूप और माला एकत्रित किये। तब अग्नि कुमार देवों के इन्द्र ने मुकुट से अग्नि प्रज्ज्वलित करके जिनेन्द्र देह का संस्कार किया। देवों ने जलधरो की पूजा कर अपने-अपने स्थानों की ओर प्रस्थान किया। उस समय मुर-अमुर द्वारा जलाई हुई दीदीप्यमान दीपकों की पंक्ति से पावापुरी का आकाश जगमगा उठा था। उसी समय से ससार के प्राणी भक्ति से भरत-क्षेत्र में प्रतिवर्ष सम्राटपूर्वक ‘दीप-मालिका द्वारा भगवान की पूजा करते हैं।’ उसी समय में दीपमालिका का उत्सव मनाया जाने लगा।

कहा जाता है कि पाषा का वर्तमान मन्दिर (जल-मन्दिर) जहाँ चरण विराजमान हैं, वही बनाया गया था। पद्म सरोवर के मध्य से टीले पर श्वेत सगमरमर का सुन्दर मन्दिर बना हुआ है। मन्दिर तक पहुँचने के लिये लाल पाषाण-पुल बना हुआ है। इसी में भगवान महावीर के चरण-चिह्न विराजमान हैं।

राजगिर—

राजगिर एक प्राचीन ऐतिहासिक स्थान है। यहाँ बौद्ध तीर्थंकर मुनि मुत्तनाथ के गर्भ, जन्म, तप और ज्ञान के चार कल्याणक हुए हैं। यह पाटलिपुत्र (पटना) से ६० मील दूर स्थित है, इसे गिरिवज्र कहते हैं। रामायण काल में भी इसे गिरिवज्र कहा जाता था। महाभारत काल में यह जरासंध की राजधानी थी और गिरिराज के नाम से ख्यात था। यह पाँच पर्वतों के मध्य में बसा हुआ था। इसे शिशुनाग वंश के राजा शिशुनाग वंश की राजधानी बनाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। इसे पंचशीलपुर और कुशान्तपुर भी कहा जाता था। भगवान महावीर और महात्मा बुद्ध ने यहाँ अनेक चातुर्मास किये थे। यहाँ जैन, बौद्ध और हिन्दू-मन्दिर बहुत संख्या में बने हुए हैं। अतः इन सबका तीर्थस्थान माना जाता है। यह जैन धर्मियों की न केवल तपोभूमि ही रही अपितु सिद्धभूमि भी है। भगवान महावीर के प्रथम गणधर गौतम इन्द्रभूति, सुधर्मस्वामी, जम्बूस्वामी (अन्तिम केवली) और अनेक मुनि पँजों की निर्वाण भूमि रही है।

राजगिर के पंच पहाड़ों पर जैन-मन्दिर बहुत हैं। विपुलगिरि या विपुलाचल पर अन्तिम तीर्थंकर भगवान महावीर का समवसरण सबसे पहले आया था। उनका पहला धर्मोपदेश कृष्ण-एकम के दिन प्रातः काल अभिजित नक्षत्र में हुआ था, इससे इस पर्वत की महत्ता स्पष्ट है। ऋषिगिरि पर अनेक साधुओं ने कर्मक्षय करने के लिये कठोर तप किया था।

वैशाली—

वैशाली एक प्राचीन ऐतिहासिक नगरी थी जिसे बाल्मीकि रामायण के अनुसार अलम्बुषा के पुत्र राजा विशाल ने बसाया था। अथवा दीवारों को तीन बार हटाकर विशाल करने के कारण इसका नाम वैशाली रखा

गया। श्रीमद्भागवत में विशाल द्वारा वैशाली के बसाये जाने का उल्लेख है। आचार्य हेमचन्द्र ने घनघान्य से भरपूर विशाल नगरी को वैशाली माना है। वैशाली के अन्तर्गत परकोटे थे जैसा कि निम्न वाक्य से स्पष्ट है—

‘वैशाली नगरं गामुत गामुतन्तरे तीहि पकारेहि परि-
पिरक्तं, तीसु ठानेसु गोपुर टटाल कोटक मुक्ते।’

वैशाली नगर में दो-दो मील पर (गामुत-गामुति) एक-एक परकोटा बना हुआ था और उसमें तीन स्थानों पर अट्टालिकाओं सहित प्रवेश द्वार बने हुए थे। सारे वज्जीसभ की राजधानी वैशाली थी। आजकल वह स्थान बसाढ नाम से प्रसिद्ध है। इसके आस-पास मीलों तक विस्तृत अबोध पाये जाते हैं जो उसकी विशालता के सूचक हैं। बसाढ के आस-पास ही कुण्डपुर वाणिज्य ग्राम, कोलुआ, कूमन छपरा गादी आदि स्थान थे। वैशाली के उत्खनन से जो सीले, मुहरे प्राप्त हुई हैं उन पर वैशाली नाम अंकित है।

मुजफ्फर जिले में स्थित बसाढ ही वैशाली है। वैशाली कब बसाई गयी इसका कोई स्पष्ट उल्लेख देखने में नहीं आता किन्तु वैशाली गणतन्त्र की स्थापना ईसा की छठी शताब्दी पूर्व हुई थी। वैशाली की उस मुहर में कुण्डपुर का भी उल्लेख है।

वैशाली का इतिहास गौरवपूर्ण रहा है। विनयविद्रक के अनुसार वैशाली में ७७७७ प्रामाद, ७७७७ कूटागर, ७७७७ आगमगाह और ७७७७ पुष्करनियाँ थीं। उस समय वैशाली जनघन से पूर्ण अत्यन्त समृद्धशाली नगरी थी। तिब्बत से प्राप्त कुछ ग्रन्थों के अनुसार वैशाली में ७००० सोने के कलश वाले महल, १४००० चाँदी के कलश वाले महल और २१००० ताँबे के कलश वाले महल थे। इनमें उत्तम, मध्यम और जघन्य श्रेणी के लोग रहते थे।

नगर के मध्य में एक पुष्करिणी थी जिसका जल अत्यन्त स्वच्छ था। उसमें लिच्छवियों के अतिरिक्त अन्य को स्नान करना वर्जित था। उसमें पशु-पक्षी भी प्रवेश नहीं पा सकते थे। उसमें उपर लोहे की जाली लगी हुई थी और चारों ओर पक्की प्राचीर बनी हुई थी। सारे वज्जी-

शष्प संघ की राजधानी वैशाली थी। लिच्छवी रूपवान, अंग्रेज और तेज से सम्पन्न थे। वे ब्राह्मण-क्षत्रिय थे। वे ब्राह्मण-धर्म के अनुयायी नहीं थे। वे बर्हत्तों और चैत्यो की पूजा करते थे। वे अनुशासनप्रिय थे। उनमें धर्म-वस्त्रलता थी और वे कलाप्रिय थे। पाँच रंगों के वस्त्र-भूषणों से अपने शरीर को अलंकृत करते थे। उनकी सुन्दरता, अनुशासनप्रियता, धीरता और एकता, समुदारता आदि गुणों को देखकर महात्मा बुद्ध ने उन्हें विदेशी-देवों की उपमा दी थी, उनकी परिषद को देव-परिषद बतलाया था। बुद्ध का वैशाली के प्रति विशेष अनुराग था, वहाँ उनका कई बार आना हुआ। वैशाली की गणिका द्वारा बुद्ध स्तूप का निर्माण करना और नगर के बाहर उनके चैत्यो का होना, लिच्छवियों की वेशभूषा और उदारता उनके गहरे आकर्षण का कारण थी।

भगवान् महावीर का वैशाली से घनिष्ठ सम्बन्ध था। उनकी माता वैशाली गणतन्त्र के अध्यक्ष चेटक की पुत्री थी। उनका गौतम विशिष्ट था। चेटक महावीर के नाना थे। महावीर का जन्म वैशाली के कुण्ड ग्राम में हुआ था। लिच्छवी लोग पार्वनाथ के उपासक थे। वैशाली

में उनके अनेक चैत्य बने हुए थे। वैशाली की जनता महावीर का गुणगान करती थी। उनके अनेक चातुर्मास वैशाली में हुए थे। उनका समवसरण भी कई बार वहाँ पहुँचा था। उनके दिव्य उपदेश से जनता उनकी ओर केवल आकृष्ट ही नहीं थी वरन् उनके बतलाए हुए मार्ग का अनुसरण भी करती थी। बुद्ध की अपेक्षा महावीर का वैशाली में बड़ा समादर होता था। वह नगर महावीर के चरण-रज से पवित्र था।

वैशाली की समृद्धि और महत्ता को देखकर 'अजात-शत्रु' के मुख में पानी आ जाता था, उसके हृदय में वैशाली की समृद्धि के प्रति ईर्ष्या थी। वह उस पर अधिकार कर अपनी समृद्धि को बढ़ाना चाहता था। अतः उसने और उसके मन्त्री वर्षकार ने वज्जियों और लिच्छवियों में कूटनीति से भेद डालकर उनकी एकता को भग्न करा जैसे-तैसे उस पर अपना अधिकार कर लिया और उसकी समृद्धि को धूल में मिला दिया। यद्यपि उसके बाद भी वैशाली का अस्तित्व रहा परन्तु उसकी वैसी समृद्धि न हो सकी। आज भी उसके खडहर अपनी अवनति पर आँसू बहाते हैं।

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सस्थायें
(अ) भागलपुर	अङ्ग	श्री दि० जैन शिखरवद मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर (कोतवाली के पास)	श्री दि० जैन धर्मशाला
	बोसी	श्री दि० जैन प्राचीन मन्दिर	श्री मदारगिरि जी सिद्ध क्षेत्र दि० जैन कार्यालय पो० आ० बोसी
	चम्पापुर क्षेत्र नाथनगर	श्री सिद्ध क्षेत्र पादु का मन्दिर नाथनगर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री सिद्ध क्षेत्र वीसपथी मन्दिर नाथनगर	
	मन्दारगिरि	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला पापछनी तालाब
सुजागज			श्री दि० जैन मन्दिर शिखरघर
			दि० जैन सार्वजनिक पुस्तकालय
			श्री दि० जैन औषधालय जैन मन्दिर लेन
			श्री जैन नवयुवक सघ

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाये
			श्री धीरज लाल जैन घाभिक ट्रस्ट श्री वासुपूज्य दि० बालिका (महिला) विद्यालय जैन मन्दिर लेन बाद-विवाद परिषद
(आ) घनवाद	घरकेन्द्र जमशेदपुर झरिया कतरासगढ खरखरी महेसपुर पधरगढिया बोकारो चेरकी	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन चैत्यालय श्री दि० जैन चैत्यालय श्री दि० जैन शिक्षरबद मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन चैत्यालय श्री दि० जैन मन्दिर	
(इ) गया	गया	श्री दि० जैन बडा मन्दिर श्री दि० जैन प्राचीन मन्दिर	दानुलय जैन दातव्य औषधालय दि० जैन महिला शिक्षालय गजानन्द जैन दातव्य आयु० औषधालय जैन कखड वैक जैन पाठशाला जैन स्वाध्याय मन्दिर श्री दि० जैन धर्मशालाये श्री दि० जैन पुस्तकालय वाचनालय श्री दि० जैन सरस्वती भवन श्री दि० जैन विद्यालय श्री लाडूलाल जैन विद्यालय रफीगज (गया)
	ओरंगाबाद गाँव रफीगज टिकारी वारसलीगज	श्री दि० जैन चैत्यालय श्री दि० जैन शि० मन्दिर श्री दि० जैन शि० मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	
(ई) गिरिडीह	गिरिडीह	श्री दि० जैन पचायती मन्दिर श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर	दि० जैन बालिका विद्यालय दि० जैन भवन नई दुमजिली

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थानें
			दि० जैन विद्यालय महिला शिक्षा मन्दिर श्री दातव्य होम्सोपेधिक चिकित्सालय
ईसरी बाजार	श्री दि० जैन मन्दिर स्टेशन रोड महिलाश्रम	दि० जैन सरस्वती भवन कालूराम लक्ष्मी नारायण भवन उदासीन आश्रम स्टेशन रोड	
	श्री दि० जैन मन्दिर बीसपथी कोठी	प० अजित कुमार जैन मेमोरियल	
	श्री दि० जैन शि० मन्दिर, स्टेशन रोड तेरापथी कोठी	स्कूल स्टेशन रोड रामनिवास कृष्णा पारसनाथ	
	श्री दि० जैन शि० मन्दिर स्टेशन रोड	दि० जैन मिडिल स्कूल महिलाश्रम स्टेशन रोड	
		रा० ब० हरखचन्दजी पाण्ड्या उदासीन आश्रम स्टेशन रोड बीतराग विज्ञान पाठशाला बीसपथी कोठी	
		श्री दि० जैन रामनिवास कृष्णा, जैन महिलाश्रम स्टेशन रोड	
		श्री दि० जैन क्षान्ति निकेतन उदासीन आश्रम स्टेशन रोड	
		श्री दि० जैन तेरापथी कोठी स्टेशन रोड	
		श्री दि० जैन बीसपथी कोठी स्टेशन रोड	
		श्री गणेशवर्णी दि० जैन धर्मार्थ औपचालय, स्टेशन रोड	
		श्री गगबाल भवन उदासीन आश्रम स्टेशन रोड	
		श्री जोशीराम बैजनाथ धर्म- ध्यानाश्रम, उदासीन आश्रम स्टेशन रोड	
		श्री पारसनाथ दि० जैन हा० सं० स्कूल स्टेशन रोड	
		श्री रामनिवास कृष्णा जैन कालेज स्टे० रोड	
		श्री सूरजमल बसन्ती लाल भवन, उदासीनाश्रम	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थाप	अन्य संस्थाओं का नाम
(उ) हजारी बाग	मधुबन	अजितनाथ जिनालय	दातव्य धर्मार्थ औषधालय तेरापथी कोठी
		चन्द्रप्रभु जिनालय	दातव्य धर्मार्थ औषधालय
		नेमिनाथ चैत्यालय	बीसपथी कोठी
		नेमिनाथ जिनालय	श्री दि० जैन धर्मशाला
		पार्श्वनाथ जिनालय	
		पार्श्वनाथ मन्दिर	
		पुष्पदन्त जिनालय	
		सहस्रकूट चैत्यालय	
		समव्यशरण मन्दिर	
		शान्तिनाथ जिनालय	
		शान्तिनाथ जिनालय तेरापथी कोठी	
		श्री सम्मदशिखर बीसपथी कोठी	
		विशाल दि० जैन मन्दिर	
	निमियाघाट	दि० जैन चैत्यालय	बीसपथी कोठशिखर जी धर्मशाला
	पालगज	श्री दि० जैन शि० मन्दिर	
	पेटखार	श्री दि० जैन चैत्यालय	श्री दि० जैन धर्मशाला
	साङग	दि० जैन (नया) मन्दिर	
	सरियानगर	दि० जैन चैत्यालय	दि० जैन धर्मशाला
		दि० जैन मन्दिर	दि० जैन कन्या पाठशाला
	चौपारन	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन महिलामंडल
	हजारी बाग	श्री दि० जैन चैत्यालय	दि० जैन रात्रि पाठशाला वटन बाजार
		श्री दि० जैन शिखरबन्द मन्दिर	गणेशवर्ती दि० जैन धर्मशाला श्री दि० होम्योपैथिक दातव्य चिकित्सालय वटन बाजार श्री दि० जैन भवन श्री दि० जैन भवन बड़ा बाजार श्री दि० जैन भवन बड़ा बाजार श्री दि० जैन कन्या पाठशाला श्री दि० जैन मध्य विद्यालय वटन बाजार

मन्दिर का नाम

स्थान का नाम

मन्दिर का नाम व स्थान

अन्य संस्थाओं के नाम
श्री जैन महिलाश्रम
श्री वीर वाचनालय बटन
बाजार

इचाक
इटसोरी

श्री दि० जैन मन्दिर
चैत्यालय (सेठ शिवकरण लाल
गणपतलाल बहजात्या गृह)

झूमरीतलैया

श्री दि० जैन नया मन्दिर
टकी रोड जैन मौहल्ला
श्री दि० जैन पुराना मन्दिर
मेनरोड जैन मन्दिर गली

श्री देशराज जगन्नाथ दातव्य
औषधालय राजगडिया रोड
श्री दि० जैन दुमजिली
धर्मशाला राजगडिया रोड
श्री दि० जैन कन्या पाठशाला
श्री दि० जैन पुस्तकालय
राजगडिया रोड
श्री जगन्नाथ जैन कालिज
श्री दि० जैन विद्यालय
जैन कालिज
जैन लाइब्रेरी

कोडरमा

रामगढ

श्री दि० जैन मन्दिर (दर्शनीय)
मेनरोड

जैन सेवा समिति
जैन तीर्थक्षेत्र
महिला मण्डल
संगीत कला केन्द्र
श्री दि० जैन कालिज
श्री दि० जैन मित्र सदन
दि० जैन बाल मन्दिर
श्री जैन धर्मशाला
श्री जैन कन्या पाठशाला
श्री जैन औषधालय

(क) मुजफ्फरपुर

(ए) मुजफ्फरपुर

गोपालगंज हथुआ
मुजफ्फरपुर

श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन चैत्यालय

भगवान महावीर उच्च
विद्यालय पर्यटन सूचना केन्द्र
के सामने
श्री वैशाली कुण्डपुर दि० जैन
तीर्थ क्षेत्र कमेटी मुजफ्फरपुर

समस्तीपुर

श्री दि० जैन चैत्यालय

ग्राम का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	सिवनी	श्री दि० जैन मन्दिर दरौली	श्री श्यामलाल जैन उच्चतर विद्यालय दरौली
	वैशाली	श्री दि० जैन मन्दिर (गधकुटी) बावन पोखर कुण्डपुर पद्मावती चैत्यालय	प्राकृत और जैन धर्मशोध संस्थान श्री दि० जैन धर्मशाला बामन - पोखर श्री दि० जैन धर्मशाला राजमार्ग कुण्डपुर
(ऐ) मुगेर	हेनरी बाजार मुगेर	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	
(ओ) नालन्दा	कुण्डलपुर	श्री दि० जैन शि० मन्दिर	श्री कुण्डलपुर जी अतिशय क्षेत्र दि० जैन कार्यालय श्री दि० जैन धर्मशाला नालन्दा बौद्ध विद्यालय श्री दि० जैन धर्मशाला
	नालन्दा		
	पावापुरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिद्ध क्षेत्र		
	पावागिरि	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन आग जल मन्दिर श्री दि० जैन शिखरबंद मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला श्री महावीर दि० जैन औषधालय श्री पावापुरी जी सिद्ध क्षेत्र दि० जैन कार्यालय
		श्री दि० जैन शिखरबंद मन्दिर श्री दि० जैन शिखरबंद मन्दिर श्री दि० जैन शिखरबंद मन्दिर श्री दि० जैन शिखरबंद मन्दिर श्री दि० जैन शिखरबंद मन्दिर श्री दि० जैन शिखरबंद मन्दिर श्री दि० जैन शिखरबंद मन्दिर	
	राजगीर	श्री दि० जैन मन्दिर	जैन सभा औषधालय राजगृह श्री केदार प्रसाद सरावगी धर्मार्थ हो० औषधालय श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर रत्नगिरि श्री दि० जैन मन्दिर रत्नगिरि श्री दि० जैन बड़ा मन्दिर " श्री दि० जैन मन्दिर श्रमणागिरि	श्री महावीर दि० जैन औषधालय

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
(अ) नवादा	विहारशरीफ	श्री दि० जैन मन्दिर श्रमणगिरि	श्री महावीर कीर्ति जैन
		श्री दि० जैन मन्दिर "	सरस्वती भवन
		श्री दि० जैन मन्दिर उदयगिरि	श्री राजगुरु जी सिद्ध क्षेत्र
		श्री दि० जैन मन्दिर वैमारगिरि	दि० जैन कार्यालय
(अ) पलामू	गुणाबा	श्री दि० जैन मन्दिर विपुलाचल	श्री विहार मन्दिर जी जैन
		श्री दि० जैन मन्दिर विपुलाचल	कार्यालय
		श्री दि० जैन मन्दिर "	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन प्राचीन मन्दिर लटेरी मुहल्ला	श्री गुणाबा जी सिद्ध क्षेत्र
(अ) पटना	हनुआ नवादा वारसलीगज डालटनगज	श्री दि० जैन मन्दिर	दि० जैन कार्यालय
		श्री दि० जैन शिखरबद मन्दिर	श्री जैन नवयुवक मंडल
		श्री दि० जैन शिखरबद मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन शिखरबद मन्दिर	जैन भवन
(अ) पटना	एकगरसराय बाट	श्री दि० जैन मन्दिर	जैन प्याऊ बम स्टैंड पथ
		श्री दि० जैन चैत्यालय	परिवहन निगम
		श्री दि० जैन मन्दिर	जैन युवा सगठन
		श्री दि० जैन मन्दिर	प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ दि०
(अ) पटना	गुलजारबाग इस्लामपुर जयपालचंद जैन पाटलिपुत्र कालोनी कचौरी गली कालीबीबी	श्री दि० जैन मन्दिर	जैन मन्दिर
		श्री दि० जैन चैत्यालय	प्राइमरी स्कूल जैन विद्या
		श्री दि० जैन मन्दिर	मन्दिर जैन मन्दिर रोड
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
(अ) पटना	गुलजारबाग इस्लामपुर जयपालचंद जैन पाटलिपुत्र कालोनी कचौरी गली कालीबीबी	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन चैत्यालय	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
(अ) पटना	गुलजारबाग इस्लामपुर जयपालचंद जैन पाटलिपुत्र कालोनी कचौरी गली कालीबीबी	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन चैत्यालय	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं का नाम
	कमलदह	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री कमलदह जी सिद्ध क्षेत्र, दि० जैन कार्यालय
	मीठापुर		श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन पाठशाला श्री जैन अग्रवाल होस्टल
	मुरादपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	तमोलीगली	श्री दि० जैन पचायती विशाल मन्दिर	
	बडरोसराय	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बीरीसराय	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बिहारशहर	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला (गली मे)
		श्री दि० जैन मन्दिर (गली मे)	श्री दि० जैन धर्मशाला
(क) पूर्णिया	किशनगज	श्री दि० जैन मन्दिर	जैन युवा मंडल एव शाखा अ० भा० जैन युवा फेडरेशन
	ठाकुरगज	श्री दि० जैन मन्दिर	
(ख) पुरुलिया	अनाई जामबाद	श्री दि० जैन पारसनाथ मन्दिर	
(ग) राजी	अगासिया	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
	चौकाहातु	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन विद्यालय
	हुरडी		श्री दि० जैन विद्यालय
	खूटी	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	नवाडीह		श्री दि० जैन पाठशाला
	गञ्जी	श्री दि० जैन दुमजिला मन्दिर	जैन ज्योति व सगीत कला केन्द्र रतनलाल सूरजमल दि० प्रा० स्कूल श्री अजीत जैन हो० चिकित्सालय श्री चान्दमल बाल मन्दिर श्री छगामल जैन स्मृति भवन श्री दि० जैन भवन श्री दि० जैन कन्या पाठशाला श्री दि० जैन वीर वाचनालय श्री जोखीराम मूलराज दि० जैन धर्मशाला
	तमाड	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	तिछाई	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन विद्यालय
	उरडी		श्री दि० जैन पाठशाला

जिल्ले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
(ब) संजाल परगना	बुंङ्ग	श्री दि० जैन मन्दिर	
	देवघर (बैद्यनाथ स्टेशन)	श्री दि० जैन चैत्यालय	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	कनकोई पो० मिहिजाम	श्री दि० जैन मन्दिर	
(ङ) सास	छपरा	दि० जैन मन्दिर दौलतगंज	श्री दि० जैन सरस्वती धर्मशाला खनुआ रोड समीप कटरा बाजार
		श्री दि० जैन पंचायती चैत्यालय कूटरा बाजार	अमण संस्थान (धर्मशाला) नन्दन पथ
(च) शाहबाद	दहिया काटोला	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
	दरौली	श्री दि० जैन चैत्यालय	श्री दि० जैन श्यामलाल हा० स्कूल
	हुथुआ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मीरगज	श्री दि० जैन चैत्यालय	
(क) शाहबाद	आरा	श्री दि० जैन चैत्यालय	देवकुमार जैन ओरियन्टल इन्स्टीट्यूट
		श्री दि० जैन मन्दिर	हरप्रसाद जैन हाई स्कूल
		श्री दि० जैन मन्दिर महादेवा रोड	जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थागार
			श्री दि० जैन बाल विश्राम
			श्री जैन कन्या पाठशाला
			श्री दि० जैन कन्या संगीत पाठशाला
			श्री दि० जैन रात्रि पाठशाला
			श्री दि० जैन युवक सघ
			श्री हरप्रसाद जैन कालिज
			श्री जैन कन्या पाठशाला
			हा० स्कूल
			श्री जैन कन्या पाठशाला
			हा० स्कूल पुस्तकालय
			श्री जैन कन्या पाठशाला
			मिडिल स्कूल पुस्तकालय
डालमियानगर		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर (देहरी ओन सोन)	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
(छ) सिंहभूमि	भसाढ़	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अशसिया पो० टीकर	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
	चायवाण पो० टीकर	नवीन दर्शनीय दि० जैन मन्दिर	ज्ञानचन्द कॉमर्स कालिज सुरजमल जैन शिक्षा सदन
(ज) बर्दवान	देवलटाड़ पो० टीकर	श्री प्राचीन दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
	निवाडी पो० टीकर	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन हाई स्कूल
	दोहमानी	श्री दि० जैन मन्दिर	

—:○:—

अहमदाबाद—

अहमदाबाद को अहमद शाह ने बसाया था। इससे पूर्व इस नगर का नाम असावल था। यहाँ मीलराजा भाषा का किला था। सन् १८०३ में अहमदाबाद पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया। यहाँ द्वेताम्बरों की अपेक्षा दिगम्बर मत को मानने वाले जैन लोगों की संख्या बहुत कम है। शहर में ४ दिगम्बर जैन मन्दिर हैं।

गिरनार—

भगवान नेमिनाथ के अतिरिक्त प्रद्युम्न कुमार शम्भु-कुमार और अनिरुद्ध कुमार आदि बहात्तर करोड़ सात सौ मुनियों ने ऊर्जयन्तगिरि से निद-पद प्राप्त किया। अतएव यह सिद्धक्षेत्र है और सभी के द्वारा वन्दनीय है, इससे पर्वत की महानता और पवित्रता स्पष्ट है। इस मनोहर गिरिराज की बन्दना करके चित्त को अन्तही शान्ति प्राप्त होती है। यहाँ भगवान नेमिनाथ के दीक्षाकल्याणक, केवलज्ञान कल्याणक और निर्वाणकल्याणक हुए हैं प्रद्युम्न कुमार आदि बहात्तर करोड़ सात सौ मुनियों का मोक्षस्थल है।

इस पर्वत की तलहटी में दो दि० जैन मन्दिर और दि० जैन धर्मशाला हैं। बड़ी लाल दि० जैन कोठी है। जैन धर्मशाला में एक हजार के लगभग यात्री ठहर सकते हैं। एक मन्दिर मुनि सुव्रतनाथ जी का है और दूसरे मन्दिर में सन् १५१० का एकपत्र और सन् १५४८ की साहजजीवराज पापडीवाल द्वारा प्रतिष्ठित प्राचीन प्रतिमा है, शेष मूर्तियाँ अर्वाचीन हैं। मूलनायक भगवान नेमिनाथ की कृष्ण-पाषाण की सन् १६४७ की प्रतिष्ठित प्रतिमा विराजमान है। धर्मशाला के ऊपर ही गगनचुम्बी ऊर्जयन्त गिरि अपनी निराली शोभा दर्शाता हुआ स्थित है।

धर्मशाला से पर्वत की चढ़ाई का द्वार १०० कदम की दूरी पर है। यहाँ अंग्रेजी और गुजराती भाषा में दो शिलालेख लगे हुए हैं उनसे जान पड़ता है कि जूनागढ़ के भूतपूर्व दीवान बेचहरदास बिहारीलाल उनके भाई और डाक्टर त्रिभुवनदास मोतीचन्द शाह के उद्योग से 'जूनागढ़ लाटरी' खोली गयी और उसमें जो रुपया एकत्रित हुआ उसमें से डेढ़ लाख रुपयों की लागत से काले पत्थर की

मजबूत सीढ़ियाँ गिरनार पर्वत की चारों ओर पर लगवायी गयी। इस द्वार से ही पर्वत पर चढ़ने की सीढ़ियाँ शुरू होती हैं।

हिंगणघाट—

यहाँ पर दो जैन मन्दिर हैं। इनमें से एक मन्दिर भगवान आदिनाथ के नाम से जाना जाता है। यह मन्दिर

गुजरात

हिंगणघाट की पुरानी बस्ती में नदी के पान्न से फलीगमर दूरी पर स्थित है। यह मन्दिर लगभग १५० साल पुराना है। मन्दिर किसने बनवाया, इसका कोई पता नहीं। मन्दिर का क्षेत्रफल लगभग ६००० स्क्वेयर फिट है। इसमें छोटी-बड़ी मिलाकर लगभग ३० मूर्तियाँ हैं। दूसरा मन्दिर हिंगणघाट की नयी बस्ती में स्थित ७० साल पुराना है। यह मन्दिर स्वर्गीय सेठ चाँद मलजी दोशी (जैन) ने बनवाया। इसमें एक बड़ा सभा मंडप भी है जिसका नाम सरस्वती भवन है।

यहाँ दिगम्बर जैन लोगों के लगभग ५० घर हैं। इनमें ६५ पुरुष, ५५ स्त्रियाँ एवं १०५ बालक-बालिकाएँ हैं।

साबरकांठा—

यहाँ चन्द्र प्रभुजी का एक मन्दिर है। यह मन्दिर कब बना उसकी कोई निश्चित दिनाङ्क नहीं मिलती है पर ऐसा माना जाता है कि यह मन्दिर प्राचीन ऋषभदेव (राजस्थान) बावन जिनालय से भी प्राचीन है। यहाँ मूलनायक चन्द्रप्रभु जी की प्रतिमा १६२८ की है। इस मन्दिर में गर्भगृह के साथ नौ कमरे हैं। उन कमरों में सब मिलाकर १५३ प्रतिमाएँ हैं। यहाँ पर जैनियों के केवल ६ घर हैं।

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
(अ) अहमदाबाद	अहमदाबाद		दि० जैन पाठशाला मुमुक्षु मण्डल दि० जैन पाठशाला वर्द्धमान सोसाइटी (जैन मन्दिर के पीछे) 'बीतराज विज्ञान पाठशाला दि० जैन पाठशाला दि० जैन पाठशाला न्यालचन्द जगरचन्द दि० जैन पाठशाला दि० जैन पाठशाला नानाजबुन्दरा दि० जैन पाठशाला श्री प्राण भाई देसाई
	रखीयाल		सन्तोष बेन पाठशाला C/o दि० जैन मन्दिर हुमडका डेला सेठ धन जी पानाचन्द दि० जैन धर्मशाला, रेलवे स्टेशन के पास सेठ त्रिभुवन दास दयाल जी विद्यार्थी फण्ड ट्रस्ट C/o दि० जैन मन्दिर, हुमडका डेला
	बासणा चौधरी		
(आ) अमरेली	अमरेली	श्री शान्तिनाथ दि० जैन मन्दिर कापड बाजार	
(इ) भावनगर	भावनगर	श्री सीमधर स्वामी दि० जैन मन्दिर जूनी मानक बाडी श्री दि० जैन मन्दिर हुमडका डेला	
	धोषा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सोनगढ	भगवान सीमधर स्वामी का जिन मन्दिर भगवान सीमधर स्वामी का मान स्तम्भ मन्दिर भगवान सीमधर स्वामी का समवसरण मन्दिर भगवान श्री महावीर स्वामी का जिनबिम्ब जैन स्वाध्याय मन्दिर श्री वर्द्धमान कुंदकुंद परमाणम मन्दिर	ब्रह्मचर्याश्रम दि० जैन मुमुक्षु मण्डल पाठशाला दि० जैन स्वाध्याय मन्दिर पुस्तकालय, वाचनालय, जैन अतिथि सेवा समिति दि० जैन धर्मशाला जैन स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट जैन विद्यार्थी ग्रुह आविका ब्रह्मचर्याश्रम शत्रुजय जी सिद्ध क्षेत्र भावनगर
(ई) जामनगर	जामनगर	श्री दि० जैन मन्दिर	

मिर्चों का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सत्सन्तों के नाम
(ब) जूनामिड़ गिरनार	जूनागढ़		श्री गिरनार जी सिद्ध क्षेत्र
(क) महुसाणा	तारगाजी		दि० जैन धर्मशाला
			दि० जैन धर्मशाला
			श्री तारंगा जी सिद्ध क्षेत्र
	मुदासना	दि० जैन ज्ञान मन्दिर	
(ए) पंचमहाल	पंचमहाल		पावागढ़ सिद्ध क्षेत्र पंचमहाल
	बड़ी आ	श्री दि० जैन मन्दिर	
(ऐ) राजकोट	राजकोट		दि० जैन मुमुक्षु मण्डल पाठशाला
		वाकानेर	पचनाथ प्लोट सदर बाजार
		बिछिया	दि० जैन पाठशाला
			दि० जैन पाठशाला
(ओ) साबरकाठा	बड़ोली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भडेसर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मडेसर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भालौडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भुनाई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चिसौडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चोटासन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	फतेपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गोरल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हिम्मतनगर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ईडर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जादर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जामला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जामबुडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कडिआदरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कोटडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मनानपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	माडवी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मऊ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मुडेटी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पोसीना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	प्रातिज	श्री दि० जैन मन्दिर	
	साबली	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्नान का नाम	मन्दिर का नाम व स्नान	अन्य संस्थाओं के नाम
	सलाल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	टाकाटुआ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	तलोद	श्री दि० जैन मन्दिर	
	टोरडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	विजयनगर	श्री १००८ आदिनाथ भगवान मन्दिर	दि० जैन पाठशाला तथा कन्याशाला
(औ) सुरेन्द्रनगर	मोरीवाड सुरेन्द्रनगर	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	

— ० —

फर्रुखनगर

यह कम्बा गुडगाँव जिले में दिल्ली से ३३ मील की दूरी पर बसा है। वि० स० १७७१ ज्येष्ठ की १ को फौजदार खाँ बिलोचया ने फर्रुखशेर बादशाह के दिल्ली के शासन में लाला सीताराम जी जैन की सहायता से बसाया था। इस कारण लाला सीताराम की बादशाही-दरबार में बड़ी प्रतिष्ठा थी। इस कार्य की सफलता से उन्हें चौधरी का पद मिला था। फौजदार खाँ का नाती ईशिरखाँ जवाहरसिंह मरतपुर के जाट राजा के साथ लडाई में पकड़ा गया और १२ वर्ष बन्दीगृह में रहा, फिर मरतपुर के राजा के कारिन्दा लाला खुशालराय खण्डेलवाल जैन शासन-कर्त्ता नियत हुए। उन्होंने फर्रुखनगर के जैन मन्दिर को अत्यन्त उन्नत और मनोरम बनवा कर धर्म-प्रभाव स्थापित किया, उस समय फर्रुखनगर का नाम जवाहरगढ़ रखा गया।

वि० स० १८१४ सन् १८५७ ई० के गदर में नवाब फौजदार खाँ का सत्वाधिकारी नवाब अहमद अली खाँ को ब्रिटिश गवर्नमेंट के विरुद्ध होने के कारण फाँसी लगाई गई। और फर्रुखनगर को गुडगाँव में शामिल कर लिया गया। नगर को बसाने में जैनियों का हाथ होने से यहाँ जैन लोग मुस्लिम रहे। अंग्रेजी राज्य में चौधरी का पद भोवीदास को—पाँचवी पीढ़ी में चौधरी माणकचन्द, छठवी पीढ़ी में चौधरी मूलचन्द को चौधरात का पद अंग्रेजों ने सम्मानपूर्वक दिया था। इससे जैन समाज का वहाँ पूर्ववत् सम्मान बना रहा।

वि० स० १८३७ में जैन पक्षी ने मोत्साह रथ यात्रा निकाली थी। जैनैतर लोगो ने विघ्न करना चाहा था, परन्तु असफल रहे। नगर में जियालाल जी अच्छे ज्योतिषी और दैव थे। उनकी उपाधि आयुर्वेद मार्तण्ड थी। वे चौधरी माणकचन्द जी के पौत्र और सुमेरचन्द के पुत्र थे।

यहाँ का शिखरबन्द मन्दिर दो चौक का है, मूल-

नायक प्रतिमा शीतलनाथ जी की है। स० १६५२ में जियालाल जी ने एक चैत्यालय बनवाया था और उसकी प्रतिष्ठा घूमघाम से की थी। सन् १८८४ में 'जैन प्रकाश' नाम का पत्र निकाला था। उनका निर्मित पचाङ्ग बराबर प्रकाशित होता है जिसका संचालन इनके मुपुत्र शिखरचन्द जी करते हैं।

हरियारा

रेवाड़ी—

रेवाड़ी जिला गुडगाँव में तहमील का सदर स्थान है। महेन्द्रगढ़ जिले में दिल्ली से ५२ मील दक्षिण-पश्चिम में छोटी लाइन का मुख्य जंक्शन है। यह कम्बा बहुत पुराना है। सन् १००० ई० में राजा रेवत ने इसे बसाया था। अपनी पुत्री रेवती के नाम से इसका नाम रेवारी या रेवाड़ी रखा। इसकी आबादी ६०,००० के लगभग है। बस्ती सघन बसी हुई है। कस्बे में गेहूँ, जौ, चना, लोहा, तमक और चीनी आदि का व्यापार होता है। यहाँ कासे और पीतल के अच्छे बर्तन बनते हैं। यहाँ जैनियों के २०० से भी अधिक घर हैं। यहाँ लाला मकलनलाल जैन अग्रवाल सम्पन्न व्यक्ति थे। वे आनरेरी मजिस्ट्रेट, बैंकर, म्यूनिसिपल चेयरमैन भी रहे हैं। वे सबरजिस्ट्रार और नम्बरदार भी थे। उनकी हवेली के पास ही जैन मन्दिर है। कस्बे में तीन शिखरबन्द मन्दिर और एक चैत्यालय उक्त लालाजी की हवेली के समीप है। नगर के बाहर आधा मील की दूरी पर जिन मन्दिर नशियाँ जी हैं। इसमें एक धर्मशाला भी है। १२ बीघा जमीन मन्दिर के नाम लिखकर मन्दिर पचायत के नाम सुपुर्द कर दिया था। नगर के मन्दिर से मगधिर बदी ५ के दिन जैन-रथोत्सव भी निकलता है।

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
(अ) अम्बाला	अम्बाला छावनी	श्री दि० जैन मन्दिर	जैन दवाखाना जैन गर्ल्स हाई स्कूल जैन होम्योपैथिक दवाखाना जैन मिडिल स्कूल श्री दि० जैन धर्मशाला जैन (पोस्ट ग्रेजुएट) कालिज जैन सेवक सघ जैन युवक सेवा सघ काशीराम जैन गर्ल्स हाई स्कूल एस ए जैन कालिज अखिल भारतवर्षीय दि० जैन युवा परिषद भगवान महावीर दि० जैन गर्ल्स हा० स्कूल महावीर मार्ग भगवान महावीर दि० जैन शिक्षा समिति
	अम्बाला शहर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जगाधरी	श्री दि० जैन मन्दिर चौक ब्राह्मणान श्री दि० जैन मन्दिर, जैन नगर	
	कालका	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कसना बूडिया (त० जगाधरी)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	साढौरा	श्री आदिनाथ दि० जैन मन्दिर श्री पार्श्वनाथ जैन मन्दिर	
	यमुनानगर	श्री दि० जैन मन्दिर, कैनाल रेस्ट-हाउस रोड, यमुनानगर	
(आ) चण्डीगढ़	चण्डीगढ़	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
(इ) फरीदाबाद	पलवल	श्री दि० जैन मन्दिर	दि० जैन महिला सिलाई केन्द्र जैन नवयुवक मण्डल श्री दि० जैन पुस्तकालय श्री दि० जैन धर्मशाला
(ई) गुडगाँवा	बादशाहपुर	श्री दि० जैन चैत्यालय श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन नशिया जी	
	बल्लभगढ़	श्री दि० जैन मन्दिर	
	फर्रुखनगर	श्री दि० जैन चैत्यालय श्री दि० जैन मन्दिर	
	फिरोजपुर झिरका	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	
	गुडगाँव	श्री दि० जैन नशियाजी बसई रोड	भगवान महावीर पार्क

ग्राम का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
(ड) हिसार	हेली मण्डी (पाटीदी)	श्री दि० जैन मन्दिर	दि० जैन बारादरी
	होडल	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन औषधालय
	झाडसा	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
	पांढीसेड़ा	श्री दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर	छावनी रोड़
	नगीना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नूह	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
	पलवल	श्री दि० जैन मन्दिर	दि० जैन पुस्तकालय
		श्री दि० जैन नशिया जी	जैन महिला सिलाई केन्द्र
			जैन नवयुवक मण्डल
	रेवाडी	श्री दि० जैन बड़ा मन्दिर	अ० भा० दि० जैन परिषद
(ड) हिसार		श्री दि० जैन चैत्यालय	दि० जैन महासमिति इकाई
		श्री दि० जैन कुई वाला मन्दिर	जैन बाल प्राइमरी पाठशाला
			जैन गर्ल्स हाई स्कूल
		श्री दि० जैन नया मन्दिर	(बड़ा मन्दिर)
		श्री दि० जैन नशिया जी	जैन गर्ल्स प्राइमरी पाठशाला
			जैन हाई स्कूल नशिया जी
			जैन मिलन
			जैन औषधालय
			जैन पुस्तकालय
			श्री दि० जैन धर्मशाला
(ड) हिसार	बंचारी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भिवानी	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	हाँसी	श्री दि० जैन चैत्यालय	दि० जैन धर्मशाला, किला बाजार
		मुहल्ला कानूनगो	
		श्री दि० जैन चैत्यालय	नमिसागर जैन धर्मार्थ औषधालय
		सदर बाजार	
		श्री दि० जैन बड़ा मन्दिर	श्री दि० जैन वाचनालय
	हिसार	किला बाजार	किला बाजार
(ड) हिसार		श्री दि० जैन मन्दिर	अ० भा० दि० जैन परिषद,
		दिल्ली गेट, गांधी चौक	युवा फेडरेशन
		श्री दि० जैन मन्दिर	दि० जैन धर्मशाला, नागौरी गेट
		जहाजपुल कोठी	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
		श्री दि० जैन पंचायती बड़ा मन्दिर, नागौरी गेट	दि० जैन महासमिति इकाई जैन गर्ल्स हाई स्कूल जैन महिला समाज नमिसागर जैन धर्मार्थ औषधालय नागौरी गेट श्री नमिसागर जैन धर्मार्थ बी० (शाखा) श्री दि० जैन मन्दिर
(ऊ) जीन्द	सिरसा जीन्द	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	जैन फ्री आई धर्मार्थ हस्पताल जैन सिलाई-कढ़ाई केन्द्र श्री महावीर जैन गर्ल्स हाई स्कूल श्री महावीर जैन पुस्तकालय, जैन गली श्री महावीर जैन सभा भगवान महावीर जैन कीर्ति स्तम्भ जैन हाई स्कूल, रेलवे रोड जैन नवयुवक मण्डल जैन औषधालय जैन पुत्री पाठशाला, मिटठल मुहल्ला श्री दि० जैन धर्मशाला
(ए) करनाल	करनाल	श्री दि० जैन मन्दिर मिटठल मुहल्ला	दि० जैन धर्मार्थ औषधालय जैन स्ट्रीट
	पानीपत	दि० जैन छोटा मन्दिर जैन स्ट्रीट प्राचीन दि० जैन बड़ा मन्दिर श्री दि० जैन चैत्यालय अग्रवाल मण्डी	दि० जैन शास्त्र भंडार-वाचनालय जैन स्ट्रीट जैन हाई स्कूल, जी० टी० रोड जैन कन्या पाठशाला जैन स्ट्रीट श्री दि० जैन धर्मशाला जैन स्ट्रीट
(ऐ) महेन्द्र गढ़	राजामण्डी धारुहेड़ा महेन्द्रगढ़	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन नशियां जी दि० जैन बड़ा मन्दिर दि० जैन चैत्यालय, जैनपुरी	श्री दि० जैन धर्मशाला श्रीमती कपूरीदेवी जैन शिशुशाला अ० भा० दि० जैन परिषद दि० जैन धर्मशाला

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
(ओ) रोहतक	नारनौल बहादुरगढ़ भटगाँव गनीर मण्डी गोहाना	दि० जैन मन्दिर, नया भगवान महावीर मार्ग	दि० जैन महा समिति हरियाणा
		दि० जैन मन्दिर पचायती (कुई वाला) जैनपुरी	दि० जैन औषधालय
		दि० जैन नशियाजी (शान्तिनाथ मन्दिर)	दि० जैन पुस्तकालय दि० जैन उदासीनाश्रम
			जैन बाँयज प्राइमरी स्कूल जैन गर्ल्स हाई स्कूल जैन गर्ल्स प्राइमरी स्कूल जैन हाई स्कूल नशिया जी जैन मिलन जैन बीर सेवा दल
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर (मण्डी)	
		श्री दि० जैन मन्दिर (शहर)	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर (नवीन) बाजार वाला	जैन धर्मशाला (आ० दि० जैन मन्दिर)
झज्जर	रोहतक	श्री दि० जैन मन्दिर, मुहल्ला सराय	नाला विच्छा लाल जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन प्राचीन मन्दिर होली मुहल्ला	श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री दि० जैन हा० स्कूल एण्ड ट्रेनिंग सेन्टर
			श्री दि० जैन कन्या मा० विद्यालय
			श्री दि० जैन पाठशाला
			श्रीमती मैना देवी जैन धर्मशाला
			श्रीमती मनोहरी देवी जैन
			धर्मार्थ होम्योपैथिक औषधालय
		श्री दि० जैन मन्दिर देहली गेट	जैन नवयुवक मण्डल
		श्री पार्ष्वनाथ दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
झज्जर	रोहतक	चौडला मन्दिर समीप बस अड्डा	अ० मा० जैन युवा परिषद
		श्री दि० जैन मन्दिर, मौ० बाबरा	भगवान महावीर पार्क

जिले का नाम

स्थान का नाम

मन्दिर का नाम व स्थान

अन्य संस्थाओं के नाम

श्री दि० जैन मन्दिर
घौ० पियुवाड़ा
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री० सराय
श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय
बभीची ला० नन्दलाल कपूरचन्द
श्री वर्धमान चैत्यालय
बा० हरद्वारी मल, अनाज मंडी

दि० जैन क्लब जती जी
सज्जर रोड
जैन धर्माथं औषधालय
बड़ा बाजार
जैन धर्मशाला मु० बावरा
जैन कन्या उच्च विद्यालय
जैन कीर्तन मण्डल
जैन मित्र मिलन
जैन पुस्तकालय, वाचनालय
मु० बावरा
जैन पुस्तकालय-वाचनालय
मु० पियुवाड़ा
जैन उच्च विद्यालय, बड़ा
बाजार
जोताराम जैन गर्ल्स हाई स्कूल
मु० बावरा
ला० अनुपमसिंह ट्रस्ट,
अनाज मण्डी
ला० कपूरचन्द फतेहचन्द जैन
ट्रस्ट धर्मशाला, रेलवे रोड
मा० शिवराम सिंह जैन
शिवराम पुष्पाजी मु० सराय
प्यारेलाल हलिया राम जैन
धर्माथं औषधालय,
मु० बावरा
श्री जैन जति जी आगनाय
सज्जर रोड
श्रीमती मिसरी बाई ट्रस्ट
सिबिल रोड
श्री विशन स्वरूप ट्रस्ट
रेलवे रोड
एस० एस० जैन लाइब्रेरी,
मु० बावरा

ग्राम का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
(श्री) सोनीपत	समासखा मण्डी गोहाना	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर होली मुहल्ला श्री दि० जैन मन्दिर मेन बाजार श्री दि० जैन मन्दिर (मण्डी वाला) श्री दि० जैन मन्दिर मु० सराय	अ० मा० दि० जैन युवा परिषद शाखा श्री दि० जैन धर्मशाला चेतनदास मु० सराय श्री दि० जैन धर्मशाला गज मुहल्ला श्री दि० जैन हाई स्कूल एण्ड ट्रेनिंग इन्स्टीट्यूट श्री दि० जैन कन्या माध्यमिक विद्यालय श्री दि० जैन महासमिति इकाई श्री दि० जैन शिक्षा प्रचारिणी सभा श्री मोतीराम कुन्दनलाल दि० जैन धर्मशाला श्रीमती मनोहरी देवी जैन धर्मार्थ औपधालय चतरसेन जैन धर्मशाला देवीपाडा श्री दि० जैन धर्मशाला मु० फलसा बुन्नीलाल नन्दकिशोर जैन सरफ धर्मशाला, गोहाना रोड श्री दि० जैन पुस्तकालय एवं वाचनालय हस्तलिखित शास्त्र भण्डार (दि० जैन मन्दिर) जैन गर्ल्स स्कूल, गज बाजार
	सोनीपत	श्री दि० जैन बड़ा मन्दिर श्री दि० जैन चैत्यालय देवीपाडा श्री दि० जैन मन्दिर मु० बीघरी श्री दि० जैन मन्दिर फलसा	

जिले का नाम

स्थान का नाम

मन्दिर का नाम व स्थान

जन्म संस्थानों के नाम

जैन नवयुवक मण्डल सभा,
सोनीपत मंडी

जैन सांस्कृतिक सभा

जैन विद्या मन्दिर स्कूल

नेमिसागर जैन कन्या

पाठशाला

पारस दास जैन धर्मशाला

(बाजार)

श्री जैन मित्र मण्डल



हिमाचल प्रदेश का सम्पूर्ण क्षेत्र हिमालय पर्वत में स्थित है। सम्पूर्ण देश वनों से आच्छादित है। पहाड़ी ढालों पर चाय की खेती होती है। ग्रामीण उद्योगों में भेड़ पालना, लकड़ी पर नक्काशी करना उल्लेखनीय है। यातायात के साधनों की अभी इस राज्य में कमी है।

हिमाचल-प्रदेश

नयी सड़को का निर्माण हो रहा है। शिमला यहाँ की राजधानी है। मनाली, धर्मशाला, कुल्लू तथा कांगडा स्वास्थ्यवर्धक पर्वतीय नगर हैं।

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सस्थाओं के नाम
सिरमोर	नाहन	श्री दि० जैन मन्दिर	दि० जैन धर्मशाला
	कालका	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चण्डीगढ़	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
	शिमला	श्री दि० जैन मन्दिर	दि० जैन सभा शिमला न० १
		मिडिल बाजार	श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री दि० जैन समा, लोअर बाजार, शिमला न० १
			श्री दि० जैन होम्योपैथिक धर्मार्थ औषधालय शिमला १
			श्री दि० जैन वाचनालय
			श्री दि० जैन सभा

'केरल' तमिलशब्द 'चेरल' का कन्नड रूप है। यह देश दक्षिण-भारत में स्थित है वैयाकरण पाणिनिये अष्टाध्यायी (४,१,१७५) में इसका उल्लेख किया गया है। इस देश को चेरलम् या चोलनाडु कहा जाता था। चेरलम् का अर्थ पर्वतमाला है। केरल देश ही चेर है। (सा० इ० इ०) पृष्ठ (५१, ५६, ८६, ९०, ९२, ९४) वर्तमान मालाबार, कोचीन और त्रावणकोर केरल देश में सम्मिलित थे। दक्षिण का मालाबार प्रान्त केरल जनपद कहा गया है। इसी जनपद में कोंकण के दक्षिण भाग में गोकर्ण क्षेत्र से कन्याकुमारी तक का क्षेत्र अन्तर्मुक्त होना था। डा० सरकार के अनुसार मलयालम भाषी समस्त भूभाग केरल जनपद है। जिन सेवाचार्य के आदि पुराण

में केरल की समृद्धि का वर्णन है। सेन सुत्रवन केरल का प्रथम उल्लेखनीय राज्य था। कुछ समय के लिये दक्षिण का आधिपत्य चेरो ने चोलो से छीन लिया था। केरल

केरल

के कल्लिकोट जिले के कस्बो या ग्रामो में जो जैन-मन्दिर पाये जाते हैं उनसे स्पष्ट है कि केरल में जैन-धर्म का अच्छा प्रचार रहा है।

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
(अ) कल्लिकोट	कलपट्टानार्थ	श्री अनन्त नाथ स्वामी दि० जैन मन्दिर (नार्थ वैनाड)	अनन्त कृष्णपुरम जैन पाठशाला चन्द्रप्रभु चैरी टेबल, विजय महल एम० एस० सी० फेमिली जैन ट्रस्ट कल्याण मन्दिर श्री जैन सेवा सदन अनन्त कृष्णपुरम श्री जैन सेवा समाज अनन्त कृष्णपुरम श्री सुबकृष्ण मेमोरियल जैन हाई स्कूल, अनन्त कृष्णपुरम
कोटसर		श्री शान्तिनाथ स्वामी दि० जैन मन्दिर वेष्णोगुड	
कुन्नमवेट			धर्मपाल जैन ट्रस्ट रत्नत्रय बिलास
वेन्नगुड (कोटसर)		श्री दि० जैन मन्दिर सुलतान पतेरी	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	वरदूर	श्री अनन्त स्वामी दि० जैन मन्दिर (साउथ बैनाड)	श्री आदिनाथ जैन ट्रस्ट, कडमने
(आ) कण्णूर	मानन्दवाडी	श्री आदिनाथ स्वामी दि० जैन मन्दिर	
	पालगुण्ड	श्री पार्श्वनाथ स्वामी दि० जैन मन्दिर, बैनाड नार्थ	
	पनमरम	श्री चन्द्रनाथ स्वामी दि० जैन मन्दिर, बैनाड नार्थ, पुत्तगाडी	
(इ) पालघाट	पालघाट	श्री चन्द्रनाथ स्वामी दि० जैन मन्दिर, जैन मेडु	

— ○ —

अहार क्षेत्र—

दि० जैन अतिशय क्षेत्र अहार जी मध्य-प्रदेश के अन्तर्गत जिला टीकमगढ़ से पूर्व की ओर स्थित है। टीकमगढ़ बलदेव गढ़ रोड पर टीकमगढ़ से १६ कि० मी० पर अहार तिगोल की पुलिया है। यहाँ से मदन सागर सरोवर के बाँध को पार कर पर्वत मालाओं के मध्य ५ कि० मी० की दूरी पर क्षेत्र अवस्थित है। टीकमगढ़ से क्षेत्र तक पक्की सड़क है। छतरपुर से भी सीधी सड़क क्षेत्र तक है। यहाँ सन् ११३३ और ११३६ की प्रतिष्ठित मूर्तियाँ उपलब्ध होती हैं। चन्देल-नरेश मदनवर्मन ने चेदि-विजय के पश्चात् मदनसागर बनवाया था। उसी के कारण इसका मदनेश सागर नाम पड़ा। मदनेश सागर पुर नाम का समर्थन शान्तिनाथ भगवान के मूर्ति लेख से भी ज्ञात होता है जिसमें 'येन श्री मदनेश सागरपुरे तज्जन्मनो निर्ममे' वाक्य से स्पष्ट है। एक दूसरे मूर्ति लेख में 'तटे मदन सागर निर्ममे' वाक्य आया है। इस क्षेत्र के अहार नामकरण के सम्बन्ध में मासोपवासी मुनि के आहार की जो घटना कही जाती है, उसकी पुष्टि का कोई प्रामाणिक उल्लेख अभी तक देखने में नहीं आया किन्तु इस आहार से अहार बन गया है, ऐसा कहा जाता है। विक्रम की १२ वीं शताब्दी से १६वीं शताब्दी के लेखों में अनेक जातियों, विद्वानों, आचार्यों और भट्टारकों आदि के नाम उल्लिखित मिलते हैं। उनसे स्पष्ट प्रतीत होता है कि उक्त क्षेत्र उस काल में समृद्धि से पूर्ण था। लेखों में कई अप्रमिद्ध जातियों और गौत्रों का उल्लेख भी है।

बडवानी—

पहले बडवानी एक छोटी रियासत थी। सन् १८६७ ई० में तत्कालीन नरेश जसवन्तसिंह जी ने ५०० हाथ लम्बी चौड़ी जमीन हरसुखराम जी छात्रावास आदि के लिये प्रदान की थी। बाद में जमीन का मूल्य बढ़ जाने पर इस जमीन के बदले दूसरी खराब जमीन देनी चाही किन्तु जैन-सभा के आन्दोलन के कारण राजा को अपना आदेश वापिस लेना पड़ा।

बजरंगगढ़—

यह क्षेत्र बजरंगगढ़ के नाम से प्रसिद्ध है। यह गुना से ७ कि० मी० दक्षिण दिशा की ओर है। क्षेत्र समतल भूमि पर अवस्थित है। चारों ओर की पर्वतमालाओं के कारण यहाँ का दृश्य नयनाभिराम है। यहाँ के विंगाल

मध्य-प्रदेश

दि० जैन मन्दिर में शान्तिनाथ, कुन्धुनाथ और अरहनाथ की कायोत्सर्गात्मक तीन प्रशान्त प्रतिमाये विराजमान हैं। प्रतिमाओं की भावाभिव्यञ्जना और कला-सौष्ठव दर्शनीय है। उनके दर्शन-पूजन में मन आनन्द विभोर हो जाता है। पाणाशाह जैन-धर्म का भक्त था। उसके मन में तीर्थंकरों की अगाध भक्ति थी। कहा जाता है कि अनेक स्थानों पर शान्तिनाथ और तीर्थ पुरलय की मूर्तियों का निर्माण पाणाशाह की ओर से सम्पन्न हुआ था। उनका प्रतिष्ठाकाल वि० स० १२३६ है। इससे स्पष्ट है कि बजरंगगढ़ का मन्दिर विक्रम की १३ वीं शताब्दी का है। पाणाशाह द्वारा प्रतिष्ठित प्रतिमा हल्के लाल पापाण अथवा कत्थई वर्ण की है। यहाँ नेमिनाथ चौबीसी की एक शिला-फलक है। उसमें नेमिनाथ की मूर्ति का प्रतिष्ठा-काल स० १२५० सन् ११६३ दिया है।

बन्धा (अतिशय क्षेत्र)—

दि० जैन अतिशय क्षेत्र बन्धा मध्य-प्रदेश के टीकमगढ़ जिले में दक्षिण की सुरम्य पहाड़ियों के मध्य में स्थित है। टीकमगढ़ से निवाडी होते हुए मार्ग बम्होरी बराना पड़ता है जो टीकमगढ़ से ५० कि० मी० दूर है।

क्षेत्र पर एक भोपरा है। इस भोपरे में मूलनायक प्रतिमा अजितनाथ की है जो स० ११६६ की प्रतिष्ठित है। चित्र शुक्ला त्रयोदशी को उसकी प्रतिष्ठा हुई, ऐसा उसके लेख से स्पष्ट है। मूर्ति प्रशान्त और प्रभावक है। इससे स्पष्ट है कि बन्धाजी का भोपरा १२वीं शताब्दी के

उपान्य समय में निर्मित हुआ है। पवा आदि भोपरे भी उसी समय में निर्मित हुए जान पड़ते हैं। इस मूर्ति के एक ओर भगवान् ऋषभदेव और दूसरी ओर समवनाथ की खड्गासन मूर्तियाँ प्रतिष्ठित हैं जिनका प्रतिष्ठा काल स० ११०६ है। इस गर्भगृह के निकट एक शिखरबद्ध विशाल मन्दिर है। इस शिखरबद्ध मन्दिर के निकट एक ओर मन्दिर है। संभवतः पहले वह एक मठ था। शिखरबद्ध मन्दिर की ऊँचाई ६५ फुट है। इसका निर्माण १८वीं शताब्दी में हुआ।

भिण्ड—

भिण्ड ग्वालियर से उत्तर-पूर्व ४८ मील दूर है। ग्वालियर से इटावा जाने वाली पक्की सड़क (४८ मील) पर भिण्ड अवस्थित है। सेंट्रल रेलवे (छोटी लाइन) ग्वालियर भिण्ड सेक्शन ५२ मील का टर्मिनल है।

भिण्ड का दुर्ग प्राकृतिक नहीं है। इसकी रक्षा के लिए दोहरी किलाबन्दी की गयी है। बाहरी दीवार कच्ची है। किला बुज्जी और चारो ओर परिखा से अलंकृत है। किला भदौरिया राजाओं द्वारा निर्मित समुच्छादारित एवं विस्तृत बताया जाता है। भदौरिया राजपूत चौहानों की एक शाखा है। उनका अन्तिम राजा अनिरुद्ध सिंह भदौरिया था। स० १७६४ में ग्वालियर के राजा सिधिया ने अनिरुद्ध सिंह को पराजित कर दुर्ग पर अधिकार कर लिया था। किले का निर्माण भदौरिया राजाओं ने किया था अन्य ने यह निश्चित नहीं है परन्तु भदौरिया का यह महावर प्रान्त कहलाता है।

प्रस्तुत भिण्ड जन-धन से परिपूर्ण एक नगर है। यहाँ प्रायः सभी जातियों के लोग निवास करते हैं। नगर में और उसके आस-पास के ८० गाँवों में जैन-समाज की अच्छी बस्ती पायी जाती है। यहाँ अनेक जैन मन्दिर हैं।

भोपाल—

भोपाल नगर कब बसा? इसकी निश्चित तिथि शत नहीं है। इसके नाम, भोजपाल, भुजपाल, भूपाल और भोपाल हैं। इस नगर को राजा भोज ने बसाया था इसी से इसका नाम भोजपाल प्रचलित हुआ। बाद में बिगड़कर भूपाल या भोपाल प्रचलित हो गया। उस समय यह नगर मालव राज्य में सम्मिलित था। संभवतः यह ईसा की ११वीं शताब्दी में बसा है। इसकी १३वीं शताब्दी

में भोपाल कुदसिया बेगम का राज्य था। इसके राज्य-काल में सन् १२२५ में भोपाल के चौक बाजार में आदिनाथ के विशाल मन्दिर का निर्माण हुआ था। मन्दिर का मुख्य द्वार इतना नीचा है कि दर्शक विनय सहित झुके बिना मन्दिर में प्रवेश नहीं कर सकता। इस मन्दिर में जो कलापूर्ण सामग्री विद्यमान है वह समसगढ़ के प्राचीन मन्दिर से लायी गयी है। मन्दिर में पाषाण द्वार, स्तम्भ, पद्मासन और खड्गासन मूर्तियाँ विद्यमान हैं। भोपाल के आस-पास का सारा प्रदेश अधिकांशतः जैन पुरातत्त्व अवशेषों से भरा पड़ा है। भोपाल के पास रायसेन जिला भी मालवा में था। स० १७८१ में वहाँ हनुमानचरित की रचना ब्रह्मदेवदास ने की। इससे लगता है कि भोपाल और मालवा के अनेक स्थानों पर जैन मन्दिर बने हुए थे। वहाँ जैनियों का आवास अच्छा था। रायसेन में तो मालवा के म० ललित कीर्ति वहाँ निवास करते थे। वहाँ भट्टारक गद्दी थी।

आज भी भोपाल और रायसेन जिले में जैन समाज की अच्छी आबादी है। कहा जाता है कि भोपाल का इहत्त तालाब भी भोज का बनवाया हुआ है। इससे भोपाल की अधिक प्रसिद्धि हुई। भोपाल में कई जैन मन्दिर, सभा भवन, स्वाध्याय भवन एवं धर्मशाला आदि हैं। शान्तिनाथ मन्दिर और विशाल स्वाध्याय भवन में, जिसकी प्रतिष्ठा १६६३ में हुई है इस मन्दिर में स० १०२८ से लेकर १३६६ तक की मूर्तियाँ विराजमान हैं। शरणा के नेमिनाथ मन्दिर में मूलनायक नेमिनाथ की प्रतिमा वि० स० १२६५ की प्रतिष्ठित है जो विदिशा से ६० मील दूर अयावन नामक गाँव से निकली थी। प्रतिमा मनोरम है।

छपारा—

मध्य-प्रदेश के मिर्जापुर जिले का छपारा एक सुन्दर नगर है। यहाँ जैनियों की अच्छी बस्ती है। जैन लोगों में धर्म के प्रति रुचि है। यहाँ एक शिखरबद्ध मन्दिर मनोज्ञ एवं सुन्दर है। उसके चार शिखर हैं जो सुवर्ण-कलशों से अलंकृत हैं। गर्भगृह में मूलनायक प्रतिमा भगवान् महावीर की है जो मटमैले पाषाण की है। यहाँ महावीर द्रुष्ट कमेटी है जो मन्दिरादि सस्थाओं का सञ्चालन करती है। मन्दिर में ऊपर से नीचे ६ वेदियाँ हैं।

मन्दिर में पाषाण की ३७ और धातु की २८ मूर्तियाँ हैं। चाँदी की एक मूर्ति है।

चन्देरी—

चन्देरी एक पुरातन ऐतिहासिक स्थान है। इसका पुराना नाम चम्पावती था। स० १८६३ के लेख में इसका नाम चन्द्रावती दिया है। चन्देलों के समय इसका नाम चन्देली पड़ा, बाद में चन्देरी हो गया। जान पड़ता है, जहाँ पुरानी चन्देरी बसी हुई थी, उसका नाम बूढ़ी चन्देरी हो गया। भारतीय साहित्य में जो कि जनपद के नाम से प्रसिद्ध है, वर्तमान चन्देरी से १५ किमी० उत्तर-पश्चिम में पुरानी चन्देरी के मगनावशेष हैं। गजेटियर और गाइड में ओल्ड चकेरी लिखा जाता है। ग्वालियर मुनरी महल में पुरातत्व संग्रहालय है उसमें चन्देरी से प्राप्त एक शिलालेख में प्रतिहारवर्षी १३ राजाओं के नाम अंकित हैं। इनमें सातवें राजा कीर्तिपाल ने प्राचीन नगर के दक्षिण में एक दुर्ग बनवाया और अपनी राजधानी वहीं ले गया। राजा ने दुर्ग का नाम कीर्तिगढ़ रखा, दुर्ग के पीछे एक सरोवर और एक मन्दिर बनवाया। राजा के नाम पर मन्दिर का नाम कीर्तिनारायण प्रसिद्ध हुआ। किला और तालाब तो अभी हैं परन्तु मन्दिर नहीं है, वह धरासाई हो गया जान पड़ता है।

चन्देरी की चौबीसी खुन्देलखण्ड में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है। उसकी विशेषता यही है कि जिस तीर्थंकर का जो वर्ण बताया गया है शिल्पी ने उसी वर्ण के पाषाण में निर्मित किया है। किले में अनेक जैन-मूर्तियाँ देखने को मिलती हैं। इस प्रकार की शिल्प कला अन्यत्र देखने को नहीं मिलती। इस चौबीसी का निर्माण सबाई सिधुई वंश गोत्रीय खण्डेलवाल जातीय हिरदेशाह फतहसिंह फौजदार के गुमास्ता सबाई सिंह ने और उनकी धर्मपत्नी कमला ने कराया था। इसकी प्रतिष्ठा सोनागिर के मठारक चन्द्रभूषण ने स० १८६३ में कराई थी। चौबीसी मन्दिर के पास ही धर्मशाला बनी हुई है जिसमें त्यागी के ठहरने की व्यवस्था है।

यद्यपि कीर्तिपाल या कीर्तिराज का समय निश्चित नहीं है फिर भी सन १०२१ में महमूद गजनवी के सामने कीर्तिपाल ने आत्म-समर्पण किया था। यदि यह अनुमान सही है तो कीर्तिपाल का समय ११वीं शताब्दी का पूर्वार्ध

हो सकता है। चकेरी का उल्लेख अलवरनी ने किया जो महमूद गजनवी के साथ आया था।

नई चकेरी से पुरानी चकेरी १३ किमी० दूर है। किसी समय यह सम्पन्न नगर रहा है और जैन धर्म का केन्द्र स्थल भी। जैन समाज ने इस क्षेत्र का पुनरुद्धार करने का प्रयत्न किया है।

चूलगिरि क्षेत्र—

बडवानी नगर के दक्षिण भाग में चूलगिरि क्षेत्र है। उसके शिखर से इन्द्रजीत और कुम्भकर्ण आदि मुनि मोक्ष गये हैं। अतः यह सिद्ध होता है कि यह सिद्ध क्षेत्र होने के कारण चन्दनीय है। निर्वाण काण्ड की गाथा में चूलगिरि को निर्वाण क्षेत्र बताया है—

“बडवानी वरणापरे दक्षिण नायामि

चूलगिरि सिहरे।

इन्द्रजियं कुम्भकर्णो जिव्वाण गवाण

मोते सि ॥”

इससे यह भूमि मुनियों की तपोभूमि और निर्वाण भूमि रही है। इसकी तलहटी में ३० दि० जैन मन्दिर हैं। मुनि चन्द्रसागर की छतरी है, तलहटी में चार धर्म-शालाएँ हैं। इनमें एक धर्मशाला का निर्माण सेठ रोडमल मेघराज सुखारी की ओर से हुआ है। इस पर्वत पर आदिनाथ मगवान की एक विशाल मूर्ति है जो ५२ हाथ ऊँची है किन्तु लोक में वह बावन गजा के नाम से ख्यात है। प्राचीन समय में यहाँ एक हाथ की ही कच्चा गज माना जाता था। मूर्ति बड़ी सुन्दर और मनोमुग्ध कर है। इस मूर्ति का निर्माण कब और किसने कराया, इसका कोई प्रामाणिक इतिवृत्त उपलब्ध नहीं होता। १३वीं शताब्दी के विद्वान मदनकीर्ति ने इसका उल्लेख किया है। इससे यह मूर्ति १३वीं शताब्दी से पूर्व रही है। स० १५१६ में रत्नकीर्ति ने इस मन्दिर का जीर्णोद्धार कराया और बड़े मन्दिर के पास में १० जिनालय भी बनवाये। उन्होंने इन्द्रजीत की मूर्ति की प्रतिष्ठा की। चूलगिरि पर सब मिलाकर ३० जिन मन्दिर हैं। उनमें कुल १३४ बिम्ब विराजमान हैं। चूलगिरि में बावन गज वाली मूर्ति देशी पाषाण की बनी हुई है। क्षेत्र पर सबसे पुरानी मूर्ति

सं १३११ की है। पादवंनाय की दो मूर्तियां सं १२४२ की हैं। एक चातुर्भूति १४८७ की बनी है। सं १३८० की भी मूर्तियां हैं।

धार—

धार नगर ऐतिहासिक नगर है। सन् ६१४ से ६४१ ई० से परमारवंशी राजा वीरसिंह ने अपनी तलवार से शत्रु कुल का नाश कर बसाया था। यह प्रतिहार राजा भोज की राजधानी थी। उस समय यह प्रसिद्ध नगर के रूप में ख्यात था और विद्या का केन्द्र था। भोज स्वयं संस्कृत भाषा का अच्छा विद्वान और कवि था। उसके बनाये हुए कई ग्रन्थ उपलब्ध हैं। वह विद्याव्यसनी था और विद्वानों का आदर-सत्कार करता था। राजा भोज के समय यहाँ दि० जैन मुनियों का बिहार और धर्मोपदेश होता था। राजा भोज भी विद्या प्रेमी था। लाल गड सधे के आचार्य महासेन जो सिद्धान्तों के पारगामी जयसेना-चार्य के प्रशिष्य और गुणाकर सेन के शिष्य थे, जो राजा भोज द्वारा पूजित थे।^१ सिधुल के महामात्य पर्व ने उनके चरणों की पूजा की थी।^२ इन्हीं के अनुरोध से महासेनाचार्य ने धारा में प्रद्युम्न चरित की रचना की थी। नवनन्दि ने सुदर्शन चरित की रचना सं ११०० में की। अमिजति द्वितीय ने सुभाषितरत्न सकोह की रचना वही की थी। आचार्य कल्प प० आणाघरजी ने धारा में महावीर पंडित से व्याकरण और धर्मशास्त्र का अध्ययन किया था। अनेकों को काव्यादिशास्त्र पढाए और अनेक ग्रन्थों की रचना नल कच्छपुर में जाकर की। इस प्रकार धार का जैन-समाज में महत्वपूर्ण स्थान है।

द्रोणगिरि—

द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्र है। यहाँ से गुरुदत्त मुनीश्वर ने निर्वाण प्राप्त किया। यह स्थान प्रकृति प्रदत्त मुक्षमा से परिपूर्ण है। पर्वत के दायें और बायें से काठिन और श्यावली नदियाँ सदा प्रवाहित रहती हैं। जान पड़ता है ये नदियाँ सिद्धक्षेत्र के चरणों को पखार रही हैं। यद्यपि पहाड़ विशेष ऊँचा नहीं है, पर्वत पर जाने के लिये २३२

सीढ़ियाँ बनी हुई हैं मानो चारों ओर वृक्षों ने क्षेत्र पर सौन्दर्यराशि बिखेर दी है। पहाड़ पर २८ मन्दिर हैं और तलहटी में १४। इनमें तिगोडा वालों का मन्दिर सबसे प्राचीन है जिसमें सं १५४६ की प्रतिष्ठित भगवान आदिनाथ की प्रतिमा विराजमान है। क्षेत्र का दृश्य बड़ा रमणीक है। मुमुक्षु जन ऐसे ही एकान्त और शान्त स्थान में आत्महित सम्पन्न करते हैं।

गन्धावल (गन्धर्वपुरी)—

गन्धावल मध्य-प्रदेश के देवास जिले में सोनकच्छ तहसील में मुख्यालय से लगभग ६ किमी० उत्तर की ओर सोमवती नदी जो काली सिन्ध में गिरती है, के किनारे अवस्थित है। कहा जाता है कि यहाँ गन्धर्वल या गन्धर्वसेन राजा का राज्य था। इसी से इसका नाम गन्धावल या गन्धर्वपुरी हो गया है। यहाँ भूगर्भ से अनेक जैन-मूर्तियाँ निकली हैं। जान पड़ता है यहाँ पहले अनेक जैन मन्दिर बने हुए थे। १२ फुट ऊँची कई मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। ग्राम पचायत और शासन विभाग में अनेक मूर्तियाँ एकत्रित की गयी हैं और कटीले तारों की बाढ़ लगाकर उनकी सुरक्षा की है। लोगों ने मकानों और मन्दिरों में जैन मूर्तियों का उपयोग किया है। वर्तमान ग्राम में एक दि० जैन मन्दिर जो प्राचीन है, जिसके जीर्णोद्धार से उसका प्रानापन मित गया है, समाज की उपेक्षा खटकती है।

गोलाकोट (अतिशय क्षेत्र)—

खनियाघाना से दक्षिण की ओर ५ मील और गुडर में १ मील पहाड़ी पर है। यहाँ एक ही मन्दिर में तीन दालानों में महम्मदों की सम्मा में मूर्तियाँ विराजमान हैं जिनमें १३५ जिनबिम्ब प्राचीन और पूजनीय हैं। ये प्रतिमायें सौम्य और मनोज्ञ हैं। शिलालेख भी हैं परन्तु अस्पष्ट होने से पढ़े नहीं जाते।

कहा जाता है कि पूर्वकाल में गोलाकोट में ७०० घर ददाभूरी परिवार के थे। अन्य लोगों की गणना अन्वेषणीय है। पाडाशाह को मन्दिर का निर्माता बताया जाता है

१—एषियाटिक का इंडिका जिल्द १ भाग ५ पादपद्य । प्रद्युम्न चरित प्रचलित ।

२—आसीत् श्री महासेनसूरि तूतघा श्री भू जराज्ञाचित । प्रद्युम्न चरित प्रचलित ।

३—श्री सिन्धु राजस्य महत्तमेन श्री धर्मोपदेशित

पर पाडाशाह का दृतिवृत्त अभी तक अन्धकार में ही है। उसे धूवीन जी का निवास करने वाला कहा जाता है। पचराई और गोलाकोट दोनों अतिशय क्षेत्रों का प्रबन्ध चौरासी दि० जैन मन्दिर ट्रस्ट खनियाधाना जि० शिवपुरी के द्वारा होता है।

गुना—

गुना मध्य-प्रदेश का एक जिला है। यह अच्छा सम्पन्न नगर है। अन्य जातियों के साथ नगर में परमार, खण्डेल-वाल, जायसवाल और खरोआ आदि जैन जातियों के लोगों का निवास है। यहाँ तीन शिखरबन्द मन्दिर हैं जिनकी व्यवस्था एक रजिस्टर्ड पचायत अशोक नगर द्वारा होती है। नगर में जैन पाठशाला, जैन सभा और औष-धालय आदि हैं। अशोक नगर में अनेक मन्दिर स्कूल आदि स्थापित हैं। गुना जिला में बजरंग गढ़ और धूवीन आदि क्षेत्र हैं जिनमें पुरातन मन्दिर और प्रतिमाएँ हैं। इन सब बातों से गुना जिला अपनी महत्ता रखता है। यहाँ ११वीं, १२वीं और १३वीं शताब्दी की प्रतिष्ठित प्राचीन मूर्तियाँ पाई जाती हैं।

खजुराहो—

भारतवर्ष के अन्य प्रान्तों के समान बुन्देलखण्ड का भी विशिष्ट स्थान है। बुन्देलखण्ड में छतरपुर जिले के अन्तर्गत खजुराहो एक छोटा-सा ग्राम है। यह खूडर नदी के किनारे बसा हुआ है। यह क्षेत्र महोबा से ४२ मील, सतना से ७३ मील और हरपालपुर से ६० मील की दूरी पर है। चन्देलवंशी राजाओं की राजधानी बनने का भी इसे सौभाग्य प्राप्त है। कलापूर्ण मन्दिरों के कारण यह पर्यटक-क्षेत्र बना हुआ है। यहाँ हिन्दू और जैन मन्दिरों की कला अनुपम और दर्शनीय है। चन्देलकाल में खजुराहो में ८४ विशालकाय मन्दिर बनवाये गये थे, अब केवल ३५ मन्दिर हैं। खजुराहो के मन्दिर तीन समूहों में विभक्त हैं। इनमें से पूर्वी समूह में ब्रह्म, बामन और जवारी ये तीन वैष्णव-मन्दिर हैं। शान्तिनाथ, आदिनाथ, पार्वनाथ एवं घटाई ये चार मन्दिर विशेष दर्शनीय हैं। शेष मन्दिरों का कला वैशिष्ट्य नहीं पाया जाता। यद्यपि ये प्राचीन मन्दिरों के अवशेषों पर निर्मित हुए हैं। बस स्टैंड से पूर्व की ओर लगभग एक मील की दूरी पर जैन

मन्दिर है। घटाई मन्दिर को छोड़कर शेष सभी मन्दिर एक परकोटे से परिवेष्टित हैं।

महोदपुर—

मध्य-प्रदेश के मालवा क्षेत्र में प्रसिद्ध नगर उज्जैन से ३० मील दूर महोदपुर (पश्चिमी रेलवे स्टेशन) रोड से १२ मील दूर क्षिप्रा नदी के तट पर अवस्थित है। नगर में एक प्राचीन दि० जैन मन्दिर, पाठशाला, स्वाध्याय-भवन और धर्मशाला आदि स्थापित हैं। मन्दिर में प्रतिष्ठित ३० प्रतिमाओं में से कुछ प्रतिमाएँ अति प्राचीन हैं। यहाँ का नवयुवक-मण्डल समाज के कामों में और धार्मिक कामों में अभिरुचि उत्पन्न करता है।

मन्दसौर—

मन्दसौर एक प्राचीन ऐतिहासिक स्थान है। प्राचीन काल में इसे दशपुर या दशागपुर कहते थे। दशपुर नगर में विक्रम की दूसरी शताब्दी में आचार्य समन्तभद्र योगीन्द्र ने बाद की भेरी बजाई थी। जैसा कि 'दशपुरनगरे भेरी मया ताडिता' वाक्य से प्रकट है। दश मुहल्ला होने के कारण सम्भवतः इसका नाम दशागपुर या दशपुर हुआ है। यहाँ पुरातत्व सामग्री और पुराने शिलालेख भी मिले हैं। दशपुर जैन संस्कृति का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। वर्तमान में यहाँ ५ दि० जैन मन्दिर और २ दि० जैन चैत्यालय हैं। जनकपुरा के दि० जैन मन्दिर में पूजन और शास्त्रसमा होती है। इसी मन्दिर में एक दि० जैन पाठशाला भी है जिसमें हस्तलिखित ग्रन्थों का अच्छा शास्त्र-मण्डार है।

मुक्तागिरि—

मुक्तागिरि को साढ़े तीन करोड़ मुनियों का निर्वाण स्थल बताया जाता है। यह मध्य-प्रदेश के बैतूल जिले में अवस्थित है। अमरावती से परतवाड़ा ५२ किमी०, परतवाड़ा से खुखी ६ किमी० और खुखी से मुक्तागिरि ६ किमी० है। क्षेत्र में इस समय ५२ मन्दिर हैं। उनमें अधिकांश मन्दिर अर्वाचीन हैं। नेमिनाथ जी की मूर्ति की प्रतिष्ठा १०वीं शताब्दी की है। क्षेत्र १०वीं शताब्दी से अधिक पुरातन नहीं है। कुछ विद्वानों का कहना है कि इस पर राजा श्रीपाल ने मन्दिर बनवाया था परन्तु इसका कोई प्रामाणिक लेख नहीं मिलता। इस क्षेत्र का

नाम मेरुगिरि है। कहा जाता है कि पर्वत पर एक भेड़ मरणासन्न थी, वहाँ कोई मुनि ध्यान कर रहे थे जब उन्हें ज्ञात हुआ कि भेड़ मृत्यु के निकट है तब उन्होंने उसे धर्मोपदेश दिया और जमीन-मन्त्र सुनाया जिससे वह मर कर देवलोक की गयी। वहाँ उसने पूर्व पर्याय और मृत्यु के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त की और पर्वत पर मोतियों की वर्षा की। उसी समय से इसका नाम मुक्तागिरि पड़ गया। क्षेत्र पर केशर वृद्धि घटानादि के सम्बन्ध में किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं।

राय० ब० डा० हीरालाल ने लिस्ट आफ हरिकृष्णन्स इन सी० पी० एण्ड बरार में मुक्तागिरि के लोगों का उल्लेख करने हुए लिखा है कि वहाँ ८ मन्दिर हैं। जिनमें ८५ मूर्तियाँ हैं। उनमें से बहुतों पर सबत्त दिये गये हैं जिनसे वे सन् १४८८ से लगाकर सन् १८६३ तक की सिद्ध होती हैं। खुली गाँव के भट्टारक पद्य नन्दिनी की छतरी बनी हुई है जिसका समय वि० स० १७८६ है। अब यहाँ मन्दिरों की संख्या ५२ हो गयी है।

पचराई—

यह क्षेत्र चौरासी की सीमा के अन्दर है। चौरासी के पूर्ण में बेगवती बेतवा नदी बहती है, उत्तर में मधुमती, दक्षिण में उरवसी और दक्षिण दिशा में विन्ध्य सुशोभित है। यहाँ पचगार्द और गोलकोट दो अतिशय क्षेत्र हैं। य दोनों क्षेत्र केवल बुन्देलखण्ड के ही गौरवस्वरूप नहीं हैं अपितु भारतवर्ष की महत्ता के भी चोतक हैं। यहाँ के कलात्मक पुरातत्वावशेष, जैन मन्दिर, जैन तीर्थंकर प्रतिमाएँ और यक्ष-यक्षिणी महत्वपूर्ण हैं।

पचराई में २८ दि० जैन मन्दिर पाडाशाह द्वारा बनवाये हुए बताये जाते हैं। स० ११२२, १२३२ और १३४५ की प्रतिष्ठित मूर्तियाँ हैं। तल भूमि एक परकोटे के घेरे में सजोए हुए हैं। क्षेत्र पर एक बाबडी है जो अपनी ऐतिहासिक कहानी को लिये हुए है। इन मन्दिरों का जीर्णोद्धार प्रसिद्ध उद्योगपति थावक शिरोमणि स्व० साहू शान्तिप्रसाद जी ने अपने ट्रस्ट से सहायता देकर करवाया है।

रेशदीगिरि—

प्रस्तुत क्षेत्र का नाम रेशदीगिरि या नंनागिरि है जो बरदत्तादि पञ्च ऋषिराजों की निर्वाण भूमि है। ऐसी

प्राकृत भक्ति निम्न गाथा से स्पष्ट है—

“वापस्स समवसरणो साहि्या वर वत्त मुणि वरा पंच ।
रिस्सिदे गिरि सिहरे पिम्बाण गया जमो तेसि ।”

यहाँ उत्खनन में एक प्राचीन मन्दिर और १३ मूर्तियाँ निकली थी। यह पार्वनाथ का सबसे पुराना मन्दिर है। मन्दिर की दीवार के एक शिलालेख से मन्दिर का निर्माण काल स० ११०६ पाया जाता है।

पहाड़ साधारण ऊँचा है। पहाड़ के ऊपर ३६ शिवालय हैं और १५ मंदाप में सरोवर के निकट हैं। अतः मन्दिरों की संख्या ५१ है। एक मानस्तम्भ है इनमें ३७ मन्दिर शिखरबद्ध हैं। एक मन्दिर पावापुरी के समान सरोवर के मध्य में बना हुआ है, इसे जल-मन्दिर कहते हैं।

सागर—

मध्य-प्रदेश में सागर का अपना विशिष्ट स्थान है। बुन्देलखण्ड का प्रमुख नगर है। यह विशाल सरोवर के किनारे छोटी-छोटी अनेक टेकडियों पर बसा है। स्वास्थ्य-प्रद वायु और प्राकृतिक सुषमा में परिपूर्ण है। पूज्यवर गणेशप्रसाद जी वर्णी की साधना भूमि है। यहाँ अनेक जैन मन्दिर और शिक्षण संस्थाएँ हैं। यहाँ जैनियों की संख्या १५००० में कम नहीं है। सागर जिनमें दो अनिशय क्षेत्र हैं जो बहुत समय तक उपेक्षित रहे बाद में सरकार के सहयोग से उनका उद्धार हो गया। पहला अतिशय क्षेत्र गहली के पास पटनागज में है और दूसरा देवरी के पास बीना बाग में है।

सारगपुर—

सारगपुर जिला राजगढ़ मध्य-प्रदेश में एक तीर्थ स्थान के रूप में प्रसिद्ध है। यहाँ जैनियों के अनेक घर हैं। यहाँ तीन मन्दिर हैं। दो पुराने मन्दिर हैं और एक आधुनिक है। प० दौलतराम जी ने तीर्थवन्दना में सारगपुर महावीर जी वाक्यों के साथ सारगपुर के महावीर-मन्दिर का उल्लेख नहीं हो जाता। इसके लिये अन्य प्रमाणों की आवश्यकता होती है। इसलिये इसकी प्रसिद्धि क्षेत्रों के साथ नहीं पाई जाती।

सतना—

सतना मध्य-प्रदेश का एक प्रतिभाशाली औद्योगिक

और व्यापारिक नगर है और रीबां समाग का प्राचीन नगर है। यह रेलवे स्टेशन, हवाई-अड्डा और बस मार्ग का केन्द्र है। अतिशय क्षेत्र खजुराहो से सतना ७२ मील दूर है। नगर से केवल ३ मील दूर पतमान दाई नामक अति प्राचीन जैन मन्दिर का प्रमुख भाग अभी भी विद्यमान है। यद्यपि मन्दिर में अब कोई मूर्ति नहीं है किन्तु चौखट में उत्कीर्ण तीर्थंकर मूर्तियाँ मन्दिर की साक्षी हैं। इससे स्पष्ट है कि यह क्षेत्र जैनियों का निवास स्थान रहा है।

नगर से १० मील दूर राम आश्रम में जैन-ऋषि की स्थापना कुछ वर्ष पूर्व हुई है। उसमें जैन-मूर्तियों का सग्रह नीरज जी जैन द्वारा किया गया है। इस समय नगर में जैन लोगो की सख्या लगभग एक हजार होगी।

शिवपुरी—

ग्वालियर से ६० मील दूर बम्बई-आगरा रोड पर शिवपुरी है। यह ग्वालियर राज्य की ग्रीष्मकालीन राजधानी थी। यह नगर बनो और पहाडों के मध्य में बसा है। यहाँ के म्यूजियम में नगर के किले से खण्डित मूर्तियाँ लाकर विराजमान की गयी हैं। पहले इस नगर का नाम सीपरी था। स्व० ग्वालियर नरेश माधवराज सिंधिया ने इसका नाम शिवपुरी किया है। शिवपुरी और उसके आस-पास के स्थान जैन सस्कृति के केन्द्र रहे हैं। कोलारस आदि स्थानों में आज भी १२वीं, १३वीं शताब्दी की मूर्तियाँ प्रतिष्ठित हैं।

१८वीं शताब्दी के प्रारम्भ में शिवपुरी बाण गंगा के निकट मोहनदाम खण्डेलवाल ने पार्वनाथ आदि चोबीस तीर्थंकरों और महादेव विश्वनाथ की मूर्तियों को स्थापित कर प्रतिष्ठा करवायी थी।

सोनागिर (सिद्ध क्षेत्र)—

यह क्षेत्र दतिया जिले में स्थित है। दतिया से ६ मील दूर ग्वालियर से ४० मील दूर दिल्ली-बम्बई लाइन पर सोनागिर स्टेशन है। स्टेशन से ३ मील दूर पहाडी पर मन्दिरों की क्रमबद्ध श्रृंखला दृष्टिगोचर होती है। निर्वाण काण्ड की 'गंगाणगकुमारो' गाथा के अनुसार साढ़े पाँच करोड़ मुनियों के निर्वाण का स्थान माना जाता है।

पर्वत पर शिखरबद्ध नयनाभिराम ७७ जिन मन्दिर विद्यमान हैं। पहाडी से नीचे तलहटी में १८ विशालकाय मन्दिर हैं। मन्दिर में तीर्थंकरों की सुन्दर मनोहर एवं प्रशान्त मूर्तियाँ विराजमान हैं। चन्द्रप्रभु का मन्दिर सबसे प्रमुख माना जाता है। इस मन्दिर का जीर्णोद्धार मथुरा के सेठ लक्ष्मीचन्द जी द्वारा करवाया गया था। मन्दिर के सामने कलात्मक समवसरण और सुन्दर नयनाभिराम मानस्तम्भ सुशोभित हैं। १५वीं शताब्दी में यहाँ कमल-कीर्ति भट्टारक की गद्दी थी। उन्होंने उस पर अपने शिष्य म० शुभचन्द्र को प्रतिष्ठित किया था। जिसका उल्लेख महाकवि रघू ने अपने हरिवंश पुराण प्रशस्ति में किया है।

क्षेत्र पर पुरातत्व सग्रहालय है जिसमें खडित मूर्तियों और शिलालेखों का सकलन किया गया है। एक सरस्वती भंडार भी है जिसमें कुछ हस्तलिखित और मुद्रित ग्रन्थों का सग्रह है जो यात्रियों के स्वाध्याय के लिये उपयुक्त हैं।

मन्दिरों में १३वीं शताब्दी से लेकर १८वीं शताब्दी तक की मूर्तियाँ विराजमान हैं। चन्द्रप्रभु के विशाल मन्दिर में १२ फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा विराजमान है। इसका जीर्णोद्धार मथुरा के श्री लक्ष्मीचन्द्र जी द्वारा हुआ है। उसके सामने ही एक कलात्मक समवसरण मन्दिर है जिसमें समवसरण की सुन्दर रचना निदिष्ट की गयी है। पास ही में समुन्नत मानस्तम्भ है। बाहुबली की दिव्य प्रतिमा भी यहाँ सुशोभित है। जगह-जगह पर चरण-पादुकायें, छतरी, चबूतरे और समाधिस्थल निमित्त हैं जो क्षेत्र की समृद्धि एवं सुन्दरता के द्योतक हैं। इनकी व्यवस्था कमेटी द्वारा सम्पन्न होती है।

धूबौन (अतिशय क्षेत्र)—

प्रस्तुत अतिशय क्षेत्र मध्य-प्रदेश के ग्वालियर समाग में गुना जिले के अन्तर्गत तहसील मुँगावली के पार्वत्य प्रदेश में स्थित है। कहा जाता है कि पाडाशाह का बजरगढ में रागा चाँदी हो गया था उसी द्रव्य से उसने मन्दिर और मूर्तियों का निर्माण किया है। क्षेत्र का नाम धूबौन तपोवन का अपभ्रंश जान पड़ता है। सम्भवतः इस स्थान पर निर्ग्रन्थ श्रमण तपश्चरण करते हो, इस

कारण यह स्थान तपोवन कहलाता हो, बाद में विकृत होकर धूवीन कहा जाने लगा हो। धूवीन में लगभग २५ मन्दिर हैं। मन्दिरों में मूर्तियाँ सुन्दर व मनोमह हैं।

उज्जैन—

अवन्ति देश में स्थित उज्जैन एक प्राचीन ऐतिहासिक नगर है। मगवान महावीर के समय उज्जैन का राजा

चण्डप्रद्योत या महासेन था। उसके बाद उसका पुत्र पालक राजा हुआ। मौर्य-सम्राट् चन्द्रगुप्त के समय यह मौर्य साम्राज्य की उपराजधानी थी। अशोक के पुत्र और पौत्र ने यहाँ राज्य किया है। जैन धर्म का यह केन्द्र रहा है। वर्तमान उज्जैन के मन्दिरों में मूर्तियाँ मुखर हैं।

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
(अ) बालाघाट	बालाघाट	श्री दि० जैन चैत्यालय श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन महावीर भवन समीप जयहिन्द टाकीज श्री दि० जैन पाठशाला श्री महावीर दि० जैन छात्रावास (स्टेशन के पास)
	बाणसिखनी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लालबर्ग	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लालवटी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लामटा	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री महावीर पुस्तकालय एवं वाचनालय श्री पादवंदाथ दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन धर्मशाला
(आ) बैतूल	आठनेर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बैतूल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	करजगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मुक्तागिरि (पहाड़ी पर)	श्री दि० जैन चैत्यालय	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	मुक्तागिरि (पहाड़ी पर)	श्री दि० जैन चैत्यालय श्री दि० जैन चैत्यालय श्री दि० जैन चैत्यालय श्री दि० जैन चैत्यालय श्री दि० जैन चैत्यालय श्री दि० जैन गृह चैत्यालय	
	(तलहटी)	श्री आदिनाथ मन्दिर श्री आदिनाथ मन्दिर श्री आदिनाथ मन्दिर श्री आदिनाथ मन्दिर श्री आदिनाथ मन्दिर श्री आदिनाथ मन्दिर श्री अजितनाथ मन्दिर श्री बाहुबली मन्दिर श्री भुयास मन्दिर श्री चन्द्रप्रभु दि० जैन मन्दिर श्री चन्द्रप्रभु दि० जैन मन्दिर श्री चन्द्रप्रभु मन्दिर श्री चन्द्रप्रभु मन्दिर श्री चन्द्रप्रभु मन्दिर श्री चन्द्रप्रभु मन्दिर श्री चन्द्रप्रभु मन्दिर श्री दि० जैन चैत्यालय श्री दि० जैन गुमटी श्री दि० जैन मन्दिर श्री महावीर मन्दिर श्री महावीर मन्दिर श्री महावीर मन्दिर श्री मेहागिरि मन्दिर श्री नेमिनाथ मन्दिर श्री पद्मप्रभ मन्दिर श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पुस्तकालय एवं वाचनानय

जिले का नाम	स्थान का नाम (तलहटी)	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
(६) मिण्ड	अडोश्वर	श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर	
	अकलोनी	श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर	
	अकोडा	श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर	
	अरकजोनी	श्री पार्श्वनाथ मन्दिर	
	असोरखार	श्री पार्श्वनाथ मन्दिर	
	अटैर	श्री पार्श्वनाथ मन्दिर	
	बकथरा	श्री पार्श्वनाथ मन्दिर	
	बरोली	श्री पार्श्वनाथ मन्दिर	
	भल्लपुरा	श्री पश्चिमाभिमुखी पार्श्वनाथ मन्दिर	
	भरवासा	श्री प्राचीन पद्मासन मूर्ति	
	मिण्ड	श्री रत्नत्रय मन्दिर	
		श्री ऋषभदेव मन्दिर	
		श्री शीतलनाथ मन्दिर	
		श्री सुभतिनाथ दि० जैन मन्दिर	
		सुपार्श्व मन्दिर	
		श्री वासुपूज्य मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री आदिनाथ दि० जैन मन्दिर	दि० जैन कन्या पाठशाला
		किला रोड	परेड मन्दिर
		श्री दि० जैन बाहुबली स्वामी मन्दिर परेड	हैनमन होम्योपैथिक मैडिकल कालिज अन्तर्गत डा० ए० सी० जैन चैरिटेबल सोसाइटी
		श्री दि० जैन चन्द्रप्रभु गोरी किनारा	
		श्री दि० जैन चैत्यालय गोल शृंगारीय फ्रीगज	जैन हा० सै० स्कूल

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	मिण्ड	श्री दि० जैन चैत्यालय मन्दिर पचाशा लश्कर रोड	जैन माध्यमिक विद्यालय
		श्री दि० जैन फूलचन्द महावीर स्वामी मन्दिर, पचासा रोड	जैन प्राइमरी पाठशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर अटेर रोड	नन्दलाल ट्रस्ट पुस्तकालय वाचनालय, चैत्यालय मन्दिर
		श्री दि० जैन मन्दिर नशिया जी	ऋषभ जैन गर्भ महा विद्यालय
		श्री दि० जैन मन्दिर परेट	श्री बाहुबली दि० जैन धर्मार्थ हो० औषधालय परेट
		श्री दि० जैन मुनाबाई मन्दिर महावीर गज	श्री दि० जैन बाहुबली धर्मशाला बाहुबली मन्दिर
		श्री दि० जैन नेमिनाथ मन्दिर, बजरिया	श्री दि० जैन बाहुबली औषधालय अटेर रोड
		श्री दि० जैन पारसनाथ मन्दिर, हलवाई खाना	श्री दि० जैन भदावर प्रान्तिक पुस्तकालय, परेट-मन्दिर
		श्री दि० जैन पारसनाथ मन्दिर, महावीर चौक	श्री दि० जैन धर्मार्थ पाठशाला चैत्यालय मन्दिर
		श्री दि० जैन शान्तिनाथ मन्दिर, गर्ल स्कूल गली	श्री दि० जैन धर्मशाला, परेट-मन्दिर
		श्री दि० जैन विमलनाथ मन्दिर, हलवाई खाना	श्री दि० जैन सार्वजनिक पुस्तकालय एव वाचनालय, चैत्यालय मन्दिर
			श्री दि० जैन उदासीनाश्रम नशिया जी
			श्री जैन महाविद्यालय अन्तर्गत भदावर प्रान्तिक जैन सभा
			श्री जैन स्वाध्याय मण्डल चैत्यालय मन्दिर
			श्री मुमुक्षु स्वाध्याय मण्डल स्वाध्याय भवन, श्री जैन मन्दिर
			श्री विमलसागर दि० जैन औषधालय फ्रीगज
			श्री विमलसागर दि० जैन पुस्तकालय फ्रीगज बाजार

जिले का नाम

स्थान का नाम

मन्दिर का नाम व स्थान

अन्य संस्थाओं के नाम

चमूरी	श्री दि० जैन मन्दिर
चितौरा	श्री दि० जैन मन्दिर
डोहड	श्री दि० जैन मन्दिर
दानियापुरा	श्री दि० जैन मन्दिर
फूफ	श्री दि० जैन मन्दिर
गदिया	श्री दि० जैन मन्दिर
गहेली	श्री दि० जैन मन्दिर
गाता	श्री दि० जैन मन्दिर
गोहद	श्री दि० जैन मन्दिर
गोरभी	श्री दि० जैन मन्दिर
गोरई	श्री दि० जैन मन्दिर
हर का बडेरा	श्री दि० जैन मन्दिर
जमसारा	श्री दि० जैन मन्दिर
जरसैना	श्री दि० जैन मन्दिर
झाकरी	श्री दि० जैन मन्दिर
ककरोक	श्री दि० जैन मन्दिर
कनाथर	श्री दि० जैन मन्दिर
कन्हारी	श्री दि० जैन मन्दिर
करावर	श्री दि० जैन मन्दिर
करवास	श्री दि० जैन मन्दिर
कठोगा	श्री दि० जैन मन्दिर
कतरौल	श्री दि० जैन मन्दिर
कवुजा	श्री दि० जैन मन्दिर
खडीत	श्री दि० जैन मन्दिर
खोरिया	श्री दि० जैन मन्दिर
खिदगपुर	श्री दि० जैन मन्दिर
लहार	श्री दि० जैन मन्दिर

- १ श्री दि० जैन शिक्षा मन्दिर
२ श्री महावीर दि० जैन
विद्यालय

लावन	श्री दि० जैन मन्दिर
माडेन	श्री दि० जैन मन्दिर
मानहड	श्री दि० जैन मन्दिर
मौ	श्री दि० जैन पार्श्वनाथ विशाल मन्दिर

श्री अखिल मा० जैन नवयुवक
ज्योति सेवा मघ

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	मो		श्री भ० महावीर स्वाध्याय भवन श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन ड्रामेटिक क्लब श्री दि० जैन माध्यमिक विद्यालय श्री दि० जैन नवयुवक सघ सेवा श्री दि० जैन प्रार्थमिक विद्यालय श्री जैन मुमुक्षु मण्डल श्री महावीर व्यायामशाला श्री महावीर वेद विज्ञान पाठशाला श्री महिला वीतराग विज्ञान पाठशाला श्री सन्मति पुस्तकालय व वाचनालय श्री सन्मति शिक्षा प्रसार समिति श्री वीतराग विज्ञान पाठशाला
	मेहदा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मेहदौली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मेहगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मेहरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	निरसाई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	निबहान	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नुनहड	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पाली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पराडव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	परानो	श्री दि० जैन मन्दिर	
	परछाना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	परसाला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	परतापपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	परवार	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पावई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पोपरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पुलावली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रिदोली	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
(ई) भोपाल	रोथरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सालिमपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सायना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सेमरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सेन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिकरोदा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सोनी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सोरई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मुपावली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	थडेरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	धनोली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	थूमरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ऊभरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	उझावला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बरोही	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बेहट	श्री दि० जैन मन्दिर	
	विरगगा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	विरगना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भोजपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
	भोपाल	श्री दि० जैन मन्दिर	गुलाब बाई दि० जैन कन्या पाठशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर बजरिया स्टे०	महावीर जैन साहित्य सदन
		श्री दि० जैन मन्दिर चौक बाजार	श्री दि० जैन धर्मशाला, चौक
		श्री दि० जैन मन्दिर गच० इ० एल०	श्री दि० जैन धर्मशाला टी० टी० नगर
		श्री दि० जैन मन्दिर जहागीरवाद	श्री दि० जैन हा० सै० स्कूल चौरु बाजार
		श्री दि० जैन मन्दिर झिरनो	श्री दि० जैन मंगल मवन मंगलवारा
		श्री दि० जैन मन्दिर मंगलवारा	श्री दि० जैन उदासीनाश्रम झिरनो मन्दिर
		श्री दि० जैन मन्दिर, शाहजहाँबाद	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	भोपाल	श्री दि० जैन मन्दिर टी० टी० नगर	श्री महावीर दि० जैन ग्रन्थमाला तारणबन्धु बी-१५ टी० टी० आई कालोनी शिमला हिल श्री वीतराग विज्ञान पाठशाला चोक श्री वीतराग विज्ञान पाठशाला मंगलवारा, श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन पाठशाला श्री दि० जैन पाठशाला श्री दि० जैन धर्मशाला समन्तमद्र ट्रस्ट श्री दि० जैन जयसागर औषधालय श्री दि० जैन मिशन शाखा श्री दि० जैन नवयुवक मडल श्री दि० जैन पाठशाला श्री दि० जैन सच्चिदानन्द न्यास श्री महावीर दि० जैन पारमार्थिक औषधालय
(उ) छत्रपुर	बैरसिया अकौना अलीपुरा बड़ा गाँव बड़ा मलहरा बगमऊ बहादुरपुर वकाराहा बाख्ख मु० पो० कुटोरा बाजना बम्होरी	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन हा० से० स्कूल श्री जनता उ० मा० विद्यालय श्री गणेशवर्ती दि० जैन पाठशाला श्री वीतराग विज्ञान पाठशाला

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	बमनौरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बमनी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बमीठा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बाघा मु० पो० सिमरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बधी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बरडाहा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बरेठी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बरमा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बेनीगज	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मगग	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भगुआँ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भरतौली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मातपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भोपग	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बीरो	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बोरा मु० पो० भगुवाँ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बूदौर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चदला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चन्द्रनगर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	छतरपुर	श्री दि० जैन चैत्यालय श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन हस्तलिखित मण्डार
		श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर (चौधरी का)	श्री जैन नवयुवक पुस्तकालय श्री महावीर दि० जैन पाठशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर (हटवारा)	
		श्री दि० जैन मन्दिर (जोधाबाई)	
		श्री दि० जैन मन्दिर (पचायती)	
		श्री दि० जैन मन्दिर (पन्ना वालो का)	
	छटी बमहौरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	दलीपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	दरगुवा मु० पो० सूडवा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	देवरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	देवरान	श्री दि० जैन मन्दिर	
	धनगुँवा	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	धोरा	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन पाठशाला
	दुलीपुर मु० पो० वमनोरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	फुरुवारी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गज	श्री दि० जैन मन्दिर	
	घिनीकी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	धूरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	धुवारा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गोरखपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गुडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गुलगज	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गुलाठ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हलावनी मु० पो० रामटोरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हरपालपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जखरीन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कारापानी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	करीं	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कसेरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कटारा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खजुराहो (अतिशय क्षेत्र)	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन धर्मशाला श्री शान्तिनाथ दि० जैन सग्रहालय श्री शान्तिनाथ दि० जैन विश्रान्ति भवन
		श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	श्री वर्धमान पुस्तकालय एवं बाबनालय

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	मोहरा मु० पो० घीरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मुबई मु० पो०	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रामटोरिया		
	नदगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नौदपोद	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नौगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	निबाड	श्री दि० जैन मन्दिर	
	निबग	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पडरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पहाड गाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पाख	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पनगढी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पनोठा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	परा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पाटन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पथरगुना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पिपरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पीरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	राजनगर मु० पो०	श्री दि० जैन मन्दिर	
	छतरपुर		
	रामटोरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	रानीताल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रेशदीगिरि (पहाडी)	श्री दि० जैन जल मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला (सागर वालो की)
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला (सेठ शोभाराम मलैया सागर वालो की)
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला (सिधई मूलचन्द गिरधारीलाल वालो की)

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	रेवादीगिरि (तलहटी)	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	
	सडवा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सहई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सडवा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सतपारा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सेधयाग्राम (द्रोणागिरि)	श्री दि० जैन मन्दिर	द्रोणागिरि आयुर्वेदाश्रम द्रोणा प्रान्तीय मुहल्ला परिषद द्रोणा प्रान्तीय नवयुवक सेवा सघ गणेशवर्ती दि० जैन छात्रावास गणेशवर्ती दि० जैन धर्मशाला गणेशवर्ती दि० जैन पुस्तकालय श्री चिदानन्द उदासीनाश्रम श्री चिदानन्दग्रती विद्यालय श्री गणेशवर्ती धर्मार्थ औषधालय श्री गुरुदत्त दि० जैन संस्कृत विद्यालय श्री वृन्दावन सरस्वती भवन वाचनालय
	शाहगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिद्ध क्षेत्र-द्रोणागिरि	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
(ऊ) छिन्दवाड़ा	बेनीगंज	श्री दि० जैन मन्दिर	
	विजावर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अमर बाग	श्री दि० जैन तारण मन्दिर	
	चौरई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	छिन्दवाड़ा	श्री दि० जैन मन्दिर	गोलापूर्व दि० जैन धर्मशाला
		छोटा बाजार	
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पाटनी धर्मशाला
		गोलगंज	गोलगज
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
		गोलगज	अमरवाड़ा
(ए) दतिया		श्री दि० जैन परवार पचायती मन्दिर	
			श्री दि० जैन पाठशाला
			गोलगज
			श्री खण्डेलवाल दि० जैन
			भवन गोलगंज
			श्री परवार पचायत भवन
			बुधवारी छिन्दवाड़ा
	हरई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जुझारे देव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खैरी लाडू	श्री दि० जैन मन्दिर	
(ए) दतिया	कुडा	श्री दि० जैन तारण मन्दिर	
	लिगा ग्राम	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मोहगाँव त० सोसर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मोहखेड	श्री दि० जैन मन्दिर	
	न्यूटन कालरी चिखली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	परासिरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिंगोडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	दतिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
		दतिया कलौ	
		श्री दि० जैन मन्दिर, सिमरिया	
		की गह्वी, टाऊन हाल के पास	
	डिरोली	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम

स्थान का नाम

मन्दिर का नाम व स्थान

अन्य संस्थाओं के नाम

फिटेना

श्री दि० जैन मन्दिर

गेरठा

श्री दि० जैन मन्दिर

ग्यारह

श्री दि० जैन मन्दिर

महरोल

श्री दि० जैन मन्दिर

मुडरा

श्री दि० जैन मन्दिर

नया खेडा

श्री दि० जैन मन्दिर

सेंधरी

श्री दि० जैन मन्दिर

सेवडा

श्री दि० जैन मन्दिर

सोनागिरि स्वर्णगिरि
(तलहटी)

आदिनाथ मन्दिर

आदिनाथ मन्दिर

आदिनाथ मन्दिर

आदिनाथ मन्दिर

आदिनाथ मन्दिर

आदिनाथ मन्दिर

आदिनाथ मन्दिर

आदिनाथ मन्दिर

आदिनाथ मन्दिर

आदिनाथ मन्दिर

आदिनाथ मन्दिर

आदिनाथ मन्दिर

आदिनाथ मन्दिर

आदिनाथ मन्दिर

आदिनाथ मन्दिर

अजितनाथ मन्दिर

अजितनाथ मन्दिर

अजितनाथ मन्दिर

अरहन्तनाथ मन्दिर

चन्द्रप्रभु मन्दिर

चन्द्रप्रभु मन्दिर

चन्द्रप्रभु मन्दिर

चन्द्रप्रभु मन्दिर

चन्द्रप्रभु मन्दिर

चन्द्रप्रभु मन्दिर

चन्द्रप्रभु मन्दिर

६४]

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	दमोह	श्री दि० जैन चैत्यालय भायत्री कालीनी श्री दि० जैन चैत्यालय मलैयामिल श्री दि० जैन चैत्यालय नया बाजार श्री दि० जैन चैत्यालय पुराना बाजार श्री दि० जैन चैत्यालय स्टेशन की धर्मशाला श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	दि० जैन नवयुवक मण्डल जैन पुत्री शाला जैन माध्यमिक कन्या पाठशाला जैन सेवा दल दमोह जैन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय (शासकीय मान्यता प्राप्त) महिला ज्ञान मन्दिर श्री बडे बाबा जैन ट्रस्ट श्री भागचन्द्र इटोरिया सार्वजनिक न्याम श्री दि० जैन धर्मशाला समीप नन्हे मन्दिर श्री दि० जैन औपधालय (जैन धर्मशाला मे) श्री दि० जैन पाठशाला श्री दि० जैन पाठशाला श्री दि० जैन विमान कमेटी
	देवरी खेरा घूघस फिन्द्रिय फुदपुरा फुटेरा	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला श्री बीतराग बिज्ञान पाठशाला
	ग्राम सरिया गुगरा हरई हटा	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन पाठशाला
	जमुनिया	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	जवेरा	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन पाठशाला
	जेरट	श्री दि० जैन मन्दिर	
	झकोन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जुझेरा	श्री दि० जैन चैत्यालय श्री दि० जैन मन्दिर	
	करनपुरा-जवेरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	करनपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कटोरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	केवना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	केथोरा पोन्वडेरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खजरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खहेरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	केवलारी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खण्डेरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खमरिया (शिवलाल)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	किशुत गज	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कुआरखेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कुण्डलपुर (श्री कुण्डल- गिरि जी सिद्ध क्षेत्र)	श्री दि० जैन चन्द्रप्रभ मन्दिर	जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन जिनालय	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन जिनालय	
		श्री दि० जैन जिनालय	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन औषधालय
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन उदासीनाश्रम

[illegible]

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	मगरीन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मैशाबाद	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मैनवार	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मडियादो	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मुहरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मोहड	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नेगरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	निदुवहा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पालर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	परामई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पटेरा	श्री दि० जैन चैत्यालय	जैन सेवा दल
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	पथरिया	श्री दि० जैन चैत्यालय	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	पटनाखुदं	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पिपरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पुरा बेरागढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	राजा भटना	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	रजपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रामगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रिछई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सगरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गमदई ररिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ममनापुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मनाई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सागा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नारम गली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सर्रा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सामा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मतगुवा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मंहरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मेमरा (हजानी)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिगरामपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिमपुरी	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सस्थाओं के नाम
(ओ) देवास	सिंगपुर	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	चैत्यालय मे शास्त्र भण्डार श्री दि० जैन धर्मशाला
	सुजनीपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सूखा निसई क्षेत्र पो० पथरिया	तारण स्वामी विशाल चैत्यालय	
	तारादेही	श्री दि० जैन मन्दिर	
	तेंदुखेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	तेजगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ठिंगसर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	थनेटा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	तिपुवा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	टोरी	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	उन्हारी खेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	धमनपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बादकपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बनगाव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बासाकलाँ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वामा नारखेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बासी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वनबाग	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बस्वाहा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वर्थपटी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बाया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बिजोरा खमरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जोतराई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गन्धावन (गन्धर्वपुरी)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हाट पीपन्या	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	खातेगाँव	श्री दि० जैन चैत्यालय श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	पदमासन मूर्ति वाली प्याऊ धन्नालाल मानेश्वरी कन्या पाठशाला श्री महावीर मागलिक भवन श्री सेठ टोडरमल शिवजीराम टोग्या पाठशाला श्री आदिनाथ मागलिक भवन श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन पारमाथिक औपधालय

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	खातेगाँव		श्री दि० जैन मुन्नतनाथ धार्मिक पाठशाला
	सोनकश (सोन कच्छ)	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन ट्रस्ट श्री महावीर भवन द्वारा दि० जैन ट्रस्ट श्री महावीर दि० जैन पाठशाला
(औ) धार	अजन्दा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बगडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बाकानेर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बरवतगढ़ ¹	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चिखलदा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	डेहरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	डेहरी सराय	श्री दि० जैन मन्दिर	
	धामनोद	श्री दि० जैन मन्दिर	
	धार	श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर (आहगाँव) श्री शान्तिनाथ दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन शास्त्र भण्डार (मन्दिर में) श्री शान्तिनाथ दि० जैन मा० विद्यालय श्री शान्तिनाथ दि० जैन मिडिल स्कूल (सरकार से मान्यता प्राप्त)
	धर्मपुरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गधवाजी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गरडावद	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गौतमपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गुजरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गूमरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गोपबडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कुँकसी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लोहारी	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन पाठशाला
	माडवगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मनावर	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
	मुलमान	श्री दि० जैन मन्दिर	

ज़िले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
(अ) दुर्ग	मोहनखेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पनावर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पनधाना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	राजगढ़	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सोकी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिगाना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सीथाना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मुन्डेल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सुसारी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	तालनपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	टोकी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वदनावर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वाजरोन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वसिनो	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वेगन्दा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अर्जुनी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भीलाई नगर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	छुईखादान	श्री दि० जैन मन्दिर	
	डोगरगांव	श्री दि० जैन मन्दिर	
(अ) गुना	दुर्ग	श्री दि० जैन मन्दिर सदर बाजार	श्री पाठवनाथ दि० जैन पाठशाला महावीर कुन्दकुन्द स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट गजूलाल बाबूलाल ट्रस्ट श्री बुधीसागर दि० जैन खण्डेलवाल धर्मार्थ औषधालय श्री जयकीर्ति दि० जैन पाठशाला स्व० मुरी बाई महिला जैन पाठशाला सदर बाजार श्री वीतराग विज्ञान पाठशाला जैन स्वाध्याय मण्डल श्री महावीर दि० जैन पाठशाला
	खेरागढ़-राजदुर्ग	श्री दि० जैन मन्दिर	
	राजनौदगांव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अचलगढ़	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अशोकनगर	श्री दि० जैन चैत्यालय	प्रियकारिणी जैन कन्या पाठशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पचायत

जिले का नाम

स्थान का नाम

मन्दिर का नाम व स्थान

अन्य संस्थाओं के नाम

अणोकनगर

श्री दि० जैन पचायती धर्मशाला

सुभाष गज

श्री ज्ञान सागर दि० जैन

औषधालय रजि० (सुभाष गज)

श्री कुजलाल दि० जैन पाठशाला

श्री मूलचन्द पारमार्थिक फण्ड

सुभाष गज

श्री वीतराग दि० जैन पाठशाला

श्री विमलसागर सरस्वती

मण्डार द्वारा श्री दि० जैन

मन्दिर सुभाष गज

श्री वर्धमान दि० जैन धर्मशाला

रेलवे स्टेशन रोड

वर्धमान हा० मै० स्कूल

वर्धमान मिडिल स्कूल

बजरगट

श्री दि० जैन मन्दिर

बहादुरपुर

श्री दि० जैन मन्दिर

बरखेडा

श्री दि० जैन मन्दिर

बरमद

श्री दि० जैन मन्दिर

बीनागज

श्री दि० जैन मन्दिर

चन्देरी

श्री दि० जैन मन्दिर

श्री दि० जैन मन्दिर

श्री दि० जैन मन्दिर

श्री दि० जैन धर्मशाला

श्री दि० जैन पाठशाला

श्री पदम कीर्ति दि० जैन

कन्या विद्यालय

श्री दि० जैन मन्दिर प्राणपुरा

चरनावदा

श्री दि० जैन मन्दिर

चौथाखेडी

श्री दि० जैन मन्दिर

छिकरी

श्री दि० जैन मन्दिर

डोरवारा

श्री दि० जैन मन्दिर

डुंगासरा

श्री दि० जैन मन्दिर

ईसागढ़

श्री दि० जैन मन्दिर

गौरा

श्री दि० जैन मन्दिर

गुना (गवालियर)

श्री दि० जैन मन्दिर

जैन कन्या विद्यालय

चौधरी मुहल्ला

श्री दि० जैन मन्दिर

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
			महावीर शिक्षा केन्द्र श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन माध्यमिक विद्यालय श्री दि० जैन औषधालय
	हिल्नोद	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जामनघार	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जामनेर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कदवाया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	काजिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खुमयावदु	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कुंभराज	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री वीतराम विज्ञान पाठशाला
	मदऊ खेडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	महदपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मल्हारगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मवाना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मुंगावली	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		नया बाजार	
	नई सराय	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ओडर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पदवाया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	परकाना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पिनासी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पिपरई गाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
	पियरसेरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	राघौगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
	राघेगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	राजपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सरिपाई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सेहराई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	शाढोरा	श्री दि० जैन मन्दिर	अकलक विद्यालय

[illegible]

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	चराई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चाटीगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चिनोर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चीनोर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	डबरामण्डी	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	दातिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	करातिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	करई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	केसवा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कुलैथ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कुंकम	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लक्ष्कर	बडा मन्दिर पुरानी सहेली डीडवाना ओली	अखिल विश्व मिशन अलीगज
		श्री दि० जैन चैत्यालय घास मण्डी	बडा मन्दिर जैन पाठशाला डीडवाना ओली
		श्री दि० जैन चैत्यालय मामा का बाजार	दि० जैन छात्रावास चम्पाबाग धर्मशाला नई सडक
		श्री दि० जैन चैत्यालय मु० कोटावाला	दि० जैन छात्रावास कटोराताल जयायगा रोड
		श्री दि० जैन चैत्यालय मु० कोटावाला	दि० जैन पाठशाला चितेरा ओली साबव गज
			दि० जैन खण्डेलवाल किशोर मण्डल दानाओली
		श्री दि० जैन चैत्यालय मु० सच्चाराम	दि० जैन महासमिति इकाई
		श्री दि० जैन चैत्यालय शिन्दे की छावनी	दि० जैन तीर्थ रक्षा समिति
		श्री दि० जैन चैत्यालय तेरापथी राजाजी बालो का कसेरा ओली	कस्तूरचन्द जी सोनी धार्मिक एव सामाजिक ट्रस्ट
		श्री दि० जैन बीसपथी नसिया जी	श्री दि० जैन बन्धु सभा नया बाजार
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन बन्धु सभा शिशु पाठशाला नया बाजार

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
लखनऊ		श्री दि० जैन मन्दिर बगीची	श्री दि० जैन बरैया बाल स्वयं सेवक समाज सघ, मामा का बाजार
		श्री दि० जैन मन्दिर छत्री बाजार	श्री दि० जैन बीसपथी चम्पाबाग धर्मशाला नई सड़क
		श्री दि० जैन मन्दिर चितेरा ओली माधव गज	
		श्री दि० जैन मन्दिर चितेरा ओली माधव गज	श्री दि० जैन जैसवाल बीर सेवा दल शिन्दे की छावनी
		श्री दि० जैन मन्दिर दाना ओली	श्री दि० जैन महावीर सेवा दल गोकुलचन्द जी का मन्दिर
		श्री दि० जैन मन्दिर दौलत गज	श्री दि० जैन पार्श्वनाथ धर्मशाला चितेरा ओली
		श्री दि० जैन मन्दिर दौलत गज	श्री दि० जैन पार्श्वनाथ ट्रस्ट मन्दिर जी दाना ओली
		श्री दि० जैन मन्दिर फालका बाजार	
		श्री दि० जैन मन्दिर गुडागुडी का नाका	श्री दि० जैन तेरापथी धर्मशाला पुरानी सहेली नई सड़क
		श्री दि० जैन मन्दिर जनव गज	श्री दि० जन तेरापथी नई महेली धर्मशाला दाना ओली बाडा मनीराम
		श्री दि० जैन मन्दिर जयेन्द्र गज	श्री दि० जैन वासुपूज्य पचायती मन्दिर ट्रस्ट
		श्री दि० जैन मन्दिर लाला का बाजार	श्री दि० जैन बीर सेवा सघ दाना ओली
		श्री दि० जैन मन्दिर लाला का बाजार	श्री दि० वासुपूज्य जैन धर्मशाला पसारी ओली
		श्री दि० जन मन्दिर लोहा मण्डी	श्री गणेशीलाल फूलचन्द जी ट्रस्ट
		श्री दि० जैन मन्दिर मामा का बाजार	श्री गोकुलचन्द जी धर्मशाला लोहा मण्डी
		श्री दि० जैन मन्दिर मामा का बाजार	श्री जैन भवन बरैया पचायती दाना ओली

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
लखर		श्री दि० जैन मन्दिर माऊ का बाजार	श्री जैन वीर वाचनालय चम्पाबाग दाना ओली
		श्री दि० जैन मन्दिर मुनीम जी का	
		श्री दि० जैन मन्दिर नई सहेली दाना ओली	श्री जैसत्राल जैन नवयुवक मण्डल दाना ओली
		श्री दि० जैन मन्दिर नया बाजार	श्री जैसवाल पचायती धर्मशाला नक्कासा-१ दाना ओली
		श्री दि० जैन मन्दिर टेकरी सप्त नारायण	श्री जिनेन्द्र पुस्तकालय एव वाचनालय जैन भवन दाना ओली
		श्री दि० जैन नागौरा मन्दिर दाना ओली	श्री महावीर धर्मशाला नई सड़क
		श्री दि० जैन वासुपूज्य मन्दिर	श्री महावीर दि० जैन मा० विद्यालय
		श्री जैसवाल पचायती मन्दिर दाना ओली	श्री पार्श्वनाथ धर्मशाला पुरानी सहेली डीडवाना ओली
			श्री पार्श्वनाथ पुस्तकालय चितौरा ओली माधव गज
			श्री ऋषभनाथ धर्मशाला मामा का बाजार
			श्री वर्धमान दि० जैन नवयुवक सप्त डीडवाना ओली
			श्री वर्धमान जैन औषधालय दाना ओली
			श्री वर्धमान पुस्तकालय एव वाचनालय डीडवाना ओली
			श्री वैरया दि० जैन नवयुवक सप्त दाना ओली
			श्री वैरया पचायती धर्मशाला दाना ओली
			स्व० श्री कस्तूर चन्द जी सोनी धार्मिक एव सामाजिक ट्रस्ट
			स्व० श्री वेशरीमल जी पहाडिया ट्रस्ट दौलत गज

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	मगरीनी मिनारवार मितरार मितरवार	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	अग्रवाल जैन धर्मशाला जैन वीर मण्डल
	मोहना	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	
	मुरार	श्री दि० जैन चैत्यालय दीनानाथ जी की बगीची श्री दि० जैन चैत्यालय ठन्डी मझक मुकज्जी नगर	श्री दि० जैन पचायती धर्मशाला विक्रमतर श्री दि० जैन वीर विद्यार्थी सघ श्री महावीर दि० जैन मिडिल स्कूल
	नरवर	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर गुलाबचन्द बगीची ठाठीपुर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	श्री वीर पुस्तकालय (जैन मन्दिर सन्तर)
	पाठई रमाडर वाजना रेंहद	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिद्ध क्षेत्र सोनागिरि (पर्वत पर)	श्री दि० जैन मन्दिरों की संख्या ८२ है	श्री दि० जैन विद्यालय श्री सरस्वती भण्डार श्री विद्यालय छात्रावास दस अन्य सस्थाये हैं।
	(तलहटी मे)	श्री दि० जैन मन्दिरों की संख्या १८ है	श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन धर्मशाला

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सस्थाओं के नाम
	सोनागिरि जी (तलहटी मे)		श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन धर्मशाला जैन मूर्ति संग्रहालय महिलाश्रम पुरातत्व संग्रहालय
(ख) होशंगाबाद	हरदा	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन औपधालय श्री दि० जैन पाठशाला श्री शान्तिनाथ दि० जैन धर्मशाला
	होशंगाबाद इटारमो	श्री दि० जैन लाल मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन तारण तरण चैत्यालय श्री पार्श्वनाथ दि० जैन पंचायती मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
	नयार खेडा पिपरिया सुहागपुर पानापुर	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	
(ग) इन्दौर	इन्दौर	श्री आदिनाथ जिनालय मोदी जी की नसिया भु० कडाबीन श्री आदिनाथ जिनालय, शक्कर बाजार (मारवाडी गोठ का मन्दिर) श्री आदिनाथ तेरापथी मन्दिर शक्कर बाजार श्री चन्द्रप्रभु चैत्यालय, मल्हार गज श्री चन्द्रप्रभु चैत्यालय (इन्द्रभवन) तुकागज श्री दि० जैन चैत्यालय मालवामिल मार्ग	दा० श्री० गुलाबबाई दि० जैन विधवा सहायता कोष दा० श्री० कचन बाई दि० जैन श्राविकाश्रम दा० श्री० कचनबाई प्रसूतिकाव शिशु स्वास्थ्य रक्षा सस्था दि० जैन संगीत विद्यालय मारवाडी मन्दिर, शक्कर बाजार प्रगतिशील नवयुवक मण्डल मल्हार गज प्रिस यशवतराव आयुर्वेदिक जैन औपधालय

जिले का नाम

स्थान का नाम

मन्दिर का नाम व स्थान

अन्य संस्थाओं के नाम

इन्दौर

श्री दि० जैन चैत्यालय शिक्षक
नगर बिजासन रोड
श्री दि० जैन चैत्यालय
(श्री कल्याण मातेश्वरी
दि० जैन कन्या पाठशाला)
श्री दि० जैन चैत्यालय
(श्री त्रिलोकचन्द जी
हा० सै० स्कूल
श्री दि० जैन चैत्यालय
सुदामानगर
श्री दि० जैन जिनालय बाग्घे
आगरा रोड पलासिया
श्री दि० जैन जिनालय
जबरी बाग नसिया
श्री दि० जैन जियालय
(नरसिंह पुरा समाज)
माणक चौक, शक्कर बाजार
श्री दि० जैन जिनालय
सुभाष चौक शक्कर बाजार
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर

रा० ब० जे० एल० जैन ट्रस्ट
सगीत मण्डल सयोगिता गज
सेठ जवरचन्द फूलचन्द जोधा
पारमार्थिक ट्रस्ट
सेतवाल कीर्तन मण्डल
दि० जैन पचायती
मन्दिर
श्री आदिनाथ दि० जैन
पाठशाला नन्दानगर
श्री आदिनाथ दि० जैन
पाठशाला शक्कर बाजार
श्री अजीत पाठशाला स्नेह
लतागज
श्री अनन्तनाथ दि० जैन
पारमार्थिक औपघान्य
सयोगिता गज
श्री अनन्तनाथ जिनालय ट्रस्ट
श्री बाहुबली दि० जैन व्यायाम-
शाला मालगज
श्री दानवीर सेठ हुकमचन्द जी
संस्कृत महाविद्यालय,
जबरी बाग
श्री दि० जैन असहाय विधवा
सहायक फंड व भोजनालय
श्री दि० जैन बजाजखाला मुकुत
फण्ड ट्रस्ट
श्री दि० जैन बोर्डिंग हाउस
जबरी बाग
श्री दि० जैन बोर्डिंग व्यायाम-
शाला नसिया जबरी बाग
श्री दि० जैन धर्मशाला
श्री दि० जैन परवार समाज
सगठन
श्री दि० जैन पाठशाला

जिले का नाम

स्थान का नाम

इन्दौर

मन्दिर का नाम व स्थान

श्री दि० जैन मन्दिर

श्री दि० जैन मन्दिर

श्री दि० जैन मन्दिर

श्री दि० जैन मन्दिर

श्री दि० जैन मन्दिर

बिजलपुर

श्री दि० जैन मन्दिर

गोगकुण्ड

श्री दि० जैन मन्दिर

क्लर्क कालोनी

श्री दि० जैन मन्दिर परदेशीपुरा

श्री दि० जैन मन्दिर

राजेन्द्रनगर

श्री दि० जैन मन्दिर

सयोगितागज छावनी

श्री दि० जैन मन्दिर

सयोगितागज छावनी

श्री महावीर चैत्यालय

(अनूपभवन्) तुकागज

श्री महावीर चैत्यालय

(फतेहचन्द मूलचन्द गृह मे)

श्री महावीर चैत्यालय

(राजमल जी काला के मकान मे)

श्री महावीर चैत्यालय

(शकरलाल जी कासनी बाल गृह)

स्नेहलता गज

श्री महावीर चैत्यालय उदासीनाश्रम

श्री महावीर चैत्यालय (वीरेन्द्र

गांधी के गृह मे)

देवी अहिल्या मार्ग, जेल रोड

श्री महावीर जिनालय, छावडा

जी की नसिया, गाँधीनगर

श्री महावीर जिनालय, तिलकनगर

श्री नेमिनाथ चैत्यालय, तुकागज

(श्री रतनलाल जी मोदीगृह)

श्री नेमिनाथ जिनालय, मल्हारगज

अन्य संस्थाओं के नाम

श्री दि० जैन पोरवाल धर्मशाला

महावीर मार्ग

श्री दि० जैन रात्रि पाठशाला

श्री दि० जैन सहायता फंड,

मल्हारगज

श्री गेदालाल जी जैन

पाठशाला छावनी

श्री गेदालाल माधोलाल जी

मेठी ट्रस्ट

श्री गेदालाल सूरजमल ट्रस्ट

श्री गोला लारे मण्डल

श्री गुलाबबाई डोसी दि० जैन

पारमार्थिक ट्रस्ट

श्री ज्ञानावन्धिका पाठशाला

तुकागज श्राविकाश्रम

श्री हुमड मण्डल

श्री जैन गृह निर्माण सहकारी

मस्था

नया० मल्हारगज

श्री जैन महिला मण्डल

श्री जैसवाल मण्डल

श्री जैन स्काउट्स यूनिशन

श्री जैन सहकारी पेढी मर्यादित

श्री कल्याणमन जैन पब्लि

औषधालय

श्री कल्याण मातेश्वरी दि० जैन

कन्या पाठशाला, नलिया बाखल

श्री कचन बाई दि० जैन

पाठशाला जवरी बाग

श्री कचनबाई श्राविकाश्रम

जवाहरमार्ग

श्री कस्तूर चन्द विद्या मन्दिर

श्री कस्तूर चन्द विद्या मन्दिर

सहायक फण्ड

जिले का नाम

स्थान का नाम

मन्दिर का नाम व स्थान

अन्य संस्थाओं के नाम

इन्दौर

श्री नेमिनाथ जिनालय,
नेमिनगर जैन कालोनी
श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय
गणेश प्रसाद गृह, भागीरथपुरा
श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय
जीवधर जी गृह नन्दानगर
श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय
मल्हारगज
श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय
मन्नालाल धर्मचन्द जी गृह
पाटनीपुरा
श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय
नन्दानगर
श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय
(शोभागम जी चुन्नीलाल
के मकान में) राजमोहल्ला
श्री पार्श्वनाथ जिनालय,
शक्करबाजार
श्री समवसरण मन्दिर,
उदासीन महिलाश्रम
श्री शान्तिनाथ चैत्यालय,
मल्हारगज
श्री शान्तिनाथ जिनालय,
हुकमचन्द मार्ग
श्री शान्तिनाथ जिनालय,
कन्याश्रम नुकागज
श्री शान्तिनाथ जिनालय,
मल्हारगज
श्री शान्तिवीर चैत्यालय
(मेहलाल कपूरचन्द जी
गृह में)

श्री कपूरीबाई तेरापथी मन्दिर
पाठशाला, शक्कर बाजार
श्री किशोरी लाल जैन
पारमार्थिक औषधालय
श्री कृष्णपुरा दि० जैन
पाठशाला
श्री लक्ष्मी मन्दिर पाठशाला
गोराकुण्ड
श्री महावीर दि० जैन
पाठशाला
श्री महावीर दि० जैन
पाठशाला तिलकनगर
श्री महिला समाज मल्हारगज
श्री नानक चन्द भगनीराम जी
पाठशाला, सर हुकमचन्द मार्ग
श्री मानकचन्द भगनीराम ट्रस्ट
श्री नरसिंह पुरा जैन मंडल
श्री नेमिनाथ पाठशाला,
मल्हारगज
श्री परमराम दुलीचन्द
चेरीटेबल ट्रस्ट
श्री पद्मावती परवाल मंडल
श्री प्रगतिशील नवयुवक मंडल
श्री मौ० प्रेमकुमारी बाई दि० जैन
ज्ञानवर्धिनी पाठशाला
श्री सहयोगी मण्डल
श्री मेठ धन्नामल रतन लाल
दि० जैन पारमार्थिक ट्रस्ट
श्री सेठ धूलचन्द छोटेलाल
जैन ट्रस्ट
श्री सेठ फतेह चन्द मूलचन्द जी
जैन ट्रस्ट
श्री सेतवाल मंडल
श्री शोभागम गम्भीरमल ट्रस्ट

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	इन्दौर		<p>श्री त्रिलोक चन्द जी जैन हा० सै० स्कूल छत्रीबाग श्री उदासीनाश्रम ट्रस्ट श्री उदासीनाश्रम ट्रस्ट श्री वर्धमान दि० जैन पाठशाला, महावीर मार्ग श्री वर्धमान मण्डल श्री वीर निर्माण ग्रन्थ प्रकाशन समिति 55 सीतलामाता बाजार श्री विश्रान्ति भवन, जवरीबाग सर हुकमचन्द दि० जैन संस्कृत महाविद्यालय</p>
(घ) जबलपुर	अकलतारा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बर्चैया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बडगाँव सलैया	श्री चन्द्रप्रभु दि० जैन मन्दिर तारणतरण दि० जैन चैत्यालय	श्री सिधई रघुनाथ राम नारायण दाम दि० जैन पाठशाला
	बहोरीबन्द		श्री दि० जैन अतिशय क्षेत्र लोनी पो० पाटन
	बाकल	श्री दि० जैन मन्दिर	महावीर सावर्जनिक वाचनालय एव पुस्तकालय पार्श्वनाथ जैन पाठशाला श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन वीर सेवा मंडल
	बकलेहट	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बिलहरी	श्री दि० जैन शिखरबन्द मन्दिर	
	बुठार	श्री दि० जैन मन्दिर	
	दर्शनी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	डोगरगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गढापुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गोखलपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गोसलपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हसगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सस्थाओं के नाम
	इन्द्राना जबलपुर	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर हनुमानताल श्री दि० जैन मन्दिर जवाहरगज श्री दि० जैन मन्दिर पुरानी बजाजी श्री दि० जैन नया मन्दिर हनुमानताल	दि० जैन महिला शिक्षा सदन जवाहरगज डी० एन० दि० जैन छात्रालय जैन बाल शिक्षा सदन हनुमानताल जैन डिग्री कालिज जैन गुरुकुल विद्यालय जैन मेडिकल कालिज जैन पुत्री शाला जवाहरगज जैन उदासीनाश्रम मडियाजी काशीबाई दि० जैन औषधालय जवाहरगज महावीर वाचनालय, लाटगज नेमिनाथ वाचनालय, पुरानी बजाजी पार्श्वनाथ दि० जैन रात्रिशाला नया मन्दिर, हनुमानताल वर्णी दि० जैन गुरुकुल शाला पिसनहारी की मडिया वर्णी जैन रात्रिशाला जवाहरगज वीतराग विज्ञान पाठशाला राक्षी वीतराग विज्ञान म्वाध्याय मन्दिरशाला द्वारा दि० जैन स्टोर्स, राक्षी बाजार
	जमगाँवा कैमोरी कटगी कटनी	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री चन्द्रप्रभ दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन चैत्यालय श्री दि० जैन काँच का पचायती मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	अमर सेवा समिति ज्ञानोदय संगीत मण्डल हो० व बायोकेमिक औषधालय द्वारा जैन नवयुवक सभा जैन अतिथि गृह जैन धर्मशाला

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
			जैन गुरुकुल जैन नवयुवक मण्डल जैन पाठशाला ट्रस्ट जैन रात्रिशाला जैन शिक्षा संस्था ट्रस्ट जैन विवाह भवन महिला रात्रिशाला शान्ति निकेतन जैन संस्कृत विद्यालय श्री जैन प्राथमिक शाला श्री जैन पू० माध्यमिक शाला श्री कन्हैया लाल गिरधारी लाल जैन धर्मार्थ औषधालय श्री परमानन्द कन्हैया लाल जैन आयुर्वेदिक महाविद्यालय श्री सि० हीरा लाल कन्हैया लाल जैन छात्रावास
	कूम्ही	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मझौली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मनौरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मुडतरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नया खेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नगरामपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पडरभटा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पहाडी पिपरीध	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	पानीगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पाटन	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
		श्री दि० जैन शिखर बन्द मन्दिर	
		श्री दि० जैन शिखर बन्द मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	पादला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पिपरौधा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पुनसार	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रैपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रीठी डाँग केना	श्री पाशवंनाथ दि० जैन मन्दिर	श्री महावीर जैन विद्यालय
	सहजपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	शाहागढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिलौडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिहोरा	श्री दि० जैन मन्दिर	जैन नवयुवक मण्डल मरस्वती शिशु मन्दिर, जैन मन्दिर
	सिहोरा-खितौला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिहुगी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिलेमनाबाद	श्री दि० जैन शिखरबन्द मन्दिर	
	तिबरी-पडरभटा	श्री दि० जैन मन्दिर	जैन पाठशाला भवन श्री महावीर चिकित्सालय श्री महावीर ज्ञानोदय समिति द्वारा संचालित हा० सै० स्कूल
	ठोडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	उफारा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वरगी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बसेहडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
(ङ) झाबुआ	रानापुर	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री आदिनाथ दि० जैन पाठशाला
(च) खड्डा पूर्वी निमाड	अजड (तह० बडवानी)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अतर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बडवानी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बमाडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बुरहानपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री शान्तिनाथ दि० जैन पाठशाला
	डामर स्टेशन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	धामनोद	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जामनिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खामनी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खड्डा	श्री दि० जैन चैत्यालय मोघट रोड	जैन स्कूल

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दानशीला चन्दाबाई कन्या पाठशाला जैन स्कूल मरफा बाजार श्री दि० जैन लाइब्रेरी श्री दि० जैन औषधालय पडावा रोड श्री दि० जैन पाठशाला, रामगज श्री दि० जैन रात्रिशाला श्री खण्डेलवाल दि० जैन धर्मशाला घासपुरा श्री महिला मुमुक्षु मण्डल श्री मुमुक्षु मण्डल श्री नन्दलाल सेठी छात्रावास मोधा रोड श्री पोखाड दि० जैन धर्मशाला रामगज श्री सहजानन्द दि० जैन पाठशाला द्वारा जैन छात्रावास श्री सप्तऋषि मण्डल श्री वीर नवयुवक मण्डल श्री बीतराग विज्ञान पाठशाला
	खरगोव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लोदसरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	महेश्वर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मडलेश्वर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मडवाडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मेरुखेडा की चौखट	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मोणा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पालसी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पाटली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रेवाडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	साकी	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
(छ) खरगोन पश्चिमी निमाड	सेहनाई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	शाहपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वथाना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वीन्द्र	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बडवानी	श्री दि० जैन विशाल शिखर बन्द मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री महावीर दि० जैन चैत्यालय	श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री हरमुखराय जैन दि० जैन छात्रावास
(तलहटी)	चूलगिरि क्षेत्र (पहाडी)	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री आदिनाथ मन्दिर	
		श्री आदिनाथ मन्दिर	
		श्री आदिनाथ मन्दिर	
		श्री आदिनाथ मन्दिर	
		श्री चन्द्रप्रभ दि० जैन मन्दिर	
		श्री चन्द्रप्रभ मन्दिर	
		श्री चन्द्रप्रभ मन्दिर	
		श्री चन्द्रप्रभ मन्दिर	
		श्री महावीर मन्दिर	
		श्री नेमिनाथ मन्दिर	
		श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर	
		श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर	
		श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
		श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर	
		श्री पार्श्वनाथ मन्दिर	
		श्री पार्श्वनाथ मन्दिर	
		श्री शान्तिनाथ दि० जैन मन्दिर	
		श्री शान्तिनाथ मन्दिर	
		श्री वासुपूज्य मन्दिर	
खरगोन प० निमाड		श्री दि० जैन मन्दिर	
लोनारा		श्री दि० जैन शान्तिनाथ चैत्यालय	
मानघाता (ओकारेश्वर)		ओकारेश्वर मन्दिर	कल्याणमल त्रिलोकचन्द इन्दौर
			बालो की धर्मशाला
मण्डलेश्वर		श्री दि० जैन बडा मन्दिर	श्री पोरवाड दि० जैन
		राजेन्द्र बाबू मार्ग	धर्मशाला, राजेन्द्र बाबू मार्ग
		श्री दि० जैन सरस्वती मन्दिर	
		महात्मा गाँधी मार्ग	
ऊन		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
पावार्गारि (ऊन)		ग्वालेश्वर मन्दिर	जैन मुनि त्यागी वसति भवन
		(पहाड पर)	(पहाड पर)
		श्री दि० जैन चन्द्रप्रभ मन्दिर	निहालचन्द शारदा भवन
		श्री दि० जैन महावीर मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन शान्तिनाथ मन्दिर	श्री महावीर दि० जैन गुरुकुल
			श्री महावीर वाचनालय
			(पहाड पर)
			श्री महावीर व शान्तिनाथ द्वार
			नया विश्रान्ति भवन
			श्री सभवनाथ दि० जैन वाचनालय
			श्री शान्तिनाथ आयुर्वेदिक
			औषधालय
सिद्धवरकूर		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सस्थाओं के नाम
		श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन धर्मशाला
(ज) मन्दसौर	आक्या अठावा त० जावद भानूपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन बीसपंथी चन्द्रप्रभु जिनालय श्री दि० जैन चैत्यालय श्री दि० जैन मन्दिर (दि० जैन समाज, मु० पो० सधारा) श्री दि० जैन मन्दिर (मु० पो० लोटसेड़ो बाया भानुपुरा) श्री दि० जैन तेरापंथी मन्दिर श्री सरावमी मन्दिर	महावीर जयन्ती व्यवस्था समिति श्री दि० जैन ज्ञान चन्द्रिका आयुर्वेद औषधालय श्री दि० जैन नमिया जीर्णोद्धार समिति ट्रस्ट, सदर बाजार श्री दि० जैन प्रार्थमिक विद्यालय श्री दि० जैन प्राथमिक विद्यालय श्री पार्श्वनाथ दि० जैन पाठशाला श्री धीतराग विज्ञान पाठशाला सूर्यसागर दि० जैन पाठशाला
	चीलाखेडा धनगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	श्री आदिनाथ दि० जैन पाठशाला श्री पार्श्वनाथ दि० जैन पाठशाला
	गरौठ घडौद जाट (जावद) जातला जावद कंधूली काकरिया काकरिया तलाई कुचडौद	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मिश्रबद्ध मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	सामूहिक वाचनालय

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
(क) मुरेना	मल्हारगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मनाण	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मन्दसौर	श्री दि० जैन चैत्यालय	श्री पार्श्वनाथ दि० जैन
		श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर	पाठशाला (जनकपुरा मन्दिर में)
		श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर	
		श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर	
		श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर	
		श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर	
	नगरी ग्राम	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नया गाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नीमथूर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रमावढी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रतनगढ त० जाबर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सन्धारा	श्री दि० जैन बडा मन्दिर	
		श्री दि० जैन छोटा मन्दिर	
	मीहोर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिगोली त० जाबर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	तारापुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	तावली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	थडौद	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री वीतराग विज्ञान पाठशाला
	बोरदिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ऐसाह त० अम्बाह	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अम्बाहमडी	श्री दि० जैन पचायती मन्दिर	टेकचन्द दि० जैन पाठशाला
	अम्बाह (नया)	श्री दि० जैन मन्दिर	टेकचन्द दि० जैन धर्मशाला
	अम्बाह (पुराना)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अम्बेहडा ग्राम	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गोशपुर ग्राम	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जवोना (जूल को गढी)	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर योगापुरा	
	जरखौना उपग्राम ककुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जोरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कचनौघा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खडियाहार	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कुथियाना ग्राम	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम

स्थान का नाम

मन्दिर का नाम व स्थान

अन्य संस्थाओं के नाम

मीता का पुरा त० अम्बाह
परसोटा त० गौरा
परीक्षत का पुरा
त० अम्बाह

श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर

पोरसा त० अम्बाह

श्री आदिनाथ दि० जैन मन्दिर
श्री चन्द्रप्रभु दि० जैन मन्दिर
सदर बाजार

लोकल जैन प्राइवेट पाठशाला
महावीर वाचनालय, सदर
बाजार
श्री दि० जैन पचायती धर्मशाला
गोधिनगर (आदिनाथ मन्दिर के
पास)

रामपुर गोठ त० अम्बाह
रुअर ग्राम त० अम्बाह
श्यामपुर कलाँ
श्यामपुर
सिघारी का पुरा
त० मुरेना

श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर

सिहोनिया

श्री शान्तिनाथ दि० जैन मन्दिर

वानमोर मीमेन्ट त० मुरेना
बरेह ग्राह त० अम्बाह
बरखाई ग्राम त० अम्बाह
विचपुरी त० अम्बाह

श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर

(ब) नरसिंहपुर

वीनापार ग्राम
डोभी
गोटे गाँव

श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन चैत्यालय
श्री दि० जैन चैत्यालय
श्री दि० जैन चैत्यालय
श्री दि० जैन चैत्यालय
श्री दि० जैन शिखरबद्ध
मन्दिर

श्री दि० जैन स्वाध्याय भवन
श्री दि० जैन धर्मशाला
श्री दि० जैन धर्मशाला
श्री दि० जैन धर्मशाला
श्री दि० जैन पाठशाला
श्री दि० जैन पुस्तकालय एवं
वाचनालय

कमोद

श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर
श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर
श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर
श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
(ट) पन्ना	कदेली	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
	करेली	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री महावीर स्वाध्याय भवन
	नरसिंहपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री वीतराग विज्ञान पाठशाला
			श्री दि० जैन पुस्तकालय
			श्री दि० जैन पुस्तकालय व बाबनालय
	सगौरिदा	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री वीतराग विज्ञान पाठशाला
	साकल	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री महावीर स्वाध्याय भवन
	सोकना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	तेदूखेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री महावीर स्वाध्याय भवन
	बरमानघाट	श्री दि० जैन मन्दिर	
	विलहारा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अजयगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अकयगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अनामगज	श्री दि० जैन मन्दिर	
	देवेन्द्रनगर		श्री दि० जैन धर्मशाला
(ठ) राजगढ़	गुनौर		श्री जैन पाठशाला
			श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री दि० जैन पाठशाला
	ककरहटी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	महेवाहोना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पन्ना	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		बडा बाजार	बडा बाजार
		श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		धाम मुहल्ला	धाम मुहल्ला
			श्री जैन पाठशाला
	पवई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मलेहा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिरागिरि	श्री दि० जैन मन्दिर (प्रथम गुफा मे)	
		श्री दि० जैन मन्दिर (द्वितीय गुफा मे)	
	चाचा खेडी	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
(ड) रतलाम	गुजनेर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सारंगपुर	श्री बाहुबली दि० जैन मन्दिर श्री महावीर स्वामी दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
	तलेन	श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर	
	व्याबरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
(ड) रतलाम	जाबरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रतलाम	श्री दि० जैन मन्दिर	दि० जैन महावीर ट्रस्ट
		चाँदनी चौक	जिला शाखा
		श्री दि० जैन मन्दिर	दि० जैन युवा फेडरेशन
		कसारा बाजार	म० प्र० दि० जैन तीर्थ रक्षा
		श्री दि० जैन मन्दिर,	समिति जिला शाखा
		मानक चौक	चन्द्रप्रभु दि० जैन धार्मिक
		श्री दि० जैन मन्दिर	पाठशाला स्टेशन रोड
		नसिया सागोदी	श्री आदिनाथ दि० जैन मण्डल
		श्री दि० जैन मन्दिर,	श्री दि० जैन धर्मशाला (बोहरा)
		स्टेशन रोड	श्री दि० जैन केसरबाई
			पाठशाला
			श्री दि० जैन महासमिति शाखा
			(रतलाम)
			श्री दि० जैन भाषिक चन्द
			पाना चन्द बोडिंग हाउस
			चाँदनी चौक
			श्री दि० जैन प्राथमिक कन्या
			पाठशाला
			श्री महावीर दि० जैन मण्डल
			श्री महावीर साहित्य मगम
			श्री नवयुवक दि० जैन मण्डल
			श्री सम्भवनाथ दि० जैन
			पाठशाला (रात्रि धार्मिक
	सेलाना	श्री दि० जैन मन्दिर	पाठशाला)

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सस्थाओं के नाम
(ढ) रायगढ़	झुलकरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जरायसागर	श्री दि० जैन मन्दिर	
(ण) रायपुर	काजावेज	श्री दि० जैन मन्दिर	
	आरग	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बलौदाबाजार	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
	भाटापारा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	धमतरी	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	कुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	नेवरा	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
	नवापारा राजिम	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
(त) रायसैन	पाण्डूका	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	रायपुर	श्री दि० जैन चैत्यालय	चम्पादेवी जैन (रात्रि)
		श्री दि० जैन चैत्यालय	महाविद्यालय
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	मिमगा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिरपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अब्दुलगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अमलाडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अमरखेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	आरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बेगमगज	श्री दि० जैन मन्दिर	
	छवारा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	दीवानगज	श्री दि० जैन मन्दिर	
	देवरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गैरतगज	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गौहरगज	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गोरखपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कस्बा बम्होरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कोरोरी	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सस्थाओं के नाम
(थ) रीवा	अमर पाटन	श्री आदिनाथ दि० जैन मन्दिर पुराना बाजार श्री दि० जैन मन्दिर गांधी चौक	श्री दि० जैन भवन (धर्मशाला) सिद्धान्त सागर दि० जैन कन्या पाठशाला
(द) सागर	अदावन आगासौद अमरमऊ वकभूवाँ बगडा बाँदरी बरा बरेठी वगैरिया कलाँ बीना (इटावा)	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन शिखर बन्द मन्दिर श्री दि० जैन शिखर बन्द मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर बजरिया श्री दि० जैन पचायती मन्दिर	साहित्य समिति वीर सेवा सघ श्री दि० जैन गर्भ मिडिल स्कूल इटावा बाजार श्री महावीर दि० जैन धर्मार्थ औषधालय इटावा बाजार श्री नाभिनन्दन दि० जैन छात्रावास इटावा बाजार श्री नाभिनन्दन दि० जैन धर्मशाला इटावा बाजार श्री नाभिनन्दन दि० जैन कन्या पाठशाला इटावा बाजार श्री नाभिनन्दन दि० जैन पाठशाला संस्कृत विद्यालय इटावा बाजार श्री वीर सेवा दल श्री वीर सेवा सघ श्री वीर सेवा सघ पुस्तकालय एक वाचनालय श्रीमती सिधौन रुक्मणी बाई छात्रवृत्ति ट्रस्ट, इटावा बाजार

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	बीना बाहरा	श्री चन्द्रप्रभु दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पुरानी धर्मशाला
	अतिशय क्षेत्र	श्री शान्तिनाथ दि० जैन मन्दिर	
	भडावन गेरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भानगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भरछा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बिलहरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चाँदामऊर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	छपरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	छापरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चारटोरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चारवेरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चौका	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चितौरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	दलपतपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	देवरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	धुबारा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	डिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	फूटबारी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गभिरियाघर	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
	गढा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गढाकोटा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गौरसामर	श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर	श्री मन्मति दि० जैन पाठशाला
	गूसरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गोपालगज	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गोरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हरदी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हिनाद	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हिरछेद	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ईशरवाडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जैसीनगर	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री महावीर दि० जैन पाठशाला
	जालधर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जरारा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जरुवाखेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जामोडा पो० बरायण	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	जेरा, जैसीनगर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कजिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कनऊ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	करदा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	करेम	श्री दि० जैन मन्दिर	
	करीपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	केरवना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	केशली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	केवलारी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खमकुआ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खमरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खारमऊ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खटोरा कलाँ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खवेरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खेराह	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खिमलामा	श्री दि० जैन मन्दिर	खिमलामा आचार्य शान्तिसागर
	खुरई	श्री दि० जैन चैत्यालय	दि० जैन पाठशाला
		बडकुल	हस्तलिखित शस्त्र भंडार
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री एस० पी० दि० जैन गुरुकुल
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री वीतराग विज्ञान पाठशाला
		जैन गुरुकुल	बडकुल चैत्यालय
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री वीतराग विज्ञान पाठशाला
		गुरहाजी	मैनया मन्दिर
		श्री दि० जैन नया मन्दिर	श्री वीतराग विज्ञान पाठशाला
		श्री दि० जैन श्रीमन्त सेठ	नया मन्दिर
		मन्दिर	एम० पी० जैन हाईस्कूल
	किशनपुरा पो० वरायण	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कोलुआ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कुरमी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लोटना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लुहारी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मडोना जागोर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	महेया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	महुआर बोडी	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सस्थाओं के नाम
	मैसा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मालथौन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मनारी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मजामा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मजरावा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मानक चौक	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मनेसिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मोकलपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मुडिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मुहानी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ननऊ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नरमाबली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नरवा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नीमोन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	निवार	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पडरई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पडरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पडवार	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पच्चमनगर	श्री दि० जैन मन्दिर	
		पहाडी नाले के पाम	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		बेवस नदी के तट पर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		बेवस नदी के तट पर	
	पापेट पो० दलपतपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	परासिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	परसो	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पाटन पो० विनका	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पठा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पठारी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पठागसोई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पथरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पटनागज	बडे मन्दिर सख्या ८	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सस्थाओं के नाम
		छोटे मन्दिर सख्या १८	
		श्री दि० जैन शिखरबद्ध	
		मन्दिर सख्या २६	
	पीपरे	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पिडरुआ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पिठौरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रहली	श्री दि० जैन चैत्यालय	
		श्री दि० जैन चैत्यालय	
		श्री दि० जैन चैत्यालय	
		श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर	
	राहतगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रजवास	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रोडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रोठा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सदावन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सागर	रज्जीलाल कमरथा द्वारा निर्मित	भगवान दाम शोभालाल चेरी-
		जिनालय लक्ष्मीपुरा	टेबल ट्रस्ट चमेली चौक
		श्री दि० जैन चैत्यालय (मलैया	चिरोजाबाई श्री दि० जैन पाठ-
		जी द्वारा तिलीग्राम मे)	शाला बड़ा मन्दिर कटरा बाजार
		श्री दि० जैन चैत्यालय	श्री जैन धर्मार्थ औषधालय (ममाज
		(श्री बालचन्द्र मलैया-गृह मे)	भूषण सेठ भगवान दाम द्वार
			संचालित)
		श्री दि० जैन चैत्यालय	दि० जैन धर्मशाला चमेली चौक
		(श्री भैयाराम नाथूराम जी	दि० जैन धर्मशाला
		गोदरे के मकान मे)	(तारण तरण चैत्यालय)
		श्री दि० जैन चैत्यालय	दि० जैन धर्मशाला
		(श्री दुलीचन्द जीवन कुमार	(तारण तरण ममाज की हवेली)
		बहेरिया वालो के मकान मे)	दि० जैन महिलाश्रम शाला
		श्री बाहुबली जैन मन्दिर	बड़ा बाजार
		वर्णी भवन मोराजी लक्ष्मीपुरा	दि० जैन मिडिल स्कूल
		श्री चन्द्रप्रभु चैत्यालय	गणेश दि० जैन महाविद्यालय-
		वर्णी भवन, लक्ष्मीपुरा	न्तर्गत वाचनालय, वर्णीभवन
		श्री दि० जैन बड़ा मन्दिर	गणेश दि० जैन संस्कृत महा-
		गांधी चौक	विद्यालय छात्रावास, वर्णीभवन

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
		श्री दि० जैन बीच का मन्दिर बरिया घाट	गणेश दि० जैन संस्कृत महा- विद्यालय वर्णी भवन
		श्री दि० जैन छोटा मन्दिर कटरा बाजार	गोलापूर्व दि० जैन ट्रस्ट जैन भ्रातृसंघ कटरा बाजार
		श्री दि० जैन मन्दिर बजरिया मोतीनगर	जैन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मलैया एजुकेशन ट्रस्ट, मलैया ब्रादर्स
		श्री दि० जैन मन्दिर चौधरनबाई मोहननगर	पार्ष्वनाथ दि० जैन पाठशाला सर्राफा बाजार
		श्री दि० जैन मन्दिर गोपालगज	पूर्णचन्द बजाज ट्रस्ट, सर्राफा बाजार
		श्री दि० जैन मन्दिर घाकागज	श्री बाहुबली सेवा दल, बडा बाजार
		श्री दि० जैन मन्दिर महिलाश्रम	श्री दि० जैन धर्मशाला, गणेश, संस्कृत महाविद्यालय, वर्णी भवन
		श्री दि० जैन मन्दिर शनीचरी टोरी	श्री दि० जैन शान्ति निकुंज उदासीनाश्रम कटरा बाजार
		श्री दि० जैन मन्दिर उदासीनाश्रम	सिद्धार्थनन्दन दि० जैन पाठशाला सिधई कुन्दनलाल जी द्वारा
		श्री दि० जैन मन्दिर (सिधई ठाकुरलाल जी)	निर्मित धर्मशाला, कटरा बाजार तारण-तरण दि० जैन पाठशाला
		श्री दि० जैन पठा का मन्दिर बडा बाजार	सर्राफा बाजार तारण-तरण परिषद
		श्री दि० जैन तारण-तरण चैत्यालय इतवारी टोरी	वीतराग विज्ञान पाठशाला चकरा घाट
		श्री गौरा बाई दि० जैन मन्दिर कटरा बाजार	वीतराग विज्ञान पाठशाला चकरा घाट
		श्री कट्टनीबाई दि० जैन मन्दिर बरिया घाट	वीतराग विज्ञान पाठशाला गोपाल गज
		श्री सिधई बुधु का दि० जैन मन्दिर, चकरा घाट	वीतराग विज्ञान पाठशाला गोराबाई दि० जैन मन्दिर
		सिधई कुन्दनलाल जी द्वारा निर्मित	कटरा बाजार
		जिनालय, लक्ष्मीपुर	वीतराग विज्ञान पाठशाला शनीचरी

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	सहावन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सालपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सनाई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सरजपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सीहोरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सेमर लाहारिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सेवूडावर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मेवन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सेसई (वरोदिया)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	शाहपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	शाखा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मिलोडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिलोथा (खुरई)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिमोडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	टडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	थानगढ़	श्री दि० जैन मन्दिर	
	धवोली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	टीला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	तोडातर कवर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	उलदन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ऊमरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वमाना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वमनौरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वामोरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वामोर मन्डी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वननाडू मानोनी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वराज ग्राम	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वारया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वरोल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वारोल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वसारी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वेसरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	विदवास	श्री दि० जैन मन्दिर	
	विदवासन	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
(ध) सतना	विनेका	श्री दि० जैन मन्दिर	
	विसराहा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बुरकोनी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अमरपाटन	श्री दि० जैन मन्दिर गाँधी चौक	जैन क्लब जैन नवयुवक मण्डल
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन भवन (धर्मशाला)
		पुराना बाजार	मिद्धान्त सागर दि० जैन पाठशाला
	नागोड	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सतना	श्री दि० जैन विशाल मन्दिर	जैन क्लब महावीर दि० जैन पाठशाला रात्रि धार्मिक पाठशाला श्री दि० जैन धर्मशाला (दयाचन्द जैन निर्मित) श्री दि० जैन धर्मशाला (पाठशाला, प्रयोग हेतु) श्री दि० जैन स्कूल श्री दि० जैन वाचनालय एवं पुस्तकालय
(न) शाजापुर	सिहपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	आगर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भौडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	धरोला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मक्सी	श्री दि० जैन छोटा मन्दिर श्री पार्श्वनाथ दि० जैन बड़ा मन्दिर	श्री दि० जैन छात्रावास (मसीप गुरुकुल) श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन स्टेशन धर्मशाला श्री दि० जैन विश्रान्ति भवन श्री पार्श्वनाथ दि० जैन जैत्यालय श्री पार्श्वनाथ दि० जैन गुरुकुल श्री पार्श्वनाथ दि० जैन औपधालय
	मन्दोडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नलखेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
(प) शहडोल	सेमनाखडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	शुजालपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सुमनेर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बुढार	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन भवन
			श्री दि० जैन नवयुवक मण्डल
			श्री दि० जैन पुत्री पाठशाला
	जेतहरी	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री जैन सेवा दल
			श्री वर्धमान दि० जैन पाठशाला
	कोतमा	श्री महावीर दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
(फ) शिवपुरी			श्री दि० जैन वीर नवयुवक मण्डल
	मनिन्द्रगढ (सरगुजा)	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
	सरगुजा पो० चिरमिरी	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
			चिरमिरी (सरगुजा)
	शहडोल	श्री दि० जैन पचायती मन्दिर	श्री धनराज सरावनी धर्मार्थ
		मन्दिर रोड	औषधालय
		श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री पार्श्वनाथ दि० जैन पाठशाला
	उमरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	व्योहारी	श्री दि० जैन मन्दिर	
(फ) शिवपुरी	अदरोनी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अकारिरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अम्हरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	आमोल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बदरखारा	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन उदामीनाश्रम कोलारस
			श्री ज्ञानसागर दि० जैन संस्कृत हिन्दी पाठशाला
			वीतराग विज्ञान पाठशाला कोलारस
	बालगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बमरा	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	बगोदिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बरुआ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बासगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बीजरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बीलाटा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भटनावर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भोली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बोलारा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चकनारा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चमरौआ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चेलागढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	छितरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	छिवुरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चोरपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	छोटी बादौर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	देदरपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	देगबो	श्री दि० जैन मन्दिर	
	दितायला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गोलाकोट (अतिशय क्षेत्र)	श्री दि० जैन विशाल मन्दिर	
	गूडर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गुआनिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गुहारी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	इन्दार	श्री दि० जैन मन्दिर	
	झिरी	श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर	
	कबरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कटेरा	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री बीतराग विज्ञान पाठशाला
	खनियाधाना	श्री नेमिनाथ दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर श्री पार्श्वनाथ दि० जैन शिखरबद्ध बड़ा मन्दिर	श्री दि० जैन पुस्तकालय श्री दि० जैन ट्रस्ट श्री पार्श्वनाथ दि० जैन पाठशाला
	खरई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खतौरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खिराकिट	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कोलारस	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	मगरीनी त० केरवा	श्री दि० जैन चैत्यालय श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर श्री पार्श्वनाथ दि० जैन बड़ा मन्दिर	
	महरोली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	महुये	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मीरोह	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मेतमदपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मोहगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नरौआ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नरवर	श्री चन्द्रप्रभु दि० जैन नया मन्दिर श्री दि० जैन अतिथय क्षेत्र उखाया श्री दि० जैन चैत्यालय श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर	
	नेगमा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पचराई	श्री दि० जैन मन्दिर मरुया २८ (मभी मन्दिर तलहटी में परकोटे में निर्मित है)	
	परागढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	परौदा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पटगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पिपरा	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
	पिपरौदा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पिरौर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पितायला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पोटरी	श्री दि० जैन मन्दिर	अमर साहित्य सदन श्री दि० जैन ज्ञान विद्या मन्दिर
	पुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रामगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रोमीजा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	समुता	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सरहॉ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सेमरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सेसई (कोलारम)	श्री दि० जैन पचायती शिखरबद्ध मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
(ब) सिहोर	शिवपुरी	श्री दि० जैन मन्दिर पुरानी शिवपुरी श्री दि० जैन मानस्तम्भ श्री दि० जैन पचायती मन्दिर (शिक्षरबद्ध) श्री महावीर दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन चैत्यालय श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन हिन्दी विद्यालय श्री पार्श्वनाथ दि० जैन पाठशाला
	सिरमौद		
	मुनारी		
	तेरई		
	बहगमा		
	बयारा		
	बेरखेडा		
	बहादुरनगर		
	बालागाँव		
	बमनोरा		
	बोरखेडा		
	छिपानेरा		
	छोटगाँव		
	दलीपुर		
	दिबडिया		
	हलवनी		
	इच्छावर		
	इस्लामनगर		
	इटावा		
	मेहूतवाडा (जावर)		चन्दन बाला महिला मण्डल जैन ज्योति जैन पत्र श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन समाज श्री दि० जैन वर्धमान पाठशाला श्री दि० जैन वर्धमान सेवा मण्डल
	मेसन्दा	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
(अ) सिवनी	नीमनागाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नियानीया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सीहोर बतेत	श्री दि० जैन मन्दिर	
	शाहगज	श्री दि० जैन मन्दिर	
	छपारा	श्री महावीर दि० जैन मन्दिर (शिखरबद्य)	बाहुबली दि० जैन नवयुवक मण्डल बाहुबली दि० जैन व्यायामशाला श्री चन्द्रप्रभु दि० जैन धर्मार्थ औषधालय श्री दि० जैन धर्मशाला (सिधई मिट्ठनलाल नेमिचन्द द्वारा निर्मित) श्री पार्श्वनाथ दि० जैन विद्यालय श्री सरस्वती भवन (विशाल वाचनालय)
	धमौर	श्री दि० जैन विशाल प्रतिमा (भारत सरकार पुरातत्व विभाग के अधीन)	
	केवलारी	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
	लखनादौन	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मार्थ औषधालय श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन वाचनालय श्री जैन डिग्री कालिज श्री पूरनसाब जैन छात्रवृत्ति ट्रस्ट
	सिवनी	श्री दि० जैन बड़ा मन्दिर श्री दि० जैन छोटा मन्दिर श्री दि० जैन गृह चैत्यालय	प० सुमेरचन्द दिवाकर प्रकाशन, दिवाकर मदन संस्कृत विद्यापीठ शुक्रवारी श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन औषधालय श्री दि० जैन पुस्तकालय श्री दिवाकर कन्या पाठशाला द्वारा अभिनन्दन कुमार दिवाकर एडवोकेट

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
			श्री मुन्नीबाई महिलाश्रम कन्या पाठशाला द्वारा श्रीमन्त सेठ गोपाल साब पूरण साब श्री नवयुवक क्लब श्री पारस क्लब (दि० जैन धर्मशाला)
(म) टीकमगढ़	अहार क्षेत्र	श्री भूगर्भ जिनालय श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन शान्तिनाथ संस्कृत विद्यालय श्री शान्तिनाथ दि० जैन छात्रावास श्री शान्तिनाथ दि० जैन महिलाश्रम श्री शान्तिनाथ दि० जैन पारमार्थिक औषधालय श्री शान्तिनाथ सरस्वती मदन (श्री दि० जैन मन्दिर) श्री शान्तिनाथ दि० जैन बाबनालय श्री शान्तिनाथ दि० जैन व्रती आश्रम
	अहार क्षेत्र (पच पहाड़ी)	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	
	अजनौर	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	
	अमरपुर पो० बडगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अन्तारा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गुरोरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अस्ताई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	असाटी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अतौरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बछौडा	श्री दि० जैन मन्दिर	

ज़िले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	बडा गाँव (घसान)	श्री दि० जैन मन्दिर	आनन्द माहिल्य मन्दिर कुंदकुंद स्वाध्याय सदन श्री दि० जैन धर्मशाला श्री सन्मति सगीत मडल श्री शान्ति मेवा मण्डल श्री वीतराय विज्ञान पाठशाला
	बडमाउई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बैमाखास	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
	बल्देवगड	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बम्होरी बगना	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन पाठशाला
	भजना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भेलमा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भेलमी पो० बल्देवगड	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ब्रिलगाण	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बूदौर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बुडैरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चन्दावनी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चन्देरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चन्द्रपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चीयो	श्री दि० जैन मन्दिर	
	दरगाँव बडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	दरगाँव छोटी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	दग्मुवा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	देवराहा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	देवराज	श्री दि० जैन मन्दिर	
	धामनी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	दिल्ला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	धुवसी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	दिगौडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	डिकौली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	डूँडा पो० डूँडा	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सस्थाओं के नाम
	दुमहुमा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	फुटेरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गौर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	घूघमी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गुना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हैदरपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हटा पो० बन्देबगढ़	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
	हतेरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हीरापुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	इकबालपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जरुआ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जतारा	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन पाठशाला
	ज्यौगमोरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ककरवाहा	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	ककावनी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कजना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कन्नपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कापासी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कारी	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	केशवगढ़	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खरौ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खारौ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खरगापुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खेरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खिस्टौन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	किसनगढ़	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कोपोगढ़	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कुडयाला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कुडीला पो० करमोगा	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सस्थाओं के नाम
	कुम्हेडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कुपी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लडवारी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लार बजगिया	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
	लौहर गुवाँ (महादेव)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लिधौरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मडिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मगरई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मझगुवाँ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मकाग	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मालपीथा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मलगुवाँ पो०	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खरगापुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ममेत	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मऊ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मार्ध	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मस्तापुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मवई	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
	मीनेपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मोगना पो० गोर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मोहनगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मुहारा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नादौल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नारायणपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नवागढ मु० पो० बकरवाला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	निवाडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ओरछा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पहारी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पपौरा (अतिशय क्षेत्र)	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन छात्रावास (विद्यालय के साथ)
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन महासमिति इकाई

[illegible]

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सस्थाओ के नाम
	मगरवारा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मकेरा भट्टारन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ममर्ग	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सापौन पो० अजनौर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सरकतपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
	सतर्गुवा	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री दि० जैन पाठशाला
	मिमरा जगेन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मिमरा खुर्द	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
	मुजानपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मुन्दरपुर पो० पठा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	धानगा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वीना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	टेहरका	श्री दि० जैन मन्दिर	
	टेटरका	श्री दि० जैन मन्दिर	
	टीकमगढ	श्री दि० जैन चैत्यालय	अवलक वीर बाल मण्डल
		श्री दि० जैन चैत्यालय	श्री बाहुबली सेवा मघ
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री बुन्देलखण्ड जैन नवयुवक मघ
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन छात्रावास
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	
			श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री दि० जैन महामर्मित डकार्ट
			श्री दि० जैन महावीर पोलियो
			विरोधक केन्द्र
			श्री दि० जैन महिला परिपद
			श्री दि० जैन महिलाश्रम
			श्री दि० जैन मैरिज ट्यूरो
			श्री दि० जैन नगर पचायत
			श्री दि० जैन परिपद
			श्री दि० जैन सग्रहालय
			श्री दि० जैन सूर्यमागर पाठशाला
			श्री दि० जैन व्रती आश्रम

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सस्थाओं के नाम
			श्री प्रौढ महिला दि० जैन पाठशाला श्री सरस्वती सदन श्री शान्तिनाथ दि० जैन संस्कृत विद्यालय
	टिम्मा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ऊमरी मु० पो० करगवाह	श्री दि० जैन मन्दिर	
	धरवार	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वर्मा डाग	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वर्मा ताल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बीरऊ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	विरीरा खेत	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन पाठशाला
(५) उज्जैन	अमला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खाचगेड	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खागकुआँ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खरमोद कर्णा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	महिदपुर	श्री आदिनाथ दि० जैन मन्दिर	श्री आदिनाथ दि० जैन पाठशाला श्री आदिनाथ नवयुवक मण्डल श्री दि० जैन महिला स्वाध्याय भवन श्री दि० जैन स्वाध्याय भवन
	नागदा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नखरझाला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पलवा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मिरीला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	तराना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	उज्जैन	श्री चन्द्रप्रभु दि० जैन मन्दिर नमक मडी श्री दि० जैन मन्दिर भरूगढ श्री दि० जैन मन्दिर जयसिंह पुरा	आवासगृह पाश्र्वनाथ दि० जैन मन्दिर फ्रीगज भागीरथ लक्ष्मीचन्द्र ट्रस्ट नयापुरा भवरी देवी गगवाल स्मृति फड रामलाल जवाहरलाल मराय

जिले का नाम

स्थान का नाम

मन्दिर का नाम व स्थान

श्री दि० जैन मन्दिर
कन्याणमल जी माधवगज
श्री दि० जैन मन्दिर
क्षीर सागर कालोनी, फ्रीगज
श्री दि० जैन मन्दिर
लक्ष्मीनगर कालोनी
श्री दि० जैन मन्दिर
लक्ष्मी नगर कालोनी
श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर
फ्रीगज
श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर
नयापुरा
श्री त्रिनोद भवन चैत्यालय

अन्य सस्थाओं के नाम

धन्नालाल हेमराज पारमार्थिक
औषधालय फ्रीगज
फूलचन्द दि० जैन पारमार्थिक
औषधालय फ्रीगज
गणेशराम सूरजमल दि० जैन
औषधालय फ्रीगज
गणेशराम सूरजमल दि० जैन
ट्रस्ट माधव नगर
हेमराज धन्नालाल दि० जैन
छात्रावास माधवगज
हेमराज धन्नालाल दि० जैन
ट्रस्ट माधव नगर
मणिकचन्द सेठ ट्रस्ट फण्ड
बिनोद भवन
मोहन येन्शन फ्रीगज
मावतराम सेवागम ट्रस्ट
नयापुरा
श्री गेलक धन्नालाल दि० जैन
औषधालय नयापुरा
श्री दि० जैन धर्मशाला लखेरवाड
श्री दि० जैन धर्मशाला
नमक मडी
श्री दि० जैन धर्मशाला नयापुरा
श्री दि० जैन महिला मडल
नयापुरा
श्री दि० जैन नवयुवक मण्डल
नमक मडी
श्री गुलाबबार्ट दि० जैन कन्या
पाठशाला नयापुरा
श्री ज्ञानसागर दि० जैन कन्या
विद्यालय नमक मडी
श्री ज्ञानसागर दि० जैन
वाचनालय नमक मडी
श्री जैन पुस्तक सग्रहालय

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
			श्री जयसागर दि० जैन पाठशाला नमक मंडी श्री केशरबाई दि० जैन पाठशाला फ्रीगज श्री पार्श्वनाथ दि० जैन नवयुवक मंडल नयापुरा श्री रामलाल जवाहरलाल मार्बजैनिक पारमार्थिक न्यास माधव नगर श्री समन्तभद्र पुस्तकालय श्री सूर्यसागर दि० जैन हा० सी० स्कूल श्री सूर्यसागर दि० जैन माध्यमिक विद्यालय तेजपाल पाण्ड्या ट्रस्ट फंड माधवगज फ्रीगज विमल वाचनालय विनोद भवन
(र) विदिशा	वडं डीया आनन्दपुर अथर अठारी खेजडी बडोह (पठारी)	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर [७वीं ८वीं शताब्दी के २४ शिखरबद्ध जैन मन्दिर हैं]	
	बमुरिया बरेठ बरोप्राम भगवन्तपुर भोरामा (कुरवाई) चन्दपुरा छिरारी डगेरजारा दीवना खेडा देवपुर	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	धोबीखंडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	धोरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	फूफेर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गमाकर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गजवा सौदा	श्री दि० जैन मन्दिर	आदर्श दि० जैन पाठशाला
		बूढ़ेपुरा	श्री दि० जैन आदर्श बाल मण्डल
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन अखिल विश्वमिशन
		धूमरपुर	शाखा
		श्री दि० जैन मन्दिर धूमरपुर	श्री दि० जैन महावीर मठल
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन मित्र मठल,
		गांधी चौक	स्टेशन मंडी
			श्री दि० जैन नवयुवक मण्डल
			श्री दि० जैन शास्त्र स्वाध्याय
			मण्डल
			श्री दि० जैन तारणतरण
			पाठशाला स्टेशन मंडी
			श्री दि० जैन तारणतरण ट्रस्ट
			बोम्ब आनन्द प्रकाशन मन्दिर
			श्री दि० जैन तारणतरण उच्चतर
			माध्यमिक विद्यालय
			श्री दि० जैन तारणतरण वीतराग
			विज्ञान पाठशाला धूमरपुरा
			श्री दि० जैन विवेक मण्डल
	गऊमोडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गरेठा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	घटेरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गुलाबगज	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गुलाकाज	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ग्यारामपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	हामरपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हरमई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हेदगढ़	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सस्थाओं के नाम
	हिमोसिया सेना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हिनोदिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हिरनई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	डमजावदार	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कसी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	करैयाहार	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खुजा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	किरखापुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कुकरावदा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कुल्हार	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कुरवाई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लागादा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लगका	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ललचिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लटेरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लोहागी (विदिगा)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मडपाखेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ममदगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मनीपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मन्नावाडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मानोरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मूडरा (सिरोज)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मुगल मराय	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मुखाम	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मुरारिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नागरोय	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नरखेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नरेरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नेबदा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ओलीजा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पडरानी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	परस परसोरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पठारी	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	उदयगिरि	श्री दि० जैन मन्दिर	
	उदयपुर देहरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	उदेपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	आरमी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बगोदा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	विदिशा	श्री दि० जैन चैत्यालय फिले मे	सेठ सिताबराय लक्ष्मीचन्द जैन छात्रावास
		श्री दि० जैन चैत्यालय पेशवापथ	सेठ सिताबराय लक्ष्मीचन्द जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर किले मे	सेठ सिताबराय लक्ष्मीचन्द जैन हा० स० स्कूल
		श्री दि० जैन मन्दिर किले मे	सेठ सिताबराय लक्ष्मीचन्द जैन पारमार्थिक आयुर्वेदिक औषधालय माधवगंज
		श्री दि० जैन मन्दिर माधवगंज	सेठ सिताबराय लक्ष्मीचन्द जैन पोस्ट ग्रेजुएट कालिज
		श्री दि० जैन मन्दिर सुभाष मार्ग	सेठ सिताबराय लक्ष्मीचन्द जैन
		श्री दि० जैन मन्दिर वीर हकीकत मार्ग	माहित्य उद्धारक फण्ड माधवगंज
		श्री पाश्र्वनाथ दि० जैन चैत्यालय लाइन बाहर	श्री दि० जैन धर्मशाला बड़ा मन्दिर
		श्री तारणतरण दि० जैन चैत्यालय सुभाष मार्ग	श्री गणेशवर्ती पाठशाला श्री ज्ञान प्रकाशिनी पाठशाला श्री जैन नाट्य समिति श्री जैन पुरातत्व समिति श्री जैन वीर दल (किले मे) श्री कानजी स्वामी स्मृति प्रकाशन ट्रस्ट श्री कुन्दकुन्द दि० जैन स्वाध्याय मन्दिर श्री महावीर जैन बाल वाचनालय माधवगंज श्री महावीर सहायता कोष

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम-
			श्री मातेश्वरी शंकरबाई जैन छात्रवृत्ति फण्ड माधवगज श्री राजमल बडजाला जैन शिशु मन्दिर श्री सन्मति जैन सार्वजनिक वाचनालय माधवगज श्री मीभाग्यवती बाई जैन कन्या माध्यमिक पाठशाला श्री शीतलनाथ जैन मा० शाला श्री तारण-तरण जैन नवयुवक मण्डल श्री वीतराग विज्ञान महिला पाठशाला माधवगज श्री वीतराग विज्ञान पाठशाला (किल मे) जैन भवन (धर्मशाला) श्री महावीर दि० जैन पाठशाला
(ल) विलासपुर	अकलतरा	श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर	
	चिरमिरी	श्री दि० जैन मन्दिर जी	
	जैला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मनेन्द्रगढ़	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मेन्डरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मृंगेली	श्री महावीर दि० जैन मन्दिर	
	पेन्डरारोध	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मरकडा विलासपुर	श्री महावीर दि० जैन मन्दिर श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर (चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट जूना बाजार)	(प्रेमचन्द रत्नचन्द जी क्लाय मर्चेंट पन्ड्रा रोड)

औरंगाबाद :—

यहाँ जैन-सम्प्रदायो की संख्या ५००० से अधिक है, जैन वातावरण भी धार्मिक है। यह ऐतिहासिक शहर सात छोटी-छोटी पहाड़ियों के बीच बसा हुआ है, जन-संख्या लगभग दो लाख है। अजन्ता, एलोरा तथा औरंगाबाद की गुफाये विश्व प्रसिद्ध हैं जिनमें बौद्धों व अन्य मतावलम्बियों के अतिरिक्त जैन गुफाये जिनमें बड़ी-बड़ी प्रतिमाये भी हैं। शहर में ६-७ जैन मन्दिर व स्थानक मौजूद हैं। यहाँ ओसवाल, खण्डेलवाल, साहूजी, तेरहापथी, बाइस सम्प्रदाय तथा अग्रवाल जैन हैं। एक मन्दिर के नीचे तो तेहरवाना है जिसमें ७५ के लगभग १३ तथा २ फुट ऊँची जैन प्रतिमाये हैं। मन्दिर में ऊपर १०० के लगभग मूर्तियाँ हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ कचनेर अतिशय क्षेत्र, पैठन में एक बड़ा मन्दिर है। उसमें नीचे लगभग ४-५ फुट ऊँची मूर्ति बालू रेत की बनी भगवान मुनि सुव्रत की है जो मारीच के समय की बताते हैं। यह भी अतिशय क्षेत्र है।

मिरपुर में अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ की मूर्ति है तथा कुन्धलगिरि अतिशय क्षेत्र है जहाँ आचार्य मल्लि शान्ति-सागर जी महाराज का निर्वाण हुआ था। एलोरा में एक जैन गुरुकुल है। जहाँ लगभग १५० विद्यार्थी शिक्षा पा रहे हैं। यहाँ तेरहापथ समाज की ओर से एक जैन छात्रालय मराठवाडा यूनीवर्सिटी के पास है जहाँ लगभग १०० छात्रों का निवास है।

फलटन :—

फलटन ग्राम महाराष्ट्र राज्य में सातारा जिले में है। इस गाँव में जैन परम्परा महावीर-निर्वाण से अब तक चली आ रही है। फलटन को दक्षिण की काशी नाम से

पहचानते हैं क्योंकि यहाँ 'शिखरबद्ध ६ मन्दिर है। चार मन्दिर मानस्तम्भयुक्त एवं मनोज्ञ हैं। विशेष रूप से श्री चन्द्रप्रभु भगवान का मन्दिर बहुत विशाल है, उसको बाचन जिनालय कहते हैं। सब मन्दिरों का काम पत्थर का है।

महाराष्ट्र

श्री १००८ चन्द्रप्रभु मन्दिर में श्री धवल, जयधवल, महाधवल ग्रन्थराज का ताम्रपत्र तथा तस्वीरे सुरक्षित रखी गयी हैं। ये ग्रन्थ श्री ६०८ आचार्य शान्तिसागर महाराज ने श्री चन्द्रप्रभु मन्दिर में रखे हैं। दूसरा मन्दिर आदिनाथ भगवान का है। यहाँ लकड़ी के ऊपर हुआ नक्काशी का काम मध्ययुगीन भारत का एक आदर्श नमूना है। यहाँ दिगम्बर, वूमड चतुर्थ पंचम शैतवाल आदि मिलाकर ७५० मकान हैं।

यहाँ दो प्राचीन मन्दिर दसवीं शताब्दी के हैं एक अभी भी है और दूसरा खण्डहर हो गया है, जो मन्दिर खण्डहर हो गया है वह पार्श्वनाथ भगवान का था। नेमिनाथ भगवान के मन्दिर में नेमिनाथ का दशपूर्वभब का इतिहास मूर्तिरूप से बनाया गया है।

श्री १००८ चन्द्रप्रभु मन्दिर में चाँदी का एक रथ है। श्री वृषभनाथ ग्रन्थ प्रकाशन संस्था पृ० पू० श्री ७०८ आचार्य नेमीसागर महाराज के आदेश से उपलब्ध की है जिसके द्वारा ५१० ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं।

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
(अ) अहमदनगर	बड़ा गाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बालमपाककी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बेलंबडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बोवगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	देवीमोपरा	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सस्थाओं के नाम
(आ) औरंगाबाद	जबका	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जबला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	काँवी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कोकमठाण	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कोलहार	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लोहूर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लोणी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मिमर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	प्रबरा सगम	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पुणसोवा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सगमनेर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	शाहजापुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	शेदगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	श्री गोदा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मुया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	टाकसीमान	श्री दि० जैन मन्दिर	
	यंकुरेख	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अडुल	श्री दि० जैन मन्दिर, पाहरी	
	आइगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अजड	श्री दि० जैन मन्दिर	
	एन्नोरा	श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर	श्री पार्श्वनाथ दि० मन्दिर जैन अतिथय क्षेत्र
	आमगाँव ज्ञानेश्वर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अधारी त० शिलखोट	श्री दि० जैन मन्दिर	
	औकराल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	औरंगाबाद	दि० जैन मन्दिर सरगावा बाजार दि० जैन पत्तायती विगा १ मन्दिर चाक बाजार खण्डेलवाल दि० जैन मन्दिर किराता बाजार श्री चन्द्रप्रभु जी का मन्दिर सेठ वालो का श्री नेमिनाथ मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
		श्री शान्तिनाथ मन्दिर	
	अवानेर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	आबेलहोक	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बैजापुरा पो० शीडर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बालखेड	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वनट्सर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बामड मु० देवपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बामडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चापलेड	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चिकटगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चिचरखेड	श्री दि० जैन मन्दिर	
	दीलताबाद	श्री दि० जैन मन्दिर	
	दिपौ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	फुलबारी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	घाटनादाता त० शिललोड	श्री दि० जैन मन्दिर	
	घोटगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गोनेगाँव त० खुअतावर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गोमापुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गोरमनाथ पो० खामनाथ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हमनूर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जबबेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जाखडी पो० कोडवारी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ज्ञानड	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जुला जालना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कबुलगाँव पो० लासूर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कचनेर	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन अतिशय क्षेत्र श्री दि० जैन धर्मशाला
	कन्नड	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कम्पावर खेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खामगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खडाला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मनर मोवगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मानेरी त० आम्बड	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मगापुर	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम

स्थान का नाम

मन्दिर का नाम व स्थान

अन्य सत्सार्थों के नाम

मनुर मु० मालेगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर
मापदीवाडगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर
नादर	श्री दि० जैन मन्दिर
नामखेड	श्री दि० जैन मन्दिर
निशोड	श्री दि० जैन मन्दिर
पाछेह	श्री दि० जैन मन्दिर
पाचोड	श्री दि० जैन मन्दिर
पामोरी खुर्द पो० लासूर	श्री दि० जैन मन्दिर
पानेगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर
परमोडा	श्री दि० जैन मन्दिर
पैठण	श्री दि० जैन मन्दिर

श्री १००८ मुनि सुव्रतनाथ
दि० जैन अतिशय क्षेत्र

पेडापुर	श्री दि० जैन मन्दिर
पीपलगाम पो० सावट	श्री दि० जैन मन्दिर
पीपरखेड	श्री दि० जैन मन्दिर
राजी उचेगाँव त० अवं	श्री दि० जैन मन्दिर
रेहाटगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर
सापरा	श्री दि० जैन मन्दिर
साँवगी बाजार	श्री दि० जैन मन्दिर
साबगी पो० सोवलगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर
सेन्दूरवाडा	श्री दि० जैन मन्दिर
टाकली	श्री दि० जैन मन्दिर
थापानेर	श्री दि० जैन मन्दिर
उचेगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर
वडेरगाँव त० गगापुर	श्री दि० जैन मन्दिर
वडोद बाजार	श्री दि० जैन मन्दिर
वडोर गगदा	श्री दि० जैन मन्दिर
वाकली त० बेजापुर	श्री दि० जैन मन्दिर
वाकूज	श्री दि० जैन मन्दिर
वलेगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर
वामुकगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर
बिहामाडया	श्री दि० जैन मन्दिर
विम	श्री दि० जैन मन्दिर
विरगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
(इ) भंडारा	भंडारा गोदिया	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	सेठ छुशामल जैन धर्मार्थ आयुर्वेदिक औषधालय माता टोली
(ई) बम्बई	बम्बई	श्री आदिनाथ बाहुबली दि० जैन मन्दिर श्री आचार्य शान्तिसागर स्मारक श्री १००८ श्री चन्द्रप्रभु दि० जैन मन्दिर भूलेश्वर, बम्बई-४ श्री दि० जैन चैत्यालय, हीराबाग श्री दि० जैन चैत्यालय, जौहरी बाजार श्री दि० जैन चैत्यालय जबेरी बाजार श्री दि० जैन चैत्यालय C/o सेठ माणिकचन्द पानीचन्द जौहरी चौपाटी श्री दि० जैन मन्दिर, भूलेश्वर श्री दि० जैन मन्दिर, गुलालबाडी श्री दि० जैन मन्दिर कालबादेवी रोड श्री दि० जैन मन्दिर मलाड श्री दि० जैन मन्दिर C/o सेठ पूरणलाल, घासीलाल चौपाटी श्री दि० जैन मन्दिर थाणा श्री दि० जैन मन्दिर, वरली श्री दि० जैन श्रीमधर मुमुक्षु मन्दिर १७३/१७५ मुबादेवी रोड बम्बई-२ श्री महावीर स्वामी का दि० जैन मन्दिर एन० सी० केलकर रोड, शिवाजी पार्क पो० आ० के सामने दादर बम्बई-२८	आदिनाथ बाहुबली दि० जैन मन्दिर ट्रस्ट, मडपेश्वर रोड बोरिवली (वेस्ट) बम्बई-६६ बाहुबली दि० जैन मन्दिर ट्रस्ट बोरिवली, त्रिमूर्ति चन्द्रप्रभु दि० जैन वीतराग विज्ञान पाठशाला, १६१ भूलेश्वर रोड (चन्द्रप्रभु दि० जैनमन्दिर) दि० जैन पाठशाला, दि० जैन मुमुक्षु मण्डल प्लाट न० २२७ आर० बी० मेहता रोड घाट कोपर बम्बई-२७ दि० जैन पाठशाला सुमन्तलाभ सेठ सविता सदन, सुभाषलेन दफ्तरी रोड, मालाड बम्बई-६४ जैन सेवा समिति के० ऑप/ आर० आर० श्राविकाश्रम ताडदेव बम्बई-७ रतनबाई रुक्मणी बाई महिलाश्रम ताडदेव बम्बई-७ सेठ हीराचन्द गुमान जी जैन बोडिंग स्कूल १४८ लेमिगटन रोड, ब्रिज के पास ताडदेव बम्बई-७ शाहचन्दूलाल कस्तूरचन्द चेरिटेबल ट्रस्ट ५०० काटन एक्सचेंज बिल्डिंग, ५ माला बम्बई-२ श्री आचार्य शान्तिसागर स्मारक श्री १००८ आदिनाथ त्रिमूर्ति नेशनल पार्क

जिले का नाम

स्थान का नाम

बम्बई

मन्दिर का नाम व स्थान

श्री नेमिनाथ भगवान दि० जैन
जिन मन्दिर प्लाट न० २२७/
६०, आर० बी० मेहता रोड
घाट कोपर, बम्बई-७७
श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर
गुलालबाडी, बम्बई-२
श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर
कालवादेवी रोड, बम्बई-२
श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर
१५ राम्ना खार्, बम्बई-५२
श्री ऋषभदेव भगवान जिन
मन्दिर, १०५ दफतरी रोड,
देना बैक के सामने मालाड
(ईस्ट) बम्बई-६४

अन्य संस्थाओं के नाम

श्री बालचन्द चेरीटेबल ट्रस्ट
कनस्ट्रक्शन हाउस, बालचन्द
हीराचन्द मार्ग बेलाड पियर
बम्बई-१
श्री चन्द्रप्रभु दि० जैन औषधालय
१६१ भूलेश्वर बम्बई-२
श्री चन्द्रप्रभु दि० जैन पाठशाला
श्री चन्द्रप्रभु दि० जैन मन्दिर
भूलेश्वर बम्बई-२
श्री दि० जैन मुमुक्षु मन्दिर
पाठशाला १७३/१७५ मुन्नादेवी
रोड बम्बई-२
श्री गोरेगांव पार्श्वनाथ दि० जैन
मन्दिर ट्रस्ट प्लाट न० ३०७
जवाहरनगर गोरेगांव (वेस्ट)
बम्बई-६२
श्री एल० के० पन्नालाल जी
दि० जैन औषधालय हीराबाग
मी० पी० टैंक बम्बई-४
श्री महावीर स्वामी का दि०
जिन मन्दिर पाठशाला एन०
मी० केलकर रोड शिवाजी पार्क
दादर, बम्बई-२८
श्री माणिकचन्द लाभचन्द दि०
जैन पाठशाला
श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर
गुलालबाडी, बम्बई-२
श्री नेमिनाथ भगवान दि० जिन
मन्दिर पाठशाला, प्लाट न०
२२७, ६० आर० बी० मेहतारोड,
घाटकोपर, बम्बई-७७
श्री ऋषभदेव भगवान जिन मन्दिर
पाठशाला दफतरी रोड, मालाड
(ईस्ट) बम्बई-६४

जिले का नाम	स्थान का नाम बम्बई	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
			श्री सेठ हीराचन्द गुमान जी धर्मशाला हीराबाग सी० पी० टैक बम्बई-४ श्री श्रेयास प्रसाद चेरीटेबल ट्रस्ट निर्मल-३ तीसरा मजला २४१ बेकवेरेकलेमेशन बम्बई श्री सुखानन्द आश्रम (धर्मशाला) चेरीटी ट्रस्ट सी० पी० टैक भूलेश्वर, बम्बई-४ बीतराग विज्ञान पाठशाला २७१/२१३ एन० सी० केलकर रोड, शिवाजी पार्क दादर, बम्बई-२८ बीतराग विज्ञान पाठशाला श्री सीमन्धर स्वामी दि० जैन मन्दिर १७३/१७५ मुम्बा देवी रोड बम्बई
(उ) बुलडाना	चिरवली डासाजा देऊकघाट देउलघाट देवघावा देवलगाँवराजा	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन घालात्कार मन्दिर श्री दि० जैन काष्ठा सघ मन्दिर श्री सेनगण दि० जैन मन्दिर	
	डोगगाँव डोणगाँव (मेहकर) जलगॉव जामोद कलकापूर खामगाँव मेहकर सिदखेडराजा	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	
(ऊ) जलगॉव	बाह्याण सवेण भूसावल	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	
		एहलाबाद	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
जलगाँव	धरगा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	फैजपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	फतेहपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गणेशपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हीरापुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जामनेर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नैरीकार	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पालगी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पारोले	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पीपलगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	
		कोहला	
	पूर्वखानदेश	श्री दि० जैन मन्दिर	
		सीरमावे देहात	
	रावेर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	साकली	श्री दि० जैन मन्दिर	
		यावत	
	सावदा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिरपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
		मिरपुर धूलिया	
	तकेगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	याकी संगाम	श्री दि० जैन मन्दिर	
(ए) पूना	योपडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बडगाँव निवाकर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बारामती	श्री दि० जैन मन्दिर	
	घडनदी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	घिजवड	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हड्डयसर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	इदापुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर, कलस	
	मंदरगी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मालेगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मबोर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पणदेर	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्वाम	अन्य संस्थाओं के नाम
(ऐ) रत्नागिरि	देवरुख	श्री दि० १००८ पार्श्वनाथ जैन चैत्यालय श्री दि० जैन पार्श्वनाथ छोटा मन्दिर श्री दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर	दि० जैन पाठशाला श्री दि० जैन पाठशाला श्री जैन स्थावालय
	खारेपाटण		समाज सेवा मडल अतिशय क्षेत्र सारेपाटण श्री दि० जैन अतिशय क्षेत्र श्री जैन वसन्तीगृह दी एन० एस० लॉ कालिज दी सागली हाई स्कूल टेकनिकल एण्ड कार्मशियल स्कूल दी सागली कालिज आफ कामर्स कस्तूरबा बालचन्द आर्ट्स एण्ड साइन्स कालिज कस्तूरबा जूनियर कालिज प्रकैटिसाईजिंग स्कूल कस्तूरबा ट्रेनिंग कालिज फोर कुर्मैन लाठे एजुकेशनल सोसाइटी महात्मा गांधी दिशु बिहार एन० एस० लॉ कालिज न्यू हाई स्कूल मल्टीमिडिया सागली कालिज ऑफ कामर्स सागली हाई स्कूल श्री दि० जैन श्राविकाश्रम श्रीमती कस्तूरबा बालचन्द कालिज श्री रामचन्द्र धन जी दि० जैन बोर्डिंग हाउस
(औ) सागली	सागली		जैन धर्मार्थ दवाखाना एव प्रसूति गृह
(औ) सतारा	फलटन	श्री आदिनाथ दि० जैन मन्दिर श्री चन्द्रप्रभु दि० जैन मन्दिर (बाचन जिनालय)	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	फलटन	श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर	नेमी मुद्रण प्रेस शान्तिसागर दि० जैन पाठशाला श्री दि० जैन जिनवाणी जीर्णोद्धारक संस्था श्री जैन पाठशाला श्री वृषभनाथ ग्रन्थ प्रकाशन संस्था श्री दि० जैन तीर्थ क्षेत्र कुण्डल (ओध)
	कुण्डल		
(अ) उस्मानाबाद	आष्टा चिचपुर दाहरीफाल धाराशिव कंधार कीनी कुथलगिरि मुसुठ नकदुर्ग मखडी सोनारी तडवल स्टेशन	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर तेर (नागथाना)	श्री दि० जैन क्षेत्र धाराशिव गुफाये श्री दि० जैन मिद्ध क्षेत्र
(अ) वर्धा	ऊदगीर अष्टी आष्टी आर्धी हिंगणी हिंगनघाट नावनगाँव देवली पुनगा साहुर मिंदी ठाणेगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर नागपुर अमरावती मार्ग	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
(क) बीड	वर्धा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	दिंदुड	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गलठा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गेवसई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	घोडराई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	माजतगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मगरुल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	परली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पीपला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	उमापुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
(ख) यवतमाल	दिग्रम	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ईसापुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पुसद	श्री दि० जैन मन्दिर	
	यवतमाल	श्री दि० जैन मन्दिर	

इम्फाल मणिपुर राज्य की राजधानी है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मन्दिर तथा एक दिगम्बर जैन हाई स्कूल है। यहाँ जैनियों की जनसंख्या ८०० के लगभग है।

मणिपुर

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
(अ) इम्फाल	इम्फाल	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन हाई स्कूल

मेघालय

(भारतीय गणतन्त्र का नवोदित राज्य)

इस राज्य में जैनियों की जनसंख्या बहुत कम है। राज्य का क्षेत्रफल भी लघु है। जैन धर्म का प्रचार बहुत कम है। उसके प्रचार का प्रयत्न भी नहीं हुआ।

नागालैण्ड राज्य के कोटिगा जिले के डीमापुर क्षेत्र में एक दिगम्बर जैन मन्दिर है जिसमें पाँच सौ वर्ष से कम की जिन-मूर्तियाँ स्थापित हैं।

नागालैण्ड

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
(अ) कोहिमा	डीमापुर	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० भगवान महावीर दातव्य औपधालय
		श्री महावीर दि० जैन चैत्यालय	श्री दि० जैन हाई स्कूल
		श्री कीर्ति स्तम्भ	श्री दि० जैन महावीर पुस्तकालय
	कोहिमा	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री वीर विकास मण्डल

भानुपुर—

यह एक छोटा सा गांव है जो भुवनेश्वर जाने वाली सड़क पर कटक से ८ किमी० की दूरी पर स्थित है।

यहाँ भूगर्भ से प्राप्त ५ धातु प्रतिमाये रखी हुई है। नकुल भट्ट खण्डायत नाम के जिम व्यक्ति का ये प्रतिमाये कुआँ खाई नदी खोदने हुए मिली थी, उन्होंने प्रतिमाओ के सम्बन्ध मे इस तरह बतनाया है कि—मेरी आर्थिक स्थिति पहले अत्यन्त खराब थी। दाल-भात का खर्च मुश्किल मे चलता था। मैंने आज से पाँच वर्ष पूर्व बाँध भरने के लिये मिट्टी का ठेका लिया था। एक दिन मैं कुआँखाई नदी में मिट्टी खोद रहा था तभी मुझे खुदाई के समय में मूर्तियाँ मिली। मिट्टी मे से निकलकर भगवान ने मुझे दर्शन दिये हैं। इससे मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। उस हर्ष मे मैं अपनी गरीबी का दुःख भूल गया। भगवान की इन मूर्तियों को मैंने पेड़ के नीचे विराजमान कर दिया। काम के समय के अतिरिक्त मेरा सारा समय भगवान की सेवा मे ही बीत जाता था। जब से भगवान मेरे घर पधारे तब से मुझे किसी बात की कमी न रही। उनकी कृपा से मैंने जमीन-जायदाद भी खरीद ली, चावल का मिल भी खोल लिया है। मिल के पास एक छोटा सा मन्दिर बनवा दिया है और पाँचो मूर्तियों को काठ के सिंहासन पर विराजमान कर दिया है। मन्दिर छोटा ही है जिमके ऊपर शिखर भी है। मूर्तियाँ रजतवर्षा की है। भूगर्भ मे रहने के कारण दानेदार हो गयी है। इसी तरह कई मूर्तियाँ भुवनेश्वर के सन्तल रूप मे सुरक्षित है। इनमे मध्य की मूर्ति एक चौबीसी है। मध्य मे गोलाकार मे १२ ऊपर ८ और चारो कोनो पर चार। इसके अतिरिक्त नीचे के भाग मे पार्श्वनाथ की ओर शीर्ष भाग पर महावीर की मूर्ति बनी है।

भुवनेश्वर—

यह उत्कल प्रदेश की वर्तमान राजधानी है। यह नगर मन्दिरों के लिये प्रसिद्ध है। इसे मन्दिरों की नगरी कहा जाये तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी भुवनेश्वर का राजा रानी मन्दिर और लिङ्गेश्वर प्रसिद्ध है। उनकी कला और पशु-पक्षियों का सूक्ष्म अंकन दर्शनीय है। राजा

रानी मन्दिर अपने सौन्दर्य के लिये प्रसिद्ध है। यहा कोई जित-मन्दिर नहीं है।

नगर मे राज्य-सरकार का सुन्दर मन्त्रालय है। इसमे कुछ पाषाण और धातु की जैन-मूर्तियाँ हैं। पाषाण की सभी प्रतिमाये आठवीं से दशवीं शताब्दी तक की है। मूर्तियों की कुल संख्या १३ है जो विविध स्थानों से संग्रहित की गयी है।

उड़ीसा

१ अजितनाथ तीर्थंकर—पद्मासन, अवगाहना ३ फुट ५ इन्च, मुख घिसनमा है, समय ६वीं १०वीं शताब्दी।

२ महावीर तीर्थंकर—तीन फुट पाँच इन्च।

३ महावीर तीर्थंकर खडगासन—४ फुट १० इन्च, मुख और दोनो चरमेन्द्र अस्पष्ट है। समय ८वीं शताब्दी, चरम्पा से प्राप्त।

४ ऋषभदेव कायोत्सर्ग—५ फुट १० इन्च, ध्यान-मुद्रा में अवस्थित, चरणो के दोनो ओर सौधर्म ईशान इन्द्र चमर ढोते हुये। उनके ऊपर चार-चार तीर्थंकर मूर्तियाँ हैं। समय ६वीं १०वीं शताब्दी, चरम्पा से प्राप्त।

५ ऋषभदेव तीर्थंकर—पद्मासन, सलेटी वर्ण, अवगाहना २ फुट ५ इन्च। समय ६वीं शताब्दी। पोडा सिंगडी (केओकार) से प्राप्त।

६ ऋषभदेव तीर्थंकर—अवगाहना २ फुट ४ इन्च, व्यामवर्ण, समय आठवीं शताब्दी पोडा सिंगडी, केओकर से प्राप्त।

७ पार्श्वनाथ तीर्थंकर—५ फुट अवगाहना, पद्मासन भूरा वर्ण, सर्प की कुण्डली सप्ताकणावली, मुख खण्डित, समय—१०वीं सदी (उदयगिरि से प्राप्त)।

८ शास्तिनाथ तीर्थंकर—पद्मासन ४ फुट, हरिण-

कोधन, इयामवर्ण, समय ६वीं १०वीं सदी चरम्पा (भद्रक) से प्राप्त ।

गंजय—

गंजय जिला आन्ध्र प्रदेश के उत्तरीय सीमान्त पर है अब उड़ीसा प्रान्त में है । इस जिले के जैलाक नामक स्थान में सगमेश्वर पहाड़ी की एक गुफा में चट्टान काटकर जैन तीर्थंकरों की बनायी गयी मूर्तियाँ मिली हैं । गुफा के बाहर महावीर तीर्थंकर की मूर्ति है ।

प्रतापपुर—

भानुपुर में दो मील आगे मंडक में लगभग एक फर्लांग दूर कच्चे मार्ग में यह गाँव बसा हुआ है । यहाँ भी नदी में जैन मूर्तियाँ निकली थी । गाव वालों ने उन्हे नदी के किनारे एक पीपल के वृक्ष के नीचे रख दिया है । उनमें से एक मूर्ति चोरी चली गयी है, शेष मूर्तियों को हिमो समीपवर्ती मठ में रख दिया गया है । इसमें स्पष्ट जाना जाता है कि कटक जिले के आस-पास जैनियों की अच्छी आबादी रही होगी और उनके मन्दिर भी रहे होंगे । उनके धराशायी हो जाने पर उनकी मूर्तियाँ नदी में ओर आस पास के स्थानों में भूमिसात हो गयी हैं । कटक जिले में और कई स्थान ऐसे हैं जिनमें खण्डित-अखण्डित मूर्तियाँ उपलब्ध होती हैं ।

उदयगिरि और खण्डगिरि—

भुवनेश्वर से ५ मील शिशुपाल गढ़ के उत्तर-पश्चिम में उदयगिरि-खण्डगिरि नाम के दो छोटे-छोटे पहाड़ हैं । उनकी ऊँचाई क्रमशः ११० फुट और १२३ फुट है । इन पहाड़ियों पर दि० जैन श्रमणों के तपश्चरण करने के लिये अनेक गुफायें बनी हुई हैं जिनकी संख्या १०० के लगभग है । इनमें दो गुफायें बड़ी हैं जो भगवान महावीर के समय से ही अर्हन्तों के मन्मथ में पावन हो चुकी थी । इनमें सबसे महत्वपूर्ण हाथी गुफा है जिनमें चेदिवश के राजा खारवेल का महत्वपूर्ण लेख अंकित है । उस काल में यहाँ हजारों की संख्या में श्रमण तपश्चरण करते थे । भगवान महावीर के समय कुमारी पर्वत पर चतुर्विध संघ अनेक बार आया था । हजारों साधु यहाँ रह कर आत्म साधना द्वारा आत्मसिद्धि प्राप्त करने का उपक्रम करते थे । महावीर स्वामी के गणधर सुवर्म स्वामी भी

अपने ५०० शिष्यों के साथ-कुमारगिरि पर, धर्मपुर आदि नगरों में विहार करते हुये पधारे थे । उदयगिरि का प्राचीन नाम कुमारगिरि था जिसके सम्बन्ध में कुछ विचार किया जाता है । हाथी गुफा की उक्त प्रशस्ति में भी कुमारगिरि का उल्लेख है । उस समय समूचा पर्वत कुमारगिरि कहलाता था । कुमारगिरि प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है, निर्वाण-भूमि है जो उदयगिरि के नाम से ख्यात है । भगवान महावीर ने कुमारगिरि पर उपदेश दिया था । कलिंग के राजा जितशत्रु ने इसी पर्वत पर जिन-दीक्षा ली थी और तपश्चरण द्वारा केवल ज्ञान प्राप्त किया और अघातिया कमों का नाश कर मुक्ति पद को प्राप्त किया था । सम्राट खारवेल ने भी अपना अन्तिम जीवन कवादिके अनुष्ठानपूर्वक यहीं बिताया था । खारवेल ने इसी पर्वत पर जैन-श्रमणों के लिये अनेक गुफाओं का निर्माण किया था और विशाल जिन मन्दिर बनवाया था । उसमें आदि जिन की उस सातिशय मूर्ति को जिसे कलिंग विजय के समय नन्द राजा ने गिराया था, पौने तीन सौ वर्ष बाद खारवेल ने पाटलिपुत्र से आकर महात्सव के साथ प्रतिष्ठित किया था । इन सब उल्लेखों से कुमारगिरि की महत्ता का सहज ही आभास हो जाता है ।

उदयगिरि पर अनेक महत्वपूर्ण गुफायें हैं जैसे रानी गुफा, मचूरी गुफा आदि । खण्डगिरि पर जितनी गुफायें उपलब्ध हैं उनमें कई गुफायें अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं जैसे तत्व गुफा, अनन्त गुफा आदि । खण्डगिरि पर चार जिन मन्दिर हैं जिनका संक्षिप्त परिचय निम्न प्रकार है—

लाल मन्दिर छोटा है । उसमें मण्डप और गर्भागृह बने हुए हैं । गर्भागृह में सगमग्गर का वेदी पर पाँच खड्गामय मूर्तियाँ विराजमान हैं । ऋषभदेव, शान्तिनाथ, पार्श्वनाथ, ऋषभदेव ।

एक बड़ा दि० जैन मन्दिर इसके पास है । द्वार में प्रवेश करते ही बाह्य मण्डप में मारबल की महावीर स्वामी की मनोज्ञ प्रतिमा विराजमान है । इस मन्दिर के गर्भागृह के सामने मुख्य वेदी पर मध्य में मूलनायक ऋषभदेव की पद्मासन प्रतिमा प्रतिष्ठित है, इसकी अव-गाहना ३ फुट है । इसके अतिरिक्त वेदी पर १४ प्रतिमायें और विराजमान हैं सभी प्रतिमायें प्राचीन हैं । इस मन्दिर के बायी ओर एक छोटा मन्दिर है । वेदी में कोई प्रतिमा

नहीं है। वेदी के आगे शिलाफलक पर २४ तीर्थंकरों के चरण-चिन्ह बने हुये हैं।

इसके आगे एक अन्य मन्दिर है। उसमें १३ फुट ऊँची कायोत्सर्गासन पार्श्वनाथ की श्यामवर्ण प्रतिमा विराजमान है जो वीर-निर्वाण सं० २४७६ में प्रतिष्ठित हुई, विराजमान है। उसके दोनों ओर पार्श्वनाथ के यक्ष-यक्षी धरणेन्द्र और पद्मावती खड़े हुये हैं। ये सभी प्राचीन मूर्तियाँ इसी पहाड़ के आस-पास उपलब्ध हुई थी जिनका अनुमानित समय ८वीं ९वीं शताब्दी है।

इस खण्डगिरि पर मन्दिरों के अतिरिक्त अनेक गुफायें हैं। इसमें ११ न० की गुफा ललोटन्दु केशरी की गुफा है जो गुफा न० १० से मिली हुई है। उसमें दो प्रकोष्ठ और एक बरामदा था जो अब गिर गया है। इस समय इसकी चौड़ाई १० फुट है और लम्बाई १२ फुट है। बाईं ओर की दीवार पर ५ तीर्थंकर खड्गासन मूर्तियाँ हैं और दायी ओर की दीवार पर दो मूर्तियाँ खड्गासन आदिनाथ और पार्श्वनाथ की हैं दोनों पहाड़ों पर जो गुफायें हैं उनमें उदयगिरि की रानी गुफा सबसे अन्दर है।

उत्कल—

उत्कल प्रदेश की प्राचीन राजधानी है। इसके तीन ओर नदियाँ हैं—महावती, कुआरबाई और काठजोडी। यह हावड़ा जकशन से पुरी जाने वाली रेलवे लाइन पर ४०.६ किमी० दूर है। स्टेशन से ५ किमी० दूर चौधरी चौधरी धाजार में जैन भवन है। इसके पृष्ठ भाग में

आठवे तीर्थंकर चन्द्रप्रभु का एक प्राचीन एवं विशाल दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर है जो बड़े मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें दो गर्भगृह हैं। दोनों में एक-एक वेदी है। बाईं ओर की वेदी में ६ पाषाण प्रतिमाये हैं तथा मुख्य वेदी में १६ पाषाण की और ६ धातु की प्रतिमाये हैं। इस मन्दिर की मुख्य वेदी पर स्थित चैत्य है इसी मन्दिर की उक्त वेदी पर ऋषभदेव की मनोःश धातु प्रतिमा है। बाईं ओर की वेदी में विराजमान सभी प्रतिमाये प्राचीन हैं। कहा जाता है कि ये प्रतिमाये खण्डगिरि से लाई गयी थी। इनका अनुमानिक प्रतिष्ठा-काल १०वीं शताब्दी है। सभी प्रतिमाये श्यामवर्ण की हैं एवं एक ही समय की निमित्त जान पड़ती हैं।

इस मन्दिर में ६ शिलाफलक हैं जिनमें सुन्दर मूर्तियाँ पार्श्वनाथ की खड्गासन हैं। चौथे फलक में सवा दो फुट की अबगाहना वाली श्यामवर्ण पार्श्वनाथ की खड्गासन मूर्ति के साथ बाईं ओर चार उपाध्याय मूर्तियाँ और दाईं ओर तीन उपाध्याय मूर्तियाँ और एक कीचक हैं। भगवान पार्श्वनाथ के गिर पर सप्त कणावलिर्वाँ अंकित हैं। मूर्ति भव्य और मनोहर हैं। फलक के शिरो-भाग पर दोनों कोनों पर केवल हाथ दिखायी पड़ते हैं बायीं ओर के हाथों में दुन्दुभी हैं और दायीं ओर के हाथों में श्लाघ है।

भुवनेश्वर के म्यूजियम में ८वीं शती की ऋषभदेव की पाषाण मूर्ति है ५ फुट ऊँची ८वीं शती की तीर्थंकर महावीर की मूर्ति है।

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
(अ) भानुपुर (कटक)	भानुपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
(आ) कटक	कटक	तीर्थंकर चन्द्रप्रभु दि० जैन मन्दिर (बड़ा मन्दिर)	जैन भवन (धर्मशाला) चौधरी बाजार
		चौधरी बाजार	
	कटक शहर	दि० जैन चैत्यालय	
		दि० जैन मन्दिर	
	खण्डगिरि	दि० जैन बड़ा मन्दिर	
		दि० जैन छोटा मन्दिर	
		दि० जैन छोटा मन्दिर	
		दि० जैन मन्दिर	

पंजाब भारत का एक महत्वपूर्ण सीमावर्ती राज्य है। पश्चिम में दूर तक इस राज्य की सीमा पाकिस्तान से मिली है। सतलज, व्यास और रावी नदियाँ इस राज्य से होकर बहती हैं। सतलज पर भाखरा बांध बन जाने से विद्युत ही नहीं परन्तु बहुत सी नहरों का भी निर्माण हुआ है। विद्युत से नलकूपों के चलाने तथा नहरों में खेतों की सिंचाई में बड़ी सहायता मिली है।

पंजाब

ज़िले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
(अ) फिरोजपुर	अबोहर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	फिरोजपुर शहर	श्री दि० जैन मन्दिर	लाला नानकचन्द जैन धर्मशाला
	जीरा (त०)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मण्डी मुक्तसर	श्री दि० जैन मन्दिर	
(आ) फिरोजपुर छावनी	फिरोजपुर छावनी	श्री दि० जैन मन्दिर	भगवान महावीर जैन वाचनालय
		बाजार न० ५	डालचन्द जैन हाई स्कूल
		श्री दि० जैन मन्दिर	डालचन्द जैन माडल स्कूल
		बाजार न० ५	हस्तलिखित शास्त्र भण्डार
		श्री दि० जैन मन्दिर	जैन गर्ल्स हाई स्कूल
		नमिया जी	लाड महावीर जैन मॉडल स्कूल
			श्री डालचन्द एण्ड मम
			छात्रवृत्ति ट्रस्ट
			श्री दि० जैन औपधाय
			श्री प्रभुदयाल आत्माराम जैन
			ट्रस्ट
(इ) जालन्धर छावनी	जालन्धर छावनी	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री० आर० जैन नेशनल
		मुहम्मदा न० १४	हाई स्कूल

भोलवाड़ा—

भोलवाड़ा तहसील क्षेत्र में तीन अतिशय क्षेत्र हैं —
(१) यह अतिशय क्षेत्र श्री बीजोलिया पार्श्वनाथ के नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ पर १० × १० फुट के मकान में चट्टान पर शिलालेख है शिलालेख से ऐसा ज्ञात होता है कि यहाँ पर ही श्री पार्श्वनाथ प्रभु को उपसर्ग प्राप्त हुआ था। प्रातः स्मरणीय आचार्यवर श्री पद्मनन्दी व शिष्य शुभचन्द्राचार्य जी की समाधि मण्डप है जिसमें दो खम्भों पर शिलालेख है।

(२) यह अतिशय क्षेत्र श्री चक्रेश्वर पार्श्वनाथ के नाम से प्रसिद्ध है। चार सौ फुट की ऊँचाई पर पहाड़ बना हुआ है।

(३) यह अतिशय क्षेत्र पारोली ग्राम में श्री आदिश्वर महाराज का मन्दिर, इस नाम से प्रसिद्ध है। मूर्ति के प्रक्षालन को बहुत से अजैन आदमी लेकर अपना कष्ट दूर करते हैं। मूर्ति पद्मानम ४ फुट ऊँची मनोज्ञ है।

बिजोलिया—

बिजोलिया राजस्थान स्थित बूंदी के एक कोने पर बना हुआ है जो उदयपुर से उत्तर पूर्व ११२ मील है, तथा कोटा से पश्चिम ३२ मील है। इसका प्राचीन नाम विन्ध्यावली था। इस नगर के शासक 'राव' या 'रावल' कहलाते थे। बिजोलिया के यह राव मालवा के परमार राजाओं के वंशधर हैं जिनकी राजधानी कभी धार और कभी उज्जैन रही है। दिल्ली के मुलतान मुहम्मद तुगलक के समय मालवा का प्रायः सभी प्रदेश-मुमलमानों के अधिकार में चला गया था अतएव परमारों के कुछ वंशधर अजमेर में और कुछ दक्षिणादि प्रान्तों में चले गये।

चाँदखेड़ी (अतिशय क्षेत्र)—

प्रकृति की शान्त एकान्त सुषमाओं के बीच अपने अतुल वीतराग वैभव को वायुमण्डल में विकीर्ण करता हुआ यह क्षेत्र चैतन्य विलासी सन्तो एवं साधकों का सदियों से आश्रान करता हुआ निर्विकल्प समाधि का निमन्त्रण देता रहा है। इस दृष्टि से चाँदखेड़ी राजस्थान का एक विरल क्षेत्र है। यह क्षेत्र बड़ा विशाल एवं मन्दिर

की रचना रहस्यमयी तिलस्मी है जिसे देखकर बड़े-बड़े वास्तुकला-विशेषज्ञ एवं इन्जीनियर आश्चर्य में पड़ जाते हैं। अतः यह क्षेत्र भारतीय वास्तुकला का एक सजीव प्रमाण है।

राजस्थान

मन्दिर के भूगर्भ में एक विशाल तल प्रकोष्ठ है जिसमें स० ५१२ की श्री आदिनाथ भगवान की लाल पाषाण की सवा छ फुट अवगाहना की पद्मासन प्रतिमा प्रतिष्ठित है। यह प्रतिमा इस क्षेत्र से लगभग ६ मील दूर बारहपाटी पर्वतमाला के एक हिस्से में दबी हुई प्राप्त हुई है। श्री किशनदास जी (ठग) बघेरवाल सागोद निवासी को एक दिन स्वप्न में बारहपाटी से प्रतिमा को यहाँ लाकर बिराजमान करने का संकेत मिला। तदनुरूप प्रतिमा को बँलगाड़ी में रखकर सागोद लायी जा रही थी कि मार्ग में रूपली नदी पर कारणवश गाड़ी ठहराई गयी। कुछ समय बाद बँल जोतकर गाड़ी चलाने का उपक्रम किया गया तो गाड़ी एक इन्च भी न चली। अतः नदी के ही एक भाग में उक्त मन्दिर का निर्माण सेठ किशनदास जी बघेरवाल ने प्रारम्भ कर दिया। सेठ किशनदाम इस समय कोटा स्टेट के दीवान थे।

इस मन्दिर के तल प्रकोष्ठ में एक ओर अष्ट प्रति-हार्य युक्त महावीर स्वामी की प्रतिमा बिराजमान है जो अत्यन्त मनोज्ञ एवं चित्ताकर्षक है।

जयपुर—

राजस्थान की राजधानी जयपुर 'जैनपुरी' के नाम से भी विख्यात है। जयपुर जहाँ प्रभुसत्ता सम्पन्न राजाओं के वैभव का केन्द्र रहा है वही आध्यात्मिक मनोसाधना का भी चिन्तन स्थल यह गुलाबी नगर रहा है। जयपुर का इतिहास जैन इतिहास को जोड़े बिना सम्पूर्ण नहीं कहा

जा सकता। जैन-दीवानों ने रियासत के माध्यम में जो राजस्थान सेवा की है वह इतिहास के पृष्ठों में स्मरणीय रहेगी। जयपुर में अनेक मूर्धन्य मनीषी मर्मज्ञ सिद्धान्त-वेत्ता साहित्यकार हुए हैं जिनमें मुख्यतः महाकवि दीनतराम जी, प० प्रवर टोडरमल जी, प० जयचन्द जी छाबड़ा, ऋषभदास जी, निगोला पार्श्वदास जी, प० रायमल्ल जी, प० सदासुख जी कासलीवाल ऋति विद्वद्भूत विशेष रूप से स्मरणीय हैं। प्राचीन सिद्धान्तों के अतिरिक्त वर्तमान विद्वानों की श्रुतिला भी निश्चित ही उल्लेखनीय रही है।

जयपुर में जहाँ गणनीय विद्वानों का कार्यक्षेत्र रहा है वही इस भूमि में पूज्य मुनिराजो, भुत्सक-धुत्तिकाओ एवं ब्रह्मचारियों को भी जन्म दिया है जिनमें से अनेक न्यायीवृद्ध अपनी तपश्चर्या व ज्ञानाराधना के लिये सुविख्यात हुए हैं।

जैनपुरी के नाम से विख्यात जयपुर में जितने जैन मन्दिर हैं उतने सम्भवतया देश में अन्य किसी भी एक स्थान पर नहीं हैं। जैन मन्दिरों एवं चैत्यालयों की संख्या १३७ है और आम-पास के आमेर, मागानेर आदि के मिलाने पर यह संख्या १८० हो जाती है। जयपुर शहर स्थित मन्दिरों में अनेक भव्य दर्शनीय तथा प्राचीन जैन-विम्ब विराजमान हैं जिनमें कालाडोरा मन्दिर में भगवान महावीर स्वामी की अत्यन्त मनोज्ञ विशालकाय खडगासन प्रतिमा जैन-संस्कृति एवं कला की जीवन्त प्रतिकृति है। शहर से बाहर आगरा रोड पर खानिया स्थित राणा जी की तसिया है जो अपनी विशालता एवं सुनहरी काम के लिये विख्यात है। यही पर सुप्रसिद्ध जैनाचार्य १०८ श्री वीर सागर जी महाराज का समाधिस्थल भी निर्माणित है—पाम ही पहाड़ी पर आचार्य १०८ श्री देशभूषण महाराज की प्रेरणा से निर्माणित भव्य जलगिरि क्षेत्र है जो यात्रास्थियों का दर्शनीय स्थल बना हुआ है। पहाड़ पर भगवान पार्श्वनाथ का मन्दिर २८ गुप्तियों में प्रतिमाये व चरण स्थापित है। मूलनायक ७ फुट उतुग भगवान पार्श्वनाथ की खडगासन प्रतिमा विराजमान है। जयपुर से उत्तरपूर्व ७ मील दूर अत्यन्त रमणीय आमेर नामक स्थान है जो पुराना जयपुर के नाम से जाना जाता है, जहाँ ७ प्राचीन जैन मन्दिर हैं जिनमें श्री सावला जी (भगवान नेमिनाथ) का मन्दिर विशेष विख्यात है। इसमें

७६ प्रतिमाये व २६ अन्य विराजमान हैं। प्राचीन शास्त्र भण्डार इसकी अमूल्य निधि है। इसके अतिरिक्त ऊपर की नभियाँ पहाड़ी पर निर्मित हैं जिसका निर्माण-काल १२वीं सदी है।

मसीपवर्ती सागानेर में भी विशाल ७ शिखरबद्ध जिन मन्दिर अवस्थित हैं—इनमें सभी जी का मन्दिर अत्यन्त भव्य एवं कलापूर्ण है। १२वीं शताब्दी में निर्मित इस मन्दिर जी में म० ११५० में प्रतिष्ठित मूर्ति मनोज्ञ एवं दर्शनीय है।

यहाँ कुल ८ शिक्षण संस्थायें हैं जिनमें स० १६४१ में संस्थापित दि० जैन संस्कृत कालिज अपना प्रमुख स्थान रखता है। श्री दि० जैन साहित्य शोध संस्थान के अतिरिक्त दो छावावास, चार पुस्तकालय, पाँच औषधालय तथा पाँच दि० जैन धर्मशालायें हैं। नव निर्मित टोडरमल-स्मारक भवन साहित्य प्रकाशन की दिशा में भी गतिशील है। लगभग ३५ हजार दि० जैनो की संख्या वाले इस जैन बहुल नगर में दो छात्रवृत्ति ट्रस्ट, महावीर क्लब, राजस्थान जैन साहित्य परिषद्, वीर-वाणी कार्यालय आदि विविध संस्थायें हैं। महिला जाग्रति की ओर भी यहाँ संस्थापित महिला-सघों का महत्वपूर्ण स्थान है। लौकिक अभ्युदय के अतिरिक्त आध्यात्मिक परिवेश में भी यह स्थान स्वयं में मुख्य रूप से उल्लेखनीय है।

यहाँ के शास्त्र भण्डारों में स्व० प० टोडरमल जी, सदासुख जी, प० जयचन्द जी छाबड़ा, जोधराज जी आदि मनीषी दिग्गजों की हस्तलिखित मूल पाण्डुलिपियाँ जैन संस्कृति की दुर्लभ धरोहरें सुरक्षित हैं। विभिन्न दि० जैन मन्दिरों में स्थित १७ शास्त्र भण्डारों में लगभग साढ़े सत्रह हजार दुर्लभ एवं प्राचीन ग्रन्थ विद्यमान हैं।

अपने कलात्मक वैभव के लिये प्रख्यात इस नगर के विभिन्न दि० जैन शास्त्र-भण्डारों में अनेक दुर्लभ चित्राकन युक्त ग्रन्थराज निश्चित ही अनुपमेय हैं। ३००० चित्रों सहित महापुराण, ३०० चित्रयुक्त आदि पुराण, स्वर्णाक्षरी प्रतियाँ, भव्य चित्र युक्त ऋषि मण्डल विधान आदि निश्चित ही उल्लेखनीय एवं गणनीय हैं।

जयपुर नगर दिल्ली अहमदाबाद छोटी लाइन पर अवस्थित पश्चिम रेलवे का महत्वपूर्ण स्थान है। यह

राष्ट्रीय राजमार्ग ८ पर अवस्थित राजस्थान के केन्द्र-बिन्दु से कुछ उत्तर में स्थित है। यहाँ के विभिन्न दि० जैन मन्दिरों में ५०० से १००० वर्ष प्राचीन दि० जिन-बिम्बों की संख्या लगभग ५७ है।

फुलेरा—

अहमदाबाद-दिल्ली मुख्य रेल लाइन पर फुलेरा एक महत्वपूर्ण जंक्शन है। यहाँ विक्रम सं० २००८ भव्य जिन मन्दिर का निर्माण हुआ। मन्दिर जी में भव्य जिन बिम्ब विराजमान है। मन्दिर जी के निकट ही एक जैन भवन यात्रियों की सुविधार्थ बनाया गया है। फुलेरा से लगभग २ मील दूर शादूलपुरा ग्राम में बहुत ही प्राचीन जिन मन्दिर है जिसमें भुवन मोहक जिन बिम्ब विराजमान है। फुलेरा से ही लगभग एक मील दूर कचरौदा ग्राम में भी एक प्राचीन जिन मन्दिर है।

नरैना—

नरैना में पिछले दिनों भू-उत्खनन से प्राचीन मनोह्र जिन प्रतिमाओं के प्राप्त होने के कारण इस स्थान की अधिक ख्याति हुई है। यहाँ के दो जिन मन्दिरों में पाँच मूर्तियाँ एक हजार वर्ष से अधिक प्राचीन हैं। योगदेव कृत तत्त्वार्थ वृत्ति की दुर्लभ पाण्डुलिपि भी यहाँ सुलभ है। भगवान महावीर, पार्ष्वनाथ, चन्द्रप्रभु, बाहुबली सरस्वती, पद्मावती, चन्द्रेश्वरी की कलात्मक सातिशय मूर्तियाँ विराजमान हैं। पाषाण में उत्कीर्ण शान्तिचक्र यन्त्र निश्चित ही अनूठा है। यात्रियों की सुविधार्थ जैन महावीर मदन के नाम से एक अतिथि-ग्रह तथा एक दि० जैन धर्मशाला है। विशाल जैन शास्त्र भण्डार में अनेकों उपयोगी ग्रन्थ हैं। लगभग २०० जैनो की आबादी वाले इस कस्बे की भौगोलिक स्थिति अति सुन्दर एवं व्यवस्थित है। रेलवे स्टेशन मुख्य राजमार्ग होने से आवागमन सुलभ है।

पापड़हा—

जयपुर से उत्तर में आगरा रोड पर स्थित है। यह प्राचीन ग्राम होने के साथ ही अनाज की एक अच्छी ब व्यवस्थित मण्डी है। यहाँ पर जैनियों के ५० परिवार हैं और संख्या लगभग २५० है। यहाँ दो दि० जैन मन्दिर हैं जिनमें लगभग ३६ जिन बिम्ब विराजमान हैं। कुछ

बिम्ब लगभग एक हजार वर्ष से अधिक प्राचीन हैं। स्टेशन पर तथा शहर में जैन-धर्मशालायें हैं। जयपुर-दिल्ली रेल एवं बस मार्ग पर अवस्थित होने से यहाँ आवागमन अति-सुलभ है।

श्री पद्मपुरा (अतिशय क्षेत्र)—

जयपुर में २१ मील दूर दक्षिण की ओर जयपुर-टोक मार्ग पर मुख्य सड़क पर शिवदासपुरा से तीन मील उत्तर की ओर भव्य-मनोरम क्षेत्र श्री पद्मपुरा अवस्थित है। अब से लगभग ३२ वर्ष पूर्व सं० २००१ बैसाख शुक्ला ५ के दिन छठे तीर्थंकर भगवान १००८ श्री पद्म-प्रभु स्वामी की श्वेत पाषाण की दिव्य चमत्कारयुक्त जिन प्रतिमा भूगर्भ से उत्खनन में प्राप्त हुई थी। भगवान पद्मप्रभु स्वामी का जिस स्थान पर उद्गम हुआ था वहाँ भव्य छतरी में भगवान के चरण विद्यमान हैं और उसके समीप ही पुराना जैन मन्दिर अवस्थित है। तबनिमित्त भव्य विशाल जिन मन्दिर राजस्थान की अतुलनीय पुरा सम्पदा में अपना एक विशिष्ट स्थान रखता है। जयपुर रियासत के तत्कालीन प्रधानमन्त्री सर मिर्जा इस्माइल के विशेष सहयोग से निर्मित इस भव्य जिन मन्दिर की डिजाइन स्थापत्य कला की दृष्टि अपना सानी नहीं रखती। शिखरबद्ध विशाल मन्दिर का जमीन से ८५ फुट उतुग शिखर चाँदनी रात में अपनी दिव्य श्वेत आभा से भक्त मन को सहज ही आकर्षित करता है। जिन मन्दिर के मूलनायक भगवान पद्मप्रभु स्वामी की मुख्य वेदी है।

जयपुर जिलान्तर्गत आस-पास के गाँवों में भव्य एवं प्राचीन जिन मन्दिर जी अवस्थित हैं जिनकी संख्या लगभग १५० है जो इस तथ्य के जीवन्त प्रमाण हैं कि यहाँ विश्व विश्रुत जैन-धर्म का प्रचार-प्रसार बहुत अधिक था। यद्यपि इन स्थानों पर जैन जनसंख्या बहुत अधिक नहीं है तथापि जन-जन के धर्म जिन धर्म का निनाद चहुँ ओर है।

निम्नांकित कुछ ग्राम के मन्दिर अपने सांस्कृतिक-वैभव के लिये विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं यथा—

मोजमाबाद, किशनगढ़ सैवाल, जोबनेर, नरैना, फुलेरा, हूह, फागी, चौर, माधोराजपुरा, बगकमहला,

दौसा, बसवा सामर आदि। उक्त स्थानों पर एकाधिक जिन मन्दिर जी के अतिरिक्त प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ-राज भी सुरक्षित है। मोजमाबाद (मोजाद) लघु अतिशय क्षेत्र के नाम से विख्यात है। बहरे में विराजमान प्राचीन मनोरम जिन बिम्ब यकायक ही भक्त मन को आकर्षित कर लेते हैं।

टोंक —

टोंक जिले में अधिकतर भूतपूर्व जयपुर स्टेट के गाँव व कस्बे एवं सम्पूर्ण टोंक राज्य एवं कुछ बूँदी रियासत के गाँव सम्मिलित किये गये हैं। इस जिले में दि० जैन आमनाथ के लोगों की संख्या लगभग २०,००० है जिसमें अधिकतर दि० जैन खण्डेलवाल एवं अग्रवाल हैं। जिले में कुछ संख्या पोरवाल व बघेर वालों की है।

टोंक जिले के गमस्त कस्बों व बड़े-बड़े गाँवों में दि० जैन मन्दिर व धर्मशालाएँ हैं। कुछ मन्दिरों के गगनचुम्बी शिखर व बनावट इस बात का द्योतक है कि ये मन्दिर अति प्राचीन हैं। इन मन्दिरों में जो प्रतिमाएँ हैं वे भी काफी प्राचीन, भव्य एवं चमत्कारी हैं। इन मन्दिरों में टोडारामसिंह टोंक एवं मालपुरा कस्बों के एवं साखना आवा ग्रामों के मन्दिर काफी प्राचीन हैं। कुछ मन्दिर तो हजार वर्ष से भी पुराने बताये जाते हैं। साखना एवं आवा वेद दि० जैन मन्दिरों में दर्शनीय व अतिशयकारी भगवान शान्तिनाथ स्वामी की मूर्तियाँ विराजमान हैं जिनके दर्शनार्थ दूर-दूर से जैन-यात्री आते हैं।

टोडारामसिंह जो कि भूतपूर्व जयपुर रियासत का एक प्रमुख कस्बा था, ये आदिनाथ स्वामी का व नेमीनाथ स्वामी का मन्दिर काफी प्राचीन व विशाल है। इन मन्दिरों की बनावट से प्रतीत होता है कि ये मन्दिर मुगल साम्राज्य के पहलू के बनाये गये हैं जो मन्दिरों में विद्यमान १२वीं सदी की प्रतिमाओं से स्पष्ट है। नेमीनाथ स्वामी के मन्दिर जिसको रेण का मन्दिर के नाम से पुकारा जाता है, में एक अच्छा हस्तलिखित शास्त्र-भण्डार भी है।

इन दोनों मन्दिरों की कुछ मूर्तियों के चित्र जयपुर के म्युजियम में रखे हुए हैं। टोडारामसिंह में दादाबाड़ी के पास मुनि सिंह नदी आदि की छतरियाँ तथा निसी ही तथा नग्न मूर्तियाँ पीछी कमण्डल लिये उदयासन से युक्त उत्कीर्ण की गई हैं जिन पर तीर्थंकर प्रतिमाएँ उत्कीर्ण की गई हैं। जिन पर म० १४६१ के शिलालेख हैं। इनके अतिरिक्त यहाँ पर जो पहाड़ पर छतरियाँ विद्यमान हैं उस पर म० १६८१, १६८७ व १७१६ के जैन शिलालेख हैं, टोडारामसिंह के जैन मन्दिरों में चमत्कारिक, कलात्मक एवं विशाल यन्त्र विद्यमान हैं। मालपुरा में श्री आदिनाथ स्वामी एवं पार्श्वनाथ स्वामी का प्राचीन, भव्य एवं चमत्कारी प्रतिमाएँ हैं।

टोंक शहर में माणक चौक स्थित पाँच मन्दिर विख्यात हैं। मन्दिर काफी पुराने व विशाल हैं जिनमें भव्य प्राचीन अतिशयकारी जैन मूर्तियाँ विराजमान हैं। टोंक में लगभग २० वर्ष पूर्व भूकम्प से २६ मूर्तियाँ निकली थी, जो काफी प्राचीन हैं। ये मूर्तियाँ ११वीं, १४वीं व १६वीं सदी की हैं। टोंक शहर में मन्दिरों में कुछ हस्त-लिखित व प्राचीन जैन शास्त्र व रचनाएँ उपलब्ध हैं। इनमें से अभी एक ग्रन्थ 'पारम पदावली' का प्रकाशन भी डा० गगाराम गर्ग के सान्निध्य में जैन समाज टोंक द्वारा करवाया गया है।

इन दोनों कस्बों के अतिरिक्त मालपुरा, निवार्दी, उणियारा पीपलू, दूणी, राजमहल, देवली ग्राम व डिग्गी आदि के जैन मन्दिर भी प्राचीन एवं विशाल हैं।

टोंक, टोडारामसिंह, मालपुरा निवार्दी, उणियारा, आवा, लावा कस्बों एवं गाँवों में जैन पाठशालाएँ, धर्म-शालाएँ व पुस्तकालय आदि हैं पर इन सम्बन्ध में टोंक जिला काफी पिछड़ा हुआ है। भगवान महावीर के २५०० वें निर्वाण स० के उपलक्ष्य में टोंक शहर में जैन छात्रों के लिये एक छात्रावास भी इसी वर्ष जुलाई से प्रारम्भ कर दिया गया है।

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
(अ) बीकानेर	बीकानेर		श्री दि० जैन धर्मशाला, नशिया जी जेल रोड
(आ) भीलवाड़ा	अडवड	श्री दि० जैन मन्दिर	
	आलोजी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	आमलदा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अमरगढ़	श्री दि० जैन मन्दिर	
	आमखासी	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	अपरीपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अरनिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	आरोली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	आटौन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बच्छेवेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बागीर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बागुदार	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बलान्ड	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बनेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बासडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बेरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भरनी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भीलवाड़ा	श्री दि० जैन मन्दिर	दि० जैन पाठशाला द्वारा
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री हीरालाल अजमेरा,
		श्री दि० जैन मन्दिर	भूपालगज
		श्री दि० जैन मन्दिर	महावीर शिक्षण संस्था
			विमल सागर जैन पाठशाला
	बिजोलिया	श्री दि० जैन मन्दिर	बाल वीर सेवक समाज
		श्री दि० जैन मन्दिर	दि० जैन भवन (धर्मशाला)
			जैन पुस्तकालय व वाचनालय
			जैन सेवा सभ
			वीतराग विज्ञान पाठशाला
	बिकरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बोरडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बोरियापुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चावलेश्वर जी पार्श्वनाथ	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सस्थाओं के नाम
भीलवाड़ा	छोटी बिजोलिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	डाडिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	डाबला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	धामनिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	घुआला	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	फुराडिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गाडोली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गन्धेर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गगापुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गुलाबपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हमीरगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जहाजपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जमुजी का खेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जोजवा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कीठिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खजूरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खोरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कोटडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कोठाज	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कुचलवाडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लसाडिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लुहारी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	महुँआ	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन कन्याशाला
	मांडलगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	मेजा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पलासिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पन्डेर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पारोली	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
	(अतिशय क्षेत्र)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	राज्यास	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रौपा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रेड	श्री दि० जैन मन्दिर	

[illegible]

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सस्थाओं के नाम
जयपुर	चाकसु		श्री पदमपुरा दि० जैन तीर्थक्षेत्र श्यामापुरा, चाकसु
	चाँदमाकला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चाँदराना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	छपयया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	छारेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चीसला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चिन्तोई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चोरुगाँव		श्री दि० जैन चन्द्रसागर ओपधालय नहमील फागी
	छोटी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	दौसा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ढिगुणिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बोवलाई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	डिठवान	श्री दि० जैन मन्दिर	
	दूह	श्री दि० जैन मन्दिर	
	डोरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	दुर्गापुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	फुलेरा	श्री दि० जैन आदिनाथ मन्दिर	आदिनाथ दि० जैन वीतराग विज्ञान पाठशाला जैन भवन C/O दि० जैन मन्दिर श्री आदिनाथ जैन विद्यालय श्री दि० जैन धर्मरक्षक मण्डल
	गमाती	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गोहन्दी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गोनापुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गोविन्दनगर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हरसूली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	इटवा थोप जी का	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जैतपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जाकोडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जटवाडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
जयपुर		चौकड़ी घाट दरवाजा	श्री महावीर जी दि० जैन अतिशय तीर्थ क्षेत्र जयपुर

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
जयपुर	जयपुर	श्री दि० जैन चै० बजो का, बालमुकद जी बज वाली हवेली में	दि० जैन बाल शिक्षा मन्दिर खजाची की नमियाँ ससार चन्द्र रोड
		श्री दि० जैन चै० बरूशी जी, बरूशी किस्तूर चन्द जी की हवेली	दि० जैन संस्कृत कालिज मनिहारो का रास्ता चौ० मोदीखाना
		श्री दि० जैन चै० बाकीवाला निकट चबरी बरदार बाग	महावीर दि० जैन बालिका मा० विद्यालय चौरुका की गली, मनिहारो का रास्ता
		श्री दि० जैन चै० छाबडो का निकट मनीराम जी की कोठी (चांदूमल जी नायब के मकान में)	महावीर दि० जैन हा० से० स्कूल, महावीर मार्ग, सी-स्कीम
		श्री दि० जैन चैत्यालय चाहूलाल जी गगवाल चौक नागोरियान, गगवाल भवन	पद्मावती बालिका उच्च मा० विद्यालय श्री बानो का रास्ता जौहरी बाजार
		श्री दि० जैन चैत्यालय, दल जी चौधरी का, छाबडो का तथा कोडी वालों का, दाई की गली कोडी वालों का मकान	प० चैनसुखदास जैन छात्रावास मनिहारो का रास्ता त्रिपोलिया बाजार
		श्री दि० जैन चैत्यालय दारोगा जी, दरोगा जी की पुरानी हवेली खुर्रे पर	राजस्थान जैन साहित्य परिषद् दि० जैन मन्दिर बडा दीवान जी मनिहारो का रास्ता
		श्री दि० जैन चैत्यालय देहली बानो का हल्दियों का रास्ता, पहले चौराहे में कूट वाली हवेली में	श्री जैन दर्शन विद्यालय चाकसू का चौक, हल्दियों का रास्ता, जौहरी बाजार
		श्री दि० जैन चैत्यालय ढोलको का जोराष्टर कम्पनी के सामने	साहित्य शोध विभाग महावीर भवन, चौडा रास्ता
		श्री दि० जैन चैत्यालय गोदीको का सेठ चांदणमल जी की हवेली के पास	श्री ज्ञान विद्यालय बोरडी का रास्ता चौ० मोदीखाना

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
जयपुर	जयपुर	श्री दि० जैन चैत्यालय ईसरलाल जी गोधा, गोधो का चौक, ऊँचा कुआ	श्री जैन दर्शन विद्यालय चाकसू का चौक, हल्दियों का रास्ता, जौहरी बाजार
		श्री दि० जैन चैत्यालय जौहरियो का बिजैलाल जी जौहरी की गली लाल कटले के पास	श्री पाश्र्वनाथ विद्यालय चाकसू का चौक हल्दियों का रास्ता जौहरी बाजार
		श्री दि० जैन चैत्यालय रसोवड़े वाले बजों का, हल्दियों का रास्ता महमियों के दरवाजे में	श्री शान्तिवीर दि० जैन गुरुकुल छात्रावास सघी जी की नसिया गगोपोल दरवाजे के बाहर
		श्री दि० जैन चैत्यालय रिखब जी गोधा, गोधो का चौक, ऊँचा कुआ	श्री शान्तिवीर दि० जैन गुरुकुल सघी जी की नसिया गगोपोल दरवाजे के बाहर
		श्री दि० जैन चै० सघी जी कठहारे के कुवे की गली	वीतराग विज्ञान पाठशाला दि० जैन मन्दिर २० दुकान आदर्शनगर
		श्री दि० जैन चैत्यालय (सेठियों का) बालमुकुन्द जी बज के सामने	वीतराग विज्ञान पाठशाला दि० जैन मन्दिर दीवान बघीचन्द, धी बालो का रास्ता
		श्री दि० जैन चैत्यालय (सोनियों का) दारोगाजी के मन्दिर के पीछे सुन्दरलाल सोनी के मकान में	वीतराग विज्ञान पाठशाला शिवाड बाकलीवाल का मन्दिर, किशनपोल बाजार
		श्री दि० जैन चैत्यालय तूगावालो का कुन्दीगरो के भैरु का रास्ता, तूगे बालो की हवेली	वीतराग विज्ञान पाठशाला टोडरमल स्मारक भवन ए-4, बापूनगर
		श्री दि० जैन चै० वैदो का दाई की गली, वैदो का मकान	श्री दि० जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी छात्रवृत्ति फंड, महावीर भवन चौड़ा रास्ता

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सस्थाओं के नाम
जयपुर	जयपुर	श्री दि० जैन चैत्यालय (विन्दायक्यों का) कमला नेहरू स्कूल के पास श्री दि० जैन चैत्यालय घासीलाल जी ठोलिया, दाई की गली, ठोलियो की हवेली श्री दि० जैन मन्दिर बड़ा मन्दिर ठाकुर फतेहसिंह जी के सामने श्री दि० जैन मन्दिर, बासका गोधो का चौक, ऊँचा कुँआ श्री दि० जैन मन्दिर, भूरा जी बैज्या के चौराहे की कूट पर श्री दि० जैन मन्दिर, बूचरो का चाकसू का चौक श्री दि० जैन मन्दिर चाकसू (पचायती) चाकसू का चौक श्री दि० जैन मन्दिर चौधरियो का बरूशी जी का चौक श्री दि० जैन मन्दिर, दारोगा जी निकट ऊँचा कुवा श्री दि० जैन मन्दिर दीवान बघीचन्द जी साह, ठोलियो के मन्दिर के चौराहे पर श्री दि० जैन मन्दिर फागी, काँच की चूड़ी वालो का चौराहा श्री दि० जैन मन्दिर गोधो का नागोरियो के चौक मे	श्री दि० जैन चैनसुखदास ट्रस्ट मनिहार का रास्ता श्री दि० जैन केसरवाल बरूशी सहायता कोष न्यू कालोनी श्री दि० जैन सन्मति पुस्तकालय ट्रस्ट बड़ा मन्दिर, हन्दिओ का रास्ता श्री दि० जैन सन्मति सहायता ट्रस्ट घी वालो का रास्ता श्री दि० जैन महावीर पुस्तकालय चौ० मोदीखाना श्री दि० जैन वाचनालय, दि० जैन धर्मशाला बजी ठोलिया, घी वालो का रास्ता श्री पारस वाचनालय गोधो का चौक, ऊँचा कुवा चौ० घाट दरवाजा श्री सन्मति पुस्तकालय, अर्जुन लाल सेठी नगर श्री सन्मति पुस्तकालय (शहर) श्री दि० जैन बड़ा मन्दिर जी तेरापंथी, घी वालो का रास्ता, जोहरी बाजार

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सस्थाओं के नाम
जयपुर	जयपुर	श्री दि० जैन मन्दिर गुमाना राम जी पद्मावती कन्या पाठशाला के पास	श्री दि० जैन औषधालय लाल जी साह का रास्ता दीवान जी की धर्मशाला चौ० मोदीखाना
		श्री दि० जैन मन्दिर, जीवूबाई जी शिवजीराम भवन के सामने	श्री सेवापथ जैन औषधालय चम्पापुरा की गली, रास्ता चुरकाई चौ० मोदीखाना
		श्री दि० जैन मन्दिर लाठी जी निकट दारोगा जी की हवेली	श्री शान्तिसागर दि० जैन औषधालय बजी ठोलियो की धर्मशाला चौ० घाट दरवाजा
		श्री दि० जैन मन्दिर ला० अमीचन्द जी (चौबीसम०) बैज्या के चौराहे की कूट पर	श्री दि० जैन धर्मशाला, बस्ती जी, बस्ती जी का चौक रामगज बाजार
		श्री दि० जैन मन्दिर मारु जी का चौक	श्री दि० जैन धर्मशाला बजी ठोलियान घी वाला का रास्ता चौ० घाट दरवाजा
		श्री दि० जैन मन्दिर मुशरफो का मनीराम जी की कोठी के सामने मुशरफो का चौक	
		श्री दि० जैन मन्दिर नया वैराठियो का पीपली महादेवजी का चौराहा	श्री दि० जैन धर्मशाला दीवान अमरचन्दजी, लाल जी साह का रास्ता, चौ० मोदीखाना
		श्री दि० जैन मन्दिर नया चौधरियो का, बोहरा जी के कुबे के पास	श्री दि० जैन धर्मशाला खिदकान चुरको का रास्ता चौ० मोदीखाना
		श्री दि० जैन मन्दिर निगोतिथो का बोहरा जी के कुबे के पास	श्री दि० जैन धर्मशाला मल जी छोगालाल सेठी मिर्जा
		श्री दि० जैन मन्दिर प० लूणकरण जी ठाकुर पचेवर का रास्ता, खुरें पर	इस्माइल रोड टोडरमल स्मारक मवन गांधी नगर मार्ग बापूनगर

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
जयपुर	जयपुर	श्री दि० जैन मन्दिर ठोलियो का धर्मशाला सेठ बनजीलाल जी ठोलियो के सामने श्री दि० जैन मन्दिर वैदो का कोठी मनीराम जी के सामने (चौकड़ी तोपखाना हज़ूरी सूरजपोल बाजार) श्री दि० जैन चैत्यालय श्रतुर्भुज जी सोगाणी चौकड़ी रामचन्द्र जी नला मे धामाई जी का खुरा उतर कर श्री दि० जैन चैत्यालय खानसामा वाले दीवानो का, दीवान खानसामा वालो की हवेली श्री दि० जैन चैत्यालय मु० किरपाचन्द जी अचरोल वालो की हवेली का रास्ता सोनियो के मन्दिर से सीधा श्री दि० जैन चैत्यालय तनसुखजी श्रीमाल, श्रीमालो की हवेली श्री दि० जैन चैत्यालय तेरापधियो का भट्टो की गली, विधानसभा के सामने श्री दि० जैन मन्दिर अठारह महाराज पानो का दरीबा मुक्तीम जी के पास श्री दि० जैन मन्दिर बिजैराम जी पाडया पानो का दरीबा, मुक्तीम जी के पास	जैन वीरमडल नमक की मडी किशनपोल बाजार जैन युवक सघ मगीत मडल दि० जैन मन्दिर, बेगस्यान चाँदपोल बाजार महावीर क्लब, महावीर पार्क रोड, चौ० मोदीखाना श्री दि० अखिल विश्व जैन मिशन, घी वालो का रास्ता श्री दि० भारत जैन महा मडल, सीर-कीम श्री दि० जैन बाहुबली व्यायामशाला, हल्दियो का रास्ता श्री दि० जैन महिला परिषद मनिहारो का रास्ता श्री दि० जैन वीर मडल श्री वीर सेवक मडल स्वयं सेवक बाल सहेली शुक्रवार सगीत दि० जैन मन्दिर महावीर स्वामी, गोपाल जी का रास्ता

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
जयपुर	जयपुर	श्री दि० जैन मन्दिर ढूँडियो का (पाटनियो का) जीन माता के खुर्रे का रास्ता श्री दि० जैन मन्दिर सोनियो का खवास बाला, बरुसा जी का रास्ता पानो का दरवाजा	महिला जाग्रति संघ दि० जैन संस्कृत कालिज, मनिहारो का रास्ता
		(चौकड़ी गगापोल)	
		श्री दि० जैन चैत्यालय राब किरपागाम जी आमेर रोड पर	पूजा प्रचारक समिति सगीत एव पूजा
		(चौकड़ी विशेषर जी)	
		श्री दि० जैन चैत्यालय भागचन्द जी दीवान चौडा रास्ता, पतेपुरियो की गली, दरवाजा वाली हवेली	श्री दि० शारदा सहेली सघ घी वालो का रास्ता श्री महावीर सगीत मण्डल गोपाल जी का रास्ता
		श्री दि० जैन चैत्यालय पारमलाल जी गोधा पीतलियो का चौक, पहली हवेली मे	श्री वीर महिला सघ खिन्दूको की धर्मशाला, चौकको का रास्ता, चौ० मोदीखाना
		श्री दि० जैन चैत्यालय तोतूको का बारह गणगोर का रास्ता	श्री वीर सगीत मण्डल दि० जैन मन्दिर चौधरियान चौ० मोदीखाना
		श्री दि० जैन मन्दिर कालाडहग श्री महावीर स्वामी, गोपाल जी का रास्ता	श्री दि० जैन महावीर समाचार समिति टोडरमल स्मारक
		श्री दि० जैन मन्दिर कलहू कीर्ति जी चौडा रास्ता बाजार मे	श्री दि० जैन विवाह सूचना केन्द्र न्यू कालोनी
		(चौकड़ी मोदीखाना)	
		श्री दि० जैन चैत्यालय आधीको को अजबघर का रास्ता, जमनालाल जी माह के सामने	श्री दि० जैन उद्योग व्यवसाय समिति

ज़िले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सस्थाओं के नाम
जयपुर	जयपुर	श्री दि० जैन चैत्यालय बजो का नरसिंहदास जी की हवेली के सामने श्री दि० जैन चैत्यालय बजो का राजूलाल जी की गली सघी जी के मकान के सामने श्री दि० जैन चैत्यालय बट वालो का बट वालो का नीम वाला मकान श्री दि० जैन चैत्यालय भाँवसो का (दरवाजा) दीवान अमरचन्द जी के मन्दिर के पीछे भावसो की गली मे श्री दि० जैन चैत्यालय भाँवसो का (३० लाडली वाला) दीवान अमरचन्द जी के मन्दिर के पीछे भावसो की गली मे श्री दि० जैन चैत्यालय भुरामल जी साह खिदूको की गली, गोटे वालो के सामने श्री दि० जैन चैत्यालय चोख जी खिदूका बघीचन्द जी गगवाल के सामने श्री दि० जैन चैत्यालय दीवान अमरचन्द जी दीवान अमरचन्द जी की हवेली मे श्री दि० जैन चैत्यालय दूनी वालो का छीक माता के मन्दिर के सामने	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सत्स्थाओं के नाम
जयपुर	जयपुर	श्री दि० जैन चैत्यालय गोदीको का हरसुख जी कामलीवाल का रास्ता श्री दि० जैन चैत्यालय (नया) गोदीको का हरसुख जी कामली वाले का रास्ता श्री दि० जैन चैत्यालय गोटे वालो का खिदूको की गली, गोटे वालो का मकान श्री दि० जैन चैत्यालय झबरयो का सिरमोरियो के मन्दिर के सामने श्री दि० जैन चैत्यालय खिदूको का महावीर पार्क, श्री ज्ञानचन्द्र जी खिदूको का मकान श्री दि० जैन चैत्यालय लक्ष्मणलाल जी दीवान नाटानियो का रास्ता श्री दि० जैन चैत्यालय लोग्या का दीवान जी की धर्मशाला के पीछे श्री दि० जैन चैत्यालय मुशरफो का नाटानियो का रास्ता श्री दि० जैन चैत्यालय नकटीको का मधी जी का रास्ता निकट डागग्यल वालो की हवेली के पास श्री दि० जैन चैत्यालय प० सदासुख जी हेडका मनिहारो का रास्ता	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
जयपुर	जयपुर	श्री दि० जैन चैत्यालय परमानन्द जी खिदूका, चूरुको का रास्ता, खारी कुई श्री दि० जैन चैत्यालय साहो का साहो के मकान में श्री दि० जैन चैत्यालय सांगाको का अजबघर के पीछे की हवेली में श्री दि० जैन चैत्यालय संधी जी दीवान शिवाजी लाल का रास्ता चौराहे पर श्री दि० जैन चैत्यालय टोडरको का दीवान जी की धर्मशाला के पीछे श्री दि० जैन मन्दिर बडा दीवान जी मणिहारो का रास्ता श्री दि० जैन मन्दिर बाई जी का चूरुको का रास्ता, चौराहे की कूट श्री दि० जैन मन्दिर बाकली वालो का दी० शिवजीलाल जी के आडे रास्ते में बाकली वालो की गली श्री दि० जैन मन्दिर भाँवसो का दीवान अमरचन्द जी के मन्दिर के पीछे भाँवसो की गली में श्री दि० जैन मन्दिर छाबडो का छीक साता के मन्दिर के पास श्री दि० जैन मन्दिर चम्पाराम जी पाडया आचार्यों के रास्ते का चौराहा	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
जयपुर	जयपुर	श्री दि० जैन मन्दिर चौवरियो का बौली के कुए के पास श्री दि० जैन मन्दिर दीवान अमरचन्द जी लाल जी माड का रास्ता श्री दि० जैन मन्दिर गढमल जी का दीवान शिवजी लाल जी का रास्ता कुए के सामने श्री दि० जैन मन्दिर जती जी का मनिहारो का रास्ता श्री दि० जैन मन्दिर कालो का छाबडो के म० के आगे की गली मे श्री दि० जैन मन्दिर खिड्को का चौराहे की कूट पर बूखो का रास्ता श्री दि० जैन मन्दिर खोजो का दीवान शिवजी लाल जी का रास्ता बाडदारो के पास श्री दि० जैन मन्दिर लस्कर का बोरडी का रास्ता श्री दि० जैन मन्दिर मेघराज जी खिड्को की गली, रावको के मकान के पास श्री दि० जैन मन्दिर पहाडियो का दीवान अमरचन्द जी की गली मे	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
जयपुर	जयपुर	श्री दि० जैन मन्दिर पापलियो का लाल जी साह का रास्ता, कुवे के पास श्री दि० जैन मन्दिर पाटोदी का मनिहारो का रास्ता श्री दि० जैन मन्दिर सागा कोका सागाको का रास्ता श्री दि० जैन मन्दिर सधी जी महावीर पार्क के पास श्री दि० जैन मन्दिर सिरमोरियो का आचार्यों का रास्ता श्री दि० जैन मन्दिर, सिवाड वालो का दीवान शिवजी लाल जी के आडे रास्ते मे बाकली वालो की गली	

(चौकड़ी तोपखाना देश)

श्री दि० जैन चैत्यालय
बाजूलाल जी गोधा
टिक्कडमल का रास्ता
खुद की हवेली मे
श्री दि० जैन चैत्यालय
बरुशी जी का
आकडो का रास्ता
श्री दि० जैन चैत्यालय
धमाने वालो का
नमक की मडी, कालख
वालो का चौक

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
जयपुर	जयपुर	श्री दि० जैन चैत्यालय डिग्गी वालो का टिक्की वालो का रास्ता, जमना लाल जी डिग्गी वालो का मकान	
		श्री दि० जैन चैत्यालय झटे वाला का किशनपोल बा०, आर्य समाज के पास	
		श्री दि० जैन मन्दिर बगीचीवाले बजो का टिक्की का रास्ता	
		श्री दि० जैन मन्दिर बघीचन्द जी बज का टिक्की वालो का रास्ता	
		श्री दि० जैन मन्दिर, आमली का अजमेरी दरवाजा, सुन्दर का बास	
		श्री दि० जैन मन्दिर, डूंगरसी पाडया टिक्की वालो का पहला चौराहा का आडा रास्ता	
		श्री दि० जैन मन्दिर जोबनेर झालानियो का रास्ता	
		श्री दि० जैन मन्दिर प० शिवजी लाल जी पाडया आकडो का रास्ता किशनपोल बा०	
		श्री दि० जैन मन्दिर सौगणियो का आकडो का रास्ता, किशनपोल बा०	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
जयपुर	जयपुर	(चौकड़ी पुरानी बस्ती)	
		श्री दि० जैन मन्दिर बैनाडों का ठा० हरीसिंह जी लाडरवानी के सामने	
		श्री दि० जैन मन्दिर बेगस्यों का चाँदपोल बाजार, उणियारा वालो का रास्ता	
		श्री दि० जैन मन्दिर चिनोई वालो का शूरगढी छीपीवाडा मे	
		श्री दि० जैन मन्दिर कासलीवालो का ठा० हरीसिंह लाडरवानी के सामने	
		(चौकड़ी हवाली शहर)	
		श्री दि० जैन चैत्यालय बगवाडे वालो का गगवाल पार्क, मेडीकल कालिज के पीछे	
		श्री दि० जैन चैत्यालय बापूतगर गणेश मार्ग रामबाग चौराहे से आगे	
		श्री दि० जैन चैत्यालय बूचरो का बूचरा बिल्डिंग, भगवानदास रोड	
		श्री दि० जैन चैत्यालय पार्श्वनाथ हिन्दु होटल वालो का बगला, नले पर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
जयपुर	जयपुर	श्री दि० जैन चैत्यालय सेठियो का पचार वालो का बगला, फतहटीबा	
		श्री दि० जैन चैत्यालय ठोलियो का ठोलिया बिल्डिंग, मिर्जा इस्माइल रोड	
		श्री दि० जैन चैत्यालय टोडरमल स्मारक भवन, गांधी नगर रोड	
		श्री दि० जैन मन्दिर मोहनवाडी गलता दरवाजा बाहर	
		श्री दि० जैन मन्दिर मुलतान बालो का आदर्श नगर मे, १२ दुकानो के पास	
		श्री दि० जैन नशियाँ बागरु वालो की स्टेशन पर अटल जी के सामने	
		श्री दि० जैन नशियाँ भट्टारक जी रामबाग होटल से पहले, रामसिंह रोड	
		श्री दि० जैन नशिया दीवान जी सवाई मानसिंह अस्पताल के सामने	
		श्री दि० जैन नशिया खजाची चौदपोल दरवाजा बाहर	
		श्री दि० जैन नशिया तेरापथियो की स्टेशन पर, पो० आ० के पास	

खिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थानों के नाम
जयपुर	जेरामपुरा जोबनेर	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन चैत्यालय श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर	जैन औषधालय श्री दि० जैन धर्मशाला श्री शान्तिवीर जैन गुरुकुल श्री शान्तिवीर जैन गुरुकुल प्रवेशिका संस्कृत विद्यालय वीतराग विज्ञान पाठशाला C/o शान्तिवीर जैन गुरुकुल
	कचरोदा कालाडोरा करड करणसर खडेली खैरवाल खैराबीसल खानियाँ जी	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन चूलगिरि जी अतिशय तीर्थ क्षेत्र खानिया जी
	खिजूरिया लढाना लाखडा लालसोट लासना लसरीप लवासा लेतावाला लुण्डियावाट माधोराजपुर माधोसिंहपुरा मण्डा भीमसिंह माडारेज मडावरी मरबा मोजमाबाद	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन बडा मन्दिर श्री दि० जैन छोटा मन्दिर	श्री दि० जैन बडी धर्मशाला श्री दि० जैन छोटी धर्मशाला

जिले का नाम

जयपुर

स्थान का नाम

मोजमाबाद
मोपजी
मुबाडा
मुन्डीला
मुरलीपुर
मुवाणा
नमिला
नरायना

मन्दिर का नाम व स्थान

श्री दि० जैन नशिया
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर

अन्य संस्थाओं के नाम

श्री दि० जैन यशस्वी औषधालय

श्री दि० जैन धर्मशाला

श्री दि० जैन पुस्तकालय

(जैन महावीर भवन)

श्री महावीर भवन (धर्मशाला)

नीमडा
नीमोस्था
पदमपुरी
पडासीली
पाथोली
पापडदा
परगी
पारली
प्रतापपुरा
राधाकिशनपुरा
राजाबास
रामजीपुरा
रामनगर
रातलया
रेनवाल
सचयल
सलउदा
साखून
सागलावात
साभरलेक

श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर

सागानेर

श्री दि० जैन मन्दिर
बघीचन्द जी का

जैन भवन (विहारी)

श्री महावीर दि० जैन विद्यालय

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
जयपुर	सागानेर	श्री दि० जैन मन्दिर बाहर की नसिया श्री दि० जैन मन्दिर दुर्गापुरा श्री दि० जैन मन्दिर गोदीको का श्री दि० जैन मन्दिर गोधो का श्री दि० जैन मन्दिर जगतपुरा श्री दि० जैन मन्दिर लोहडियो का श्री दि० जैन मन्दिर सघी जी का श्री दि० जैन मन्दिर श्योपुर श्री दि० जैन मन्दिर ठोलियो का श्री दि० जैन नसिया बिजैलाल जी पाण्डया श्री दि० जैन नसिया सिधौराम गोधा की श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	
	सागा का वास		
	सांगमेर		
	स्वाखन		
	साली		
	साख		
	सेथल		
	सेवा		
	शार्दूलपुरा (फुलेरा)		
	शतत्या		
	श्री पदमपुरा		श्री दि० जैन अतिशय क्षेत्र श्योदासपुरा पदमपुरा
	श्री रामपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
जयपुर	धयालावास सिनोदिया सिरोली तेबटा तिमोनिया उमगवास उरसेवा वगढी वेताड बीची बोलोना यकवाडा	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	
(ई) पाली	आनन्दपुरकाल मेहता रोड	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	महावीर दि० जैन विद्यालय
(उ) सवाईमाधोपुर	आलमपुर चौथकावर कडा पावटा रणत भँवर सवाई माधोपुर सेरपुर शिवाड श्री महावीर जी	श्री दि० जैन नसिया राय जी चमत्कार जी मुदायमी श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर अग्रवाल श्री दि० जैन मन्दिर भुसा वडियान श्री दि० जैन मन्दिर दीवान जी श्री दि० जैन मन्दिर पचायती श्री दि० जैन मन्दिर सावला जी श्री दि० जैन मन्दिर तेरापथी श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन अतिशय क्षेत्र चमत्कार जी आलमपुर (सवाईमाधोपुर) दि० जैन वीर बाल सघ (शाला) वीतराग विज्ञान पाठशाला प० जगमोहन लाल जैन दि० जैन वीर बालसघ (शाला) जेल रोड आध्यात्मिक दि० जैन विद्यालय शिवाड भवन दि० जैन आदर्श महिला विद्यालय दि० जैन मुमुक्षु महिलाश्रम विद्यालय

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
सवाईमाधोपुर	श्री महावीर जी		शान्तिवीर जैन गुफकुल श्री दि० जैन अतिथय क्षेत्र श्री महावीर जी सवाई माधोपुर
(ऊ) टोंक	अरुया अलीगढ़	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	जखिल विश्व जैन मिशन केन्द्र राजमल गोवा सयोजक अ० दि० जैन मिशन केन्द्र श्री दि० जैन पचायती धर्मशाला श्री दि जैन पुस्तकालय श्री बीर बाल सभ श्री बीतराग विशान पाठशाला शान्तिनाथ दि० जैन पाठशाला
	आँवा बालागढ़ बालन्दा बनेठा	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला श्री बीर बाल सभ श्री बीर जैन पुस्तकालय
	देठानी देवली डोरिया जगडी झरना जूनियम कडीला ककोड करावास कवाडा कयालो खरेडा लाबा लिसाहा मडपा मदाण मडाबर	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	दि० जैन पार्श्वनाथ पाठशाला

जिले का नाम टोंक	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	मालपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन चैत्यालय	श्री दि० जैन पाठशाला
	भुराई नगरफोट निमोला निवाई	श्री दि० जैन चैत्यालय श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन नसिया श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	आचार्य कुन्धुसागर दि० जैन कन्या पाठशाला चन्द्रप्रभु दि० जैन विद्यालय जैन नवयुवक मण्डल श्री छगन लाल जी जैन धर्मशाला, बस स्टैंड के पास श्री महावीर जैन औषधालय
	पाइली पचेवर	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	श्री महावीर दि० जैन पुस्तकालय श्री महावीर दि० जैन औषधालय श्री महावीर दि० जैन विद्यालय श्री वीर बालक मण्डल
	पारलली पराना पीपल पीपलू रामपुर सराणा सतबाडा सीतापुरा सिरस सिरोज	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
	सूतडा सोयल सुरोली सुवारिझ टोडारामसिंह	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	नेमीसागर दि० जैन पाठशाला भूरारिया

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
टोक	टोडारामसिंह	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	
	टोकनगर	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन नसिया प्राचीन श्री दि० जैन नसिया प्राचीन	आचार्य शिवसागर शाला आदर्श दि० जैन पाठशाला मानक चौक जैन बीर पाठशाला अमीरगज मु० तस्त्ता महावीर दि० जैन पाठशाला
	उनियारा	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	
	बडोदिया बूरगी	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	

आगरा—

आगरा एक ऐतिहासिक नगर है जिसका आगलपुर-आगरा और अर्गलपुर नाम से जैन-साहित्य में उल्लेख मिलता है। आगरा कब और किसने बसाया यह अभी तक सुनिश्चित नहीं हो सका परन्तु इसमें कोई शक नहीं कि आगरा पुष्पना नगर है। जनरल कनिंघम के अनुसार मुस्लिम काल से पूर्व आगरा के प्राचीन अवशेष बहुत कम उपलब्ध हैं। आगरा जिले के जलद्वार के बाहर किले और यमुना नदी के बीच में काले पाषाण के कुछ स्तम्भ खुदाई में प्राप्त हुए थे और एक कृष्ण-पाषाण की कलात्मक विशाल मूर्ति, जो जैनियों के २०वें तीर्थंकर मुनि-सुव्रतनाथ की थी जिस पर कुटिला लिपि में १०६३ अंकित है। स्तम्भ भी किसी पुराने जैन मन्दिर के ज्ञात होते हैं।

आगरा का सर्वप्रथम उल्लेख सिकन्दर बिन लोदी की राजधानी के रूप में मिलता है। उसने सिकन्दरा में सन् १४९५ में अपना महल बनवाया था जो बारादरी के नाम से प्रसिद्ध है, इसी से उसका नाम सिकन्दराबाद पड़ा और १५६५ में उसकी यही पर मृत्यु हुई थी। उसके बाद उसके पुत्र इब्राहिम लोदी ने वहाँ राज्य किया, उसे बाबर ने हरा कर मई सन् १५२६ में आगरा और दिल्ली पर अधिकार कर लिया। बाबर के पश्चात् उसके पुत्र हुमायूँ ने राज्य किया। २६ जनवरी १५५६ में हुमायूँ की मृत्यु हो गयी और सन् १५५७ में अकबर ने फतहपुर सीकरी में महल बनवाये।

किला बनने पर वह सन् १५६८ में फतहपुर सीकरी छोड़कर आगरा में रहने लगा और वही से अपना शासन कार्य संचालन करता रहा। इससे स्पष्ट है कि सन् १४८५ से पूर्व आगरा मौजूद था। सन् १०६३ के मूर्तिलेख से उसकी अवस्थिति ११वीं शताब्दी तक पट्टी जाती है। हो सकता है कि वह उससे भी पूर्व बसा हो किन्तु यह निश्चित है कि आगरा मुस्लिम शासकों के जमाने में अधिक प्रसिद्ध हुआ। विक्रम की १६वीं, १७वीं शताब्दी में तो आगरा में अनेक जैन-मन्दिरों का निर्माण हुआ और जैन-कवियों द्वारा अनेक ग्रन्थों का निर्माण किया गया। मोतीकटरा के मन्दिर में १२वीं, १३वीं शताब्दी

की मूर्तियाँ विराजमान हैं। मुगल शासन काल में आगरा उन्नति की चरम सीमा पर था। उन दिनों आगरा अरबी, फारसी, उर्दू, पुर्तगाली, गुजराती, बंगाली, मराठी आदि भाषाओं के बोलने वाले देशी-विदेशी व्यापारियों से भरपूर रहता था। प्राकृत भाषा में 'अगलपुर' और संस्कृत में 'अर्गलपुर' कहा जाता था। अग्रपुर या अग्रसेनपुर का भी नामोल्लेख मिलता है। आगरा में १७वीं शताब्दी में अनेक

उत्तर प्रदेश

जैन विद्वान कवि हुए हैं। उस समय आगरा में अनेक जैन राजकीय उच्च पदों पर स्थित थे। सैनिक कोषाध्यक्ष और उमरावों के मंत्री एवं मलाहकार थे। राज्य कार्य और व्यापार के नाते अनेक जैन श्रावक आगरा में आते रहते थे। आगरा में अनेक जैन मन्दिर थे जिनमें समय पर पूजा, पाठ, शास्त्र-प्रवचन तथा तत्व-वर्चा का कार्य सम्पन्न होता था। गोष्ठी में अध्यात्म-गोष्ठी का मुख्य विषय होता था। प्रवचनों और सत्संगति से आगन्तुक जैनो में धार्मिक वात्सल्य श्रद्धा में दृढ़ता और स्थितिकरण भी होता था। पं० दौलतराम जी कासलीवाल के हृदय में जैन धर्म के प्रति आस्था और वात्सल्य यही उत्पन्न हुआ था। उसका उल्लेख सितरदि और कपिस्थल आदि में अध्यात्म जैली का प्रचार था।

कविवर बनारसीदास, भूधरदास, धानतराय, भगवती दाम ओसवाल, हेमराज पाण्डे, हीरानन्द, राजमल पाण्डे, जगजीवन, कंवरपाल, पीताम्बर दास, जगतराय, बिहारी दाम, बुलाकीदास पाण्डे, रूपचन्द्र। भगवती दास अग्रवाल आदि कवियों ने आगरा में साहित्यिक रचना कर सरस्वती के भंडार को सर्वाधिक किया था। मुसलमान शासकों के समय भी जैन-कवियों का रचना क्रम चलता रहा।

भगवती दाम अग्रवाल ने, जो बुधिया जिला अम्बाला

के निवासी थे और दिल्ली की गद्दी के भट्टारक महेन्द्रसेन के शिष्य थे, सं० १६५१ (सन् १५६४) में रामपुर के थावको के साथ आगरा के जिन मन्दिरों की वन्दना की थी उनकी वह रचना 'अर्गलपुर जिन वन्दना' के नाम से जैन सन्देश शोधार्द्ध ५ में प्रकाशित हो चुकी है जिसका शीर्षक है—'जैन साहित्य में आगरा'। कवि की सब रचनाएँ ६० से ऊपर हैं जिनमें कुछ का परिचय अनेकान्त पत्र में मुद्रित हो चुका है।

उस समय सरकार में काम करने वाले जैन रात्रि में प्रवचन में सम्मिलित होते थे। १७वीं शताब्दी के विद्वान कवियों ने उस समय आगरा की समृद्धि के साथ अनेक ऐतिहासिक तथ्यों का उल्लेख किया है। आर्गलपुर जिन-वन्दना में ४८ मन्दिर निर्माताओं के नाम और पूजक पाण्डे आदि का भी उल्लेख किया गया है। साथ में किस मुहल्ले में कौन सा मन्दिर या चैत्यालय है, इसका स्पष्ट कथन किया है। ४८ मन्दिर में इबेताम्बर मन्दिर और चैत्यालय भी सम्मिलित है। मुहल्लों के नामों में कुछ मुहल्ले अब नहीं रहे उनके नाम इस प्रकार हैं —

शहजादे की मडी नूरगज, सुलतानपुर, शाहगज, कल्याणपुर, इतवारणा का कटरा, नाई की मडी, फूटा दरवाजा साहिलसाहू का मन्दिर, असमपुरा, नौतब देहरा, भट्टारक सहस्त्रकीर्ति का मन्दिर, खवास खाँ की मण्डी (खवासपुरा) सगदी अमैराज का मन्दिर, नूरी दरवाजा केशोशाह का मन्दिर, मेघासाहू, जिनालय, दिहुणा साहू का मन्दिर, नगर के मध्य में खामा साहू का मेहरा मुनिरल कीर्ति का मन्दिर, हजरत की मडी, दलपतराय का मन्दिर, बसई मदार दरवाजा नूपर घानार का देवालय, दीनाशाह का मन्दिर, विजयसेन का मन्दिर, कालीदास खण्डेलवाल का मन्दिर, अमीपाल का मन्दिर, टोडरसाहू का मन्दिर, सातूनारायणी का मन्दिर, पद्मावती पुरवाल का मन्दिर, धर्मदास जैसवाल का मन्दिर, भीका की मडी, खिडकी और मुलतानी टोला।

इनके अतिरिक्त कवि ने शुभकीर्ति और जगतभूषण भट्टारको का नामोल्लेख भी किया है।

भट्टारक जगतभूषण १७वीं शताब्दी के संस्कृत और हिन्दी भाषा के अच्छे विद्वान थे और आगरा में साहू

नारायणी के मन्दिर में रहते थे। उनकी हिन्दी और संस्कृत की रचनाएँ उपलब्ध हैं। कृपण जगावन चरित्र, समवसरण, खोज भेपनक्रिया १६६५ में रची थी। वर्तमान में आगरा में दिगम्बर मन्दिर और चैत्यालयों की संख्या ३६ बतलाई जाती है। उनमें २४ मन्दिर ५ चैत्यालय और एक नशिया जी हैं। इस सूचि में ३० मन्दिर-चैत्यालयों का उल्लेख किया गया है। शेषचे नामादि प्राप्त नहीं हुए और न शोध-संस्थान का परिचय ही प्राप्त हुआ।

भगवतीदास द्वारा उल्लिखित इस सब विवेचन से आगरा की महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। यहाँ यह विचारणीय है कि उत्तर प्रदेश के दि० जैन तीर्थ पुस्तक के पृष्ठ ६० पर प० बलभद्र जी ने लिखा है कि सुलतानपुरा मुहल्ले में चिन्तामणि पार्श्वनाथ की प्रतिमा बिराजमान थी। पृष्ठ ६२ में लिखा है कि विश्वास किया जाता है कि वह प्रतिमा ताजगज के मन्दिर में बिराजमान है। प्रतिमा पालिशदार और मूलनायक है। उसकी अवगाहना सवा दो फुट व पद्मासन है। वह सम्बन् १६६७ में प्रतिष्ठित हुई है जबकि भगवतीदास ने अर्गलपुर जिन वन्दना में १६५१ में उसका उल्लेख किया है। अतः इसका सामंजस्य कैसे किया जा सकता है। उक्त सम्बन् १६६७ की एकता में बाधक हैं, विद्वज्जन् इस पर विचार करें।

अयोध्या—

अयोध्या एक प्राचीन ऐतिहासिक नगरी है जो वर्तमान में उत्तर प्रदेश राज्य के अवध नामक इलाके में फैजाबाद जिले के अन्तर्गत सरयू नदी के किनारे पर अवस्थित है जिसकी गणना भारत की प्राचीनतम महानगरियों में की जाती है। जैन संस्कृति के अनुसार अयोध्या सभ्य ससार की सबसे पहली नगरी है। श्रमण संस्कृति के प्रवर्तक आद्य तीर्थंकर आदि ब्रह्म ऋषभदेव की और अन्य चार तीर्थंकरों की जन्मभूमि होने के कारण उसकी महत्ता स्पष्ट है। इतना ही नहीं किन्तु अन्य अनेक महापुरुषों की जनक रही है। इस कारण जैन संस्कृति में भी उसकी महत्ता है ही किन्तु भारतीय संस्कृति में भी उसकी महत्ता आंकने योग्य है।

● जैन, हिन्दु और बौद्धों में ही नहीं किन्तु मुसलमानों के यहाँ भी इसे तीर्थरूप में माना जाता है और सभी

धर्मों की अनुश्रुतियों का उनके साहित्य में उल्लेख मिलता है। यही पर उन धर्मों के धर्मायतन भी बहुसंख्या में पाये जाते हैं। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि यह नगरी बाद में विभिन्न धार्मिक सन्तों के समय-समय पर होते रहने से उनका अन्त्युदय भी होता रहा है। इक्ष्वाकु या सूर्यवंशियों के समय जैनियों और हिन्दुओं का प्रभुत्व रहा।

प्राचीन काल में इसे बहुत समय तक राजधानी बनने का भी गौरव प्राप्त रहा है। नाभिराज के प्रपुत्र और ऋषभदेव के पुत्र भरत सम्राट् जिनके नाम से इस का नाम भारतवर्ष पड़ा, अयोध्या के शासक थे। इक्ष्वाकु वंशियों और सूर्यवंशी राजाओं ने यहाँ दीर्घकालिक राज्य किया है। उसके बाद अन्य अनेक वंश के राजाओं ने शासन किया है। उस समय अयोध्या की समृद्धि अकथनीय थी। अयोध्या का जितना महत्त्व जैनियों को प्राप्त है, उतना ही महत्त्व सनातन धर्मियों और बौद्धों आदि को प्राप्त है।

अयोध्या में जैनियों के पाँच तीर्थंकरों और दो चक्रवर्तियों के जन्म लेने का उल्लेख जैन साहित्य में पाया जाता है। वहाँ उनके अलग-अलग पाँच मन्दिर भी बने थे। यद्यपि इस समय जैनियों के वहाँ प्राचीन मन्दिर नहीं हैं और जो हैं वे १७वीं, १८वीं शताब्दी से अधिक प्राचीन नहीं जान पड़ते। प्राचीन मन्दिर काल दोष या साम्प्रदायिक मनोवृत्ति के कारण विनष्ट कर दिये गये हैं जैसा कि आगे के इतिवृत्त से ज्ञात होगा।

जैन साहित्य में इस नगरी का अयोध्या, अज्झाउणी, अवघा, सुकोशला, कोशलपुरी, साकेत, विनीता, इक्ष्वाकु-भूमि और रामपुरी आदि अनेक नामों से उल्लेख किया गया है। अर्द्ध पुराण में जिन सेन ने लिखा है कि अयोध्या की रचना देवों की थी और उसे प्राकार तथा परिखा आदि से अलंकृत बनाई थी। कोई भी शत्रु उससे युद्ध नहीं कर सकते थे। (अरिभि योद्धु न सव्या आ० पु०)। वह प्रशंसनीय सुन्दर मकानों और ध्वजाओं से अलंकृत होने के कारण साकेत कहलाती थी मानो वे पताकाएँ भी अपनी भुजाओं से सकेत कर रही हैं। कोशल वेश में होने के कारण सुकोशला विनयवान् शिषित एव सम्य लोको से व्याप्त होने के कारण विनीता कहलाती थी। इक्ष्वाकु राजाओं की जन्मभूमि और राजधानी होने

के कारण 'इक्ष्वाकुभूमि' रामचन्द्र के जन्म कारण रामपुरी अवध प्रान्त में होने के कारण 'अवघा' कहलाती थी। पट्टमपरिच मे अयोध्या को बारह योजन लम्बी और नौ योजन विस्तीर्ण बतलाया गया है। हरिवेल कथा कोष में अयोध्या व साकेत नामों का अनेक स्थानों पर उल्लेख किया गया है। भगवती आराधना और विलोप पण्यन्ती आदि जैन ग्रन्थों में उसका उल्लेख है। यशस्तिलक चम्पू में सोमदेव ने अयोध्या को कौशलदेश में बतलाया है तथा मगध देश में प्रसिद्ध अयोध्या के राजा सगर चक्रवर्ती का उल्लेख किया है।

वैदिक साहित्य में अयोध्या या कौशल देश का उल्लेख नहीं है। शतपथ ब्राह्मण में एक स्थान पर कौशल का नाम आया है। प्रसिद्ध वैयाकरण पाणिनीय व्याख्याता के एक सूत्र में कौशल का उल्लेख अवश्य हुआ है। पतञ्जलि ने अपने महाभाष्य में अरुणाद भुवन साकेतम्' किया है जिसमें एक महत्वपूर्ण घटना का उल्लेख किया है और बतलाया है कि यवनों द्वारा साकेत पर आक्रमण किया गया था। यद्यपि पतञ्जलि ने उक्त घटना का कोई परिचय नहीं दिया किन्तु यूनानी लेखकों के वर्णन से स्पष्ट है कि उस राजा का नाम मिनन्दर था उसके सिक्कों पर भी उसका नाम प्राकृत भाषा में अंकित है। उसकी दृष्टि पाटलिपुत्र (पटना) पर अधिकार करने की थी। अतः उसने मथुरा पर अधिकार कर लिया क्योंकि साकेत को जीतने के लिये मथुरा पर अधिकार करना आवश्यक था। उसने साकेत पर घेरा डाला। वाल्मीकि रामायण, रघुवंश और भवभूति के रामचरित में अयोध्या नगर का उल्लेख है। बौद्धों का अयोध्या में कोई खास सम्बन्ध नहीं रहा, उनका सम्बन्ध तो विशाखा (श्रावस्ती) से था, हाँ बुद्ध ने अयोध्या में कई चातुर्मास किये हैं।

सन् ११६४ ई० में मुहम्मद गौरी का भाई मल्हूम शाह जूरन गौरी सेना लेकर अयोध्या पर चढ़ आया। उसने वहाँ के सबसे प्राचीन आदिनाथ मन्दिर को नष्ट किया था और स्वयं भी उसी स्थान पर युद्ध में मारा गया था, उसी स्थान पर दफनाया गया। इसी कारण यह स्थान शाहजूरन का टीका कहलाता है। जिन मन्दिर वहाँ थोड़े समय बाद पुनः बन गया किन्तु बहुत समय तक उस मन्दिर का चढ़ावा शाहजूरन के वंशज ही लेते रहे

जो अब तक अयोध्या के बकसरिया टोले में रहते थे। इस घटना के बाद ५० वर्ष में अयोध्या पर मुसलमानों का पूरा अधिकार हो गया।

बटेश्वर—

जब शीरीपुर यमुना नदी के तट से अधिक कटने लगा और बीहड़ हो गया तब भट्टारक जी ने बटेश्वर ने विशाल मन्दिर और एक धर्मशाला बनवायी। यह मन्दिर स० १८३८ में तीन मंजिल का बनवाया गया था, इसकी दो मंजिलें जमीन के नीचे हैं। इस मन्दिर में महोबा से लाई गई भगवान अजितनाथ की ५ फुट ऊँची मूर्ति (स० १२२४ वैशाख वदी ७ सोमवार की) से परिमाल राज्य में आल्हा ऊदल के पिता द्वारा प्रतिष्ठित एक विराजमान हैं जो सातिशय है। मूर्ति प्रशान्त और मनोज्ञ है। यहाँ अनेक पुरातत्वावशेष भू से उपलब्ध हुए हैं जिनसे क्षेत्र की महत्ता पर अच्छा प्रकाश पड़ता है।

चन्द्रपुरी—

चन्द्रपुरी क्षेत्र वाराणसी गोरखपुर रोड पर २० किमी० दूर है। जो रेल से २८ किमी० है। यह आठवें तीर्थंकर चन्द्रप्रभु का जन्म स्थान है उनके यहाँ गर्भ, जन्म, तप और केवल ज्ञान ये चार कल्याणक हुए हैं अतः यह एक प्राचीन तीर्थस्थल है। यहाँ के प्राचीन दि० जैन मन्दिर पर श्वेताम्बरों ने अधिकार कर लिया। तब ला० प्रभुदास ने इस मन्दिर का निर्माण और प्रतिष्ठा कराई।

चन्द्रवाड़—

आगरा जिले में फिरोजाबाद से चार मील दक्षिण में यमुना नदी के बाएँ किनारे पर चन्द्रवाड़ नाम का अतिशय क्षेत्र अवस्थित है। यह एक ऐतिहासिक नगर है जिसे वि० स० १०५२ (सन् ७७० ई०) के लगभग बसाया था। राजा चन्द्रपाल पल्लीवन इसका शासक था। इसका मंत्री रामसिंह हाहल था, दोनों ही जैन धर्म के सचालक थे। राजा ने स० १०५३ के लगभग १ फुट की अवगाहना वाली चन्द्रप्रभु की स्फटिक की एक मूर्ति प्रतिष्ठित की थी। मंत्री रामसिंह हाहल ने स० १०५६ व १०५२ में मूर्तियों को प्रतिष्ठित किया था। उसके बाद वहाँ चौहान

वंशी राजाओं का राज्य हो गया। यद्यपि ये राजा जैन धर्मानुयायी नहीं थे किन्तु जैन धर्म सहिष्णु और उदार थे। उनके मंत्री एवं सेनापति जैन श्रावक होते थे। चन्द्रवाड़ के अतिरिक्त रायबखिय हतिकास्त, कुरावली, मैनपुरी, भोगाब और दन्तपल्ली आदि स्थानों पर भी उनका शासन था। चौहानों का राज्य विक्रम की १३वीं शती से लेकर १६वीं शती तक रहा है। १३वीं, १४वीं, १५वीं और १६वीं शताब्दी के अपभ्रंश और संस्कृत ग्रन्थों में चौहान वंश के राजाओं का उल्लेख है। इनके राज्य काल में जैन धर्म को पनपने और प्रफुल्लित होने का अवसर मिला है। उस समय नगर में अनेक जैन मन्दिर थे। विक्रम की १३वीं (स० १२३०) शताब्दी में चन्द्रवाड़ के निवासी माधुरवशी साहुनारायण और उनकी धर्मपत्नी रुपिणी देवी ने जो देवशास्त्र गुरुभक्त थी, श्रुत-पंचमी के फल को प्रकट करने वाले भविष्य कुमार के जीवन परिचय को व्यक्त करने वाली भविष्य कथा का कवि श्रीधर से निर्माण कराया था।

स० १३१३ में कवि लक्ष्मण ने अणु कम रसवर्षई व नाम के ग्रन्थ की रचना चन्द्रवाड़ के चौहान वंशी राजाओं के राज्य काल में मन्त्री कृष्णादित्य की प्रेरणा से की थी। प्रशस्ति में चन्द्रवाड़ के चौहान वंशी राजाओं और मन्त्रियों का परिचय दिया है। उससे चन्द्रवाड़ और रामबखिय का अच्छा परिचय मिल जाता है। उस समय राजा आहवमला का राज्य था। वह बड़ा वीर योद्धा था, उसने मुसलमानों से युद्ध में विजय प्राप्त की थी।

सन् १४५५ में स० प्रभोचन्द्र के शिष्य कवि धनपाल ने 'बाहुबलि चरित्र' नामक चरित ग्रन्थ की रचना की थी। उसमें राजा सभरीराय और उनके पुत्र सारंग नरेन्द्र के राज्य का उल्लेख किया है। स० १४५४ में वैशाख वदी १२ सोमवार के दिन चन्द्रपाट दुर्ग में राजा अभयचन्द्र के पुत्र जयचन्द्र के राज्य काल में प्रतिष्ठित धातु की एक चौबीसी मूर्ति सेठ के कूचा मन्दिर में मोजूद है।

स० १४६८ में चन्द्रपाट नगर में राजा रामचन्द्र के राज्यकाल में अमरकीर्ति केबट कमास देश की प्रति लिखी गयी थी।

• स० १५११ में पं० धर्मधर ने दत्त पल्ली में संस्कृत भाषा में नागकुमार चरित्र की और श्रीपाल चरित की

रचना की थी। वह चनुवाड का एक शाखानगर था और वहाँ चौहान वंशीय राजा भोजराज का पुत्र माधवचन्द्र राज्य कर रहा था।

सं० १५०६ से पूर्व यहाँ कवि रङ्गू ने पुण्यासन कथा की रचना प्रतापरुद्र के राज्य काल में की थी जो राजा रामचन्द्र का ज्येष्ठ पुत्र था। साहू नेमिदास ने वहाँ जिन मन्दिर बनवाया था और विदुष मणि तथा पाषाण आदि की अनेक मूर्तियों का निर्माण कराया।^१ जिन्हें मन्दिर में प्रतिष्ठित कराया था। सन् १५०६ में प्रतिष्ठित किये जाने वाली मूर्ति का लेख उपलब्ध है जिसे चनुवाड में रङ्गू द्वारा प्रतिष्ठित कराया गया था। प्रतापरुद्र बड़ा प्रतापी राजा था। उसने अनेक युद्धों में विजय पाई थी। इटावा और मैनपुरी आदि का प्रदेश उसकी जागीर में था। इन सब उल्लेखों से चन्द्रवाड की महत्ता का स्पष्ट बोध होता है। प्रतापरुद्र ने साहू नेमिदास का सम्मान भी किया था। आज चनुवाड खण्डहरो में परिणत है, वहाँ एक मन्दिर है। उसमें १०५३ और १०५६ की दो मूर्तियाँ विद्यमान हैं। टीलों में अनेक जैन कीर्तियाँ उपलब्ध हो रही हैं यदि उनकी खुदाई की जाये तो प्रचुर सामग्री उपलब्ध हो सकती है। चन्द्रवाड की अनेक मूर्तियाँ विभिन्न स्थानों से मिलती हैं। यद्यपि मुसलमानों से चन्द्रवाड को बहुत हानि उठानी पड़ी। जमना नदी से भी उसे नुकसान उठाना पड़ा है।

फिरोजाबाद को फिरोजशाह ने बसाया था ऐसा कहा जाता है। यदि यह अनुमान ठीक है तो यह १४वीं, १५वीं शताब्दी में बसा। उसके बाद जैनियों की आबादी हुई और जैन मन्दिरादि का निर्माण हुआ। फिरोजाबाद में जैनियों की अच्छी आबादी है। मन्दिर, धर्मशाला और शिक्षा संस्थाएँ तथा ग्लास बर्क्स आदि हैं जिनसे हजारों मजदूरों का भरण-पोषण होता है। फिरोजाबाद की डायरेक्टरी भी निकली है, किन्तु उसमें फिरोजाबाद का कोई ऐतिहासिक परिचय नहीं दिया, ऐसा लोगों से ज्ञात हुआ है।

गौडा—

गौडा जकशन में स्टेशन के पास एक जैन मन्दिर है। कुछ जैनी भी रहते हैं। यहाँ गुड और चीनी का व्यापार होता है।

इलाहाबाद (प्रयाग)—

इलाहाबाद नगर का प्राचीन भाग जो त्रिवेणी सगम के निकट है, प्रयाग नाम से प्रसिद्ध है। यह स्थान भारत-वर्ष के प्रधान तीर्थों में से एक है। जैन साहित्य में भी इसे तीर्थ क्षेत्र माना जाता है। इसका पुराना नाम पुरिमतालपुर और प्रयाग है। यहाँ भगवान् ऋषभदेव के वृषभसेन का राज्य था जो बाद में राज्य का परित्याग कर श्रमण बना और ऋषभदेव का प्रधान गणवर हुआ। यहाँ के सिद्धार्थ वन में आदिनाथ ने दीक्षा ली थी, उससे उपलक्ष्य में प्रजा ने उनकी पूजा की थी। इस कारण यह स्थान प्रयाग नाम से लोक में प्रसिद्ध हुआ।

प्रयाग में सगम के निकट वट वृक्ष के नीचे ऋषभदेव को केवल ज्ञान प्राप्त हुआ था जिसके कारण यह वृक्ष लोक में असय वट नाम से ख्यात हुआ। इसी प्रयाग की पावन भूमि पर आदि तीर्थंकर का सर्वप्रथम धर्मचक्र प्रवर्तन हुआ था। इससे श्रमण की महत्ता का सहज ही आभास मिल जाता है। इलाहाबाद और इलाहाबाद जिले में जो पमोसा, कौशाम्बी आदि क्षेत्र या स्थान हैं उनका विवरण आगे दिया गया है।

इलाहाबाद में जैनियों की अच्छी बस्ती है। चार मन्दिर और पाँच चैत्यालय हैं। छात्रावास, औषधालय और विद्यालय आदि हैं। यहाँ के पुरातत्व संग्रहालय में जैनियों की महत्वपूर्ण सामग्री का सङ्कलन है जो दर्शनीय है।

जालौन—

जालौन शहर यमुना नदी के किनारे बसा हुआ है यह स्टेशन के पास है। यहाँ कालपदेव ने तपस्या की थी, इस

१. बहु-विह-घाट फलित विद्ययमद कारावेस्विणु अगणिय पडिमउ,
पतिवठाविधि सुहु पाविज्जउ, तिप्पि व्येसर गोस समज्जिउ ।
जि बहु लमा सिबर चेईतव पुणुविभाविम ससिकइ पत बहु,
नेमिदासणा में संघाहिउ अं जिय संघमार दिव्या हिउ ॥

कारण इसका नाम कालपी पड़ गया। बादशाह अकबर के समय यहाँ सिक्का बनाने का कारखाना था। कालपी के पास ही झाँसी की रानी ने स्वतन्त्रता संग्राम में वीरगति प्राप्त की थी, वहाँ उसकी समाधि भी बनी हुई है। यहाँ जैनियों के चार-पाँच घर हैं।

झाँसी—

झाँसी उत्तर प्रदेश का एक जिला है जो बुन्देलखण्ड और मध्य प्रदेश से सम्बन्धित है। यह नगर कब और किसने बसाया और इसका नाम झाँसी कैसे पड़ा इस सम्बन्ध में कोई इतिवृत्त ज्ञात नहीं हुआ पर सन् १८३५ से पूर्व इस पर पेशवा का प्रभाव था और गगाधर राव इस पर शासन करते थे। सन् १८३५ में अंग्रेज सरकार कम्पनी ने इस पर जबरदस्ती कब्जा कर लिया था, रानी लक्ष्मीबाई युद्ध में दिवंगत हुई थी।

झाँसी जिले में जैनियों की अनेक वृत्तियाँ विभिन्न स्थानों पर रही हैं सौ सवा सौ स्थानों और ग्रामों में शिखरबद्ध जैन मन्दिर पाये जाते हैं, उनमें कितने ही मन्दिर वि० की १३वीं शताब्दी और उसके बाद प्रतिष्ठित मिलते हैं। झाँसी में छह जैन मन्दिर हैं। देवगढ, पचराई जैसे क्षेत्र भी उक्त जिले में ही हैं। ललितपुर और उसके आस-पास का क्षेत्र भी जैन मन्दिरों से भरा हुआ है। चन्देलवंशी राजाओं के राज्य काल में भी यह जिला जैन मन्दिरों से अलंकृत रहा है। झाँसी और उसके आस-पास के ग्रामों, कस्बों और तीर्थ क्षेत्रों के मन्दिरों की सूची नीचे दी जा रही है, पाठक उससे अनुमान लगा सकते हैं :—

क्षेत्र पर नये मन्दिर और धर्मशाला हैं। यह सिद्ध क्षेत्र है, इस सम्बन्ध में अभी प्रमाणों की खोज आवश्यक है। कोई ऐसा प्रमाण खोजना चाहिये जिससे क्षेत्र को सिद्ध क्षेत्र कहा जा सके। प्राचीन प्रमाणों के अभाव में वह सिद्ध क्षेत्र नहीं माना जा सकता।

काशी—

काशी देश में वाराणसी नाम का प्राचीन नगर है जो

- १ कुछ आचार्यों और विद्वानों ने ग्रन्थों में पार्श्वनाथ के पिता का नाम ह्यसेन अश्वसेन लिखा है। इतिहास में अश्वसेन नाम का कोई राजा नहीं हुआ, बोद्ध जातकों में राजा का नाम विश्वसेन (विस्सेन) बतलाया है। उत्तर-पुराण में भी राजा का नाम विश्वसेन सूचित किया है।

वरुणा और असी नदियों के मध्य बसा है। यह जैनियों का प्रसिद्ध तीर्थक्षेत्र है। यहाँ सातवें तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ और २३वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ का जन्म स्थल है। यहाँ इन दोनों तीर्थंकरों के गर्भ, जन्म, तप और केवल ज्ञान के चार-चार कल्याणक हुए हैं। सुपार्श्वनाथ का जन्म ज्येष्ठ शुक्ला द्वादशी के दिन विशाखा नक्षत्र में राजा सुप्रतिष्ठ और पृथ्वी देवी माता के उदर से हुआ था। पार्श्वनाथ का जन्म वाराणसी के राजा विश्वसेन और बामा देवी के यहाँ पौष कृष्णा एकादशी के दिन हुआ था जो उप्रवशी और काश्यप गोत्री थे। पार्श्व कुमार बाल-ब्रह्मचारी थे और देह-भोगों से उदासीन रहते थे। एक समय वे वन-विहार को गये। वहाँ कुछ साधु अग्नि जलाकर तपश्चरण कर रहे थे। पार्श्वकुमार उस महीपाल तापस को नमस्कार किये बिना उसके पास खड़े हो गये। तापस ने इस व्यवहार को अपमानजनक माना। उसने अभी लकड़ी जलाने के लिये एक लकड़ उठाया और कुल्हाड़ी से फाड़ने के लिये तैयार हो ही रहा था कि अवधिज्ञानी पार्श्वनाथ ने रोका 'इसे मत फाड़ो, इसमें साँप है।' मना करने पर भी तापस ने उसे फाड़ डाला। इससे लकड़ी में स्थित सर्प-सर्पिणी दोनों के टुकड़े हो गये। पार्श्वकुमार ने दयार्द्र होकर सर्पयुगल को णमोकार मन्त्र सुनाया इससे वे भरणेन्द्र और पद्मावती हुए। कुछ समय के पश्चात् पार्श्वनाथ को वैराग्य हो गया और दीक्षाधारण कर तपश्चरण करना शुरु किया। कुछ समय पश्चात् २० वर्ष की आयु में पार्श्वनाथ ने कठोर तपश्चर्या द्वारा धाति कर्मों का नाश कर केवल ज्ञान प्राप्त किया और जनता का विहार उपदेश द्वारा कल्याण किया।

कौशाम्बी—

ईस्वी पूर्व ७वीं शताब्दी में प्रसिद्ध १६ जनपदों में वतन देश भी एक था जिसकी राजधानी कौशाम्बी थी। गंगा की बाढ़ के कारण जब हस्तिनापुर का विनाश हो गया तब चन्द्रवंशी राजा नेमचन्द्र ने कौशाम्बी को बसाया था। वत्सदेश की राजधानी कौशाम्बी एक प्राचीन नगरी

थी। कौशाम्बी के इक्ष्वाकुवंशी राजा सरण और रानी सुसीमा के पुत्र थे। उनके गर्भे जन्म कल्याणक इसी नगर में सम्पन्न हुए। इस कारण इस नगरी की महत्ता बनी है।

अन्तिम तीर्थंकर महावीर का कौशाम्बी के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। उस समय कुस्वशी राजा सहस्रनालीक के पुत्र शतानीक राज्य शासन चला रहा था। उसकी पटरानी मृगावती थी जो वैशाली के अधिपति राजा चेटक की पुत्री और भगवान महावीर की मौसी थी जो महावीर की परम भक्त थी। राजा शतानीक महावीर का बड़ा आदर करता था। इन्हीं का पुत्र वत्सराज उदयन था जो वीर, पराक्रमी, विद्या-विशारद और वीणा वादन में दक्ष था। उज्जैन के राजा चण्डप्रद्योत (महासेन) की पुत्री वासवदत्ता रोमाचक प्रेमी थी जो महावीर की उपासिका थी। भगवान महावीर द्वादश वर्षीय तप काल के अन्त में विहार करते हुए कौशाम्बी के वन में आये। चार मास के उपवास के उपरान्त पारणा करने के लिये कौशाम्बी नगर में पधारे। उन्होंने अटपटा अभिन्न किया था जिसके कारण वे ५ मास २४ दिन तक आहार के लिये नगर में आते किन्तु अभिग्रह के पूर्ण न होने से वापिस लौट जाते। अन्त में अज्ञात कुलशील क्रीतदासी चन्दना के हाथ से जो उस समय कई दिन की भूखी-प्यासी, हथवेड़ी-वेड़ी में बधी, मलिन बदना, जीर्ण-शीर्ण बस्त्र वाली तथा अपने स्वामी की देहली पर हाथ में सूप के अधपके उड्ड के बाकले लिये विषाद और दीनता की साक्षात् मूर्ति बनी खड़ी थी, उसे देख भगवान का अभिग्रह पूरा हुआ, उसने महावीर की भक्तिपूर्वक आहार दिया, आहार ग्रहण कर उन्होंने अपने सुदीर्घ उपवास का का पारणा किया। निर्दोष आहार होने के कारण पंचाशच्चर्य की दृष्टि हुई। उस समय समग्र प्रजा एवं स्वयं राजा तथा अन्य अधिकारीगण उमड पड़े। जब रानी मृगावती ने सुना तो वह भी अपने पुत्र के साथ वहाँ आई। उसे देखकर जय-जयकार के नारों से आकाश गूँज उठा, चन्दना के उद्यम की यह अभूतपूर्व घटना और महावीर ने कष्ट कर दास-प्रथा का उन्मूलन किया। यह सामाजिक क्रान्ति का सूत्रपात कौशाम्बी में हुआ इससे कौशाम्बी का गौरव और महत्ता प्रकट हुए। वास्तव में मृगावती की छोटी बहिन ही चन्दना थी जिसे वह अपने महल में ले गयी। उसके

बन्धुजन भी उसे मिल गये परन्तु उन सबको देखकर भी ससार के क्षेत्र से उसका मन वैराग्य की ओर अप्रसर हुआ और उसने महावीर के समक्ष दीक्षा ग्रहण कर ली।

कौशाम्बी नरेश शतानीक की मृत्यु के बाद अवन्ति नरेश चण्ड प्रद्योत (महासेन) ने कौशाम्बी पर आक्रमण कर दिया। उस समय भगवान महावीर नगर के बाहर समवसरण में विराजमान थे। उनके प्रभाव से दोनों राज्यों में समभाव स्थापित हुआ। उक्त सकट काल में रानी मृगावती ने बड़े धैर्य, बुद्धिमत्ता और वीरता के साथ अपने राज्य-पुत्र और सतीत्व की रक्षा की। प्रद्योत की विषय सोलुप दृष्टि सफल न हो सकी। अपने पुत्र उदयन का जीवन और राज्य की स्थिति निष्कट कर मन्त्री युगधर के हाथों में राज्य-कार्य सौंप मृगावती ने दीक्षा ले ली। आर्या चन्दना के सघ में सम्मिलित होकर आत्म-साधना में जीवन व्यतीत किया।

महावीर के निर्वाण के पश्चात् भी कौशाम्बी जैन संस्कृति का केन्द्र बनी रही। वहाँ अनेक साधुओं का विहार और धर्मोपदेश होता रहा। कौशाम्बी के खण्डहरो में अनेक प्राचीन अवशेष प्राप्त हुए हैं। लाल बलुआ पत्थर का अयाग पर जो ईशा की दूसरी शती में राजा भद्र सघ के शासन में निर्मित हुआ है, अनेक पुरातात्विक अवशेष मिले हैं, इससे कौशाम्बी की महत्ता स्पष्ट है। वर्तमान में कौशाम्बी में जैनियों का कोई घर नहीं है। केवल ला० प्रभुदाम द्वारा बनवाया हुआ एक दि० जैन मन्दिर और एक जैन धर्मशाला है। मन्दिर में दो वेदियाँ हैं। एक वधप्रभु की प्रतिमा और चरण है और एक शिला-फलक में खडगासन प्रतिमा अंकित है। पथोसा और कौशाम्बी दोनों एक ही हैं।

मऊरानीपुर—

झाँसी जिले में एक सम्पन्न नगर है। इसमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रादि अनेक जातियों के लोग निवास करते हैं। यहाँ जैनियों की संख्या भी अच्छी है। १३ उपासना गृह हैं, दि० जैन मन्दिर है मन्दिर सभी शिखर बद्ध है उनमें चौथे नम्बर के मन्दिर में स० ११६८ की प्रतिष्ठित सुपाश्वनाथ की प्रतिमा है और आठवे नम्बर के मन्दिर में स० १२१४ की प्रतिष्ठित आठवें तीर्थंकर की मूर्ति विराजमान है। शेष मन्दिरों की मूर्तियाँ स० १५४८

और उसके बाद की है। यहाँ शान्तिनाथ वीतराग बिज्ञान पाठशाला, उमास्वामी दि० जैन सरस्वती भवन, श्री दि० जैन नवयुवक मंडल मऊरानीपुर है।

पभोसा—

इलाहाबाद से पभोसा जाने के लिये अनेक मार्ग हैं। यहाँ से कौशाम्बी होकर पभोसा जाने के लिये कच्चा मार्ग है। इलाहाबाद से सराय अकित होकर नया पक्का रोड बन रहा है। इलाहाबाद से पश्चिम शरीरा, गिराज होते हुए भी छोटी गाड़ियों के लिये रास्ता है। यह यमुना नदी के तट पर अवस्थित है। यह भगवान पद्मप्रभ की दीक्षा स्थल है। इसी कारण इसे कल्याण तीर्थ कहा जाता है।

यहाँ दि० जैन मन्दिर और धर्मशाला बनी हुई है। इस मन्दिर में भूगर्भ से प्राप्त प्राचीन मूर्तियाँ विराजमान हैं। ये मूर्तियाँ किसानों को हल जोतते हुए प्राप्त हुई। एक शिला फलक में ऋषभदेव की प्रतिमा है। फलक की ऊँचाई ४ फुट है। प्रतिमा फलासन है। इसके दोनों ओर दो-दो खड्गासन प्रतिमा हैं। पभोसा एक प्राचीन स्थान है। यहाँ शुंगकाल के अनेक लेख प्राप्त हुए हैं। शुंगवंश के बाद यहाँ मित्रवंशी राजाओं ने राज्य किया। यहाँ प्राचीन मन्दिर और मूर्तियाँ हैं। पभोसा के आसपास का क्षेत्र भी जैन-धर्म से प्रभावित रहा है। पभोसा क्षेत्र की व्यवस्था इलाहाबाद की समाज करती है।

दारानगर में एक जैन मन्दिर था जो गंगा की बाढ़ में बह गया था, जिसके भग्नावशेष बचे हैं। इसके साथ ही यह भी कि अब वहाँ एक मन्दिर बन गया है।

पवाणी (पावागिरि) तालवेट—

पवाक्षेत्र उत्तर प्रदेश के झाँसी से ४१ कि० मी० और ललितपुर से ४८ कि० मी० है। मध्य रेलवे के बसई अथवा तालवेट स्टेशन पर उतरना चाहिये। यहाँ से पवा १३-१४ कि० मी० की दूरी पर अवस्थित है। यह क्षेत्र सिद्धों की पहाड़ी पर स्थित है। केडसरा तक सीमेंट की पक्की सड़क है। यहाँ से क्षेत्र तक ३ किमी० कच्चा रोड है, मोटर या जीप जा सकती है। इस कच्चे मार्ग में दो नाले पड़ते हैं। क्षेत्र के पश्चिम में बेलवती (बेतवा) नदी बहती है। दोनों पहाड़ियों में से एक सिद्धों की पहाड़ी है जिस पर दो मंडियाँ बनी हैं दोनों एक सी दिखायी देती हैं परन्तु

उनमें एक पुरानी और दूसरी अपेक्षाकृत नई जान पड़ती है। दोनों के मध्य थोड़ा सा १५-२० का अन्तर है। इन मंडियों पर से चारों ओर का दृश्य बड़ा ही मनोहर दिखायी देता है। इनसे माता-टीला बाँध और उससे रोका हुआ अगाध जल-समूह भी दिखाई देता है जो चित्ताकर्षक है। उत्तर की ओर जो नदी बहती है उसे नाला कहा जाता है, उसके विभिन्न नाम हैं। नाले को बाँध के पास बेलाना नेकीना नाम से ख्यात है। थोड़ी दूर आगे चलने पर इसे बेलना कहते हैं। सिद्धों की पहाड़ी की परिक्रमा देने वाली चेलना नदी मिलती है वहाँ एक शिला रखी हुई है जिसे मेघासन देवी की शिला कहते हैं।

नायक गढी से सिद्धों की पहाड़ी प्रारम्भ होती है। वहाँ हादोल का चबूतरा बना हुआ है और कुछ खड्डित मूर्तियाँ पड़ी हैं। इसी चबूतरे से नायक गढी का परकोटा शुरू होता है। यहाँ गढी के निशान, परकोटा, बावड़ी, सीढियाँ और अनेक कमरों के भग्नावशेष उपलब्ध होते हैं। वस्तुतः यह कोई गढी नहीं किन्तु किसी पुरातन जैन मन्दिर के खडहर है। यदि उत्खनन किया गया तो इतिहास की महत्वपूर्ण सामग्री उपलब्ध हो सकती है।

यहाँ भोपरे में छः मूर्तियाँ हैं जो मल्लिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ और आदिनाथ तीर्थंकर की हैं। ये मूर्तियाँ स० १२६६ और स० १३४५ की प्रतिष्ठित हैं। स० १२६६ में यहीं पर उनका प्रतिष्ठा कार्य सम्पन्न हुआ था। इससे ये मूर्तियाँ बिक्रम की १३वीं शताब्दी के अन्तिम समय की प्रतिष्ठित हैं।

रतनपुरी—

रतनपुरी जिला फ़ैजाबाद से अयोध्या से बाराबंकी वाली सड़क पर २४ किमी० दूर है। सड़क से लगभग २ किमी० कच्चा मार्ग है। सोहाबल स्टेशन से भी २ किमी० है।

सहारनपुर—

सहारनपुर उत्तर-प्रदेश का एक महत्वपूर्ण नगर है। इस नगर के आस-पास हिन्दुओं का प्रख्यात तीर्थ हरिद्वार, शाकुम्भरी देवी है। मुसलमानों का प्रसिद्ध जियारतगाह पुराना किला तथा दारुल अलुम नाम की लोकबिख्यात

यूनिवर्सिटी देवबन्द में है जिसमें अरब, ईरान और अफ-गानिस्तान आदि के भी अनेक विद्यार्थी अध्ययन करते हैं। जैन धर्म का तो यह गढ़ ही है। औद्योगिक दृष्टि से गन्ना मिल, सिगरेट फैक्टरी, कपड़ा मिल, मंदा मिल, गन्ना मिल, टायर फैक्टरी, चावल मिल, पेपर मिल, कोल्ड स्टोर आदि अनेक बड़े-बड़े कारखाने हैं जहाँ लाखों व्यक्ति काम करते हैं। लकड़ी के भी अनेक कारखाने हैं जिनमें कला-पूर्ण सामान तैयार होता है। अनेक प्रकार के फल आम, गन्ना (पोण्डा), बालमखीरे और लोकाट आदि पैदा होते हैं। कम्पनी बाग में बादाम, सेब, अंगूर आदि के पेड़ हैं।

सन् १८५७ की लिखी हुई प्रद्युम्नचरित की लिपि प्रशस्ति में सहारनपुर दुर्ग का उल्लेख है। कहा जाता है कि इसे शाह रनवीर सिंह जैन ने बसाया था जो दि० जैन धर्म का सचालक और मुगल बादशाह अकबर का जागीर-दार था।¹

अबुलफजल ने आईने अकबरी में भी इसे स्वीकार किया है कि शाह रनवीर अकबर की टकसाल के अधिकारी थे। उन्होंने ही सहारनपुर में टकसाल की स्थापना की थी। उसके बाद सहारनपुर बराबर अपनी प्रगति करता रहा। आज वह एक सम्पन्न शहर के रूप में देखन में आता है। यहाँ कालिज, हार्ड स्कूल, हस्पताल आदि जनोपयोगी संस्थाओं का निर्माण हुआ है। जैनियों द्वारा समय-समय पर अपने धार्मिक-कार्य सम्पन्न होते रहे हैं। सन् १८३१ में सहारनपुर में दि० जैन परिषद का अधिवेशन हुआ था। सन् १८५६ में पंच कल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। सन् १८७१ में दि० जैन परिषद का अधिवेशन सेठ भागचन्द जी सोनी अजमेर की अध्यक्षता में हुआ। पूज्य गणेशप्रसाद जी बर्णी, कानजी स्वामी और मुनि विद्यानन्द आदि साधु-सन्तो का सहारनपुर में आगमन हुआ। धर्मोपदेश आदि का जनता को लाभ मिला। वर्तमान में भी दि० जैन का गौरव है, उनके अनेक मन्दिर और संस्थायें हैं जिनसे उनकी महत्ता का सहज ही आभास हो जाता है।

सासनी—

सासनी में प० दौलतराम का जन्म वि० स० १८५५ में हुआ। आपके पिता लाला टोडरमल पल्लिवाल (गभीरी बाल गौत्र) थे। बाल्यावस्था से ही आपकी रुचि विद्या-ध्ययन की ओर थी। आप छीट छापने का कार्य करते थे। जिस समय आप अपना कार्य करते थे चौकी पर त्रिलोकसार-गोम्मटसार आदि शास्त्र ग्रन्थ सामने रख लेते थे। प्रतिदिन ५०-५० आर्या और गाथायें कण्ठस्थ कर लेते थे। इस प्रकार आपका शास्त्रीय ज्ञान बहुत गुरु-गम्भीर था। यही कारण है कि आपकी कृति 'छहडाला' का जैन समाज में शास्त्रानुरूप आदर किया जाता है। आपके पद जैन समाज में बहुत प्रचलित हैं। आपके अनेक पद सग्रह प्रकाशित हुए हैं। आपका साहित्य जहाँ जैन-दर्शन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है वही ब्रजभाषा काव्य की दृष्टि से उसको एक अनोखापन प्राप्त है। दौलतराम जी की एक विशिष्ट शैली ने ब्रजकाव्य को समृद्ध बनाया है। आपके साहित्य के प्रामाणिक संपादन और प्रकाशन की महत्ती आवश्यकता है।

मार्ग शीर्ष कृष्णा अमावस्या मम्बन् २०२३ वि० को दिल्ली में आपका स्वर्गवास हो गया।

शाहजहाँपुर—

शाहजहाँपुर मुरादाबाद लखनऊ लाइन पर रेलवे स्टेशन है। यहाँ राज्य की तरफ से एक बड़ी आर्किनेस फैक्टरी है जिसमें सेना और पुलिस की हजारों बंदियाँ मशीन द्वारा तैयार होती हैं। फैक्टरी में कई हजार आदमी काम करने हैं। यहाँ जैनियों का एक घर है। शाहजहाँपुर में एक प्राचीन मन्दिर नदी के पार मुहल्ला सराय काश्था में स्थित है जिसे लखनऊ वालों ने बनवाया था किन्तु वह वर्षों से बन्द पड़ा था, उसका किसी को पता नहीं था। मन्दिर के पास लाला प्यारे लाल खण्डेलवाल रहते थे जो जैन धर्म से सर्वथा अनभिज्ञ थे। एक रात्रि में उन्हें स्वप्न हुआ कि तुम्हारे पास जैन मन्दिर बन्द पड़ा है तुम उसकी रक्षा करो, तुम्हारे सभी सकट दूर हो जायेंगे। अतः

1 Who founded the town of Saharanpur for which he was given a jagir by Molvilji after Hasan Delhi province—A list of Mohammadan ? Hindu Monuments Vol I 1916-P-124

स्वप्नानुसार सुबह उठते ही मन्दिर खोला, भगवान के दर्शन किये और मन्दिर की सफाई की। जैन धर्म का उन्हें बोध न होने पर भी उनमें उसके प्रति बड़ी श्रद्धा थी। फलस्वरूप उनके सब सकट दूर हो गये। वे भक्तिभाव से प्रतिदिन जिन पूजन करते हैं। सन् १६५१ में मन्दिर का जीर्णोद्धार हुआ, इसके लिये जनता का आर्थिक सहयोग मिला। दिल्ली निवासी लाला कुन्दनलाल जी मेदा वालो ने उस पर स्वर्णवर्ण चढ़ाया।

शौरीपुर (बटेश्वर)—

शौरीपुर को राजा भूरसेन ने बसाया था इसलिये इसका नाम शौरीपुर प्रसिद्ध है। यह २२वें तीर्थंकर नैमिनाथ का जन्मस्थान है जिसकी पहचान बाह तहसील के यमुना तट स्थित कस्बा बटेश्वर ५ किमी० दूर यमुना के खारो से की जाती है। यह तीर्थ आगरा से ७० किमी० दूर दक्षिण-पूर्व दिशा में स्थित है। पक्की सड़क है, जिस पर बसे चलती है। बाह से ८ किमी० और शिरोहाबाद से २५ किमी० है, बटेश्वर से शौरीपुर का मार्ग कच्चा है, ताल आदि जा सकते हैं।

शौरीपुर में कई प्राचीन जैन मन्दिर और अनेक कला-कृतियाँ खडित-अखडित रूप में मिलती हैं। इस तीर्थ का मुख्य मन्दिर वि० सं० १६६७ में जगत-भूषण के शिष्य विश्वभूषण भट्टारक द्वारा निर्मित हुआ है।^१

श्रीनगर—

श्रीनगर अलकनन्दा नदी के तट पर बसा हुआ है। सन् १८६२ की गौना बाढ़ में बह गया था, उसमें दि० जैन मन्दिर भी था। इससे सिद्ध होता है कि एक समृद्ध जैन समुदाय प्राचीन समय में वहीं बस चुका था। यह दि०

जैन मन्दिर अलकनन्दा नदी के तट पर बना हुआ है। हिमालय का यह सम्पूर्ण प्रदेश आदि तीर्थंकर ऋषभदेव का बिहार स्थल रहा है। ऋषभदेव ने यहाँ तपस्या की थी और केवल ज्ञान के पश्चात् उनका समवसरण इसी पर्वत पर आया था और कर्मभय कर कैलाश (अष्टापद) से निरजन पद को प्राप्त हुए थे। उनकी स्मृति में यहाँ कई स्थानों पर विशाल मन्दिर बनवाये गये थे जो अब दृष्टिगोचर नहीं होते, काल के प्रहारों से क्षत-विक्षत हो गये।

अंग्रेज डिप्टी कमिश्नर ने नया श्रीनगर बसाया था। श्रीनगर का जैन-समुदाय नये श्रीनगर में आ बसा और इसके सबसे अच्छे स्थान में जिसे आजकल बाजार कहते हैं जैनो ने भव्य मकान और दुकानें बनवायी थी। गंगा के समीप जैन मुहल्ले के पीछे एक भव्य मन्दिर बनवाया था और वेदी में ऋषभदेव की भव्य-प्रतिमा विराजमान थी।

मन्दिर जीर्ण-शीर्ण हो गया था। मुनि श्री विद्यानन्द ने श्रीनगर में चातुर्मास करके मन्दिर का जीर्णोद्धार कराया है। यह स्थान रमणीक और तपस्वियों की आत्म-साधना के योग्य है। यहाँ यात्रियों के ठहरने के लिये मन्दिर के लिये मन्दिर के बाहर नवावर्त नाम का अतिथि भवन है।

सिंहपुरी—

वाराणसी जिले में सिंहपुरी वाराणसी से ६ किमी० दूर उत्तर में अवस्थित है। यहाँ जाने के लिये मोटर हर समय मिलती है। यहाँ दि० जैन मन्दिर और धर्मशाला है। पोस्ट आफिस सारनाथ है। यहाँ ११वें तीर्थंकर श्रेयासनाथ के चार कल्याणक हुए हैं। यह जैनियों का प्रागैतिहासिक काल से जैन तीर्थ रहा है।

१. श्री मूलसंघे बलात्कारगणो सरस्वती गच्छे श्री कुम्भकुन्दा चार्यान्वये

श्री जगतभूषण श्री भ० विश्वभूषण देवाः स्वरी परमे (शौरीपुर)

भोत्रे जिन मन्दिर प्रतिष्ठा सं० १७२४ बंझाबाद नदी १३ त्रयोदशां कारावित।

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
(अ) आगरा	आगरा	श्री दि० जैन चैत्यालय चौराहा छीपी टोला	आगरा दि० जैन परिषद आकाश स्पोर्टिंग क्लब छीपी टोला
		श्री दि० जैन चैत्यालय जयपुर हाउस	बिहारी लाल दि० जैन धर्मशाला गुदडी मसूर खां
		श्री दि० जैन चैत्यालय सेठ बशीधर सुमेर चन्द बरोलिया बिल्डिंग	दि० जैन बालिका विद्यालय पीर कल्याणी, मोती लाल नेहरू रोड
		श्री दि० जैन चैत्यालय श्री पाटनी जी कोठी नं० ४६ सदर बाजार	जैन धर्मार्थ चिकित्सालय छीपी टोला
		श्री दि० जैन चैत्यालय श्री सेठ मयुरादास, पदमचन्द फ्रीगंज	जैन कुमार सभा मोती कटारा जैन मानव संस्था छीपी टोला जैन साहित्य शोध संस्थान हरी पर्वत
		श्री दि० जैन चैत्यालय श्री ताराचन्द खारिया विजयनगर कालोनी	जैन युवा मंडल बेलनगज कलावती बाई दि० जैन पाठशाला बेलनगज
		श्री दि० जैन चैत्यालय मुल्तानगज	कस्तूरी देवी जैन कन्या पाठशाला धूलियागज
		श्री दि० जैन चैत्यालय ताजगज	कस्तूरी देवी जैन शिक्षा निकेतन कचहरी घाट
		श्री दि० जैन बाला मन्दिर बेलनगज	महावीर बुक बैंक बेलनगज
		श्री दि० जैन मन्दिर आर्य समाज भवन के पास मोतीकटारा	महावीर मिलन छीपी टोला महावीर वाचनालय बेलनगज
		श्री दि० जैन मन्दिर चौबे जी का फाटक किनारी बाजार	मसूर क्लब छीपीटोला
		श्री दि० जैन मन्दिर चौराहा बेलनगज	एम० डी० जैन हा० सं० स्कूल मोती कटारा
		श्री दि० जैन मन्दिर चौराहा नाई की मंडी	एन० डी० जैन जू० हा० स्कूल राजा मंडी

जिले का नाम	स्थान का नाम आगरा	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
		श्री दि० जैन मन्दिर छीपीटोला	पी० डी० जैन विद्यालय छीपीटोला
		श्री दि० जैन मन्दिर चुखीबाई, मोती कटरा	सेठ मथुरादास पदमचन्द जैन धर्मशाला, कचहरी घाट
		श्री दि० जैन मन्दिर घन्नालाल गोधा, मोतीकटरा	श्री दि० जैन धर्मशाला आगरा फोर्ट समीप स्टेशन
		श्री दि० जैन मन्दिर धूलियागज	श्री दि० जैन धर्मशाला धूलियागज
		श्री दि० जैन मन्दिर गली छीपीटोला	श्री दि० जैन धर्मशाला कचौडा बाजार, बेलनगज
		श्री दि० जैन मन्दिर घटिया छिली ईंट	श्री दि० जैन धर्मशाला नाई की [मण्डी]
		श्री दि० जैन मन्दिर गुदडी मसूर खा	श्री दि० जैन धर्मशाला पीर कल्याणी
		श्री दि० जैन मन्दिर जैन गली, नाई की मण्डी	श्री दि० जैन धर्मशाला राजामंडी स्टेशन
		श्री दि० जैन मन्दिर जती कटरा, मोती कटरा	श्री दि० जैन धर्मशाला तारगली, मोती कटरा
		श्री दि० जैन मन्दिर कचौडा बाजार, बेलनगज	श्री दि० जैन हा० सै० स्कूल धूलियागज
		श्री दि० जैन मन्दिर कलकत्ते वालो का, मोती कटरा	श्री दि० जैन पाठशाला नमक मण्डी
		श्री दि० जैन मन्दिर कटरा इतवारी खा नाई की मण्डी	श्री महावीर हो० औषधालय धूलियागज
		श्री दि० जैन मन्दिर माल का बाजार	श्री एम० डी० जैन इण्टर कालिज हरी पर्वत
		श्री दि० जैन मन्दिर मोतीकटरा चौराहा	श्री पार्ष्वनाथ दि० जैन औषधालय जैन गली छीपीटोला
		श्री दि० जैन मन्दिर मीतीलाल नेहरू रोड	वीतराग विज्ञान पाठशाला पत्तल गली

जिले का नाम

स्थान का नाम

मन्दिर का नाम व स्थान

अन्य संस्थाओं के नाम

आगरा

श्री दि० जैन मन्दिर नमकमंडी
श्री दि० जैन मन्दिर नवलगज
श्री दि० जैन मन्दिर
III नार्थ ईदगाह कालोनी
श्री दि० जैन मन्दिर नुनिहाई
श्री दि० जैन मन्दिर पतलगली
श्री दि० जैन मन्दिर
पुरानी बस्ती ताजगज
श्री दि० जैन मन्दिर राजा मण्डी
श्री दि० जैन मन्दिर रोशन मौहल्ला
श्री दि० जैन मन्दिर शाहगज
श्री दि० जैन मन्दिर सिकन्दरा
श्री दि० जैन मन्दिर
टक्की छीपीटोला
श्री दि० जैन मन्दिर
वर्धमाननगर ईदगाह
श्री दि० जैन नसिया जी वीर
कल्याणी मोतीलाल नेहरू रोड
श्री शान्तिनाथ जिनालय हरी पर्वत
श्री दि० जैन चैत्यालय
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर

अछतेरा

अहारण

ऐत्मादपुर

अ० भा० जैन युवा फेडरेशन
अमरवाणी प्रसारण संस्थान जैनगज
भगवत भवन प्रकाशन संस्था
जैन पार्क ऐत्मादपुर
पन्नालाल भगत जी जैन स्मारक
भवन
श्री दि० जैन पचायती धर्मशाला
मेन बाजार
श्री दि० जैन स्वाध्याय गोष्ठी
जैनगज
श्री जैन विद्यालय जू० हा० स्कूल

जिले का नाम

स्थान का नाम

मन्दिर का नाम व स्थान

अन्य संस्थाओं के नाम

श्री जैन पुस्तक परिषद जैनगज

श्री महावीर वाचनालय

श्री वीतराग विज्ञान रात्रि कालीन

पाठशाला

आलमपुर

श्री दि० जैन जिनालय

आँवलखेडा

श्री दि० जैन मन्दिर

अवालतनगर

श्री दि० जैन चैत्यालय

चन्दौरी

श्री दि० जैन मन्दिर

चावली

श्री दि० जैन मन्दिर

छिरोली

श्री दि० जैन चैत्यालय

चिरहुली

श्री दि० जैन मन्दिर

चुलावली

श्री दि० जैन चैत्यालय

चुल्हावली

श्री दि० जैन मन्दिर

दतावली

श्री दि० जैन चैत्यालय

देवखेडा

श्री दि० जैन मन्दिर

दिनडली

श्री दि० जैन चैत्यालय

फिरोजाबाद

श्री दि० जैन चैत्यालय

आचार्य बिमल सागर पाठशाला

चौकी गेट

नई बस्ती

श्री दि० जैन चैत्यालय देवनगर

आचार्य बिमल सागर पुस्तकालय

नई बस्ती

श्री दि० जैन चैत्यालय देवनगर

छदामीलाल जैन महाविद्यालय

छात्रावास, आगरा गेट

श्री दि० जैन चैत्यालय जैननगर

जैन ग्लास मिडिल स्कूल हिरनगाँव

श्री दि० जैन चैत्यालय कटरा

जैन ग्लास औषधालय हिरनगाँव

श्री दि० जैन चैत्यालय

जैन ग्लास प्राइमरी स्कूल हिरनगाँव

नई बस्ती

श्री दि० जैन चैत्यालय

मु० वंशीधर दि० जैन धर्मशाला

(प० सुमतिचन्द जी का)

मु० लोहियान गली

मुहल्ला गज

श्री दि० जैन चैत्यालय

पी० डी० जैन विद्यालय

(सेठ श्रीधरलाल)

लोहियान गली

श्री दि० जैन मन्दिर अटक्कला

सेठ अमृतलाल औषधालय

मु० चन्द्रप्रभु

विले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	ग्रन्थ संस्थाओं के नाम
	फिरोजाबाद	श्री दि० जैन मन्दिर बडा मुहल्ला	श्री आदिनाथ माटेसरी स्कूल छोटी छपेटी
		श्री दि० जैन मन्दिर बडा मुहल्ला	श्री आदिनाथ पाठशाला अटावला मन्दिर
		श्री दि० जैन मन्दिर बडी छपेटी	श्री छदामीलाल जैन कालिज
		श्री दि० जैन मन्दिर बेरसेपखल	श्री चन्द्र आयुर्वेदिक औषधालय कोटला रोड
		श्री दि० जैन मन्दिर चन्दाबाडी	श्री चन्द्रप्रभु दि० जैन धर्मशाला मु० चन्द्रप्रभु
		श्री दि० जैन मन्दिर चौकी गेट श्री दि० जैन मन्दिर छोटी छपेटी	
		श्री दि० जैन मन्दिर द्वारकापुरी कटरा	
		श्री दि० जैन मन्दिर हनुमानगज श्री दि० जैन मन्दिर जैन नगर	
		श्री दि० जैन मन्दिर कटरा	श्री दि० जैन बाहुबलि पुस्तकालय
		श्री दि० जैन मन्दिर कटरा	श्री दि० जैन धर्मशाला कोटला
		श्री दि० जैन मन्दिर नई बस्ती	श्री दि० जैन धर्मशाला राजा का ताल
		श्री दि० जैन मन्दिर नसियाजी	श्री दि० जैन गर्ल्स इण्टर कालिज मु० चन्द्रप्रभु
		श्री दि० जैन मन्दिर राजा का ताल	श्री दि० जैन मित्र मंडल पुस्तकालय चौकी गेट
		श्री दि० जैन मन्दिर रीवा वाला	श्री दि० जैन पाठशाला चौकी गेट
			श्री दि० जैन पुस्तकालय छोटी छपेटी
			श्री जद्दूमल प्यारेलाल जैन अग्रवाल धर्मशाला मु० डाकियान

जिले का नाम

स्थान का नाम

मन्दिर का नाम व स्थान

अन्य संस्थाओं के नाम

फिरोजाबाद

श्री कानजी पुस्तकालय जैन नगर
श्री मोतीलाल जैन धर्मार्थ
औषधालय छपेटी कला
श्री मूलचन्द पुरुषोत्तमदास जैन
धर्मशाला, आगरा गेट
श्री पन्नालाल जैन औषधालय
भौडेला
श्री पी० डी० जैन इण्टर कालिज
कोटला रोड
श्री प्यारेलाल रामबाबू (राजा)
जैन धर्मशाला, कोटला रोड
श्री त्यागीव्रती निवास मु० चन्द्रप्रभु
श्री वर्णी भवन पुस्तकालय जैन नगर
श्रीमती शरवती देवी दि० जैन
धर्मशाला जैन नगर
स्वाध्यायकक्ष पुस्तकालय,
चन्द्रप्रभु मन्दिर

गढी असरा
गढी हर्षा
गोहिला
गोछा
जाजऊ
जालमपुर
जगला सीढ
जारखी
जारौली
जाटई
जाटऊ
जटोवा
जठई
जोखरी
जोधरी

श्री दि० जैन चैत्यालय
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन चैत्यालय
श्री दि० जैन चैत्यालय
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन चैत्यालय
श्री दि० जैन चैत्यालय
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन चैत्यालय
श्री दि० जैन चैत्यालय
श्री दि० जैन मन्दिर
श्री दि० जैन मन्दिर

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	कचौरा	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	कल्याणगढी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कामथा	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	खाडी	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	खैरागढ	श्री दि० जैन मन्दिर	वीतराग विज्ञान पाठशाला
	खजूरकोबूज	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	खाडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खेरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कोटला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कोटकी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कुरगमा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कुतकपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लसीपुर	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	महाराजपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मरसैना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मौमदी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मुहम्मदाबाद	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नगला सिकन्दर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नगला स्वरूप	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नाहरपुर	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	नन्दगाव	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	नारिखी	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	नीब किरोरी	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	नेपई	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	पचोखरा	श्री दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर	
	पचवाना	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	पमारी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पचमान	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पानी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पौनसे	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पिनहट	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पोसा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	राजपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सैमरा	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	सख्तावतपुर सरायजैराम सरायनूरमहल सेखपुरा टेह	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	श्री पार्श्वनाथ दि० जैन पाठशाला श्री पार्श्वनाथ दि० जैन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय वशीधर जैन औषधालय
	ठिमासी टूंडला	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन बड़ा मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर चौराहा श्री दि० जैन मन्दिर जैन भवन	आचार्य विमल सागर पाठशाला चौराहा बालिका जूनियर हाई स्कूल जैन युवक सघ निराला क्लब (बाल हास्य) श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन महावीर विद्यालय श्री जिनेन्द्र कला केन्द्र
	टूंडली उलाऊ उरई उसाइनी वाह वरहन वसई वासरिसाल	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन चैत्यालय श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	
(आ) अलीगढ़	अलीगढ़	श्री दि० जैन चैत्यालय वानवटी गज श्री दि० जैन मन्दिर खिरनी गेट श्री दि० जैन मन्दिर खिरनी गेट श्री दि० जैन मन्दिर मेरिस रोड	अगूरी देवी जैन धर्मशाला महावीर गज अणुव्रत समिति आगरा रोड जैन बाल मंडल खिरनी गेट जैन कुमार मिलन खिरनी गेट जैन महिला सघ खिरनी गेट

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	अलीगढ़	श्री दि० जैन मन्दिर पालकी खाना	जैन मिलन खिरनी गेट
		श्री दि० जैन मन्दिर पालकी खाना	कुन्दन लाल जैन बाल मन्दिर खिरनी गेट
		श्री दि० जैन मन्दिर पालकी खाना	कुन्दल लाल जैन पाठशाला खिरनी गेट
		श्री दि० जैन मन्दिर पालकी खाना	लक्ष्मीचन्द्र जैन पाण्डया ट्रस्ट सज्जन कुमार जैन बाल विद्यालय कमलापुरी, आगरा रोड
			श्री बाबूलाल जैन बाल मन्दिर कृष्णापुरी
			श्री बाबूलाल जैन उ० मा० विद्यालय कृष्णापुरी
			श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री दि० जैन धर्मशाला कलाई
			श्री जैन मस्कृत पाठशाला पालकी खाना
			श्री जैन शिक्षा सोसाइटी
			श्री कमल कुमार जैन प्रसूतिगृह कमलापुरी आगरा रोड
			श्री लक्ष्मी सिटी माटेसरी स्कूल, खिरनी गेट
			श्री महावीर प्रसूतिगृह पालकी खाना
			श्री पर्यूर्षण व्याख्यान माला समिति, खिरनी गेट
			श्री पादर्वनाथ दि० जैन खडेलवाल पचायती मन्दिर धर्मशाला, खिरनी गेट

जिले का नाम	स्वान का नाम	मन्दिर का नाम व स्वान	ग्रन्थ संस्थाओं के नाम
	अलीगढ़		श्री शान्तिसागर जैन धर्मार्थ औषधालय खिरनी गेट श्री शिखरचन्द जैन सहायता फण्ड खिरनी गेट श्री उदयसिंह जैन गर्ल्स इण्टर कालिज उदयसिंह जैन रोड
	अतरौली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बिसाना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हरकुआ गज	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
	हाथरस	श्री दि० जैन मन्दिर	जैन पाठशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		नया बास	श्री सरस्वती जैन इण्टर कालिज
	काजमाबाद	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कलाई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कन्वरी गज	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कौडियागंज	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खैर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सासनी	श्री दि० जैन मन्दिर	जैन महिला मण्डल कवि दौलतराम अध्ययन कक्ष पं० दौलतराम जैन धर्म पाठशाला श्री करोडीमल जैन इण्टर कालिज श्री महावीर वाचनालय कमला बाजार
	सिकन्दरा राऊ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	टिप्पल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	विजयगढ़	श्री दि० जैन मन्दिर	
(इ) इलाहाबाद	अकिल सराय	श्री दि० जैन मन्दिर	
	इलाहाबाद	श्री दि० जैन चैत्यालय चन्द कुमार जैन चाहचन्द श्री दि० जैन चैत्यालय चुशीलाल चाहचन्द	जैन धर्मप्रभावना समिति चाहचन्द जैन महिला मिलन चाहचन्द

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	इलाहाबाद	श्री दि० जैन चैत्यालय नेमचन्द जैन	जैन मिलन चाहचन्द
		श्री दि० जैन चैत्यालय सुमेरचन्द जैन कण्डैलगज	जैन नवपुष्पक सघ चाहचन्द
		श्री दि० जैन चैत्यालय सुमेरचन्द जैन खोवा मण्डी	जैन पुस्तकालय एवं वाचनालय
		श्री दि० जैन मन्दिर चाहचन्द	जैन विद्यालय जीरो रोड
		श्री दि० जैन मन्दिर चाहचन्द	श्री दि० जैन धर्मशाला जीरो रोड
		श्री दि० जैन मन्दिर चाहचन्द	श्री जैन होम्यो-चिकित्सालय जैन धर्मशाला
			श्री सुमेरचन्द जैन (दि०) औषधालय चाहचन्द जीरो रोड
			सुमेरचन्द दि० जैन छात्रावास कनैल गज प्रयाग विश्वविद्यालय
	दारानगर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कौशाम्बी	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
	कोठास	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पथोसा पो० गेराज	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
	पाली पो० पश्चिमी मरीण	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पवारा गेथालपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सराय अकिल	श्री दि० जैन मन्दिर	
		मु० वेरूई	
(ई) एटा	अलीगज	श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर	अखिल जैन विश्व मिशन भवन
	एटा	श्री दि० जैन नशिया जी शिकोहाबाद गेड	दि० जैन पद्मावती पुरवाल पचायत करुणादीप पाक्षिक
		श्री दि० जैन पद्मावती पुरवालय पचायती बड़ा मन्दिर	पशुवध निरोधक समिति १६ श्रावक मुहल्ल एटा
		श्री दि० जैन पद्मावती पुरवालय पुरानी बस्ती	श्री दि० जैन कन्या माध्यमिक विद्यालय
		श्री दि० जैन शान्तिनाथ चैत्यालय (वैरुगज)	श्री दि० जैन पद्मावती पुरवाल धर्मशाला
		श्री महावीर दि० जैन चैत्यालय (वैरुगज)	श्री वर्णी जैन इण्टर कालिज शिकोहाबाद रोड

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	एटा	श्री पार्श्वनाथ दि० जैन चैत्यालय (ठण्डी सडक) श्री पार्श्वनाथ श्री शान्तिनाथ दि० जैन चैत्यालय जी० टी० रोड श्री ऋषभनाथ दि० जैन चैत्यालय (सुभाष रोड)	
	अवागढ	श्री दि० जैन पचायती बडा मन्दिर श्री दि० जैन पचायती पार्श्वनाथ मन्दिर अटारी	श्री धर्मवती कन्या पाठशाला श्री दि० जैन पचायती धर्मशाला
			श्री दि० जैन पार्श्वनाथ परिषद श्री दि० जैन पुष्पदत्त सेवा मण्डल श्री महाकीर्ति दि० जैन बाल मण्डल
	भोजपुर	श्री दि० जैन महावीर स्वामी मन्दिर	
	चमकरी	श्री दि० जैन नेमिनाथ मन्दिर	
	चनकरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	धनिगा	श्री दि० जैन महावीर स्वामी मन्दिर	
	फूफौतु	श्री दि० जैन नेमिनाथ मन्दिर	
	गेहलू	श्री दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर	
	हिम्मतनगर	श्री दि० जैन महावीर प्राचीन मन्दिर	
	हिरौटी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	इमालिया	श्री दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर	
	जलेरार	श्री दि० जैन चन्द्रप्रभु चैत्यालय श्री दि० जैन चन्द्रप्रभु मन्दिर श्री दि० जैन चैत्यालय	
	जरानीकला	श्री दि० जैन महावीर स्वामी मन्दिर	
	जिररामी	श्री दि० जैन शान्तिनाथ मन्दिर	
	कारागज	श्री चन्द्रप्रभु दि० जैन मन्दिर विलराम गेट	बी० ए० वी० इण्टर कालिज सोरो गेट

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	कारागंज	श्री दि० जैन मन्दिर नदरई गेट	दि० जैन धर्मार्थे औषधालय नदरई गेट
		श्री दि० जैन मन्दिर विलराम गेट	नारायणलाल जैन धर्मशाला नदरई गेट
			श्री नेमिचन्द्र जैन लोइया धर्मशाला सोरो गेट
	बारीआ	श्री दि० जैन आदीश्वर मन्दिर	
	महेतु	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मलालत	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भिजाऊँ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मोरनहरपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मुहरामा	श्री दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर	
	निघोती कला	श्री दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर	
	पौण्डरी	श्री दि० जैन नेमिनाथ मन्दिर	
	पवा	श्री दि० जैन शान्तिनाथ मन्दिर	
	पितुआ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	राजमल	श्री दि० जैन बडा मन्दिर	
	(अतिशय क्षेत्र)		
	राजपुर	श्री दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर	
	रामगढ	श्री दि० जैन महावीर स्वामी मन्दिर	
	रिजावली	श्री दि० जैन नेमिनाथ मन्दिर	
	रुस्तमगढ़	श्री दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर	
	सकीटकरण	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सकरौली	श्री दि० जैन नेमिनाथ मन्दिर	
	सरनौ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सरानी	श्री दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर	
	सरापनीय	श्री दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर	
	तिरवातर	श्री दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर	
	उमरगढ	श्री दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर	
	बछेपुरा	श्री दि० जैन नेमिनाथ मन्दिर	
	बजहेरा	श्री दि० जैन महावीर स्वामी मन्दिर	
	बलेसह	श्री दि० जैन पदमप्रभु मन्दिर	
	बरही	श्री दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
एटा	वारारामसपुर बराबसपुर	श्री दि० जैन प्राचीन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर (पो० नगलपंती)	
	बसुधरा	श्री दि० जैन नेमिनाथ मन्दिर	
	बाबसा	श्री दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर	
	वेरनी	श्री दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर	
	बोरीकलाँ	श्री दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर	
	थरा	श्री दि० जैन महावीर स्वामी मन्दिर	
(उ) बाँदा	बाँदा	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन कन्या पाठशाला
(ऊ) बाराबकी	बहरामघाट (अपर नाम गणेशपुर)	श्री दि० जैन चैत्यालय	श्री दि० जैन पाठशाला
		श्री दि० जैन चैत्यालय	
		श्री दि० जैन चैत्यालय	
		श्री दि० जैन चैत्यालय	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	बाराबकी	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन पाठशाला श्री दि० जैन पुस्तकालय
	बिलहरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	दरियाबाद	श्री दि० जैन मन्दिर श्री नन्दनलाल दि० जैन चैत्यालय श्री सन्तलाल दि० जैन चैत्यालय	
	फतेहपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हथौछा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जरखा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पैतेपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	शहादतगञ्ज	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सुमेरगञ्ज	श्री दि० जैन मन्दिर	
	टिकैतनगर	श्री चन्द्रप्रभु चैत्यालय कैलाश चन्द जैन सराफ श्री चौबीसी चैत्यालय उपेन्द्र कुमार जैन	श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन पाठशाला श्री दि० जैन पुस्तकालय

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
बाराबकी	टिकैतनगर	श्री दि० जैन मन्दिर श्री गण्धर्व चैत्यालय सुभाष चन्द्र जैन	श्री पार्श्वनाथ माध्यमिक विद्यालय
(ए) बिजनौर	तिलोकपुर	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	
	अफजलगढ़ बिजनौर (रुहेलखंड सभाग)	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	जैन बोर्डिंग हाउस श्री दि० जैन धर्मशाला श्री वर्धमान डिग्री कालिज वीर पाठशाला
	धामपुर	श्री दि० जैन मन्दिर मु० बटमान	धर्म प्रचारिणी मभा
		श्री दि० जैन मन्दिर मु० गूजरानियान	मुनि विद्यानन्द जैन पाठशाला गर्भ स्कूल
	किरतपुर	श्री दि० जैन चैत्यालय श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	हिन् इण्टर कालिज श्री महावीर जन वाचनानय
	नगीना तहटौर	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	जैन विद्या मन्दिर इन्टर कालिज नन्ही वाई दि० जैन ट्रस्ट श्री दि० जैन धर्मशाला
	नजीबाबाद	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	अतिथि भवन गेस्ट हाउस देवेन्द्र कुमार जैन ट्रस्ट होम्योपैथिक औषधालय जैन औषधालय राजमनि आयु० औषधालय सन्मति मार्बेजिनिक पुस्तकालय श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन धर्मशाला श्री सूरति देवी कन्या पाठशाला

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	नजीबाबाद		श्री साहू जैन डिग्री कालिज श्री सरस्वती कालिज श्री दि० जैन पाठशाला
(गे) देहरादून	शिवहारा चकरोता देहरादून	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर झण्डा बाजार श्री दि० जैन मन्दिर सरनीमल हाउस	दीपक विद्यालय पक्षी चिकित्सालय श्री दि० जैन धर्मशाला श्री महावीर दि० जैन कन्या पाठशाला इण्टर कालिज तिलक रोड श्री मनोहरलाल जैन धर्मार्थ होम्यो० चिकित्सालय सेबला कला श्री मनोहरलाल जैन धर्मार्थ होम्यो० चिकित्सालय ८७-तिलकमार्ग श्री वर्णी जैन विद्यालय, जैन धर्मशाला मार्ग
	मसूरी	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन महावीर भवन लण्डौर
	राजपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन महावीर भवन
	ऋषिकेश	श्री दि० जैन चैत्यालय दीपचन्द भवन	
	विकासनगर	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री बुद्धमान जैन बालिका विद्यालय श्री होशियार मिह जैन गर्ल्स इण्टर कालिज श्री होशियार मिह जैन ओपधालय श्री होशियार मिह जैन उ० मा० कन्या विद्यालय
(ओ) फैजाबाद	अयोध्या	श्री दि० जैन मन्दिर मु० रायगज	श्री दि० जैन धर्मशाला मन्दिर जी के निकट

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
फैजाबाद	अयोध्या	श्री दि० जैन प्राचीन शिखरबद्ध मन्दिर मु० कटरा	
	हनुमानगढी	अभिनन्दन नाथ की टोक कटरा स्कूल के पास आदिनाथ की टोक, बन्सारिया टोला मु० पुराना खाना अजितनाथ की टोक मु० बेगमपुरा अनन्तनाथ की टोक मु० कटरा मुनि की टोक	
	रतनपुरी	श्री धर्मनाथ दि० जैन मन्दिर निकट सरयू नदी श्री धर्मनाथ दि० जैन मन्दिर निकट सरयू नदी	श्री धर्मनाथ दि० जैन धर्मशाला
(औ) गढवाल (अं) गोडा	श्रीनगर गोडा	श्री ऋषभदेव दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर गोडा जकशन	नन्दावर्त (अतिथि भवन)
(अ.) गोरखपुर	दरोली (सिबान) गोरखपुर	श्री दि० जैन चैत्यालय श्री दि० जैन (निजी) मन्दिर नन्दभवन मु० गोरखपुर श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर चरगावाँ	श्री श्यामलाल जैन हाईस्कूल अभयनन्द जैन हा० सै० स्कूल असुरन श्री बेला अनन्त जैन धर्मार्थ ट्रस्ट
		श्री दि० जैन विनाल दो मजिला मन्दिर (धर्मशाला के साथ)	श्री मुरारी जू० हा० स्कूल श्री मुरारी लाल इण्टर कालिज सहजनवा श्रीमती गुलाली शिशु मन्दिर श्रीमती नन्दी देवी जू० हा० स्कूल
(क) हमीरपुर	कबरई	श्री दि० जैन मन्दिर	
(ख) हरदोई	माधोगंज मंडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
(ग) जालौन	जालौन	श्री दि० जैन मन्दिर कालपी श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर कालपी	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
(घ) झाँसी	अम्बरगढ़	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अनोरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अतर्रा (बाँदा)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बबीना	श्री दि० जैन मन्दिर	अकलक दि० जैन पाठशाला
	महाराष्ट्रीटा (पो० टका)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भदौरा पो० गुडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मैलोनी सूबा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भावनी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भीकमपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बुढवार	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चडरऊ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चमरोबा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चदावती	श्री दि० जैन मन्दिर	
	छापछौल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पो० सोजना		
	बिगलौआ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बिरगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चुनगी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	देलवारा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	देवरान	श्री दि० जैन मन्दिर	
	घवा पो० मडावरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	धुरैपा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	डोगरा खुर्द	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गडथाना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गगवाई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गेवरा पो० खुर्द	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बनघोल	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
	धुराट	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गिदवाहा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गिरार	श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर	
	गुठा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गुन्हेरा पो० गेबरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गुरसराय	श्री दि० जैन मन्दिर	
	इकबालपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	

बिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
झांसी	जखनौन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जखौग	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जेरोन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	झांसी	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री जैन प्रार्थामक पाठशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री जैन निशु मन्दिर
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर कल्याणपुरी	
		श्री दि० जैन मन्दिर मदन बाजार	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	जिजपावन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ककराडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कैलवारा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कन्धारी बडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कठरारा कला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कनपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कारीटोस	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कटेरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	केलगुवा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	केवलमारो पो० गुडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खैरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खैराडाग	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खजेराम	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खजुरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खिरानी बुर्ज	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खिरानी खुर्द	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खिरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	किरालवारा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कुम्हेडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कुरामाड (मडावरा)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लटवारी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लागौन कस्बा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लुहरी पो० मडावरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मदनपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	

[illegible]

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	ग्रन्थ संस्थाओं के नाम
	पाली	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
	पारौन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पारोल पो० नाराहट	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पाय	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पथराई पो० सोजना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पिपरई	श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर	श्री पार्श्वनाथ दि० जैन पाठशाला
	पुरावकडारी पो० ककडारी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	राघपचमपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रजपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रमगढा पो० मडावरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रानीपुर	श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर	श्री दि० जैन संस्कृत विद्यालय
	रायपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	साढूमल	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन संस्कृत विद्यालय
	सैदपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सरसैडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सतवास	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सेरवास (खुर्द)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सेरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिलमन (नलितपुर)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सोजना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सोरई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	टहरीली	श्री दि० जैन मन्दिर मु० पराराई	
	तालवेहट		समन्तभद्र दि० जैन पाठशाला
	ठकुरपुरा पो० बवीना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	उडेसरा	श्री दि० जैन मन्दिर	स्वर्णभद्र आदर्श विद्यालय
	उगरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	उत्तमथाना	श्री दि० जैन हाथी	
	वछेरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वचनौद	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वछरावनी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बालावेट	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बम्होरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बामौर कला	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	वट	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वारचौन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बरोदा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बरोदा स्वामी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वरुजा सागर	श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर	समन्तभद्र जैन पाठशाला
	वसराना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	दिरथा (पाली)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	विठरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
(ड) कानपुर	कानपुर	श्री चन्द्रप्रभु चैत्यालय फूलमहल, बिरहाना रोड	दि० जैन पवित्र औषधालय सब्जी मंडी
		श्री चन्द्रप्रभु चैत्यालय नवाबगंज	ला० गुलजारी मल दि० जैन धर्मशाला सब्जी मंडी
		श्री दि० जैन चैत्यालय ११३/८ स्वरूपनगर	श्री दि० जैन भवन सब्जी मंडी
		श्री दि० जैन महावीर चैत्यालय पाण्डुनगर	श्री दि० जैन खण्डेलवाल सभा द्वारा लक्ष्मीनारायण मेघराज नया गज
		श्री दि० जैन मन्दिर जनरलगंज	श्री दि० जैन महिला समिति २४/४० जैन बिहार
		श्री दि० जैन मन्दिर मनिराम बगिया	श्री दि० जैन नवयुवक सघ
		श्री दि० जैन मन्दिर पचकूचा	श्री दि० जैन (पद्मावती पुरबान) समाज ११२/३४८ स्वरूपनगर
		श्री दि० जैन मन्दिर १०८/३२ ए सीसामऊ	श्री दि० जैन पचायती बड़ा मन्दिर
		श्री महावीर जैन मन्दिर चक्रेरी लाल बगला	श्री दि० जैन पवित्र औषधालय सरसैया घाट (शाखा)
		श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय किराचीखाना	श्री दि० जैन स्वाध्याय मंडल पचकूचा
			श्री० दि० जैन वीरदल लोहाई

[illegible]

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सस्थाओं के नाम
	देवगढ	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन सहस्रनाकूट चैत्यालय	
	घोरी	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री शान्तिनाथ दि० जैन पाठशाला
	गिरार अतिशय क्षेत्र ललितपुर	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन चैत्यालय (सिद्धीसागर) स्टेशन रोड श्री दि० जैन मन्दिर	जैन मिलन हाईस्कूल बडा मन्दिर पाशर्वनाथ दि० जैन पाठशाला अटा मन्दिर
		श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	प्रवचन हाल क्षेत्रपाल शान्तिसागर दि० जैन जू० कन्या पाठशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	सन्मति परिषद श्री भगवान महावीर नेत्र चिकित्सालय श्री वीर सेवा सघ

[illegible]

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	पवा (पावागिरि जी)	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर मौठारा श्री दि० जैन मन्दिर पवाग्राम	
	माढूमल सेरोन	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन संस्कृत महाविद्यालय
(छ) लखनऊ	लखनऊ	श्री दि० जैन मन्दिर छापाबाजार श्री दि० जैन मन्दिर चारबाग श्री दि० जैन मन्दिर चौक श्री दि० जैन मन्दिर डालीगज श्री दि० जैन मन्दिर गणेशगज श्री दि० जैन मन्दिर हजरतगज श्री दि० जैन मन्दिर अमीनाबाद श्री दि० जैन मन्दिर सदर श्री दि० जैन मन्दिर यहियागज श्री दि० जैन मन्दिर महोना श्री दि० जैन मन्दिर सहादतगज	दि० जैन मान्टेसरी विद्यालय चौक दि० जैन पाठशाला यहियागज दि० जैन विद्यालय चौक कान्त बाल केन्द्र प्राथमिक पाठशाला (चारबाग) महावीर जैन बाल शिक्षाशाला श्री दि० जैन धर्मार्थ चिकित्सालय श्री दि० जैन धर्मशाला चारबाग श्री दि० जैन धर्मशाला चौक चूड़ी वाली गली श्री दि० जैन धर्मशाला डालीगज श्री दि० जैन धर्मशाला सआदतगज श्री दि० जैन धर्मशाला टाटपट्टी

जिले का नाम

स्थान का नाम
लखनऊ

मन्दिर का नाम व स्थान

ग्रन्थ संस्थाओं के नाम

श्री दि० जैन पुस्तकालय

चारबाग

श्री दि० जैन पुस्तकालय चौक

श्री दि० जैन पुस्तकालय

यहियागज

श्री दि० जैन औषधालय

(ज) मेरठ

आदर्श नगला

श्री दि० जैन मन्दिर

अधनर

श्री दि० जैन मन्दिर

अधर (सरधना)

श्री दि० जैन मन्दिर

अल्लम (बागपत)

श्री दि० जैन मन्दिर

अमीनगर सराय

श्री दि० जैन मन्दिर

श्री दि० जैन धर्मशाला

श्री शान्तिनाथ धर्मार्थ औषधालय

अछाड

श्री दि० जैन मन्दिर

असारा

श्री दि० जैन मन्दिर

बडागाँव

श्री दि० जैन मन्दिर

बड़ीत

श्री दि० जैन मन्दिर

श्री दि० जैन मन्दिर

अतिथि भवन

श्री दि० जैन मन्दिर

आनन्दगज मडी

आचार्य नेमिसागर औषधालय

दि० जैन शान्तिमागर धर्मार्थ

औषधालय

दि० जैन युवा परिषद

युवा जैन मिलन

प्राचीन जैन शास्त्र मंडार

श्री दि० जैन अर्जितनाथ

धर्मशाला

श्री दि० जैन अतिथि भवन

श्री दि० जैन क्लब

श्री दि० जैन डिग्री कालिज

श्री दि० जैन गन्स इंटर कालिज

श्री दि० जैन कन्या जू० हा०

स्कूल

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	बड़ोत		श्री दि० जैन इण्टर कालिज श्री दि० जैन महावीर पाठशाला श्री दि० जैन महावीर वाचनालय एवं पुस्तकालय श्री दि० जैन मॉण्टेसरी स्कूल श्री दि० जैन पक्षी हस्पताल श्री दि० जैन पौलीटेक्नीकल कालिज श्री दि० जैन सरस्वती महिला हस्पताल श्री दि० जैन सार्वजनिक पुस्तकालय श्री दि० जैन शिक्षा सदन
	बडोली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बागपत	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन जू० हा० स्कूल
	बहसूमा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बामनोली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बरनावा	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
	बावली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भगवानपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भोजपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बिजरोल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बिनोली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बोढा (सरघना)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	छपरोली	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन त्यागी भवन श्री शान्तिसागर जू० गर्ल्स स्कूल
	छुर (सरघना)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	दौराला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	घनोरा (सिलवरनगर)	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	दोघट	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गढी तम्बेला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गोटका	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हस्तिनापुर	श्री दि० जैन मन्दिर	जैन धर्मार्थ औषधालय
		श्री दि० जैन मन्दिर	मुमुक्षु आश्रम
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन प्रान्तीय गुरुकुल
		सुमेरु शोध संस्थान	
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन सरस्वती भंडार
		त्रिलोक शोध संस्थान	श्री दि० जैन त्रिलोक शोध संस्थान
		श्री नन्दीश्वर द्वीप जिनालय	
		श्री दि० जैन जल मन्दिर	श्री हरिश्चन्द्र आश्रम
	ज्वालागढ़	श्री दि० जैन मन्दिर	
	झुडपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जोहडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	करनावल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खेकडा	श्री दि० जैन मन्दिर	बाल युवक मण्डल
		श्री दि० जैन मन्दिर	दि० जैन अतिथि भवन
			जैन धर्मार्थ औषधालय
			जैन मिलन
			जैन नवयुवक मण्डल
			जैन प्राइमरी स्कूल
			जैन सस्ती धर्मशाला
			महावीर जैन भवन
			पार्श्वनाथ युवक मंडल
			शान्तिनाथ कन्या जू० हा० स्कूल
			शान्तिनाथ मण्डल
			श्री दि० जैन इण्टर कालिज

जिले का नाम	स्थान का नाम क्षेत्र	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम श्री जिन बीर कीर्तन मण्डल श्री उग्रसेन जैन धर्मार्थ औषधालय
	खट्टा प्रह्लादपुर (बागपत)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	किरठल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कुरडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कुताना	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री नेमिसागर धर्मार्थ औषधालय श्री सरस्वती भवन
	लुहारा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	महलका	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मलकपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मवाना	श्री दि० जैन मन्दिर	जैन मिलन श्री पार्श्वनाथ मित्र मण्डल ग्रामिक क्लब
मेरठ		श्री दि० जैन चैत्यालय आनन्दपुरी	अध्यात्मिक विद्यालय रानी मिल
		श्री दि० जैन चैत्यालय ईश्वरपुरी	
		श्री दि० जैन चैत्यालय किशन फ्लोर मिल रेलवे रोड	भारतवर्षीय दि० जैन आत्मविज्ञान परीक्षा-बोर्ड चौक सदर बाजार
		श्री दि० जैन चैत्यालय शान्तिनगर रेलवे रोड	धर्मदास जैन ट्रस्ट धर्मशाला घण्टाघर
		श्री दि० जैन चैत्यालय वेस्टर्न कचहरी रोड टकी मुहल्ला	जैन बोर्डिंग हाउस रेलवे रोड
		श्री दि० जैन चैत्यालय वेस्टर्न रोड सदर	दि० जैन त्यागी भवन दुर्गाबाड़ी मेरठ सदर
		श्री दि० जैन मन्दिर महावीर जयन्ती भवन शारदा रोड	बालिका सगम दुर्गाबाड़ी जैन छात्रवृत्ति कोष मानसरोवर

शिक्षण का नाम

स्थान का नाम

मन्दिर का नाम व स्थान

अन्य संस्थाओं के नाम

जैन चिकित्सा विशेषज्ञ परामर्श केन्द्र
दुर्गाबाड़ी

श्री दि० जैन मन्दिर
रानी मिल देहली रोड

जैन धर्मार्थ हो० औषधालय
ठठेरवाडा

श्री दि० जैन मन्दिर
स्वराज्य पथ मेरठ सदर

जैन धर्मशिक्षा सदन देहली गेट

श्री दि० जैन मन्दिर
श्री गेदालाल जैन मुक्तयार
शाहदा रोड

जैन धर्म शिक्षा सदन तीरगरान
जैन मिलन

श्री दि० जैन मन्दिर
तीरगरान स्ट्रीट

जैन समाज
जैन समाज महायता कोष

श्री दि० जैन मन्दिर
तीर्थ द्धर महावीर मार्ग

जैन त्यागी भवन तीरगरान

श्री दि० जैन मन्दिर
तोपखाना

महिला गोष्ठी पाव्वनाथ दि० जैन
पचायती मन्दिर मेरठ सदर
मुशी बाई दि० जैन हो० औषधालय
दुर्गाबाड़ी

मुरारी लाल छेदालाल धर्मार्थ
औषधालय टकी मुहल्ला

सहजानन्द शास्त्रमाला रजीनपुरी
सदर

श्री ब्रह्मन्नी देवी जैन गर्भ मं० हा०
स्कूल

श्री धर्म शिक्षा सदन (नया फाजीन)
दुर्गाबाड़ी

श्री दि० जैन धर्मशाला कोनकी मुहल्ला

श्री दि० जैन धर्मशाला (पचायती)
मेरठ रोड

श्री दि० जैन धर्मशाला टकी मुहल्ला

जिले का नाम

स्थान का नाम

मन्दिर का नाम व स्थान

अन्य संस्थाओं के नाम

श्री दि० जैन मस्ते इण्टर कालिज
ढोलकी मुहल्ला

श्री दि० जैन जू० हा० स्कूल
दुर्गाबाड़ी

श्री दि० जैन वधमान पुस्तकालय
दुर्गाबाड़ी

श्री दि० जैन युवक सभा सदर
श्री जैन मस्कर्तन संरक्षण एव
प्रचार नामनि दुर्गाबाड़ी

श्री जैन मस्वनी भण्डार
(श्री दि० जैन मस्वि० तीरगरान)

श्री जैन युवक प्रचारिणी सभा
(श्री दि० जैन मन्दिर तीरगरान)

श्री महावीर नृत्य मण्डल
दुर्गाबाड़ी

श्री नमि जैन औपघालय
रेलवे रोड

श्री नमि जैन औपघालय
ठठेरवाडा

श्री प्र० का० कमेटो जैन बादरी
तीरगरान

श्री बीर पुस्तकालय देहूरी गेट

श्री बीर पुस्तकालय तीरगरान

श्री विद्यानन्द जैन जू० हा० स्कूल
वीर छात्रवृत्ति सो. रिमथगज
दुर्गाबाड़ी गज

वीर निर्वाण मारकी 69 तीरगरान

मुल्तेवा

श्री दि० जैन मन्दिर

मुल्तेम

श्री दि० जैन मन्दिर

निरपुडा

श्री दि० जैन मन्दिर

पाचली

श्री दि० जैन मन्दिर

जिले का नाम

स्थान का नाम

मन्दिर का नाम व स्थान

अन्य संस्थाओं के नाम

राडधाना

रमाला

रन्धाड

मवमा

सन्नावा

सनोली

सरधना

श्री दि० जैन मन्दिर

श्री दि० जैन मन्दिर

श्री दि० जैन मन्दिर

श्री दि० जैन मन्दिर

श्री दि० जैन मन्दिर

श्री दि० जैन मन्दिर

श्री दि० जैन मन्दिर

श्री दि० जैन मन्दिर

चौकडा

श्री दि० जैन मन्दिर

चौकडा

श्री दि० जैन मन्दिर

चौकडा

श्री दि० जैन मन्दिर

खारा कुआ

श्री दि० जैन मन्दिर

मु० तारनी

श्री दि० जैन वीर चैत्यालय

बाजार लश्कर गज

श्री गुरु मन्दिर

आचार्य नमिसागर इण्टर कालिज
बिनोली रोड

भारत जैन महामण्डल शाखा

युवा जैन मिलन

दि० जैन अतिथि भवन

दि० जैन बाल सघ

दि० जैन धर्मशाला बाजार
लश्कर गज

दि० जैन मुनि नमिसागर
औषधालय

दि० जैन पचायती धर्मशाला

जैन वी ग्रेट नवयुवक सघ

जैन गर्ल्स हाई स्कूल

जैन गर्ल्स प्राइमरी पाठशाला

जैन मिलन

जैन नवयुवक सघ

जैन शान्ति सदन (ग्रन्थ संग्रह)

श्री जैन कन्या पाठशाला

श्री वीर बाल सदन

लश्कर गंज

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
(अ) मिर्जापुर	सररपुर कलाई	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन कन्या पाठशाला
	सीसाना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सूप	श्री दि० जैन मन्दिर	
	टटीरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	(अग्रवाल मंडी)		
	टीकरी	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन कन्या पाठशाला
	तेहड़ा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कछवा	श्री दि० जैन मन्दिर मझवा	
	मिर्जापुर	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
		अकमगज	
(ब) मुजफ्फरनगर	एलम	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अम्बेटा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अनाजमंडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बडौदा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बाबला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मैसी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मैसवाल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भुवगरियापुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बुढाना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चरथावल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	दौडागढी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गढी अब्दुल्ला खाँ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गढी खाय	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गढी पुस्ता	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गंगेरु	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गंगो	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हरद	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जलालाबाद	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जलालपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जानसठ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जसोई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जौला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जौसलाबाद	श्री दि० जैन मन्दिर	

जैन मंदिरों के नाम

स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
श्रीशाना	श्री दि० जैन मन्दिर	
कवाल	श्री दि० जैन मन्दिर	
कच्छी गद्दी	श्री दि० जैन मन्दिर	
कैराना	श्री दि० जैन मन्दिर बड़ा	
	श्री दि० जैन मन्दिर छोटा	
ककरोली	श्री दि० जैन मन्दिर	
कान्धवा	श्री दि० जैन मन्दिर बड़ा	अनन्तमती कन्या पाठशाला
	श्री दि० जैन मन्दिर छोटा	श्री दि० जैन धर्मशाला
नैनी	श्री दि० जैन मन्दिर	
खानीली	श्री चन्द्रप्रभु दि० जैन मन्दिर मु० श्रीराम	दि० जैन अतिथि भवन द्वारा बाबा श्री भागीरथ जी स्थापित
	श्री चन्द्रप्रभु दि० जैन मन्दिर मु० शंकाफन	हा० सै० स्कूल मु० शंकाफन
	श्री दि० जैन मन्दिर मु० गगवाटी	कन्या इण्टर कॉलेज मु० कानूनगायान
	श्री दि० जैन मन्दिर मु० कानूनगायान	कुन्दकुन्द जैन डिग्री कॉलेज (रेलवे रोड)
	श्री दि० जैन मन्दिर मु० श्रीराम	कुन्दकुन्द जैन टिप्टर कॉलेज
	श्री दि० जैन मन्दिर सामचन्द जम्ना बाबा मु० मिट्ठवाला	शान्तिमागर जैन धर्मार्थ ओपधालय
	श्री दि० जैन मन्दिर नसिया जी उ० टी० रोड	श्री चन्द्रप्रभु जैन अतिथि भवन
	श्री महावीर दि० जैन मन्दिर बाबवाला मु० कानूनगायान	श्री दि० जैन धर्मशाला (मन्दिर सामचन्द)
	श्री पद्मनाथ दि० जैन नया मन्दिर मु० कानूनगायान	वर्णी दि० जैन धर्मशाला मु० शंकाफन
कुशलमी	श्री दि० जैन मन्दिर	
कुटेगरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
गसूरपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
मीरापुर	श्री दि० जैन चैत्यालय	श्री दि० जैन धर्मशाला

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	मुजफ्फरनगर	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर अबुपुरा	जैन गर्लम् डिग्री कालिज प्रेमपुरी
		श्री दि० जैन मन्दिर बहलनाग्राम	जैन कन्या पाठशाला इण्टर कालिज अबुपुरा
		श्री दि० जैन मन्दिर ला० प्रियलाल जी	जैन इण्टर कालिज अबुपुरा
		श्री दि० जैन पंचायती मन्दिर नई मण्डी	जैन माण्टेमरी बालधर कुंडलपुरा
		श्री दि० जैन मन्दिर (पंचायती) पारसनाथ	जैन औपधालय प्रेमपुरी
		श्री दि० जैन पंचायती मन्दिर प्रेमपुरी	वर्णी प्रवचन प्रकाशिनी संस्था प्रेमपुरी
	ओलावा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पडासोली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पुरबालियान	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पुरकाजी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पुरमपीसा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रोहानाकला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सरायरसूलपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सठेडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सीकरपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	शाहपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री महावीर जैन होम्यो, धर्मार्थ औपधालय (जैन धर्मशाला)
	शामली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	शीरो	श्री दि० जैन मन्दिर	
	तिराग	श्री दि० जैन मन्दिर	जानकीदास जैन पब्लिक लाइब्रेरी जानकीदास शादी फण्ड नेमचन्द अतरमेन जैन धर्मशाला पंचायती दि० जैन धर्मशाला

विधि का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	तिस्सा	श्री दि० जैन प्राचीन शिल्लर बद्ध मन्दिर	
	तीतरम	श्री दि० जैन मन्दिर	
	उमरपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बधरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बिहारी गाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	
(द) नैनीताल	हलदानी	श्री दि० जैन मन्दिर (रेलवे बाजार का चौराहा)	वर्धमान जैन मण्डल
	जसपुर	श्री पारसनाथ दि० जैन मन्दिर	
	काशीपुर	श्री दि० जैन पारसनाथ मन्दिर	अहिंसा प्रचार समिति
(ठ) प्रतापगढ़	कटरा भेदिनीगंज	श्री दि० जैन प्राचीन मन्दिर	सरस्वती मठ
(ड) रायबरेली	जायस	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रायबरेली		भगवान महावीर पुस्तकालय एव वाचनालय सुपर मार्केट
	बधराबा	श्री दि० जैन चैत्यालय	
(ड) सहारनपुर	अम्बैहटा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बेहट टाउन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चिलकाना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	देवबन्द	श्री दि० जैन मन्दिर बाहरा	जैन मिलन
		श्री दि० जैन मन्दिर कानुगोयान	श्री दि० जैन बालकला मण्डल
		श्री दि० जैन मन्दिर नेचलगढ	श्री दि० जैन धर्मशाला मु० बाहूपारस
		श्री दि० जैन मन्दिर सराबाबाडा	
			श्री दि० जैन कन्या हा० सै० स्कूल श्री दि० जैन कन्या पाठशाला श्री दि० जैन नवयुवक समा श्री दि० जैन वीर कला मण्डल श्री जैन हा० सै० स्कूल

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	गढ़ी तीसरो	श्री दि० जैन मन्दिर	
	झबरेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ज्वालापुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कनखल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मल्हीपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मंगलौर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नकुड	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नानीता	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रामपुर मनिहारान	ला० सरनीमल दि० जैन मन्दिर मु० महाजन	जैन मिलन
		श्री दि० जैन पचायती शिक्षरबद्ध विशाल मन्दिर	चमनलाल दि० जैन कन्या विद्यालय
		श्री दि० जैन पार्श्वनाथ प्राचीन मन्दिर	दि० जैन जागृति पुस्तकालय एवं वाचनालय जैन अतिथि भवन जैन धर्मार्थ हौ० औषधालय जैन बाग जैन जागृति मण्डल जैन उ० भा० विद्यालय प्राइमरी जैन कन्या पाठशाला उदासीन आश्रम
	रडकी	श्री दि० जैन मन्दिर	जैन कन्या पाठशाला
	सहारनपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	दि० जैन कन्या हा० सै० स्कूल छत्ता बारमल
		श्री दि० जैन मन्दिर बडतल्ला	
		श्री दि० जैन मन्दिर बडतल्ला	दि० जैन प्राइमरी स्कूल सर्राफा बाजार
		श्री दि० जैन मन्दिर छत्ता बारमल	दि० जैन सरस्वती भवन धादमार काबड़
		श्री दि० जैन मन्दिर छत्ता हुलासराय	जैन बालबोधिनी समा

ग्राम का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
(ण) सीतापुर	सहारनपुर	श्री दि० जैन मन्दिर चौघरियान	जे० वी० जैन डिग्री कालिज प्रद्युम्न नगर
		श्री दि० जैन मन्दिर गुलालबाग	जे० वी० जैन इष्टर कालिज कलसिया रोड
		श्री दि० जैन मन्दिर हलवाई हट्टा	
		श्री दि० जैन मन्दिर जैन बाग	पुतली देवी धर्मशाला खालापार
		श्री दि० जैन मन्दिर सगियान	श्री गगाराम जैन उदासीनाश्रम मु० शोरमियान स्ट्रीट
		श्री दि० जैन मन्दिर शोरमियान	
			श्री जैन धर्मार्थ पक्षी चिकित्सालय चिलकाना रोड
			श्री जैन हो० धर्मार्थ चिकित्सालय छत्ता ला० जम्बू प्रसाद
			श्री जैन खैरानी मेडोपेथी हस्पताल
			श्री त्रिलोकचन्द जैन धर्मशाला वीरनगर
(ण) सीतापुर	सरसावा	श्री दि० जैन मन्दिर	दि० जैन कन्या हा० मै० स्कूल
	तीतरो	श्री दि० जैन मन्दिर	
	टिकरोल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लहुरपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	महमूदाबाद	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन पाठशाला श्री दि० जैन पुस्तकालय
	पैतपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पिसवा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रामपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिधौली	श्री दि० जैन चैत्यालय	
		श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सस्थाओं के नाम
(त) शाहजहाँपुर	शाहजहाँपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
(थ) मुलतानपुर	मुलतानपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
(द) वाराणसी	चन्द्रपुरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	काशी	श्री दि० जैन हीरा प्रतिमा चैत्यालय	अकलक सरस्वती भवन (म्यादवाद महाविद्यालय)
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन विशाल धर्मशाला भदागिन
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	म्यादवाद महाविद्यालय भदानी
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		(म्यादवाद विद्यालय के ऊपर)	
		श्री दि० जैन नरिया चैत्यालय	
		श्री दि० जैन राजा दरवाजा चैत्यालय	
		श्री दि० जैन सुजना चैत्यालय	
	सिंहपुरी	श्री दि० जैन मन्दिर सारनाथ	श्री दि० जैन विशाल धर्मशाला श्री गणेशवर्णी शोध सस्थान श्री जैन साहित्य प्रसारण केन्द्र

बिहार के हजारी बाग और राची जिले में तथा मानभूम सिंहभूम जिले में कतरासगढ़ पाकवीर, बड़ा बाजार, सिंहभूम के वेणुसागर कुडू-तमाड़, हुरुडी, देवलदिह, नवादीह आदि में सराक जाति के लोग निवास करते हैं। सराक का अर्थ श्रावक होता है। सराक पक्के शाकाहारी हैं। मद्य, मांस, मधु का जीवन में उपयोग नहीं करते, पार्श्वनाथ के भक्त हैं, उनकी पूजा करते हैं। स्रण्डगिरि-उदयगिरि की यात्रा को जाते हैं। हिंसा में शृणा करते हैं। ये बड़े शान्त नागरिक हैं। उस जाति के बृद्ध-जनो के अनुसार मूलतः ये लोग सरयू नदी के तट पर अयोध्या और गाजीपुर के निकटवर्ती प्रदेशों में रहने वाले अग्रवाल हैं। इनके १७ गोत्र हैं। १२वीं शताब्दी के वामनघाटी ताम्र शासन में ज्ञात होता है कि मयूरमज के भंज-वंशीय राजाओं ने श्रावको को बहुत ग्राम दिये थे। श्रावको ने जंगलों में घूम-घूम कर ताबों की खाने बूँटी और अपनी शक्ति से उनका विकास किया किन्तु शैव-सम्प्रदाय के लोगो ने मोहवश चोल और पाण्ड्य नरेशों ने धर्म द्वेष के कारण जैन-मन्दिरों का विनाश किया। लोगो को अपने धर्म का परिवर्तन करने को विवश होना पड़ा जो न कर सके उन्हें भागना पड़ा अथवा सर्वस्व खोकर भी जीवन से हाथ धोना पड़ा। सराको के स्थानों में कितनी ही पुरातन मूर्तियों और मन्दिरों के अवशेष उपलब्ध हुए हैं। अनेक धरागायी मन्दिरों के खण्डहर भी मिलते हैं जिनमें स्पष्ट ज्ञात होता है कि वे जैन-धर्म के मन्त्रालय थे। सराको में जाति-भेद भी पाया जाता है। उनके धार्मिक ज्ञान को बढ़ाने के लिये स्कूल और पाठशालाएँ भी खोली गयीं, मन्दिर भी बनवाये गये हैं क्योंकि शिक्षा-प्रचार ही उनके उत्थान एवं विकास का कारण है। इतना काल व्यतीत हो जान पर भी उनकी श्रद्धा अडोल है। पूर्व में इनकी सम्पन्नता का स्पष्ट बोध होता है। वे अपने धर्म को आज भी नहीं भूले हैं और न उनके आचार-व्यवहार में कोई परिवर्तन हुआ है।

बंगाल, बिहार और उड़ीसा के विभिन्न स्थानों पर

पुरातन सामग्री उपलब्ध है। जैन मन्दिर, गुफायें, ताम्र-शासन, शिलालेख आदि जैन प्रतीक पाये जाते हैं। जैन-प्रतिमाओं में स्वस्तिक, नन्द्यावर्त, धर्मचन्द्र चैत्यवृक्ष और मीन युगल आदि हैं।

पुरनिया (पश्चिमी) बंगाल जिले में जैन मूर्तियाँ

पश्चिमी बंगाल

निकल रही है। पुरनिया के अनाई जामबाद को उसमें ५ मील कच्चे रास्ते पर है और कार से ११३ मील पर चमत्कारिक सुन्दर दो स्थान हैं जहाँ में जैन मन्दिर और जैन मूर्तियाँ प्राप्त हो रही हैं वहाँ पर विमल प्रसाद जी जैन खरखरी वालो ने विशाल शिखरबद्ध मन्दिर का निर्माण कराया है। वहाँ पर भी चमत्कारिक सुन्दर पार्श्वनाथ-मूर्ति प्राप्त हुई है जो विशाल प्राचीन और मनोज्ञ है। संभवतः उसे दो हजार वर्ष के लगभग प्राचीन बताया जाता है और भी अनेकानेक मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। यहाँ पार्श्वनाथ जैन गौशाला, पार्श्वनाथ जैन मन्दिर, पार्श्वनाथ जैन अतिथि भवन और पार्श्वनाथ शिवानन्द जैन जू० हा० स्कूल और पार्श्वनाथ जलकूप का भी निर्माण किया गया है। पोलिमा में चतुर्मुखी जित प्रतिमा निकली है। सराक जैन समिति का निर्माण हो गया है और उनमें मुबार का कार्य प्रारम्भ हो गया है।

पटना के लोहानीपुर मुहल्ले से प्राप्त मौर्य कालीन मूर्तिखण्ड कलकत्ता और भुवनेश्वर के संग्रहालय में कला और पुरातत्व की मामग्री मूल्यवान है। उसमें भगवान पार्श्वनाथ की ४ फुट उन्नत प्रतिमा भी शामिल है।

राजगढ़ी जिले में पहाड़पुर का ताम्रशासन गुप्त स० १५६ (सन् ४७८) ई० का है जो वहाँ के एक जैन बिहार का है जिसके छवसावशेष चारों ओर बिखरे पड़े हैं। इस ताम्रशासन में पञ्चस्तूपान्वय के निर्ग्रन्थ आचार्य गुहर्नन्दी

के जैन विहार का उल्लेख है। उससे जान पड़ता है कि एक ब्राह्मण दम्पति ने पुण्डवर्धन के विभिन्न ग्रामों में भूमि खरीद कर गोहाली ग्राम के जैन-विहार की अर्हत् पूजा के लिये प्रदान किया था। इन सब उल्लेखों से बिहार, बंगाल और उड़ीसा के जैन पुरातत्व की महत्ता का सहज ही आभास मिल जाता है। यह स्थान पोण्डवर्धन नगर से उत्तर-पश्चिम की ओर २६ मील वानगढ (प्राचीन कोटिवर्ष) से दक्षिण पूर्व की ओर ३० मील था। पोण्डवर्धन और कोटिवर्ष दोनों ही प्राचीन काल से जैन धर्म के केन्द्र थे। श्रुतकेवली, मद्रबाहु और आचार्य अर्हदबली दोनों ही आचार्य पोण्डवर्धन के निवासी थे। इससे इस बिहार की महत्ता का स्पष्ट बोध होता है।

पुरलिया से ३६ मील बड़ा बाजार के उत्तर-पूर्व में २० मील और पोचा के पूर्व में एक मील पर एक छोटा सा गांव है जिसे पाकवीर कहा जाता है। यहाँ बहुत से प्राचीन मन्दिर और कला सामग्री चारों ओर बिखरी पड़ी है मुख्यतः वह जैनो से सम्बन्धित है उसे सजिन कर एक वृक्ष के नीचे सजोकर रख दी है। यहाँ एक छप्पर किसी प्राचीन जैन मन्दिर के अवशेषों पर बना है उस मन्दिर की नींव अब तक मौजूद है। वहाँ सब का मन आकर्षित करने वाली आदिनाथ की ६ फुट ऊँची प्रतिमा मौजूद है। यहाँ दो मन्दिर पत्थर और ईंटों के हैं। ईंटों के मन्दिर टूटे पड़े हैं परन्तु मन्दिर पत्थर का है।

जैन समाज का ध्यान सराक जाति के उत्थान की ओर गया है और समाज के गण्यमान उद्योगपति इस कार्य के प्रति उत्साह दिखला रहे हैं। सराक जाति के कुछ नवयुवकों में अपनी जाति के उत्थान का भी भाव उदित हुआ है। आशा है यदि ये प्रयत्न इसी तरह चालू रहे तो सराक बन्धुओं के उत्थान में विलम्ब न होगा।

कलकत्ता—

कलकत्ता भारत का सबसे बड़ा शहर है। इसकी गणना सप्ताह के विशालतम शहरों में की जाती है। जहाँ आज यह शहर बसा हुआ है वह अब से ३०० वर्ष पूर्व मयानक जंगल था। जहाँ अनेक प्रकार के जीव-जन्तु, जहरीले साँप, रायल जंगल टाइगर और मयानक डकू

रहते थे। पहले यहाँ जंगलों की दलदल जमीन में थोड़ी-थोड़ी दूर पर कुछ गाँव बसे थे। सम्राट अकबर के शासन-काल में यह सप्त ग्राम जिले के अन्तर्गत था। सप्तग्राम आधुनिक हुगली ही उस समय व्यापार का केन्द्र था। पुर्तगाली स्पेनी, डच, फ्रांसीसी और अंग्रेज व्यापारी यहाँ अपना माल बेचते थे व खरीदते थे किन्तु यह शहर समुद्र से दूर था और सरस्वती नदी सूख जाती थी अतः बड़ी नाव और जहाजों के पहुँचने में कठिनाई होती थी। अतः इस बात की आवश्यकता प्रतीत होती थी कि कोई ऐसा व्यापारिक केन्द्र बने जो समुद्र के समीप हो। विदेशी व्यापारियों के साथ व्यापार करने वाले प्रधानतः बैशाखी और सेठ थे। वे सप्तग्राम से हटकर सूतानटी और गोविन्दपुर में बस गये थे। सूतानटी इन सब में प्रमुख तथा सम्पन्न था। यहाँ प्रायः सूत और कपड़े का व्यापार होता था। सूतानटी आजकल कलकत्ते का बड़ा बाजार और बाग बाजार है। गोविन्दपुर आज का डलहौजी स्क्वायर, हेस्टिंग्स और फोर्ट विलियम है। कालिका का क्षेत्र आज का कालीघाट, भवानीपुर है। इन तीनों बड़े ग्रामों को मिलाकर जाब चारनाक नाम के अंग्रेज ने आधुनिक कलकत्ता शहर की नींव डाली। उसे यह स्वप्न में भी कल्पना न थी कि जंगलों और दलदल से घिरा क्षेत्र आधुनिक बड़े शहरों में गिना जायेगा। तीन शताब्दियों में यह सुविधा सम्पन्न नगर बना इसका बहुत जल्दी विकास हुआ।

इसके बाद का इतिहास अंग्रेजों की कूटनीति की कालिख से ओत-प्रोत है अर्थात् १७५७ का इतिहास उनकी कूटनीति का परिणाम है। मारकाट, लूट-खसोट राज्य परिवर्तन और अधिकार समाप्ति उसके ही प्रकार है।

शहर का नाम कलकत्ता कैसे पड़ा, यह विचारणीय है किन्तु हिन्दुओं के ५१ शक्ति-पीठों में कालिका का क्षेत्र भी है। उसी के कारण कालिका खेत या काली खेत का अपभ्रंश कलकत्ता हो गया। यहाँ अन्य लोगों की तरह जैन-व्यापारी भी आ बसे।

ज़िले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
(अ) कलकत्ता	कलकत्ता	दि० जैन चैत्यालय दि० जैन चैत्यालय दि० जैन ह० सै० विद्यालय पो० ३४/३५ ६ अलीपुर प्लेस दि० जैन चैत्यालय ५१ बडतल्ला स्ट्रीट दि० जैन चैत्यालय ढाका पट्टी न० २१ हस पोखरी या फर्म्टलेन	अहिंसा प्रचार समिति काटन स्ट्रीट साहू जैन विद्यालय बजबज श्री दि० जैन दातव्य औपध्यालय १० ए, चित्तपुर रोड श्री दि० जैन दातव्य औपध्यालय दौशाख स्मीट श्री दि० जैन भ. (प्रमोदना) १० ए, चित्तपुर रोड श्री दि० जैन ताता का विद्यालय २२१, महर्षि देवेन्द्र कुमार रोड श्री दि० जैन महाती. पुस्तकालय १० ए, चित्तपुर रोड श्री दि० जैन विद्यालय पो० ३४/३५ काटन स्ट्रीट श्री जैन शिक्षा निकेतन २५ बी० मोहन लाल स्ट्रीट
(आ) हातडा	बाली	दि० जैन मन्दिर १ जार्जिया रोड	
	उत्तरपाडा	दि० जैन मन्दिर, ८० जी० टी० रोड	
(इ) हुगली	चिन्मुरा	श्री दि० जैन मन्दिर, आशीपाडा लेन	
(ई) कूच विहार	दीनहटा	दि० जैन मन्दिर	
	कूचविहार	दि० जैन मन्दिर	
	माथामगा	दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सस्थाओं के नाम
(उ) मुर्शिदाबाद	अंसबाद	दि० जैन मन्दिर	
	भडंगाबाद	दि० जैन मन्दिर	
	घुहीमान	दि० जैन मन्दिर	
	जलपुर	दि० जैन मन्दिर	
	जियागंज पो०	दि० जैन मन्दिर	
	अलीगंज		
	कासिम बाजार	दि० जैन मन्दिर	
	खगडा (अ० शहर)	दि० जैन मन्दिर	
	मिर्जापुर पो०	दि० जैन मन्दिर	
	मनकर		
(ऊ) वर्दवान (ए) वीरभूमि	औरंगाबाद	श्री पार्वनाथ दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन भवन (धर्मशाला) श्री दि० जैन लायब्रेरी श्री दि० जैन पाठशाला श्री जैन युवक सघ
	सन्मतिनगर	दि० जैन मन्दिर	
	रानीगंज	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नघहरी	दि० जैन मन्दिर	
	परकोट	दि० जैन मन्दिर	

श्री दि० जैन नया मन्दिर, धर्मपुरा

यह मन्दिर धर्मपुरा के मध्य में स्थित है। सन् १८०० में राजा हरसुखराय जी ने इस मन्दिर की नींव रखी, जो ७ वर्ष में ५ लाख रु० की लागत से बनकर तैयार हुआ। कुछ लेखकों की ऐसी धारणा है कि यह मन्दिर ८ लाख रु० की लागत का है। यह लागत उस समय की है जब राज चार आने (२५ नये पैसे) और मजदूर दो आने प्रति दिन लेते थे।

इस मन्दिर की प्रतिष्ठा मिति वैशाख शुक्ल ३ सम्बत १८६४ (सन् १८०७) में हुई थी।

मन्दिर की मूलनायक वेदी जयपुर के स्वच्छ बहुमूल्य मकराने के संगमरमर की बनी हुई है और उसमें पच्चीस-कारी का काम, बेलबूटे का कटाव किन्हीं अंशों में ताज-महल से भी बारीक एवं अनुपम है।

जिस कमल पर श्री आदिनाथ भगवान की प्रतिमा विराजमान है उस कमल की लागत उस समय की दस हजार रु० तथा वेदी की लागत सवा लाख रु० बताई जाती है। कमल के नीचे चारों ओर सिंहों के जोड़े बने हुए हैं। उनकी कारीगरी अपूर्व और आश्चर्यजनक है। यह प्रतिमा सम्बत १६६४ की है।

मूलनायक प्रतिमा खण्डित हो गई थी जो कि समुद्र में प्रवाहित करा दी गई थी।

वेदी के चारों ओर दीवारों पर दर्शनीय बहु मूल्य चित्रकारी बड़ी खोज के साथ शास्त्रोक्त विधि से कराई गई है व सस्कृत का भक्तामर स्तोत्र मय मंत्रों के स्वरों से अंकित किया गया है।

पहले मन्दिरजी में एक ही वेदी थी। बहुत वर्ष बाद दो वेदियां और बनीं। इन वेदियों में नीलम, मरकत तथा स्फटिक आदि की बहुमूल्य मूर्तियाँ सन् १११२ की हैं।

क्योंकि यह मन्दिर दिल्ली में निर्मित प्रथम शिखर बन्द मन्दिर में इसका निर्माण राजा हरसुख रायजी ने विशेष शाही आज्ञा से कराया था। इस कारण यह नया मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है।

मन्दिर के बाहर के दालान में दैनिक शास्त्र-सभा होती है। ऊपर के भाग में सुनहरे अक्षरों में कल्याण-मन्दिर स्तोत्र लिखा हुआ है।

यहां पर विशाल सरस्वती भण्डार है जिसमें हस्त-लिखित १८०० के लगभग शास्त्र हैं। तथा छपे हुए सस्कृत व भाषा के ग्रंथों का अच्छा संग्रह है। यहाँ पर

दिल्ली

मित्रियों की भी शास्त्र सभा होती है। एक जनाना जीना इधर से नीचे की ओर जाता है। तथा जीने के पास ही एक नई बड़ी विशाल वेदी बनी हुई है जिसकी प्रतिष्ठा १२ मई १९६७ को हुई थी। तथा उसी कमरे में सन् १९६० में सहस्रकूट चैत्यालय की स्थापना हो चुकी है।

श्री दि० जैन नया मन्दिरजी से सम्बन्धित अन्य संस्थाएँ—

- (१) स्वाध्याय शाला
- (२) अराईश तथा वेदी फण्ड
- (३) जैन पाठशाला व स्कूल (स्थापित सम्बत् १९४३)
- (४) जैन बाल सदन
- (५) जैन कन्या पाठशाला व स्कूल
- (६) जैन बर्तन फण्ड (जैन प्रेम समाश्रित)
- (७) जैन मित्र मंडल (स्थापित सन् १९१५)
- (८) श्री वर्धमान पब्लिक लायब्रेरी (सन् १९२७)
- (९) धर्मशाला (बीबी द्रोपदी देवी स्थापित सन् १९३७)
- (१०) सस्ती ग्रंथमाला
- (११) अखिल भारतवर्षीय केन्द्रीय श्री जैन महा समिति

राजा हरमुखराय

यह वह सज्जन थे जिन्होंने लाखों रुपया दान दिया परन्तु सर्वदा भय खाते रहे कि कहीं इनकी आत्म विज्ञापन की गध न आ जाये। लगभग ६०-७० जैन मन्दिर भारत-वर्ष में बनवाये परन्तु किसी मन्दिर पर उनका नाम नहीं लिखा है।

कहते हैं जब यह मन्दिरजी बन कर तैयार हो गया,

केवल शिखर ही बनना बाकी था तो सारी पचायत दकट्ठी की और सबसे चन्दा करके शिखर बनवाया तथा मन्दिरजी पचायत को मोप दिया। धन्य है इनको।

अब भी श्री त्रिलोकचन्द जी ने जो कि इसी कुटुम्ब के सुपुत्र है। भारत नगर में एक बड़ा सुन्दर मन्दिरजी का निर्माण करा कर प्रतिष्ठा कराई है जो कि देखते ही बनता है।

दिल्ली क्षेत्र के श्री दि० जैन मन्दिरों की सूची व विवरण

क्रम संख्या	नाम मन्दिर तथा पता	निर्माण काल	विशेष विवरण तथा निमाता
धर्मपुरा			
१	श्री दि० जैन नया मन्दिर जी धर्मपुरा दिल्ली-६	सन् १८०७	निमाता राजा हरमुख राय। विशाल समव-शरण की वेदी पर पच्चीकारी का काम तथा विशाल सरम्बती भण्डार।
२	श्री दि० जैन मन्दिर सतधरा		लगभग ७० वर्ष पूर्व चैत्यालय के रूप में था, सन् १९३६ में शिखर बंद हुआ। यहां प्रतिदिन महिलाओं की शाम्भ्र सभा होती है।
३	श्री दि० जैन चैत्यालय सतधरा		यह चैत्यालय श्री मुशी रिशकलाल के चैत्यालय के नाम से प्रसिद्ध है तथा गली में प्रवेश होते ही बाये हाथ पर पहले मकान में है।
४	श्री दि० जैन चैत्यालय		यह चैत्यालय मीरीमल के नाम से प्रसिद्ध है तथा अब कन्या पाठशाला के ऊपर वाले हाल में स्थित है।
५	श्री १००८ चन्द्रप्रभु दि० जैन चैत्यालय २२३४ धर्मपुरा	सन् १८५७ ई०	यह चै० ला० भीरूमल जी जैन सराफ द्वारा निर्माण कराया गया। इसका प्रबन्ध अब डिप्टीमल जैन कागजी कर रहे हैं।
६	श्री दि० जैन पचायती मन्दिर मस्जिद खजूर	सन् १७४३ दुबारा प्रतिष्ठा पचायत ने २० जनवरी १९२३ में कराई।	यह मन्दिर श्री आयामल जी (जो कि मुहम्मद शाह द्वितीय की सेना के पदाधिकारी थे) ने बनवाया। बाद में इसे पचायती धोषित कर दिया गया। यहाँ भट्टारको की भी गद्दी रही है। यहाँ हस्तलिखित प्राचीन ग्रंथों का अच्छा संग्रह है तथा एक विशाल बाहुबलि जी की मूर्ति स्थापित है।

क्रम संख्या	नाम मन्दिर तथा पता	निर्माण काल	विशेष विवरण तथा निर्माता
७.	श्री दि० जैन मेहर मन्दिर जी मस्जिद खजूर के बाहर	प्रतिष्ठा २३ जनवरी सन् १८७६ ई०	इसका निर्माण ला० मेहरचन्दजी ने कराया यहाँ नदीद्वर द्वीप के ५२ चैत्यालयों की अपूर्व रचना है। अभी हाल में एक महावीर स्वामी की विशाल मूर्ति स्थापित की गई है।
८.	श्री पद्मावती पुरवाल दि० जैन मन्दिर, मस्जिद खजूर श्री मेहर मन्दिर जी के सामने।	सन् १६३१	इसका निर्माण पद्मावती पुरवाल दि० जैन पचायत ने कराया।
९	श्री दि० जैन चैत्यालय गली अनार, धर्मपुरा		यह चैत्यालय बीबी तोखन के नाम से प्रसिद्ध है तथा गली अनार में गली कुए बानी में स्थित है।

दरीबाकलां क्षेत्र

१०	श्री दि० जैन चैत्यालय कूचा सुखानंद दरीबा कला	मुगलकालीन	इसका निर्माण ला० गुलाबराय जी ने कराया था।
११	श्री दि० जैन बड़ा मन्दिर कूचा सेठ	सन् १८४० (सम्बत् १८९७)	सेठ इन्द्र राज द्वारा निर्माण कराया। शास्त्र भंडार में प्राचीन ८०० के लगभग ग्रंथ हैं। तथा साथ में नेमि औषधालय तथा उदासीन आश्रम है।
१२	श्री दि० जैन छोटा मन्दिर कूचा सेठ, दिल्ली ६	सन् १८३४ (सम्बत् १८९१)	इसके बनवाने में श्रावक इन्द्रराज जी का विशेष हाथ रहा। यहाँ पर एक प्राचीन पाषाण की मूर्ति सन् १४६२ की है।

चांदनी चौक

१३	श्री दि० जैन लाल मन्दिर जी चांदनी चौक	(सन् १६५६)	यह एक विशाल मन्दिर है। इसमें विशाल सरस्वती भवन, उदासीन आश्रम, विशाल सभागार, पक्षियों का चिकित्सालय, जैन साहित्य सदन, व मानस्तम्भ आदि स्थित है। यह मन्दिर उर्दू मन्दिर या लक्करी मन्दिर के नाम से भी प्रसिद्ध है। क्योंकि इसका निर्माण शाही सेना के जैन पदाधिकारियों के लिए हुआ था।
----	--	------------	---

वैद्यवाड़ा मालीवाड़ा

१४.	श्री महावीर दि० जैन मन्दिर वैद्यवाड़ा	सन् १७४१	श्री खडेलवाल दि० जैन पचायत द्वारा इसका निर्माण हुआ। यहाँ पर प्राचीन प्रतिमा ११७५
-----	--	----------	---

क्रम संख्या	नाम मन्दिर तथा पता	निर्माण काल	विशेष विवरण तथा निर्माता
			सन् की है। शास्त्र भण्डार में हस्त लिखित ग्रन्थ भी दर्शनीय है।
१५	श्री शातिनाथ दि० जैन चैत्यालय बैद्यवाडा	१७४१	यह चैत्यालय ऊपर वाले मन्दिर जी के साथ में ही है।
१६	श्री दि० जैन मन्दिर (गोधाजी) बैद्यवाडा		ला० कपूरचन्द जी जौहरी ने निर्माण कराया है यहाँ भ० महावीर स्वामी जी की स्फटिक की मनोज्ञ प्रतिमा है।
	गोधा क्लिनिक दिल्ली		स्थापित लाला सन्त लाल जी गोधा के पीत्रो द्वारा इस क्लिनिक का जीर्णोद्धार समय-समय पर कराया गया और आज यह पूर्ण रूप में क्लिनिक है।
बाजार सीताराम			
१७	श्री दि० जैन मन्दिर मोहल्ला डमली, कूँचा पाती राम ६०८ गली इन्द्रबाली	सम्बत् १९३० माघ सुदी ५	बहु सख्या वैष्णव सम्प्रदाय के बीच स्थित यह मन्दिर जैन मन्दिर की प्रस्तावना कर रहा है।
दरियागंज			
१८	श्री दि० जैन चैत्यालय, जैन बाल आश्रम, दरियागंज		यह चैत्यालय परदाबाग के निकट दरियागंज रोड पर स्थित है।
१९	श्री हुकमचन्द दि० जैन चैत्यालय ७/३३, दरियागंज	सन् १९३८	इसको लाला हुकमचन्द गोहाना निवामी तथा उनके परिवार ने स्थापित किया।
२०	श्री अहिंसा मन्दिर जिनालय न० १ अन्सारी रोड दरियागंज	वैशाख शुक्ल १० सन् १९६७	श्री राजकिशन प्रेमचन्द जैन द्वारा निर्माण कराया गया। श्री मन्दिरजी में मूलनायक प्रतिमा श्री महावीर स्वामी जी की (६ फुट ऊँची) कमल पर विराजमान है।
२१	श्री दि० जैन महावीर चैत्यालय	१८ मई सन् १९६६	श्री दि० जैन महिला आश्रम दरियागंज में स्थापित है।
२२	श्री दि० जैन मन्दिर दिल्ली गेट	मुगलकाल का प्राचीन बना है	दो चौक का डबल मन्दिर है। मूलनायक प्रतिमा सम्बत् १५३ की बनी है। भवन में अलङ्कृत चित्रकारी है।
मोरीगेट, सब्जीमंडी			
२३.	श्री दि० जैन मन्दिर मोरीगेट	मुगलकालीन पुराना मन्दिर	मन्दिरजी में मूल नायक प्रतिमा सन् १४९१ की है।

क्रम संख्या	नाम मन्दिर तथा पता	निर्माण काल	विशेष विवरण तथा निर्माता
२४	भगवान् पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर, गली कुम्हारो की सब्जी मण्डी	१०० वर्ष पूर्व	यहाँ भट्टारको की गद्दी रही है। अब नवीन करण हो गया। यह मन्दिर रोशनारा रोड बर्फखाने के पास स्थित है।
२५	श्री दि० जैन मन्दिर, आर्यपुरा, सब्जी मण्डी	प्राचीन मन्दिर है	मन्दिरजी में वाचनालय तथा ऊपर की मजिल में एक ओर मुनियो तथा त्यागियो के ठहरने की व्यवस्था है।
२६	श्री दि० जैन मन्दिर शक्ति नगर, सब्जी मण्डी	प्रतिष्ठा जनवरी १९७४ में हुई	यह मन्दिर शक्ति नगर के चौराहे के पास जी० टी० रोड पर स्थित है।

मॉडल टाउन

२७	श्री दि० जैन चैत्यालय जैन ट्रस्ट मैदान डी ब्लाक	सन् १९५७	जैन समाज मॉडल टाउन द्वारा निर्माण किया। साथ में जैन पुस्तकालय तथा होम्योपैथिक चिकित्सालय है।
----	---	----------	--

भारत नगर

२८	श्री १००८ आदिनाथ दि० जैन मन्दिर बाग वाली कोठी ३६७ भारत नगर	२६-१-१९७१	इस मन्दिर का निर्माण स्व० श्री हुकम चन्द जी की स्मृति में १२-६-१९७० को आरम्भ हुआ तथा वमज राजा हरमुखराय मुगनचन्द जी के द्वारा हुआ।
----	--	-----------	---

शांति नगर

२९	श्री दि० जैन मन्दिर शांति नगर (जखीरे के पास)	(सन् १९७१)	उस मन्दिर का निर्माण शांति नगर की जैन पचायत द्वारा किया गया। शहर में ८ किलोमीटर दूर है।
----	--	------------	---

सदर बाजार

३०	श्री दि० जैन पचायती मन्दिर (बडा मन्दिर) गली जैन मन्दिर पहाडी धीरज	(सम्बन् १८५३) (सन् १९१०)	फागुन सुदी २ शुक्रवार को शुभ निर्माण हुआ। यहाँ शास्त्रो का अच्छा भण्डार है। भगवान् पार्श्वनाथ की मूर्ति सन् १९५३ की है।
३१	श्री महावीर दि० जैन मन्दिर गली नन्धन सिंह पहाडी धीरज	(सन् १९३८)	यह काच के मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है।
३२	श्री दि० जैन चैत्यालय (ला० मनोहर लाल जौहरी) गली जैन मन्दिर पहाडी धीरज	(सन् १९३५)	यहाँ चैत्यालय में ग्रन्थों का मुन्दर संग्रह है विशेष कर मन्त्र शास्त्र का।

क्रम संख्या	नाम मन्दिर तथा पता	निर्माण काल	विशेष विवरण तथा निर्माता
३३	श्री दि० जैन चैत्यालय डिप्टी गज (महावीर नगर)	सन् १९४०	निर्माता सेठ लालचन्द जी जैन । नीचे की ओर औषघालय तथा त्यागियो के ठहरने की व्यवस्था भी है ।
दक्षिण दिल्ली			
३४	श्री दि० जैन आदिनाथ मन्दिर कुतब मीनार के पास, महरोली	सन् १९३२	तोमर वंशीय राजा अनग पाल तृतीय के मन्त्री अग्रवाल वंशी साइनहल ने बनवाया था परन्तु सन् १९६३ में कुतुबुद्दीन ऐबक ने तुड़वा दिया । अब केवल खडहर बाकी है ।
३५	श्री दि० जैन मन्दिर जी चिराग दिन्नी	फरवरी सन् १९५२	यह मन्दिर दिल्ली से लगभग १० किलोमीटर दूर चिराग दिल्ली में स्थित है ।
३६	श्री दि० जैन चैत्यालय भोगल जगपुरा, दिल्ली	८० वर्ष पूर्व	यह चैत्यालय टेम्पल रोड व सम्मन बाजार के मोड़ पर स्थित है । मूलनायक प्रतिमा शाति-नाथ भगवान की है ।
३७	श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर एन-१० ग्रीन पार्क एक्सटेंशन	२८ नवम्बर १९६८	दक्षिण दिल्ली में एक सुन्दर एवं दर्शनीय मन्दिर है । साथ में पुस्तकालय भी है ।
३८	श्री स्वर्ण भद्रकूट चैत्यालय राज राजेद्वार भवन एफ ३ ग्रीन पार्क, नई दिल्ली-१६	१४ जून १९६५	इस चैत्यालय की स्थापना प० सुकमाल चन्दजी द्वारा अपने नव निर्मित गृह में एक कक्ष में की गई तथा पुस्तकालय साथ में है ।
३९	श्री दि० जैन चैत्यालय ए-११८ नेताजीनगर में डी टी मी बस डिपो के पास		
४०	श्री दि० जैन मन्दिर सररोजिनी नगर नई दिल्ली	सन् १९६३	यह मन्दिर ए ब्लॉक के पास वार्ड ब्लॉक में जैन भवन में स्थित है ।
४१	श्री दि० जैन चैत्यालय लोदी कालोनी बिनय नगर नई दिल्ली		यहाँ भगवान महावीर स्वामी की धातु प्रतिमा विराजमान है ।
४२	श्री दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर जयसिंहपुरा नई दिल्ली	मुगलकालीन	यह खडेलवाल मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है । कनाट सर्कस के अति समीप मद्रास होटल के पीछे जैन मन्दिर रोड पर है ।
४३	श्री दि० जैन अग्रवाल	सन् १८०७	यह मन्दिर ऊपर वाले मन्दिर के पास ही है ।

क्रम संख्या	नाम मन्दिर तथा पता	निर्माण काल	विशेष विवरण तथा निर्माता
	मन्दिर, जयसिंहपुरा नई दिल्ली		राजा हरसुखराय के सुपुत्र राजा सुगनचन्द जी ने निर्माण कराया था।
४४	जैन निशि मन्दिर नई दिल्ली	मुगलकालीन है	इसके चारो ओर प्राचीन परकोटा है। चारों कोनों पर चार गुम्बज है। गोल मार्केट के समीप है। नगर के जैनो की सांस्कृतिक गति-विधियों का केन्द्र है।
४५	श्री दि० जैन मन्दिर मन्टोला मोहल्ला पहाडगज नई दिल्ली-५५	लगभग ५० वर्ष पूर्व	जैन मन्दिर द्वारा (विशेष सहयोगी स्व० ला० नारायणदासजी जैन पहाडगज) निर्माण हुआ। भगवान शातिनाथजी की मूल नायक अति दार्शनिक प्रतिमा है।
करौल बाग			
४६	श्री दि० जैन मन्दिर माडल बस्ती दिल्ली	सन् १९६१	यह मन्दिर फिल्मिस्तान सिनेमा के पीछे स्थित है।
४७	श्री दि० जैन मन्दिर छप्परवाला कुआ करौलबाग नई दिल्ली		सन् १९४७ से दिगम्बर जैन पचायत करौल बाग पजीकृत द्वारा व्यवस्था सुचारुरूप से चल रही है।
४८	श्री दि० जैन मन्दिर ५सी/२६ न्यू रोहतक रोड, नई दिल्ली	सन् १९५६	रोहतक रोड पचायत द्वारा निर्माण हुआ। लिबर्टी सिनेमा से लगभग ५० गज दूरी पर गली में स्थित है।
४९	श्री दि० जैन मन्दिर, देवनगर करौल बाग, नई दिल्ली	सन् १९५९	यह मन्दिर देशबधु गुप्ता रोड पर बस स्टैंड के पाम प्रह्लाद मार्केट के ठीक सामने सत नगर में स्थित है।
पालम			
५०	श्री शातिनाथ दि० जैन मन्दिर पालम ग्राम नई दिल्ली	१६० वर्ष पूर्व	जैन समाज पालम ने निर्माण कराया मूलनायक प्रतिमा वीर स० १५४८ की है दिल्ली शहर से १४ किलोमीटर है।
५१	श्री दि० जैन मन्दिर सदर बाजार (छावनी) दिल्ली कैन्ट	सन् १९६९	यह भी प्राचीन मन्दिर है तथा इसके लिये स्थान सुरक्षा मन्त्रालय से लिया गया था।
नजफगढ़			
५२	श्री अग्रवाल दि० जैन	लगभग २५०	यह मन्दिर दिल्ली से लगभग २८ किलोमीटर

क्रम संख्या	नाम मन्दिर तथा पता	निर्माण काल वर्ष पूर्व	विशेष विवरण तथा निर्माता
	मन्दिर नजफगढ़		दूर पर है। मन्दिरजी के चारो ओर ५० बीघे जमीन की बगीची है। साथ में धर्मशाला, पाठ-शाला तथा नर्सरी स्कूल है।
जमना पार			
५३	श्री दि० जैन मन्दिर कैलाश नगर गली नं० २,३ जैन मोहल्ला दिल्ली-३१	बीर स० २४८५ सन् १९५८	श्री दि० जैन समाज कैलाश नगर द्वारा निर्माण हुआ, ऐसी मान्यता है कि मन्दिर स्थापना काल से जो भी साधर्मी भाई यहाँ बसे हैं सबकी दिन प्रतिदिन उन्नति हो रही है।
५४	श्री दि० जैन मन्दिर गांधी नगर दिल्ली-३१	सन् १९५८	मन्दिरजी में मूल नायक प्रतिमा यमुना नदी में एक ब्राह्मण महानुभाव को प्राप्त हुई थी जो कि लाल पाषाण की श्री वासुपूज्य स्वामी की है।
५५	श्री पार्श्वनाथ दि० जैन नया मन्दिर, शास्त्रीनगर, गीता कालोनी के पास, पटपड गज रोड, दिल्ली	जून १९६५	मूल नायक चमत्कारी प्रतिमा भ० पार्श्वनाथ की है। साथ में जैन पाठशाला भी है।
५६	श्री दि० जैन मन्दिर पटपड गज	लगभग सन् १७९०	ला० सुगनचन्द जी सुपुत्र श्री ला० गुलाब सिंह जी ने निर्माण कराया। मूलनायक प्रतिमा भ० पार्श्वनाथ की ४०० वर्ष पुरानी है।
५७	श्री दि० जैन मन्दिरजी ब्रह्मपुरी, शाहदरा के निकट	सन् १९६८	स्थापना सम्बत् २०२५ (सन् १९६८) में समाज द्वारा की गई तथा शाहदरा के निकट भी है।
५८	श्री दि० जैन चैत्यालय जैन नगर (उसमानपुर) शाहदरा	सन् १९६८	इसकी स्थापना दि० जैन पचायत की ओर से सम्बत् २०२५ में हुई थी।
५९	श्री पार्श्वनाथ मन्दिर शाहदरा जी० टी० रोड	फरवरी १९६९	श्री पार्श्वनाथ तथा चन्द्रप्रभु की मूर्तियाँ अति मनोहर तथा अतिशयकारी हैं। पचायत द्वारा प्रतिष्ठा कराई गई।
६०	श्री दि० जैन मन्दिर कबूल नगर (शाहदरा के निकट)		पचायत द्वारा प्रतिष्ठा कराई गई हुई है।

क्रम संख्या	नाम मन्दिर तथा पता	निर्माण काल	विशेष विवरण तथा निर्माता
६१.	श्री दि० जैन मन्दिरजी गली मन्दिर वाली शाहदरा	प्राचीन काल का मन्दिर है	इसका निर्माण राजा हरमुखराय ने कराया था साथ में जैन पाठशाला भी है।
६२	श्री दि० जैन मन्दिरजी ई५/३७ कृष्णा नगर, मेन रोड	वीर स० २४६७ भादव सुदी ३	इसका निर्माण यहाँ की पचायत द्वारा हुआ।
६३	श्री दि० जैन मन्दिरजी गौतमपुरी	सन् १९७२	" "
६४.	श्री दि० जैन मन्दिर जवाहर मार्ग, वेस्ट लक्ष्मी नगर	१५ अगस्त १९६७	" "
६५	श्री दि० जैन पादवंनाथ मन्दिर ए० ब्लॉक शक्करपुर	सन् १९७३	" "
६६	श्री दि० जैन मन्दिर शिवपुरी (निकट शाहदरा)		" "

— . ○ . —

दिल्ली में जैन धर्मशालायेँ एवं विश्राम गृह

- १ उदासीन आश्रम, श्री दि० जैन लाल मन्दिर, चादनी चौक
- २ जैन धर्मशाला, कटरा मशरू दरीबा कला
- ३ लच्छू मल जैन धर्मशाला, कूँचा बुलाकी बेगम, एस्प्लेनेड रोड
- ४ दि० जैन धर्मशाला कूँचा बुलाकी बेगम, एस्प्लेनेड रोड
- ५ जैन धर्मशाला कूँचा सेठ दरीबा कला
- ६ दिगम्बर जैन धर्मशाला, नया मन्दिर, धर्मपुरा
- ७ पद्मावती पुरवाल दि० जैन धर्मशाला, मस्जिद खजूर, धर्मपुरा
- ८ दि० जैन धर्मशाला, पचायती मन्दिर मस्जिद खजूर, धर्मपुरा
- ९ जैन धर्मशाला चीराखाना
- १० श्री सुन्दरलाल पारसदाम दि० जैन धर्मशाला, बंदवाडा
- ११ जैन धर्मशाला गली भोजपुरा मालीवाडा
- १२ जैन धर्मशाला ला० गोकलचन्द नाहर नौधरा, किनागी बाजार
- १३ ला० मकखनलाल जैन धर्मशाला, ११ दरियागज
- १४ दि० जैन पचायती धर्मशाला पहाडी धीरज
- १५ ला० मूलचन्द मुरारीलाल जैन, धर्मशाला सदर बाजार
- १६ श्री दि० जैन धर्मशाला मोरी गेट
- १७ जैन भवन, न्यू कालोनी, माडल टाउन, नई दिल्ली
- १८ दि० जैन धर्मशालाये नजफगढ़
- १९ होटल शाकाहार, १ अन्सारी रोड, दरिया गज फोन न० २७३५३७
- २० जैन गैस्ट हाउस, ४ एम भगतसिंह मार्केट नई दिल्ली फोन न० ४५३४३

JAINS AND JAIN SHRINES OF TAMIL NADU

Distribution : In ancient days although the Jains lived throughout Tamil Nadu, presently they are seen living in the districts of Chengal-pattu, Madras, North Arcot, South Arcot and Thanjavur. All of them belong to Digambar Sect

Apart from these districts there are one or two families settled in other districts on business or on official work. Most of the population lives in villages. There are about 100 villages and in about 60 of them ancient Jain temples are seen. On the whole there are about 50,000 Tamil Digambar Jains living in different districts of Tamil Nadu.

Profession :

Their profession is mainly agriculture. Only recently they have started diversifying their activities. Many have entered the business field (wholesale merchants, Agents Real Estate, Printing Industry). Comparatively a small population migrated to towns and are in Government and private services. They are moderately educated.

Most of the educated are employed as teachers in elementary and high schools and professors in colleges. Ladies are also employed fairly in large numbers. As far as professional degrees like Medicine, Engineering etc., is concerned only a few have qualified in these fields. No one is under Indian Administrative Service and only one is an I.P.S.

Social habits :

Socially Jains of Tamil Nadu resemble in their cultural activities with their counterparts of other states. Their temple architecture and language is purely indigenous. In addition to religious ceremonies, they celebrate the regional festivals too. By nature

most of them are conservative.

Religious Sect :

All Tamil Jains are Digambar. They have their religious head, the head of a Mutt, at Melsithamoor in South Arcot District. His title is Swasthi Sri Sri Lakshmisena Battarakka Battacharya Varya Swamigal. His headquarter is called Jina Kanchi, which is one of the 4 ancient Digambar Jain Mutts. His Holiness solemnises every Jain irrespective of sex, into religious order on an auspicious occasion called 'upanayana' when men wear the Sacred thread. After this His Holiness gives a sermon on the basic principles of Jainism to be observed daily by them.

Ladies mostly observe a large number of Vratas. Common among them are Poornima, Chathurthasi, Ashtami, Dhaslakshmiyam. Every year they observe a Vrata called Anantha Vrata Nonbu for 3 days. Thirthakara Nombu is one of the Vratas, very familiar with womenfolk. In this Vrata they take food or any eatable only after hearing someone telling one of the Thirthankara's name five times. If at that time no one is available then she herself repeats the name and then takes her food.

Vathyars are employed to perform the religious ceremonies in temples. They are traditionally trained group of families among Tamil Digambar Jains well versed in religious rites, Sastras and Tamil language. Till recently they were responsible for early education of children in villages. They taught the children in the temples after their temple puja routines.

Festivals :

Pujas are performed daily in morning and

evening. The common temple festivals are *Atchya-thruthia*, *Saraswathi Puja*, *Dasara* and *Deepavall*. In selected villages annual *Brahmostava* is conducted. Annual Car festival is held at Melsithamoor. Annual float fest-

ival is celebrated at Karanthai a village near Kanchipuram, Chengalpattu District

In addition to the above, during Pongal, Ugathi, Tamil New Years day, special pujas are performed in all Jain temples

DIRECTORY CHENGALPATTU DISTRICT

Arangkulam :

It is one of the ancient Jain centres in Tamil Nadu. There are no Jain families except a Pujari. Tamil Kavya "*Choolamani*" was composed here by Thola Mozhi Devar, dedicated to Sri Dharma Thirthankar. This Kavya is supposed to belong to 9th century so the Temple may be about 1000 years old.

This temple has a unique architecture. On the birth day of the presiding deity-Lord Dharma Thirthankar—the rays of the rising sun fall at his feet and slowly rises to His face.

Presiding Deity : Lord Dharma Thirthankar

Festival : Once in a year during the first fortnight of March

Location and Approach : It is on the Madras-Tiruttani road and about 88 km from Madras. The nearest town is Tiruvellore. Buses plying between Madras-Tiruttani halt near this village.

Aarpakkam :

It is a small ancient village. There are no Jains living except a Pujari. The Jains of North Arcot District celebrate the ear boring ceremony of their children in this temple. Udiche Devar, a native of this village has written, a poetic work "*Thiru Kalampakam*". The Temple is very ancient and in nearby Magarel there are Jain monuments.

Presiding Deity : Aathi Pattarakar (Lord Rishaba Devar)

Festival : Maha Sivarathri—(Nirvana Day of Lord Rishaba Devar)

Location and Approach : It is about 25 km from Kanchipuram on the Kanchipuram-Uthiramerur road. Buses plying between these two points halt near this village.

Jina Kanchi (Thiruparuthi Kundram) :

This small village on the outskirts of the town of Kanchipuram was one of the ancient Digambara Vidyapettis. The temple is unique in having three different architectural styles i.e., Chola, Pallava and Vijayanagara. This temple is about 1,500 years old. It was renovated at different periods. There are paintings that are supposed to belong to 18th century A.D. depicting life of Thirthankaras.

There are foot-prints of two celebrated Munis, Sri Mallisena Vamana and Sri Puspasena under a small tree.

Presiding Deity : Lord Varthamana-Trilokianathar (Leader of the Three Worlds).

Location and Approach : Private conveyance from Kanchipuram. It is only about 4 km from the town.

Mamallapuram :

This small village was a famous harbour several centuries ago under the Pallava Kings. It is now well known for its sculptural excellence. There were many Jain sculptures and images in Mamallapuram.

Now only one of the several sculptural wealth executed by the Jains remain. It is the bas-relief popularly called by the laity as the Arjuna's Penance or Bhagiratha's Penance. However, as per Lord Ajithanathar Puranam, it is the beautiful depiction of the story of Emperor Sakara which is executed expertly on the face of the rock, the eastern face of which is vertical, 96 feet in length and 43 feet in height.

NORTH ARCOT

Agarakorakottai : 604406

A small village with 12 Jain families. The Jain temple, which is recently improved is about 60 years old.

Presiding Deity : Shri Paraswanathar

Festival : Pongal

Location and Approach : 20 km South of Vandawasi on Vandawasi-Tindivanam road. Buses plying between Vandawasi-Desur run through this village.

Birodūr :

An ancient village with 100 Jain families. The Jain temple is about 700 years old. It is in existence from the time of Arcot Nawabs. There is a separate temple for Devi.

Presiding Deity : Sri Adī Bagwan (Lord Rishaba Devai)

Festival

1 Atchayathruthi

2 Pongal

3 Sarasvathy Puja

Location and Approach : It is 2 km east of Vandawasi town. Buses plying between Vandawasi-Acharapakkam halt at this village.

Elangadu : 604415

A small village with an ancient Jain temple. There are 25 Jain families living here. There are two metal idols, one of Lord Neminathar and the other of Dharmadevi, supposed to have been shifted from a Jain

temple at Mylapore in Madras fearing sea erosion. In the bottom of idol of Lord Neminathar it is inscribed that it belonged to Mylapore.

Presiding Deity : Shri Rishaba Thirthankar

Festival : Atchayathruthi, Pongal.

Location and Approach : It is about 10 km south-west of Vandawasi on the Vandawasi-Thellar road. Vandawasi to Tindivanam buses stop 1 km away from the village on the main road.

Gudaloor : 604406

The Jain temple of this village is about 300 years old. There are 29 Jain families living. This village is supposed to be a place where Pallavas and Cholas met each other.

Presiding Deity : Shri Kunthu Thirthankar

Festival : Pongal

Location and Approach : It is about 25 km South of Vandawasi on the Vandawasi-Tindivanam road.

Kappalur : 606751

There are 15 Jain families living in this village. The Jain temple is of recent origin. It was consecrated in 1968.

Presiding Deity : Shri Kunthunatha Swamy.

Festival : Mahavir Jayanthi

Location and Approach : It is about 10 km South of Polur. Buses plying between Tiruvannamalai and Polur halt near this village.

Kattumalayanoor : 608804

A village with 29 Jain families. No temple. It is 16 km east of Tiruvannamalai.

Kil-nelli : 604410

A village with a single Jain family. This village was a flourishing Jain centre during 700 A.D. At present there is no temple. But the presiding deity of the dilapidated temple is placed on a platform.

Presiding Deity : Shri Varthamana.

Location : 12 km north-east of Cheyyar town. Bus - Kanchipuram to Cheyyar.

Kil-pennathur : 604601

This is a small village about 20 km east of Tiruvannamalai. There are 5 families living here. There is no Jain temple.

Kil-Sathamangalam : 604408

There are 60 Jain families in this village. The temple is very ancient one. It is believed to be 1400 years old. Near the village there is a hillock with inscription belonging to the Pallava ruler Nandivarman. The Maanasthamba of the temple is 33 feet high and is made out of single stone.

Presiding Deity : Sri Chandranatha Swamy.

Festival : Atchyathruthi, Pongal.

Location and Approach : It is 5 km west of Vandawasi. Buses plying between Vandawasi and Polur halt near this village.

Kil-Villivalam : 604408

There are 25 Jain families in this village. The temple is 150 years old.

Presiding Deity : Shri Vaithamana Mahavir.

Festival : Occasionally.

Location and Approach : It is 15 km south-east of Vandawasi. No bus to this village.

Kozhappaloor : 632313

A village with 60 Jain families. The temple here is about 300 years old.

Presiding Deity : Shri Rishabadevar.

Festivals : Atchyathruthi, Pongal.

Location and Approach : It is about 22 km south of Arni. Buses are available from Arni to this village.

Mandakolathur

An ancient Jain village. But no temple. Now only 5 families are living. It is believed that about 60 families lived here. It is on the Polur-Vandawasi bus route at a distance of 10 km.

Manjapattu : 604501

There are 26 Jain families living in this village. The Temple is about 200 years old.

There is a hillock "Seeyamangalam" near this village with sculpture and inscriptions.

Presiding Deity : Shri Malli Thirthankar.

Festival : Pongal.

Location and Approach : It is 25 km south of Vandawasi. Madras to Vadakapattu bus halts near this village. It is near Desur (3 km).

Mudaloor : 604406

A village with 46 Jain families. The Temple is very ancient. It was the only temple for the 5 nearby villages. Later temples were built in other villages. This village has the singular distinction of being the birth place of 3 Madathi padthis of Shri Kolhapur Jain Mutt in Maharashtra.

Presiding Deity : Shri Athiswarar (Lord Rishaba devar).

Festival : Achayathruthi, Pongal.

Location and Approach : It is 5 km South of Vandawasi.

Mullipatta : 632316

A small village with 9 Jain families. There is a temple about 300 years old.

Presiding Deity : Shri Bhagwan Mahavir.

Festivals :

1 Shivarathri (Mukthi Day of Lord Rishabdevar)

2 Deepavali (Mukthi Day of Lord Mahavir)

Location and Approach : It is 3 km west of Arni. Buses plying between Arni- Tiruvannamalai run via this village.

Nallavanpalayam : 606603

A village with 65 Jain families. The temple is about 53 years old.

Presiding Deity : Shri Rishabadevar.

Festival : Nil.

Location and Approach : It is 5 km south of Tiruvannamalai.

Nallur : 604406

There are 50 Jain families living here. The

temple is about 75 years old. In this temple there is a separate "Panchkalyana Temple" made of marble idols. Navagraha temple with copper idols is another addition to the main temple

Presiding Deity : Shri Adinathar (Shri Rishabadevar)

Festival : Atchayathruthi, Mahavir Jayanthi, Pongal.

Location and Approach : It is about 16 km south-east of Vandawasi. Buses ply between Vandawasi-Nallur.

Naval : 604409

An old village with 27 Jain families. The Jain temple is about 75 years old. This village is famous for the learned Sastris for the last 50 years.

Presiding Deity : Shri Vasupujya Swami.

Festivals : 1. Atchayathruthi, 2. Sarasvathi Puja, 3. Pongal.

Location and Approach : It is 7 km south-west of Cheyyar.

Nelliaugulam : 604405

The Jain temple of this village is about 150 years old. This temple is unique in having the idols of all the 24 Thirthankaras.

Presiding Deity : Shri Neminathar,

Festival : Atchayathruthi.

Location and Approach : It is about 25 km South of Vandawasi. Buses ply from Vandawasi to this village

Nethapakkam :

A Jain village with a Jain temple but without Jains. The Jains of this village migrated to nearby S V. Nagaram, and other places. Presently the temple is in one acre area. Supposed to be the only temple for nearby 4 villages-Mottur, Kal-poondi, S V. Nagaram, Molugampooni.

Presiding Deity : Lord Neminath.

Festival : Mukkudai.

Location and Approach : It is about 8 km east of Arni. Buses plying between Arcot and Cheyyar stop at nearby S V. Nagaram. From there it is just 1 km

Othalavadi : 606902

There are 65 Jain families in this ancient Jain village. There are inscriptions in the temple. The temple is about 1000 years old. There is an inscription (1271 A.D.) 709 years old that tells about the endowment granted to this temple.

Presiding Deity : Aniyatha Azhagar-Shri Rishaba Thirthankar.

Festival : Pongal, Atchayathruthi, Deepavali

Location and Approach : It is about 22 km from Arni. Buses plying between Arni and Devikapuram halt near this village.

Peranamullur : 604503

Thirty seven Jain families are living in this village. The temple is about 65 years old. There is a separate Navagraha temple.

Presiding Deity : Shri Adinathar (Shri Rishabadevar)

Festival : Yugadi Dasara

Location and Approach : It is 35 km west of Vandawasi. Buses ply from Vandawasi and Arni.

Ponnur : 604414

This is a large village with 70 Jain families. The temple is constructed over a small hillock. It is referred as *Kanagagiri* (Hillock of Gold). It is about 700 years old. The inscriptions in this village indicate that Chola chieftains and Pallavas granted endowments to this temple. Another inscription reveals that the idols of Lord Paraswanath and Jwalamalini are to be taken to nearby Nilagiri (Ponnur-malai) and Pujas performed. This village is connected with Shri Kundkund Acharya.

Presiding Deity : Kanagagirinathar, Kanagamalai Alwar (Shri Rishabadevar).

Festival : Pongal, Deepavali, Jinavani Day, Yugadi

Location and Approach : It is about 12 km south-west of Vandawasi. Buses ply from Vandawasi, Kanchipuram, Arni and Chetpet to this village.

Sitharugavoor :

There are 12 Jain families and a small ancient Jain temple. presently Jains are living in the nearby Jungampoonadi. Near this village there is a monument with inscriptions. These inscriptions in the nearby village—Vedal inform about the “Jain Women University”, established and managed by women themselves.

Presiding Deity Shri Adi Bagwan the first Thirthankar

Festival : Nil

Location and Approach It is 3 km south of Desur at 19th km south-west of Vandawasi. It can be reached by buses plying between Vandawasi and Vedal or Cheyyar to Vedal.

Solai Arugavoor : 604502

There are 35 Jain families living here. The temple is about 100 years old. The brass bell is unique and produces musical sound

Presiding Deity : Shri Adi Bhattarakar (Shri Rishabadevar).

Festival Pongal.

Location and Approach : It is about 30 km south-west of Vandawasi. Desur (6 km) is the nearest town. Buses plying between Chetpet halt at Yenthal.

Somasipadi : 606602

An ancient village with 94 Jain families. This village is supposed to have sprung after the persecution of Jains by chieftain of Gingee. The temple is 100 years old. Near this village

there is rock with inscriptions and sculpture of Sri Mahavir.

Presiding Deity . Sri Santhamatha Swami. This is the only temple in Tamil Nadu dedicated to Sri Santhi Thirthankar.

Festival: 1. Mukkudai, 2. Pongal.

Location and Approach : It is 8 km east of Triuvannamalai on the main road. Many buses ply on this road.

Thatcher : 632316

The Jain temple of this village is about 800 years old. There are 60 Jain families living in this village. The temple architecture is unique. Every year on the last 3 days of February and the first of March the rays of the rising Sun flash on the feet of the presiding deity, Lord Atheeswara Swami.

Presiding Deity : Shri Rishabadevar.

Festival : Atchayathruthi, Pongal.

Location and Approach : It is 10 km south of Arni. Buses plying between Arni and Devikapuram stop at this village.

Thensenthamangalam . 604404

Nineteen Jain families are living in this village. The Temple is an ancient one. Pallava chieftains and Nawabs sanctioned grants to this temple.

Presiding Deity : Shri Paraswathirthankar

Festival : 1. Mahavir Jayanthi, 2 Pongal

Location and Approach : It is 5 km west of Vandawasi on Vandawasi Arni road.

Thirumalai :

It was an ancient Jain centre of having the temples both structural and cave type. The different parts of this temple complex were built during the Chola period. So the main temple is known by the name of the Chola queen Kundavai as Kundavai Jinalayam. The whole complex came into existence about

2000 years ago. There are inscriptions dateable to 9th century A D. and before.

The temple complex is located at the foot of the hills. There are two temples at the foot of the hills, i.e. Vardhamana temple. The second temple is at a higher elevation than the first one. By the side of this temple are the rock-cut panels and a way leading to the caves with their ceiling painted.

On the western side behind these temples lie steps leading to the top of the hill. It is here that we can see the tallest rock-out image of Lord Neminatha. This image is 16 feet high. It is a small village with 2 or 3 Jain family only.

Presiding Deity : 1 Lord Vardhamana, 2 Lord Neminatha locally known by the name Sigamaninathar.

Festival : Annually on the 3rd day of Pongal festival, the anointing ceremony of the 16 feet image takes place.

Location and Approach : Thirumalai is about 40 km from Arni on the Arni-Polur road. Buses plying between Arni-Polur stop near this village. The temple complex is under the Archaeological Survey of India. A caretaker is looking after this complex and daily pujas performed in the middle temple.

Tirupanamoor : 604410

It is an ancient village and the Jain temple is 500 years old. There is 52 Jain families living. This village is connected with the great Acharya Sri Akalanka. There is a mandap with his foot-prints on the bank of the local tank. Annual float festival is celebrated here. Tirupanamoor is a janasthan of two popular Nirvana Munis, Sri Dharma-sagar and Sudharmasagar.

Presiding Deity : Shri 1008 Puspananthar
Festival : Pongal, Yugadi

Location and Approach : It is 19 km from Kanchipuram and 20 km from Cheyyar. Buses plying between Kanchipuram-Cheyyar via Vempakkam halt near this village.

Veliyanallur : 604407

In this village with an ancient Jain temple 30 Jain families are living today.

Presiding Deity : Shri Varthamana Mahavir.
Festival : Pongal

Location and Approach : It is 5 km east of Cheyyar town.

Vangaram : 604408

This is a small village with 30 Jain families. It is in the proximity of Ponnur Hills. The Jain temple of this village is about 100 years old.

Presiding Deity : Sri Adthiswara Swami
Festival : Deepavali, Pongal

Location and Approach : It is about 8 km south-west of Vandawasi on the Vandawasi-Polur road. All buses plying on this road stop at Vangaram Junction road.

Vellai : 604401

This village with 11 Jain families has about 150 years old Jain temple.

Presiding Deity : Shri Rishaba Thirthankar
Festival : Avani Avittam

Location and Approach : It is 6 km south-west of Cheyyar. Buses are available from Cheyyar.

Venkuadram : 604408

A village whose historicity extends back into Chola period (A D 1150). Now 37 Jain families are living. This village was one of the administrative centres of Jain community or Sanga. There are inscriptions in nearby hills.

Presiding Deity : Shri Parswathirthankar.
Festival : Pongal, Sarasvathi Puja

Location and Approach : It is 1 km north-west

of Vandawasi and can be reached by cycle rickshaw. A Choultry is attached to the temple.

SOUTH ARCOT

Agaloor : 604203

There are 40 Jain families living in this village. The Jain temple is 75 years old. There are inscriptions in the temple.

Presiding Deity : Shri Adiswara Swami

Festival : Pongal, Yugathi

Location and Approach : It is 12 km north-east of Gingee. Buses plying between Gingee and Vandawasi via Nattamangalam stop at this village.

Alagramam : 604302

An ancient Jain centre with about 50 families. The temple is said to be 150 years old. It is one of the few Jain villages where annual Brahma Ursheva is conducted. It is said that the festival (for 10 days) is conducted without interruption for the last 84 years. A choultry is attached to the temple.

Presiding Deity : Shri 1008 Adithirthankar

Festival : 1 Brahma Ursheva (July), 2 Atchayathruthi (April), 3 Pongal (January), 4 Navarathri (October).

Location and Approach : It is about 20 km south-west of Tindivanam. The nearest Railway station is Mailam on Madras—Villupuram line.

Bus : Nalambur to Alagramam from Tindivanam.

Eyyil :

A small village near Gingee with about 50 Digambara Jain families. Fairly ancient Jain Temple dedicated to Lord Chandra Prabha.

Festival : Nitya puja, Winter Puja (Muk-kudai).

Location and Approach : Buses plying between Tiruvannamalai—Gingee.

Kallakolathur : 604304

There are 25 Jain families. The temple is very ancient and was renovated in 1942. Near this village on the north side there is a small rock with foot-prints of one Nirvana Prama Jina Deva.

Presiding Deity : Shri Adiswara Bagwan.

Festival : Atchayarathruthi.

Location and Approach : It is about 22 km south of Tindivanam. Nearest Railway station is Mailam on Madras-Villupuram line. Buses ply from Tindivanam.

Kallapuliur :

It is 16 km from Gingee. There are 70 Digambara Jain families living. This is a noted Janmasthan of Nirgantha Munis.

Presiding Deity : The Digambar Jain Mandir dedicated to Lord Paraswanath. The deity is in the standing posture.

Festival : Atchayathruthi, Dasara.

Location and Approach : 16 km south of Gingee.

Kattusithamoor : 604152

A small village with 17 Jain families. No Jain temple. It is 35 km west of Gingee.

Kil-Edayalam : 604302

A small village with 8 Jain families and the Jain temple is ancient one. Near the village on the lake bund foot-prints of Sri Vamana Muni are seen. Annual pujas performed by the local Jains and Jains of nearby villages gather in large number.

Presiding Deity : Sri Rishabanathar.

Festival : Ugadi—on this day pujas are performed of the foot-prints.

Location and Approach : It is on the Madras-Villupuram road and 12 km South of Tindivanam.

Melsithamoor :

This is religious headquarter of Tamil Jains The religious head Swasthi Sri Lakshmisena Bhattacharya Varya Swamikal lives here. Ancient palm-leaf scripts of important Prakrit and Sanskrit works are available here. This headquarter is supposed to be a secondary settlement

There are two temples here The ancient one with inscription is built on the rocks The latter is a temple complex with the biggest Karpagriha The temple and the temple complex is about 600 years old

Presiding Deity Lord Parswanathar—Simhapurinathar

Festival : Annual Brahmursava for 10 days during the month of April This is the only place where car festival is celebrated

Location and Approach : It is about 10 km from Gingee and about 20 km from Tindivanam. Buses plying between these places halt near this village

Mozhiyanoor : 604306

There are 11 Jain families in this village The Jinalaya is about 150 years old There is an inscription in this temple

Presiding Deity Shri Parswathirthankar

Festival : Pongal.

Location and Approach It is 25 km south of Tindivanam This village is on the Madras to Villupuram rail route Nedimozhiyanoor is the railway station

Peramundur :

It is one of the ancient villages in South Arcot District There are 50 Jain families living. There are two Jain temples in this village and one of them is small and ancient The inscriptions found in the temple are of 11 century A D The other temple which is about 200 years old is bigger The Jain families are living near this temple.

This village is supposed to have been the birth place of many learned scholars in the past The author of Sri Purana Tamil version of Mahapurana is said to have been the native of this village

Presiding Deity : 1 Sri Chandra Praba. 2. Sri Rishabadevar

Festival : Atchayathruthi

Location and Approach It is about 20 km from Tindivanam. Nearest Railway station is Mailam on Madras-Villupuram line There is a regular bus service between Tindivanam and Rettanai, a nearby village

Perumpugai . 604202

There are 30 Jain families and a temple. The temple is about 200 years old

Presiding Deity : Shri Malli Thirthankar.

Festival Atchayathruthi, Pongal.

Location and Approach : It is on Gingee Tindivanam road and 6 km from Gingee Buses plying between these two towns halt at Oornithangal wherefrom this village is 2 km.

Uppu Vellore :

A village with 40 Jain living families. An ancient village with a Jain temple. It was one of the early settlements of Jains Shri Jinasenacharya, a celebrated Muni responsible for the revival of Jina Dharma in this part, is said to have died here

Presiding Deity : Shri Rishabadevar

Festival Atchyathruthi

Location and Approach . 23 km east of Tindivanam Buses ply between Tindivanam Uppuvellore

Thirunarungkondai :

This kshetra is one of the ancient centres of Janism Here flourished a Jain Sangha called Veera Sangha under the leadership of

Sri Gunabhadra Muni. Now there are only three Jain families.

Thirumarungkondai :

The name of the hill is also the name of the place. The temple is about 2000 years old.

It is a cave temple on a hill about 600' high. On the top of the hill stands the cave temple of great antiquity.

There are inscriptions that tell about the grants and Munis of this place.

Presiding Deity : Lord Paraswanath—Appandainathar—It is a bas-relief found on one of the big boulders that form the natural cave.

Festival : Annual Brahma Utsava for 10 days during the month of May.

Location and Approach : The village is about 250 km from Madras on the Madras-Tiruchchirappalli road. On this road at Ulundurpet another road leads to Tiruvennainallur. At a distance of about 20 km there is a village Pillayar Kuppam. Thirunamkondev is 5 km from this village. Buses are available both from Ulundurpet and Pillayar Kuppam.

Valathy : 604208

An ancient Jain village surrounded by hills on western and southern sides. There are 30 Jain families living at present. The Jain temple of the village is said to be about 400 years old. There is a small cave on the out skirt of the village "Nalgnana Kundru" (Samyakgnah Hillock) where there is a bas-relief of Lord Paraswanath. This place is supposed to have been the abode of some saints in the past. Presently annual pujas are performed.

Presiding Deity : Shri Adinath Thirthankar.

Festival : 1. Pongal, 2. Atchayathiruthi (April), 3. Yatchan Navarathri (October).

Location and Approach : The village is 13 km north of Gingee. Buses plying between Gingee-Chetpet via Valathu.

Note —There are 2 more villages near Valathu i.e. Melmalayanoor and Thazhanoor. Both these villages are also ancient. The people of Thazhanoor were said to be responsible for the secondary settlement of Jains in South Arcot.

Veedor .

This village has 51 Jain families. The Digambar Jain temple of this village is about 1200 years old. This village is noted for many philosophers who wrote a large number of books on Jain philosophy.

Presiding Deity : Lord Rishabadevar.

Festivals : Atchayathiruthi, Pongal, Dasara.

Location and Approach : It is 24 km south of Tindivanam.

Veernamoor 604203

There is a separate Jain street with 41 families. An ancient village with a Jain temple about 500 years old. Three religious heads of Tamil Nadu Jains at Melsithamoor hailed from this village and from the same family.

Presiding Deity : Shri Rishaba Thirthankar.

Festival : 1. Atchayathiruthi, 2. Mukkudai, 3. Navarathri.

Location and Approach : It is 20 km north-east of Gingee. Buses plying between Tindivanam (24 km)—Veernamoor and Vandawasi (25 km)—Veernamoor.

Vellimedupettai : 604207

In this village 30 Jain families are living. The Jain temple is about 200 years old. At Anandamangalam near this village (6 km) is a hillock with Jain sculpture.

Presiding Deity : Sri Anantha Thirthankar.

Festival : Pongal, Anman festival.

Location and Approach : It is 10 km north of Tindivanam. This village is on the Tindivanam-Vandawasi road.

मूडबिद्री यह क्षेत्र 'जैन काशी' के नाम से प्रसिद्ध है। यह स्थान मंगलूर (Mangalore) से उत्तर की ओर कार्कल तालूक (दक्षिण कन्नड जिले) में अवस्थित है। मूडबिद्री जैनो के अगर धार्मिक दृष्टि से पवित्र है तो अन्य लोगों को ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान है। इसका दूसरा नाम संस्कृत में 'वशपुर' अथवा 'वेणुपुर' भी है। यहाँ का प्राचीन मन्दिर 'गुरुबसदि' (गुरुमन्दिर) या 'सिद्धान्तबसदि' एक समय उन्नत स्थिति में था। एक समय इस गाँव का व इस मन्दिर का अधिकांश भाग जैनो के अभाव से व अन्य बाधाओ से अरण्यमय होकर पेड़ों और बासों (वशवृक्ष) से व्याप्त हो गया था। इन्हीं बासों के कारण इसका नाम 'बिदिरे' या 'वेणुपुर' पड़ा। (कन्नड भाषा में बास को 'बिदिरु' कहते हैं। इस 'बिदिरु' शब्द से ही 'बिदिरे' बना है। 'बिदिरे' या 'बिद्री' इसका अपभ्रंश है) चूँकि यह स्थान मूलिक, मंगलूर आदि ममी-पस्थ बन्दरगाह—व्यापार स्थलों से 'मूड' (पूर्व) दिशा में स्थित है, अतः 'मूडबिदिरे'—'मूडबिद्री' नाम से पुकारा जाने लगा। जो आज तक प्रसिद्ध व मान्य बन गया है। इसके अलावा अनेक जैन व्रतिक (साधु, गुरु, श्रमण) यहाँ रहने के कारण, इसे 'व्रतपुर' भी शिला-शासन में कहा गया है।

यद्यपि मूडबिद्री 'तुलुनाडु' (यहाँ तुलु बोली, बोली जाती है, अतः इस प्रदेश को 'तुलुनाडु' कहते हैं, नाडु—प्रदेश) यह दक्षिण कन्नड जिले का एक छोटा-सा नगर है तथापि चारों ओर से प्राकृतिक दृश्यों से यह अतीव सुन्दर है। यहाँ बेशुमार फलभरित हरे-भरे खेत हैं, बाग-बगीचे हैं। यत्र-तत्र तालाब हैं। यहाँ पर नारियल, सुपारी, काजू, पान, कालीमिर्च आदि विशेष रूप से पैदा होने हैं। यहाँ की राज महल, जैनमन्दिर शिल्पकला की दृष्टि से विशेषाकर्षक हैं। इस क्षेत्र की जलवायु समशीतोष्ण है इसी कारण यहाँ पर सरकार ने भी टी० बी० (अयारीगी) का हॉस्पिटल खोला है।

ईसा पूर्व तृतीय शताब्दी में श्रुतकेवली भद्रबाहु के उत्तर भारत से श्रवणबेलगोला पदार्पण से पूर्व ही मूडबिद्री व यहाँ के चारों ओर के प्रदेशों में जैनो का अस्तित्व था। यद्यपि क्रि० श० ७वीं शती से पूर्व का ऐतिहासिक आधार

प्राप्त नहीं होता, फिर भी दक्षिण कन्नड जिले के बहुभाग में प्राप्त जैनत्व के अवशेषों से यह बात सिद्ध होती है।

इतिहास का प्रमाण है कि ई० पूर्व चौथी-शताब्दी में श्रुतकेवली श्री भद्रबाहुजी ने मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त एव १२००० शिष्यों के साथ दक्षिण में आकर श्रवणबेल-

मूडबिद्री

गोला में निवास किया। उनके इन शिष्यों में कुछ ने तमिल, तेलुगु कर्नाटक एव तौलव देशों में जाकर धर्म का प्रचार और यत्र-तत्र निवास किया। तब से मूडबिद्री में भी जैन लोगो ने आकर वाणिज्य-व्यवसाय करते हुए अनेक जैन मन्दिर बनवाये, ये द्वीपांतर में व्यापार करते हुए विपुल धनार्जन कर प्रसिद्ध थे।

परन्तु कालकोप से धन-जन-सम्पन्न इस मूडबिद्री में भी जैनो का अभाव हो जाने से यहाँ के जिन मन्दिरों के चारों ओर पेड़ों और वशवृक्षों से घिरे हुए थे। लगभग ७वीं शताब्दी में श्रवणबेलगोला में इधर आये हुए एक मुनि-महाराज ने एक जगह (जहाँ अब सिद्धान्त मन्दिर है) अन्योन्य स्नेह से खेलते हुए एक बाघ और गाय को देवा। इस अपूर्व दृश्य को देखकर मुनिजी ने यह निश्चय किया कि इस स्थान में कुछ न कुछ अतिशय अवश्य है। जब घिरे हुए पेड़ों को कटवाया तब श्री भगवान पार्श्वनाथ प्रभु की विशालकाय, अतीव सुन्दर व मनोज्ञ मूर्ति दृष्टिगोचर हुई। पाषाणमयी यह मूर्ति हजारों वर्ष प्राचीन है। उस मूर्ति की प्रतिष्ठा करायी गयी।

मूडबिद्री की प्रसिद्धि यहाँ 'गुरुबसदि' या 'सिद्धान्त मन्दिर' में सुरक्षित व शोभायमान जैन जगत् का मूलागम व परमागम ध्वलादि ग्रंथ व अनर्घ्य नवरत्न प्रतिमाओं से है। (अब ध्वलादि ग्रंथों का दर्शन श्री दि० जैन मठ में ही व्यवस्थित रूप से पू० भट्टारक जी कराते हैं) ध्वलादि ग्रंथ कन्नड लिपि में लिखे जाकर करीब १००० वर्ष

हो गये हैं। जब उत्तर भारत में शास्त्र ग्रंथ कागज पर लिखे जाते थे, उस समय दक्षिण में द्रविड लिपि के ग्रन्थ ताडपत्र में सुई से कुरेदकर ऊपर से स्याही भरे जाने की प्रथा थी। लेकिन आश्चर्य यह है कि ये तीनों ग्रंथ सुई से न लिखे जाकर लेखनी द्वारा लाख की स्याही से लिखे गये हैं। यह नयी खोज उक्त लिपिकारों की अपनी ही है। बाद के किसी भी लिपिकार ने इस प्रथा को अपनाया नहीं है। इस जिले में प्राप्त सहस्रशः ताडपत्रीय ग्रंथों में ये तीन मात्र ग्रंथ स्याही से लिखे गये हैं व प्राचीन हैं।

इसी 'गुरुबसदि' में वज्र, मरकत, माणिक्य नील, वैडूर्य आदि बहुमूल्य रत्नों से निर्मित अद्वितीय व अनुपम जिन प्रतिमाएँ हैं। मूडबिद्री के प्राचीन श्रावक जहाजों के द्वारा द्वीपान्तर जाकर बाणिज्य करने में प्रसिद्ध थे। वे अरेबिया, अफ्रीका, आदि पश्चिम देशों में और मलाया, जावा, इण्डोनेशिया, चीन आदि सुदूर पूर्व देशों में जाकर व्यापार करते थे। अतएव जिराफ, चैनीस ड्रागन आदि प्राणियों से परिचित इन लोगों ने 'त्रिभुवन-तिलकचूडामणि मन्दिर' की आधार शिला में इन विचित्र प्राणियों की आकृतियाँ विभिन्न ढंगों में, आकर्षक रंगिमाओं में खुदवाई हैं। त्रिभुवनतिलक चूडामणि मन्दिर के 'मैरादेवी मण्डप के निचले भाग के पत्थर में जिराफ मृग और चीनी ड्रैगन का चित्र चित्रित है। यह जिराफ मृग अफ्रीका में पाया जाता है। और ड्रैगन तो चीन देश में पाया जाता है। यह वहाँ का पुराण प्रसिद्ध प्राणी है। यह मकर (मगर) आकृति का जलचर है। विदेश के इस प्राणी का यहाँ पर चित्रित होने से सहज ही अनुमान लगा सकते हैं कि उस समय के जैन श्रावक व्यापारार्थ इन देशों में भी गये होंगे व व्यापारिक सम्पर्क बढ़ जाने से वहाँ के रहने वाले प्राणी यहाँ पर चित्रित हुए होंगे।

मूडबिद्री के मन्दिर क्या है ? शिलालेखों, शिल्पकला व शिलापट्टों का आगर ही है। एक अज्ञात कवि ने शिलालेख में तत्कालीन 'वशपुर' (मूडबिद्री) का निम्न प्रकार से वर्णन किया है—

'सुन्दर बाग-बगीचे, विकसित पुष्पों की सुगन्ध से व्याप्त हवा से, चारों ओर से सुशोभित बाह्य प्रदेशों में घिरा हुआ, उत्तम जिनमन्दिरों से पवित्र एवं रम्य आवास

यहो से सुशोभित यह मूडबिद्री देवागनाओं के समान पुण्य स्थलों के विराजने के समान सुन्दर है।'

मूडबिद्री के एक और शासन में तत्कालीन 'वेणुपुर' का जीता जागता चित्रण निम्न रूप में है—'तुलदेश में वेणुपुर नाम का एक विशिष्ट नगर सुशोभित है। यहाँ पर जैन धर्मानुयायी सुपात्र दानादि उत्साह से करने वाले भव्य जीव विराजमान हैं। साधु-सन्तों से वे श्रद्धापूर्वक शुद्धमन से जैन शास्त्र का श्रवण करते हैं। इस प्रकार यह वेणुपुर सुशील सत्पुरुषों से शोभित है।'

मूडबिद्री के अठारह भव्य जिनमन्दिर

मूडबिद्री में कुल मिलाकर अठारह भव्य जिनमन्दिर हैं। इसमें 'श्री पार्श्वनाथ बसदि' अति प्राचीन है। 'पार्श्वनाथ बसदि' को 'गुरुबसदि' तथा चन्द्रनाथ बसदि को 'त्रिभुवन तिलक चूडामणि बसदि' भी कहते हैं। इन मन्दिरों के अलावा अन्य मन्दिरों में भी शिल्पकला की उच्चकोटि की गरिमा खुलकर सामने आई है। 'बसदि' यह संस्कृत 'वसति' शब्द का तद्भव है।

मूडबिद्री के अन्य दर्शनीय स्थल

१. समाधिस्थान (निषिधियाँ) :

यहाँ स्वर्गीय मठाधिपतियों की १८ समाधियों के अतिरिक्त अबुसेट्टी एवं आदुसेट्टी नामक दो श्रीमान् श्रावकों की समाधियाँ बेटकेरी बसदि से १ फर्लांग पर विद्यमान हैं। परन्तु यह जानना कठिन है कि ये समाधियाँ किन-किन की हैं ? और कब निर्माण हुई हैं। केवल दो एक समाधियों में शिलालेख विद्यमान हैं।

२. कोडकल्लु (न्याय बसदि) :

मूडबिद्री से करीब १ मील पर 'कोडकल्लु' नामक स्थान में 'न्यायबसदि' नामक एक मन्दिर एवं एक समाधिस्थान विद्यमान है। कहा जाता है कि इस मण्डप में लोगों के न्याय-अन्याय का विचार और निर्णय होता था। इसी कारण से मण्डप का नाम 'न्यायबसदि' नाम पडा है जो सार्थक ही है। इसके पास ही श्री चन्द्रकीर्ति मुनि (ई० सन् १६३७) का एक समाधिस्थान और सति

सह्यमन करने का एक स्थान 'महासतिकट्टे' (मास्तिकट्टे) भी है।

३. चौटर राजमहल :

दक्षिण कन्नड जिले के जैन राजाओं में चौटर वंशीय राजा बड़े प्रसिद्ध थे। इनकी राजधानी पहले "उल्लाल" में थी। हलेयबीड के राजा विष्णुवर्धन के अधीन रहने वाले राजागण स्वतन्त्र होने के बाद चौटर वंशीय राजाओं ने अपनी राजधानी को मूडबिद्री और इसके निकटवर्ती 'पुत्तिगे' में स्थापित किया। इन राजाओं ने लगभग ७०० वर्ष तक (११६० से १८६७ ई० सन् तक) स्वतन्त्र रूप से शासन किया। इनके वंशज आज भी मूडबिद्री (चौटर पैलेस) में रहते हैं जिनको सरकार से मालिखाना (Political Pension) मिलता है। यह राजघर यद्यपि जीर्णोद्धार है फिर भी इसे देखकर इसकी महत्ता का अनुभव कर सकते हैं। राजसभा के विशाल स्तंभों पर खुदे हुए चित्र दर्शनीय हैं। इनमें चित्रकला की दृष्टि में 'नवनारीकुंजर' और 'पंचनारीतुरग' की रचना और शिल्पकला अत्यंत मनोज्ञ हैं।

४. श्रीमती रमारानी जैन शोध संस्थान :

इस भवन का निर्माण स्वनामधन्य, श्रावक शिरोमणि, स्व० साहू श्री शांतिप्रसाद जी ने लाखों रुपये व्यय करके किया है। इस संस्थान या भवन में परम पुनीत अमूल्य ताडपत्रों पर लिखे महत्त्वशाली जैन पुराण, दर्शन, धर्म, सिद्धान्त, न्याय, ज्योतिष, आचार परक 'जिनवाणी मा' का संग्रह है। इन ताडपत्रीय जैन शास्त्रों के अध्ययनार्थ व अवलोकनार्थ देश-विदेश के विद्वान् यहाँ पधार कर, इन अनमोल ग्रन्थ रत्नों के दर्शन कर पुनीत हो जाते हैं। अनेक ताडप्रतियों का समुद्धार, पुनर्लेखन, लघोधन संग्रह, प्रकाशन आदि कार्य प. पू. भट्टारक जी के नेतृत्व में सम्पन्न हो रहा है। देश-विदेश के जैन-जैनेतर विद्वानों

के लिए तो यह संग्रहालय मानो ज्ञान का अजस्र स्रोत है और हैं मां सरस्वती का वरद और पुनीत अक्षुण्ण भण्डार।

५. मूडबिद्री की अन्य संस्थाएँ और सामाजिक स्थिति :

अब तक ऐतिहासिक मूडबिद्री का अवलोकन हुआ। अब आधुनिक मूडबिद्री का अवलोकन करेंगे।

मूडबिद्री में तीन हाई-स्कूल हैं—१ जैन हाई स्कूल, २ बाबू राजेन्द्र प्रसाद हाई स्कूल, ३ काम्बेन्ट गर्ल्स हाई स्कूल। जैन हाई स्कूल रजत जयंति मनाकर अब जैन जूनियर कॉलेज के रूप में परिवर्तित हो गया है।

सन् १९६५ में 'समाज मन्दिर सभा' नामक सांस्कृतिक संस्था द्वारा यहाँ पर 'महावीर आर्ट्स' साइन्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज' खोला गया है।

सन् १९७६ में दक्षिण कन्नड जिला जैन समाज के मत्प्रयत्न में 'श्री धवला कॉलेज' मूडबिद्री में प्रारम्भ हुआ है।

'भरतेश वैभव' रत्नाकर शतक' आदि श्रेष्ठ कृतियों के रचयिता महाकवि रत्नाकर वर्णी की जन्म भूमि भी यही मूडबिद्री है। इसी कवि के नाम में मूडबिद्री का एक भाग 'रत्नाकर वर्णी' नगर के रूप में नामकरण पाकर सुशोभित है।

मूडबिद्री की जनसंख्या लगभग १०-१२ हजार है। लोगों की आर्थिक स्थिति सामान्य है। जैन भाइयों के लगभग ६० घर हैं। जैनों की आर्थिक स्थिति (२-४ घर को छोड़कर) सामान्य है। प्रायः सब लोगों का जीवनाधार कृषि पर ही निर्भर है। नारियल, मुपारी, धान, काजू आदि ही यहाँ की प्रमुख कृषि या उपज हैं। परन्तु इस समय 'भू सुधारणा कानून' पास होकर लागू होने से सब खेतिहर जैनों के ऊपर और जैन मन्दिरों के ऊपर भीषण सकट आया है।

शिल्प कला में उत्कृष्ट

बाहुबली की प्रतिमा का निर्माण कार्य आरम्भ से अन्त तक दसवीं शताब्दी के उत्तरकालीन प्रसिद्ध जनरल चामुण्डा राय की आज्ञा से किया गया। उनके गुरु आचार्य नेमिचन्द्र ने उन्हें 'गोमेत' (जिसे सुन्दर वाणी का सौभाग्य प्राप्त हो) की उपाधि से विभूषित किया था। इसलिए बाहुबली की प्रतिमा को गोम्मटेश्वर या गोमेत के भगवान के नाम से जाना जाने लगा।

अपने समय के महान मूर्तिकार अरिष्टनेमी ने भगवान बाहुबली की मूर्ति का निर्माण बड़े पत्थर की एक शिला को काटकर किया। यह उत्कृष्ट ध्यानावस्थामूर्ति नल्ल मे शिल्प तक कला की निपुणता का सुन्दर नमूना है। एक ऊँचे स्थान पर परम ध्यानावस्था में खड़े भगवान बाहुबली भारत के शान्ति और सद्भावना के अमूल्य सन्देश की किरणों का प्रकाश चारों ओर फैला रहे हैं साथ ही उनके अंगों से निपटी जगली लताएँ भी चित्रित हैं।

प्रसिद्ध यात्री लेखक फरेंगुसन के शब्दों में "इससे श्रेष्ठ या अधिक प्रभावशाली मूर्ति कहीं नहीं है।" शिल्प-कला में अनन्य तथा दक्षता पूर्वक बनाई गई बाहुबली की यह प्रतिमा मित्र के आबू सिम्बल देवालयों और कम्पू-चिया के आगकोर वाट के समान या शायद उनसे कहीं अधिक श्रेष्ठ है।

प्राचीन तीर्थस्थल

प्राचीन तीर्थ स्थान श्रवणबेलगोला बगलौर में १६० कि० मी० दूर पश्चिम की ओर है जहाँ नजदीकी जिला गहर-हसन से पहुँचा जा सकता है। चन्द्रागिरी (५६ मीटर ऊँची) विष्णुगिरी (१४३ मी०) की दो पहाड़ियों के बीच बने इस स्थल की दार्शनिक सुन्दरता नीचे बहती झील से और बढ़ जाती है जिसके नाम से यह स्थान बना है। श्रावण 'श्रमण' शब्द का अभिरूप है जिसका अर्थ है जैन सन्यासी। बेलगोला को कन्नड़ भाषा में एक दीप्तिमान या चमकीली छोटी झील कहते हैं।

चन्द्रागिरी पहाड़ी मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त से संबंधित है जो उत्तर में अपनी मगध की गद्दी त्याग कर अपने गुरु भद्रबाहु के साथ तीसरी शताब्दी पूर्व ईसा में धर्म

की खोज में यहाँ आये थे। भद्रबाहु स्वामी महावीर के निजी शिष्य के उत्तराधिकारी थे। दक्षिण में यह भद्रबाहु का ही प्रभाव था कि उनके जैन अनुयायियों की संख्या १२,००० तक हो गई और इसके साथ ही पूरे क्षेत्र में जैन धर्म की जड़ें (जो पहले ही फैल चुकी थी) और गहरी हो

श्रवणबेलगोला

गई। चन्द्रगुप्त ने सन्यास लेकर अपने गुरु की परम्परा को निभाते हुए, इस पृथ्वी पर अपने जीवन के अन्तिम क्षण तक कठोर तप किया।

बाहुबली की कथा

भगवान बाहुबली ने अपने त्याग से जो महान सासारिक विजय प्राप्त की उसके कारण उन्हें विशेष रूप से पूजा जाता है। उनका नाम वर्तमान चक्र के पहले तीर्थंकर आदिनाथ के राजकुमार पुत्र के रूप में हुआ। अपना राज्य छोड़ते हुए आदिनाथ ने अपने ज्येष्ठ पुत्र भरत को (जिसके नाम से भारत का नामकरण हुआ) और अन्य लोगों को उसकी बागडोर सौंपी।

जब भरत विश्व विजय के लिये निकले तो बाहुबली के अतिरिक्त सब भाइयों ने उनका अधिपत्य स्वीकार किया। बाहुबली ने यह निश्चय किया कि वह अपने पिता द्वारा सौंपा गया राज्य किसी को भी नहीं देगे। भाइयों के बीच विवाद बढ़ जाने पर चतुर मन्त्रियों द्वारा यह फैसला किया गया कि उन दोनों के बीच द्वन्द्व युद्ध करवा कर युद्ध से होने वाली मार-काट और विनाश लीला से बचा जा सकता है।

ताकत और कौशल की उस लड़ाई में बलिष्ठ बाहुबली की विजय हुई लेकिन वह सामारिक वस्तुओं की निरर्थकता को समझ चुके थे इसलिए इस जीवन से मुक्ति या निर्वाण प्राप्ति के लिए वे राजपाट त्यागकर धीरे तपस्या करने के लिए निकल पड़े।

मन्दिरों से जड़ित पहाड़ियाँ

विन्ध्यागिरी और चन्द्रागिरी पहाड़ियाँ एवं श्रावण-बेलगोला का विशिष्ट सौंदर्य युक्त क्षेत्र मन्दिरों और पूजा स्थलों से भरा हुआ है जो प्राचीन और मध्य कालीन भारत की वास्तुकला के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

गोम्मटेश्वर की प्रतिमा तक पहुँचने के लिए श्रद्धालु भक्तजनों को ऊँची-नीची पत्थरों से काटकर बनाई गई ६०० सीढ़ियाँ चढ़ कर जाना पड़ता है। चोटी तक पहुँचते-पहुँचते दर्शकों को एक विशाल चट्टान के बीच बने मार्ग से गुजरना पड़ता है। मार्ग में मध्यकालीन मन्दिर भी बने हैं। कुछ मन्दिरों में काले चमकते हुए पत्थरों की मूर्तियाँ तथा सफेद सगमरमर से बना मन्दिर का आन्तरिक स्थल विशाल मूर्ति की शोभा बढ़ाते हैं।

छोटी पहाड़ी चन्द्रागिरी १४ मन्दिरों में जड़ित है जिनमें अशोक महान् द्वारा अपने दादा की याद में बनवाया गया चन्द्रगुप्त का प्राचीनतम मन्दिर भी है। इसके भीतरी भाग की दीवारों पर भगवान् भद्रबाहु और सम्राट् चन्द्रगुप्त के जीवन चित्र अंकित हैं। जिनमें २५०० वर्ष पुरानी सम्यता का पता लगता है। पास ही एक गुफा में पत्थर की एक शिला पर भगवान् भद्रबाहु के पैरों के चिह्न अंकित हैं। चन्द्रागिरी के अन्य मन्दिर (जिनमें

चामुण्डा राय द्वारा निर्मित सबसे बड़ा मन्दिर भी है) ७वीं से १२वीं शताब्दी के दौरान बने हुए हैं।

श्रावणबेलगोला शहर में भी सात वैभवशाली मन्दिर हैं जिनमें सबसे बड़ा मन्दिर होयशला वास्तुकला का सुन्दर नमूना है। अन्य मन्दिर, जिनका निर्माण १०वीं से १५वीं शताब्दी के बीच हुआ है उनकी उत्कृष्ट शैली में बनी अनकृत मूर्तियों में होयशला और चालुक्य वंश की अभिरूचि की झलक मिलती है।

श्रावणबेलगोला उत्कृष्ट कोटि के छोटे-बड़े ३२ मन्दिरों से घिरा तीर्थ स्थल है जहाँ हर वर्ष श्रद्धालुजनों और पर्यटकों का ताता लगा रहता है।

अभिलेख एवं शिलालेख

आध्यात्मिक उद्यम के इस स्थान पर बड़ी संख्या में ऐतिहासिक अभिलेख एवं शिलालेख मिलते हैं—छोटी-छोटी पहाड़ियों और इस बस्ती में इनकी कुल संख्या ५३७ है। केवल चन्द्रागिरी में ही २७१ अभिलेख हैं, जो छोटी से दसवीं शताब्दी के बीच के समय के हैं। अपनी कला और प्राचीन सम्यता के लिए प्रसिद्ध श्रावणबेलगोला वास्तव में पुरातत्त्वविदों और इतिहासज्ञों के आकर्षण का केन्द्र है।

शुद्धिपत्र

पृष्ठ संख्या व कालम	पंक्ति	अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
२—२	२८	देवगुडी	देवगुडी
३—२	२७	कुन्धनाथ	कुन्धनाथ
५—१	(ऊ)	विशाखापत्तनम्	विशाखापत्तनम्
६—४	१०	विद्यालय	विद्यालय
६—४	११	औषधालय	औषधालय
६—४	१२	ऋषभदेव	ऋषभदेव
७—२	३	डिब्रूगढ	डिब्रूगढ
८—२	१२—१४	वासुपूज्य स्वामी का निर्वाण क्षेत्र वस्तुतः चम्पापुर (भागलपुर) है।	
८—२	१५	४—८	४८
८—२	२७	वस्तुपूज्य	वासुपूज्य
८—२	२७	जनकल्याणक	जन्मकल्याणक
१०—२	३६	नेमि	नमि
१२—१	६	तत्त्वार्थघिनम	तत्त्वार्थघिगम
१३—२	१०	अट्टालिकाओ	अट्टालिकाओ
१७—४	७	कोठ	कोठी
१७—४	१६	गणेशवर्ती	गणेशवर्णी
२२—४	१३	बाल	बाला
२४—१	१०	बहात्तर	बहत्तर
४१—१	३२	त्यागी	त्यागियो
४२—२	२५	खनियाघाना	खनियाघाना
४२—२	३२	देदाभूरी	देदाभूरी
४३—१	८	परमार	परवार
४३—२	१६	भेरी	भेरी
४३—२	१७	भया	भया
४६—२	६	बाणसिबनी	बारासिबनी
५३—२	१५	बकाराहा	बकस्वाहा
५७—४	८	सिधई	सिधई

५६—४	६, ७, ८, ११
६१—२	४
६१—२	७
६१—२	८
६१—२	१५
६१—४	१२
६६—२	१८
८६—२	८
८६—४	४
८६—४	६
१०१—३	२४
१०१—३	३०
१२३—४	१८
१२५—२	६
१७२—२	३
१७२—२	६
१७२—२	१६—१६
१७२—२	३०
१७७—१	१६
१८३—३	१६
१८३—४	८
१९०—३	२२—२४
२०१—४	१४
२१६—४	५

गणेशवर्ती	गणेशवर्णी
अमरबाग	अमरबारा
हरई	हरई
जुन्नारदेव	जुन्नारदेव
परासिरा	परासिया
छिन्दवाग	छिन्दवाडा
बासालारखेडा	बासा तारखेडा
सिद्धवरकूर	सिद्धवरकूट
शास्त्र	शास्त्र
मैल्या	मैल्या
मैयाराम	मैयालाल
वर्णी	वर्णी
गणेशवर्ती	गणेशवर्णी
६०८	१०८
पडमपरिउ	पद्मचरिउ
विलोप पण्यन्ती	त्रिलोपपण्यन्ति
पतजलि	पातजलि
मुहम्मक	मुहम्मद
फलासन	पद्मासन
चैत्यालय	चैत्यालय
पुस्तकालय	पुस्तकालय
पुरवाल	पोरवाल
पुरवान	पुरवाल
भवागिन	मैदागिन

